राहेअमल
नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम के
इरशादात का मजमूआ

राहे अमल

नबी करीम (सल्ल०)

के इरशादाते गरामी का मजमूआ

बराए

इसलाह व तर्बियत

संपादक

मौलाना जलील अहसन नदवी

मकतबा अल हसनात

प्रकाशक की ओर से

तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिये है जिस ने हमें पैदा किया और पैदा करने के बाद हमें यूँही ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये नहीं छोड़ा बल्कि ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये कुछ उसूल व तरीक़े बताये हैं। उन उसूल और तरीक़ों का जानना हर शख़्स के लिये ज़रूरी है, ज़िन्दगी में कामयाब होने के लिये अपनी और समाज की इस्लाह (सुधार) व तर्बियत बहुत ज़रूरी है। यह इस्लाह व कामयाबी हमें अल्लाह की किताब कुरआन मजीद और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान (हदीसों) से ही हासिल हो सकती है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो कुछ फ़रमाया या जो कोई काम किया इन्हीं सब बातों को अहादीस कहते हैं। दीन को समझने के लिये कुरआन के साथ साथ अहादीस का मुताला (अध्ययन) भी बहुत ज़रूरी है। इन्हीं सब बातों को देखते हुये इन्सानों की इस्लाह व तर्बियत के लिये यह किताब **"राहे अमल"** उर्दू में तर्तीब दी गई, जिस में हुज़ूर (सल्ल०) की छोटी बड़ी ज़िन्दगी में काम आने वाली अहादीस मौजूद हैं।

उर्दू में इस किताब से बहुत लोगों ने फ़ायदा उठाया हम चाहते हैं कि हिन्दी जानने वाले हमारे भाई बहन भी इस से फ़ायदा उठाएँ। अपनी और अपने समाज की इस्लाह करना हम सब का कर्तव्य है अल्लाह हमारी इन कोशिशों को कुबूल फ़रमाये।   आमीन

ए०एम० फ़हीम

सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ هَدَانَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِىَ لَوْ لَآ اَنْ هَدَانَا اللّٰهُ. وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ اَجْمَعِيْنَ.

अल हमदुलिल्लाहिल्लजी हदाना लिहाजा वमा कुन्ना लिनहतदिया लौला अन हदानल्लाहु वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिना मुहम्मदिर्रसूलिल्लाहि व अला आलिही व असहाबिही अजमईन।

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला की यह सुन्नत बड़ी अहमियत के साथ बयान हुई है कि जो शख़्स हिदायत का प्यासा होता है अल्लाह तआला उस को हिदायत की राह पर लगाता है और जिस के अन्दर हिदायत की प्यास नहीं होती है उसे बिल्कुल हिदायत नहीं देता। वह ऐसा कभी नहीं करता कि मछली माँगने वाले को साँप देदे और साँप माँगने वाले को मछली देदे। तो जब कोई शख़्स चाहता है कि उसे हिदायत मिले तो अल्लाह उस के साथ उस तरह का मुआमला करता है जिस तरह का मुआमला आदमी अपने बच्चे, और उसताद अपने शागिर्द (छात्र) के साथ करता है, अल्लाह तआला उसे अपनी राह पर लगाता है और राह पर लगा कर छोड़ नहीं देता बल्कि उसे बराबर अपनी तरफ़ खींचता और आगे बढ़ाता रहता है। इस के बरअक्स (विपरित) जिसके अन्दर हिदायत की चाहत नहीं होती अल्लाह तआला उस से बेपरवाह हो जाता है, उसे छोड़ देता है कि जिस राह पर चाहे चले और जिस खड में चाहे गिरे।

कुरआन मजीद इन्सानों की हिदायत के लिये उतरा है, इस से रौशनी सिर्फ़ वही पाता है जिस के अन्दर हिदायत की प्यास होती है। लेकिन जो शख़्स अपनी हिदायत के लिये कुरआन के पास नहीं जाता बल्कि सिर्फ़ "इल्मी सैर" के तौर पर और "जानकारी बढ़ाने" की ग़र्ज़ से जाता है तो ऐसे आदमी को कुरआन से कोई रहनुमाई नहीं मिलती, यही ख़ूबी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान के अन्दर भी पाई जाती है।

अगर कोई हिदायत की नियत से नबी (सल्ल॰) की हदीस पढ़ता है तो

उसे रौशनी मिलती है। लेकिन अगर कोई हदीस का मुताअला (अध्ययन) इल्म और जानकारी बढ़ाने की ग़र्ज़ से करता है तो उसे यहाँ से कोई रौशनी नहीं मिलती। हिदायत और गुमराही के बारे में अल्लाह की सुन्नत यही है, और अल्लाह की सुन्नत नहीं बदलती।

इस किताब "राहे अमल" में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान जमा कर दिए गये हैं और यह इसलाह (सुधार) व तर्बियत के मक़सद से तरतीब दी गई है इस का मुताअला (अध्ययन) इल्मी सैर के तौर पर या सिर्फ़ जानकारी बढ़ाने की नियत से हर्गिज़ न किया जाये। नबी (सल्ल०) की हदीसों को इस तरह पढ़ने में बड़ा घाटा है। दूसरी बात यह कि सिर्फ़ तर्जुमा (अनुवाद) और तशरीह (व्याख्या) का पढ़ना और हदीसों के शब्द न पढ़ना बड़ी महरूमी की बात होगी। तीसरी बात यह कि जो हदीस सामने आये उस पर ठहर कर ग़ौर किया जाए तो यक़ीन है कि सुधार व तर्बियत के बहुत से ऐसे पहलू भी सामने आएँगे जो तशरीह के ज़िम्न (तअल्लुक़) में बयान नहीं हो सकते।

इस्लाह व तर्बियत के मुहताज यूँ तो हम सारे ही मुसलमान हैं, लेकिन इस के सब से ज़्यादा मुहताज वह लोग हैं जो दीन का काम करने उठें, जिन्हों ने यह तैय किया हो कि बिगाड़ के इस ज़माने में और बिगड़े हुये माहौल में हक़ की गवाही का काम करेंगे यह हक़ की गवाही और दीन को क़ायम करने का काम बड़ी तैयारी चाहता है।

किताब के सभी पढ़ने वालों से ख़ासतौर से आलिमों (विद्यावानों) और हदीस के उस्तादों से गुज़ारिश है कि इस किताब में जहाँ कहीं कोई ग़लती नज़र आये उस की निशानदही फ़रमाएँ, मैं उन का बहुत एहसानमन्द रहूँगा। और अल्लाह तआला उन्हें इस का बदला देगा।

रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नका अन्तस्समीउल अलीम।

आजिज़

जलील अहसन नदवी

अफ़ल्लाहु अनहु

इख़्लासे नियत

(١) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِامْرِءٍ مَا نَوٰى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ، وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلٰى دُنْيَا يُصِيْبُهَا أَوِ امْرَأَةٍ يَتَزَوَّجُهَا
فَهِجْرَتُهُ إِلٰى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ. (متفق عليه)

1. *अन उमरब्निल ख़त्ताबि रज़िअल्लाहु अनहु काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नमल अअमालु बिन्नियाति वइन्नमा लिइमरिइम्मा नवा, फमन कानत हिजरतुहू इलल्लाहि वरसूलिही फहिजरतुहू इलल्लाहि वरसूलिही वमन कानत हिजरतुहू इला दुनिया युसीबुहा अविमरअतियं यतज़व्वजुहा फहिजरतुहू इला मा हाजरा इलैहि।* (बुख़ारी व मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि॰) से रिवायत है, उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अअमाल (कर्मों) का दारोमदार सिर्फ़ निय्यत पर है और आदमी को वही कुछ मिलेगा जिस की उस ने निय्यत की होगी, तो जिस ने अल्लाह और उस के रसूल के लिये हिजरत की होगी उस की हिजरत वास्तव में हिजरत होगी। और जिस की हिजरत दुनिया हासिल करने या किसी औरत से शादी करने के लिये होगी तो उस की हिजरत दुनिया के लिये या औरत के लिये ही मानी जाएगी।

हिजरत- का मतलब है कि आदमी अपने धर्म को बचाने के लिये अपना घर बार भाई बहन और पूरा परिवार अपना देश आदि छोड़ कर किसी दूसरी जगह चला जाए जहाँ वह अपने धर्म पर क़ायम रह सके।

यह हदीस इन्सानों और उस की ज़िन्दगी को सुधारने के लिये बहुत ही अहमियत रखती है। हुज़ूर के फ़रमान का मतलब यह है कि कर्मों का

फल नियतों के हिसाब से मिलेगा अगर नियत ठीक है तो उस का सवाब (पुन्न) मिलेगा वर्ना नहीं मिलेगा। कोई कर्म चाहे वह देखने में नेक और अच्छा हो, उस का बदला आख़िरत में सिर्फ़ उसी सूरत में मिलेगा जबकि वह ख़ुदा को ख़ुश (प्रसन्न) करने के लिये किया गया हो, अगर उस कर्म का मक़सद दुनिया हासिल करना है, या अपनी कोई दुनियावी ग़र्ज़ पूरी करने के लिये वह कर्म किया है तो आख़िरत के बाज़ार में उस की कोई क़ीमत न लगेगी, उस का यह कर्म वहाँ खोटा सिक्का माना जाएगा। इस हक़ीक़त को आप ने हिजरत की मिसाल दे कर वाज़ेह (स्पष्ट) किया कि देखो हिजरत कितना बड़ा नेकी का काम है लेकिन अगर किसी ने ख़ुदा और उस के रसूल के लिये नहीं बल्कि अपनी कोई दुनियावी ग़र्ज़ हासिल करने के लिये हिजरत करता है तो आख़िरत में उसे इस हिजरत का जो ज़ाहिर में बहुत बड़ी नेकी है कुछ सवाब. न मिलेगा बल्कि उलटा उस पर धोकेबाज़ी और फ़रेब का मुक़द्दमा क़ायम होगा।

(٢) عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰہَ لَا یَنْظُرُ اِلٰی صُوَرِکُمْ وَ اَمْوَالِکُمْ وَلٰکِنْ یَّنْظُرُ اِلٰی قُلُوْبِکُمْ وَ اَعْمَالِکُمْ . (مسلم)

2. *अन अबी हुरैरता रज़िअल्लाहु अनहु क़ाला, क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नल्लाहा ला यनज़ुरु इला सुवरिकुम व अमवालिकुम वलाकिय्यनज़ुरु इला कुलूबिकुम व अअमालिकुम* (मुस्लिम)

अनुवाद:- हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है, उन्हों ने कहा, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, कि अल्लाह तुम्हारी शक्ल व सूरत और तुम्हारे माल को न देखेगा बल्कि तुम्हारे दिलों और तुम्हारे कर्मों को देखेगा।

(٣) عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ اِنَّ اَوَّلَ النَّاسِ یُقْضٰی یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ عَلَیْہِ رَجُلٌ اِسْتُشْھِدَ فَاُتِیَ بِہٖ فَعَرَّفَہٗ نِعَمَہٗ فَعَرَفَھَا، قَالَ فَمَا عَمِلْتَ فِیْھَا؟ قَالَ قَاتَلْتُ فِیْکَ حَتّٰی اسْتُشْھِدْتُ قَالَ کَذَبْتَ وَلٰکِنَّکَ قَاتَلْتَ لِاَنْ یُّقَالَ جَرِیْءٌ فَقَدْ قِیْلَ. ثُمَّ اُمِرَ بِہٖ فَسُحِبَ عَلٰی وَجْھِہٖ حَتّٰی اُلْقِیَ فِی النَّارِ، وَرَجُلٌ تَعَلَّمَ الْعِلْمَ وَ عَلَّمَہٗ وَقَرَأَ الْقُرْاٰنَ فَاُتِیَ بِہٖ فَعَرَّفَہٗ نِعَمَہٗ فَعَرَفَھَا قَالَ فَمَا عَمِلْتَ فِیْھَا؟ قَالَ تَعَلَّمْتُ الْعِلْمَ وَ عَلَّمْتُہٗ وَقَرَأْتُ فِیْکَ الْقُرْاٰنَ قَالَ کَذَبْتَ وَلٰکِنَّکَ

تَعَلَّمْتَ لِيُقَالَ هُوَ عَالِمٌ وَ قَرَأْتَ الْقُرْاٰنَ لِيُقَالَ هُوَ قَارِئٌ فَقَدْ قِيْلَ ثُمَّ اُمِرَ بِهٖ فَسُحِبَ عَلٰى وَجْهِهٖ حَتّٰى اُلْقِيَ فِيْ النَّارِ، وَ رَجُلٌ وَسَّعَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَعْطَاهُ مِنْ اَصْنَافِ الْمَالِ فَاُتِيَ بِهٖ فَعَرَّفَهٗ نِعَمَهٗ فَعَرَفَهَا قَالَ فَمَا عَمِلْتَ فِيْهَا؟ قَالَ مَاتَرَكْتُ مِنْ سَبِيْلٍ تُحِبُّ اَنْ يُّنْفَقَ فِيْهَا اِلَّا اَنْفَقْتُ فِيْهَا لَكَ، قَالَ كَذَبْتَ وَلٰكِنَّكَ فَعَلْتَ لِيُقَالَ هُوَ جَوَادٌ فَقَدْ قِيْلَ ثُمَّ اُمِرَ بِهٖ فَسُحِبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ثُمَّ اُلْقِيَ فِيْ النَّارِ. (صحیح مسلم)

3. *अन अबी हुरैरता रज़िअल्लाहु अनहु काला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यकूलु इन्ना अव्वलन्नासि युक्ज़ा यौमल कियामति अलैहि रजुलु निस्तुशहिदा फउतिया बिही फअर्रफहू निअमहू फअरफहा, काला फमा अमिलता फीहा? काला कातलतु फीका हत्तासतुशहिदतु काला कज़ब्ता व लाकिन्नका कातलता लिअय्युकाला जरीउन फक्द कीला, सुम्मा उमिरा बिही फसुहिबा अला वजहिही हत्ता उलकिया फिन्नारि, व रजुलुन तअल्लमल इल्मा व अल्लमहू व करअल कुरआना फउतिया बिही फअर्रफहू निअमहू फअरफहा काला फमा अमिलता फीहा? काला तअल्लमतुल इल्मा व अल्लमतुहू व करअतु फीकल-कुरआना काला कज़ब्ता व लाकिन्नका तअल्लमता लियुकाला हुवा आलिमुन व करअतल-कुरआना लियुकाला हुवा कारिउन फक्द कीला सुम्मा उमिरा बिही फसुहिबा अला वजहिही हत्ता उलकिया फिन्नारि, व रजुलुन वस्सअल्लाहु अलैहि व अअ़ताहु मिन असनाफिल मालि फउतिआ बिही फअर्रफहू निअमहू फअरफहा, काला फमा अमिलता फीहा? काला मा तरक्तू मिन सबीलिन तुहिब्बु अय्युनफका फीहा इल्ला अनफक्तु फीहा लका, काला कज़ब्ता वलाकिन्नका फअलता लियुकाला हुवा जवादुन फक्द कीला सुम्मा उमिरा बिही फसुहिबा अला वजहिही सुम्मा उलकिया फिन्नारि।* (सही मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत अबू हुरैरा रज़ि॰ ने कहा मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुये सुना कि क़यामत के दिन सब से पहले एक ऐसे शख़्स के ख़िलाफ़ फ़ैसला सुनाया जाएगा जिस ने शहादत पाई होगी, उसे ख़ुदा की अदालत में हाज़िर किया जाएगा फिर ख़ुदा उसे अपनी सब नेमतें याद दिलाएगा और उसे वह सब नेमतें याद आ जाएंगी तब

पूछेगा कि तूने मेरी नेमतें पाकर क्या काम किये? वह कहेगा कि मैंने तेरी ख़ुशी के लिये (तेरे दीन से लड़ने वालों के ख़िलाफ़) जंग की यहाँ तक कि मैं ने अपनी जान दे दी, ख़ुदा उस से कहेगा तूने यह बात ग़लत कही कि मेरे लिये जंग की तूने सिर्फ़ इस लिए जंग की (और जांबाज़ी दिखाई) कि लोग तुझे बहादुर कहें तो दुनिया में तुझे उस का बदला मिल गया फ़िर हुक्म होगा कि उस मर्द शहीद को मुंह के बल घसीटते हुये ले जाओ और जहन्नम में डाल दो चुनाचे उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा, फिर एक दूसरा शख़्स ख़ुदा की अदालत में पेश किया जाएगा जो दीन का ज्ञानी और दीन को सिखाने वाला होगा, उसे ख़ुदा अपनी नेमतें याद दिलाएगा और उसे सब नेमतें याद आ जाएंगी तब उस से कहेगा उन नेमतों को पाकर तुम ने क्या कर्म किये? वह कहेगा ख़ुदाया मैं ने तेरे लिये तेरा दीन सीखा और तेरे लिये दूसरों को उस की शिक्षा दी और तेरे लिये कुरआन मजीद पढ़ा, ख़ुदाए तआला फ़रमाएगा, तुम ने झूट कहा तुम ने तो इस लिये इल्म सीखा था कि लोग तुम्हें आलिम कहें, और कुरआन इस ग़र्ज़ से तुम ने पढ़ा था कि लोग तुम्हें कुरआन का जानने वाला कहें, तो तुम्हें दुनिया में उस का बदला मिल गया फिर हुक्म होगा इस को चेहरे के बल घसीटते ले जाओ और जहन्नम में फेंक दो, चुनाचे उसे घसीटते हुये ले जा कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। और तीसरा आदमी वह होगा जिस को अल्लाह ने दुनिया में कुशदगी बख़शी थी और हर क़िस्म की दौलत दे रखी थी ऐसे शख़्स को ख़ुदा के सामने हाज़िर किया जाएगा और वह उसे अपनी सब नेमतें बताएगा और वह सारी नेमतों को जान लेगा और स्वीकार करेगा कि हाँ यह सब नेमतें उसे दी गई थीं, तब उस से उस का रब पूछेगा मेरी नेमतों को पा कर तुम ने क्या काम किये? वह जवाब में कहेगा कि जहाँ जहाँ ख़र्च करना तुझे पसन्द था वहाँ वहाँ मैं ने तेरी ख़ुशी हासिल करने के लिये ख़र्च किया, अल्लाह तआला फ़रमाएगा, झूट कहा, तूने यह सारा माल इस लिये लुटाया था कि लोग तुझे सख़ी (दानवीर) कहें, तो यह लक़ब दुनिया में तुझे मिल गया,

फिर हुक्म होगा कि इस को चेहरे के बल घसीटते हुये ले जाओ और आग में डाल दो, चुनाचे उसे ले जाकर आग में डाल दिया जाएगा।

ऊपर की तीनों हदीसों से यह बात वाज़ेह (स्पष्ट) होती है कि आख़िरत में किसी नेक काम की ज़ाहिरी शक्ल पर कोई इनआम नहीं मिलेगा, वहाँ तो सिर्फ़ वही काम बदले और सवाब का हक़दार होगा जिस को ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करने के लिये किया गया होगा। बड़े से बड़ा नेकी का काम अगर इस लिये किया गया है कि दूसरे उस से ख़ुश हों या लोगों की निगाह में उस का रुतबा बढ़े तो ख़ुदा की निगाह में उस का कोई रुतबा नहीं, आख़िरत के बाज़ार में उस की कोई क़ीमत नहीं, ऐसा काम ख़ुदा की तराज़ू में खोटा बल्कि जअली सिक्का माना जाएगा। न ऐसा ईमान वहां काम आएगा और न ऐसी इबादत।

जब हक़ीक़त यह है और इस के हक़ीक़त होने में कोई शुबहा नहीं तो हमें लोगों को दिखाने और अपनी शुहरत के लिये काम करने से होशियार और चौकन्ना रहना होगा, वर्ना सारी मेहनत बरबाद हो जाएगी और बरबादी की ख़बर हमें वहाँ होगी जहाँ आदमी कौड़ी कौड़ी का मुहताज होगा।

ईमानियात

(٤) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) قَالَ فَأَخْبِرْنِي عَنِ الْإِيْمَانِ؟ قَالَ أَنْ تُؤْمِنَ

بِاللّٰهِ وَمَلٰئِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَتُؤْمِنَ بِالْقَدْرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ۔ (صحیح مسلم)

4. *अन उमरबनिल-ख़त्ताबि* (*रजिअल्लाहु अनहु*) *काला फअख़बिरनी अनिल-ईमानि? काला अन तूमिना बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल यौमिल आख़िरि व तूमिना बिलक़द्रि ख़ैरिही व शर्रिही।* (सही मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि आने वाले शख़्स ने (जो हक़ीक़त में जिबरील अलैहिस्सलाम थे और हुज़ूर के पास इन्सानी शक्ल में आए थे) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि बताईये ईमान क्या है? आप ने फ़रमाया, ईमान यह है कि तुम अल्लाह को उस के फ़रिश्तों को उस की भेजी हुई किताबों को, उस के रसूलों को, और आख़िरत को, हक़ जानो और हक़ मानो, और इस बात को भी स्वीकार करो कि दुनिया में जो कुछ भी होता है ख़ुदा की तरफ़ से होता है चाहे वह भलाई हो या बुराई।

यह एक लम्बी हदीस का टुकड़ा है जो हदीसे जिबरील के नाम से मशहूर है और उस का ख़ुलासा यह है कि हज़रत जिबरील एक दिन हुज़ूर की ख़िदमत में इन्सानी शक्ल में आये और इस्लाम, ईमान, एहसान और क़यामत के बारे में प्रश्न किये, आप ने सब के उत्तर दिये उन में से ईमान के बारे में सवाल और जवाब यहाँ लिखे गए हैं।

तशरीह- ईमान का असल मतलब है किसी पर भरोसा करना और उस की वजह से उस की बातों को सच मानना, जब आदमी को किसी की सच्चाई का यक़ीन होता है तब ही उस की बात को मानता है, ईमान

की असल रूह यही भरोसा और यक़ीन है और आदमी के मोमिन होने के लिये ज़रूरी है कि इन तमाम बातों को हक़ मान कर क़ुबूल करे जो अल्लाह की तरफ़ से रसूलों के ज़रिए आती हैं, उन में से बुनियादी ईमानियात का ज़िक्र इस हदीस में आया है उन की अलग अलग मुख़्तसर तशरीह यह है-

(1) ईमान बिल्लाह, यानी अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब यह है कि उस को हमेशा से मौजूद माना जाए, उस को संसार का पैदा करने वाला और संसार का अकेला प्रबंध करने वाला माना जाये, और इस बात को स्वीकार किया जाये कि उस का कोई साझी और शरीक नहीं न दुनिया को पैदा करने में और न दुनिया का क़ानून चलाने में, और माना जाये कि हर तरह के ऐब और हर क़िस्म की कमी से उस की ज़ात पाक है, और वह तमाम अच्छी सिफ़तों (आदतों) का मालिक और तमाम ख़ूबियों वाला है।

(2) फ़रिश्तों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि उन के वजूद को माना जाये और यक़ीन किया जाये कि वह पवित्र लोग हैं, वह ख़ुदा की नाफ़रमानी (अवज्ञा) नहीं करते, हर वक़्त ख़ुदा की इबादत (पूजा) में लगे रहते है। वफ़ादार ग़ुलाम की तरह मालिक का हर हुक्म को पूरा करने के लिये हाथ बांधे उस के सामने खड़े रहते हैं, दुनिया में नेक काम करने वालों के लिये दुआएँ करते हैं।

(3) किताबों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि अल्लाह पाक ने अपने रसूलों के ज़रिए इन्सानों की ज़रूरत के मुताबिक़ जो हिदायतनामे भेजे सब को सच्चा माने, उन में आख़िरी हिदायतनामा क़ुरआन मजीद है। अगली क़ौमों ने अपनी किताबें बिगाड़ डालीं, तब आख़िर में अल्लाह ने अपने हुज़ूर के ज़रिए आख़िरी किताब भेजी जो साफ़ और स्पष्ट है, जिस में कोई कमी नहीं, और जो हर तरह के बिगाड़ से महफ़ूज़ (सुरक्षित) है, और अब इस किताब के सिवा दुनिया में कोई ऐसी किताब नहीं जिस के ज़रिए ख़ुदा तक पहुंचा जा सकता हो।

(4) रसूलों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि जितने रसूल ख़ुदा की तरफ़ से आये सब सच्चे हैं, उन सब रसूलों ने बग़ैर किसी कमी बेशी

के ख़ुदा की बातें लोगों तक पहुंचाईं इस सिलसिले की आख़िरी कड़ी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं अब इन्सानों की निजात सिर्फ़ आप (सल्ल०) के बताये हुये रास्ते पर चलने में है।

(5) आख़िरत पर ईमान लाने का मतलब यह है कि आदमी इस हक़ीक़त को कुबूल करे कि एक ऐसा दिन आने वाला है जिस में इन्सानों की ज़िन्दगी के पूरे रिकार्ड की जाँच पड़ताल होगी, तो जिस के कर्म ठीक होंगे वह इनआम पाएगा, और जिस के कर्म ठीक नहीं होंगे वह सज़ा पाएगा। सज़ा कितनी होगी और इनआम कितना मिलेगा इस को बताया नहीं जा सकता।

(6) तक़दीर पर ईमान लाने का मतलब यह है कि इस बात को माना जाये कि दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, ख़ुदा के हुक्म से हो रहा है यहाँ सिर्फ़ उसी का हुक्म चलता है, ऐसा नहीं है कि वह तो कुछ और चाहता हो और दुनिया का कारख़ाना किसी और ढब पर चल रहा हो, हर भलाई और बुराई हिदायत व गुमराही का एक क़ानून है जिस को उस ने पहले से बना दिया है। ख़ुदा का शुक्र अदा करने वाले बन्दों पर जो मुसीबतें आती हैं जिन कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और जो आज़माईशें उन पर आती हैं, यह सब हालात और उन के रब के हुक्म और पहले से तैय किये हुये क़ानून के मुताबिक़ हैं।

अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब

(٥) عَنْ مُعَاذِبْنَ جَبَلٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ كُنْتُ رَدْفَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ بَيْنِى وَ بَيْنَهٗ اِلَّا مُؤَخَّرَةُ الرَّحْلِ، فَقَالَ يَا مُعَاذِبْنَ جَبَلٍ، فَقُلْتُ لَبَّيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ سَعْدَيْكَ ثُمَّ سَارَ سَاعَةً، ثُمَّ قَالَ يَا مُعَاذِبْنَ جَبَلٍ قُلْتُ لَبَّيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ سَعْدَيْكَ ثُمَّ سَارَ سَاعَةً، ثُمَّ قَالَ يَا مُعَاذِبْنَ جَبَلٍ قُلْتُ لَبَّيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَسَعْدَيْكَ قَالَ هَلْ تَدْرِىْ مَا حَقُّ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ عَلَى الْعِبَادِ؟ قَالَ قُلْتُ اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ قَالَ فَاِنَّ حَقَّ اللّٰهِ عَلَى الْعِبَادِ اَنْ يَعْبُدُوْهُ وَلَا يُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا، ثُمَّ سَارَ سَاعَةً، ثُمَّ قَالَ يَا مُعَاذِبْنَ جَبَلٍ قُلْتُ لَبَّيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ سَعْدَيْكَ، قَالَ هَلْ تَدْرِىْ مَا حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللّٰهِ اِذَا فَعَلُوْ ذٰلِكَ؟ قُلْتُ اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ قَالَ اَنْ لَّا يُعَذِّبَهُمْ

(بخاری ومسلم)

5. *"अन मुआज़ब्ना जबलिन रज़िअल्लाहु अनहु काला कुनतु रिदफन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लैसा बैनी व बैनहू इल्ला मुअख़्ख़रतुर्रहलि, फ़काला या मुआज़ब्ना जबलिन, फ़कुलतु लब्बैका या रसूलल्लाहि व सअदैका सुम्मा सारा साअतन, सुम्मा काला या मुआज़ब्ना जबलिन कुलतु लब्बैका या रसूलल्लाहि व सअदैका सुम्मा सारा साअतन, सुम्मा काला या मुआज़ब्ना जबलिन कुल्तु लब्बैका या रसूलल्लाहि व सअदैका, काला हल तदरी मा हक़्कुल्लाहि अज़्ज़ा व जल्ला अलल-इबादि? काला कुल्तु अल्लाहु व रसूलुहू अअलमु काला फइन्ना हक़्कल्लाहि अलल-इबादि अय्यअबुदूहु वला युशरिकू बिही शौअन, सुम्मा सारा साअतन, सुम्मा काला या मुआज़ब्ना जबलिन कुल्तु लब्बैका या रसूलल्लाहि व सअदैका, काला हल तदरी मा हक़्कुल-इबादि अलल्लहि इज़ा फअलू ज़ालिका? कुल्तु अल्लाहु व रसूलुहू अअलमु काला अल्ला युअज़्ज़िबहुम"।* (बुख़ारी व मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि (एक सफ़र में) मैं आप (सल्ल॰) के पीछे सवारी पर बैठा हुआ था और मेरे और आप (सल्ल॰) के बीच कजावा का सिर्फ़ पिछला हिस्सा था आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ऐ मुआज़ बिन जबल! मैं ने कहा हुज़ूर ग़ुलाम हाज़िर है, फ़रमाएँ (आप ख़ामोश रहे) फिर कुछ दूर चलने के बाद पुकारा ऐ मुआज़ बिन जबल! मैं ने वही शब्द दुहराये जो पहली बार कहे थे (लेकिन आप ने कुछ नहीं कहा) फिर कुछ दूर चलने के बाद आप ने पुकारा, मुआज़ बिन जबल! मैं ने तीसरी बार भी वही पहला शब्द कहा (यानी हुज़ूर ग़ुलाम हाज़िर है फ़रमाएँ) तब आप ने फ़रमाया, तुम जानते हो, अल्लाह का हक़ बन्दों पर क्या है? मैं ने कहा अल्लाह और उस के रसूल ही सही जानते हैं, आप ने फ़रमाया अल्लाह का हक़ बन्दों पर यह है कि वह उसी की इबादत (पूजा) करें और उस की इबादत (पूजा) में किसी दूसरे को ज़रा भी शरीक और साझी न बनाएँ, फिर आप (सल्ल॰) ने थोड़ी दूर चलने के बाद फ़रमाया, ऐ मुआज़! मैं ने कहा फ़रमाईये यह ग़ुलाम आप की बात ध्यान से सुनेगा, और वफ़ादारी से आप की इताअत (उपासना) करेगा, आप ने

फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि बन्दों का अल्लाह पर क्या हक़ है? मैं ने कहा, अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) ही बेहतर जानते हैं, आप ने फ़रमाया कि अल्लाह की बन्दगी करने वाले बन्दों का अल्लाह पर यह हक़ है कि वह उन्हें अज़ाब न दे।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत मुआज़ के बयान का खुलासा यह है कि मैं बिल्कुल आप के क़रीब बैठा हुआ था, सुनने और सुनाने में कोई परेशानी की बात नहीं थी, आप के फ़रमान को बड़ी आसानी के साथ सुन सकता था लेकिन जो बात आप (सल्ल०) फ़रमाना चाहते थे बड़ी अहम थी इस लिये आप (सल्ल०) ने तीन बार पुकारा और कुछ नहीं फ़रमाया यह इस लिये किया ताकि मुझ पर इस बात की अहमियत अच्छी तरह स्पष्ट हो जाये और मैं ख़ूब कान लगा कर बात सुनूं। हुज़ूर के फ़रमान से तौहीद की अहमियत मालूम हुई कि यह जहन्नम के अज़ाब से बचाने वाली है। जो चीज़ ख़ुदा के क्रोध से बचाने वाली हो और जन्नत का हक़दार बनाने वाली हो, उस से ज़्यादा क़ीमती चीज़ बन्दे की निगाह में और क्या होगी।

(٦) قَالَ اَتَدْرُوْنَ مَا الْاِيْمَانُ بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ، قَالُوْا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ، قَالَ شَهَادَةُ اَنْ لَّا اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدً رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَاِقَامُ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاءُ الزَّكٰوةِ وَصِيَامُ رَمَضَانَ. (مشكوة)

6. *काला अ-तदरूना मलईमानु बिल्लाहि वहदहू, कालू अल्लाहु व रसूलुहू अअलमु, काला शहादतु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अन्ना मुहम्मदर् रसूलुल्लाहि व इक़ामुस्सलाति व ईताउज़्ज़काति व सियामु रमज़ाना"* (मिश्कात)

अनुवाद:- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (क़बील-ए-अब्दुल क़ैस की देख भाल करने वालों से) पूछा, जानते हो एक अल्लाह पर ईमान लाने का क्या मतलब है? उन्हों ने कहा, अल्लाह और उस के रसूल ही बेहतर जानते हैं, आप ने फ़रमाया कि ईमान यह है कि आदमी इस हक़ीक़त की गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं, और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, और नमाज़ ठीक तरीक़े से अदा करे और ज़कात दे और रमज़ान के रोज़े रखे।

(٧) عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَلَّمَا خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِلَّا قَالَ لَا اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا اَمَانَةَ لَهٗ وَلَا دِيْنَ لِمَنْ لَّا عَهْدَ لَهٗ. (مشكوٰة)

7. अन अनसिन रज़िअल्लाहु अनहु काला कल्लमा ख़तब्ना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इल्ला काला ला ईमाना लिमल्ला अमानता लहू वला दीना लिमल्ला अह्दा लहू"। (मिश्कात)

अनुवादः- हज़रत अनस (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब भी खुतबा दिया, उस में यह ज़रूर फ़रमाया कि जिस के अन्दर अमानत नहीं उस के अन्दर ईमान नहीं, और जिस के अन्दर अहद (वादे) का पास व लिहाज़ नहीं उस के पास दीन नहीं।

हुज़ूर (सल्ल॰) के इस फ़रमान का मतलब यह है कि जो शख़्स अल्लाह के हुकूक़ और बन्दों के हुकूक़ जिन की पूरी सूची अल्लाह की किताब में है अदा नहीं करता उस का ईमान पुख़्ता नहीं है और जो शख़्स किसी बात को निबाहने का अहद (वादा) करे फिर उसे न निबाहे, उस वादे को पूरा न करे, वह दीनदारी की नेमत से महरूम है जिस के दिल में ईमान की जड़ें मज़बूत जमी होती हैं वह तमाम हुकूक़ की अदायगी में ईमानदार होता है किसी हक़ की अदायगी में वह ख़यानत नहीं करता, इसी तरह जिस आदमी के अन्दर दीनदारी होगी वह अहद को मरते दम तक निबाहेगा। याद रहे कि सब से बड़ा हक़ अल्लाह का है, उस के रसूल का है उस की भेजी हुई किताब का है और सब से बड़ा अहद वह है जो आदमी अपने ख़ुदा से और उस के भेजे हुये नबी से और नबी के लाये हुये दीन से करता है।

(٨) عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبَسَةَ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا الْاِيْمَانُ، قَالَ الصَّبْرُ وَالسَّمَاحَةُ.

(مسلم-عمرو بن عبسہ)

(8) *"अन अमरिब्नि अबसता (रज़ि॰) काला कुल्तु या रसूलल्लाहि मलईमानु, काला अस्सब्रो वस्समाहतु"*

(मुस्लिम अमर बिन अबसा)

अनुवादः- हज़रत अमर बिन अबसा (रज़ि॰) फ़रमाते हैं, मैं ने

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि ईमान क्या है? आप ने फ़रमाया ईमान नाम है सब्र और समाहत का।

यानी ईमान यह है कि आदमी ख़ुदा की राह अपने लिये पसन्द करे और उस राह में जो कठिनाईयां आएँ उन को बरदाश्त करे और ख़ुदा के सहारे आगे बढ़ता जाये (यह सब्र है) और आदमी अपनी कमाई ख़ुदा के मुहताज व बेसहारा बन्दों पर ख़ुदा को ख़ुश करने के लिये ख़र्च करे और ख़र्च कर के ख़ुशी महसूस करे (यह समाहत है)।

(۹) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اَحَبَّ لِلّٰهِ وَاَبْغَضَ لِلّٰهِ وَاَعْطٰى لِلّٰهِ وَ

مَنَعَ لِلّٰهِ فَقَدِ اسْتَكْمَلَ الْاِيْمَانَ. (بخاری-ابوامامہ)

(9) *"काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन अहब्बा लिल्लाहि व अबग़ज़ा लिल्लाहि व अअता लिल्लाहि व मनआ लिल्लाहि फ़क़दिस्तकमलल्ईमाना"* (बुख़ारी -अबू उमामा)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने अल्लाह के लिये दोस्ती की और अल्लाह के लिये दुश्मनी की और अल्लाह के लिये दिया और अल्लाह के लिये रोक रखा उस ने अपने ईमान को मुकम्मल किया।

मतलब यह कि आदमी अपना सुधार करते करते इस हालत को पहुंच जाता है कि वह जिस से जुड़ता है और जिस से कटता है ख़ुदा की प्रसन्नता हासिल करने के लिये उस से जुड़ता है और उस से कटता है दीन के लिये किसी से मुहब्बत करता है और किसी से नफ़रत, उस की मुहब्बत और नफ़रत अपनी किसी ज़ाती ग़र्ज़ और दुनियावी फ़ायदे के लिये नहीं होती बल्कि सिर्फ़ ख़ुदा और उस के दीन के लिये होती है। जब आदमी की यह हालत हो जाये तब समझो कि उस का ईमान मुकम्मल हुआ।

(۱۰) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاقَ طَعْمَ الْاِيْمَانِ مَنْ رَّضِىَ بِاللّٰهِ رَبًّا

وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ رَّسُوْلًا. (بخاری ومسلم-عباسؓ)

(10) *"काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ज़ाक़ा तअमल ईमानि मर्रज़िया बिल्लाहि रब्बवं वबिल इस्लामि दीनवं व बिमुहम्मदिर रसूलन"* (बुख़ारी व मुस्लिम-अब्बास (रज़ि॰)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं, ईमान का मज़ा चखा उस शख़्स ने जो अल्लाह को अपना रब बना कर और इस्लाम को अपना दीन मान कर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना रसूल मान कर के खुश हो गया।

यानी अल्लाह तआला की बन्दगी में अपने आप को दें कर और इस्लामी शरीअत की उपासना कर के और अपने आप को नबी (सल्ल॰) की रहनुमाई में दे कर पूरी तरह संतुष्ट है, उस का फ़ैसला है कि मुझे किसी और की बन्दगी नहीं करनी है, और हर हालत में इस्लाम पर चलना है और हुज़ूर के सिवा किसी दूसरे इन्सान की रहनुमाई में ज़िन्दगी नहीं गुज़ारनी है। जिस शख़्स का हाल यह हो जाये तो समझ लो कि ईमान की मिठास उस ने पा ली।

रसूल पर ईमान लाने का मतलब

(١١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ خَيْرَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللّٰهِ وَ خَيْرَ الْهَدْيِ هَدْىُ مُحَمَّدٍ. (مسلم-جابرؓ)

(11) "*काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्ना खैरल हदीसि किताबुल्लाहि व खैरल हदयि हदयू मुहम्मदिन (सल्ल॰)* (मुस्लिम-जाबिर (रज़ि॰)"

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बेहतरीन कलाम (बात) अल्लाह की किताब और बेहतरीन सीरत (चरित्र) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का चरित्र है (जिसका आज्ञापालन किया जाना चाहिए)

(١٢) عَنْ اَنَسٍؓ قَالَ قَالَ لِیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا بُنَیَّ اِنْ قَدَرْتَ اَنْ تُصْبِحَ وَتُمْسِیَ وَلَيْسَ فِیْ قَلْبِکَ غِشٌّ لِاَحَدٍ فَافْعَلْ ثُمَّ قَالَ يَا بُنَیَّ وَذٰلِکَ مِنْ سُنَّتِیْ وَمَنْ اَحَبَّ سُنَّتِیْ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ وَمَنْ اَحَبَّنِیْ كَانَ مَعِیْ فِی الْجَنَّةِ. (مسلم)

(12) "*अन अनसिन रज़ि॰ काला काला ली रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या बुनय्या इन कदरता अन तुसबिहा व तुमसिया व लैसा फी कलबिका ग़िश्शुन*

लिअहदिन फफ़अला सुम्मा काला या बुनय्या व ज़ालिका मिन सुन्नती व मन अहब्बा सुन्न्ती फक़द अहब्बनी व मन अहब्बनी काना मई फ़िलजन्नति। (मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं, मुझ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा, ऐ मेरे प्यारे बेटे! अगर तू इस तरह ज़िन्दगी गुज़ार सके कि तेरे दिल में किसी की बदख़्वाही न हो तो ऐसी ही ज़िन्दगी बसर कर फिर फ़रमाया, और यही मेरा तरीक़ा है (कि मेरे दिल में किसी के लिये खोट नहीं) और जिस ने मेरी सुन्नत (तरीक़ा) से मुहब्बत की तो बेशक उस ने मुझ से मुहब्बत की और जिस ने मुझ से मुहब्बत की वह जन्नत में मेरे साथ रहेगा।

(١٣) جَاءَ ثَلٰثَةُ رَهْطٍ اِلٰى اَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْاَلُوْنَ عَنْ عِبَادَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا اُخْبِرُوْا بِهَا كَاَنَّهُمْ تَقَالُّوْهَا، فَقَالُوْا اَيْنَ نَحْنُ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ غَفَرَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ وَمَا تَاَخَّرَ، فَقَالَ اَحَدُهُمْ اَمَّا اَنَا فَاُصَلِّى اللَّيْلَ اَبَدًا، وَقَالَ الْاٰخَرُ اَنَا اَصُوْمُ النَّهَارَ اَبَدًا وَلَا اُفْطِرُ وَقَالَ الْاٰخَرُ اَنَا اَعْتَزِلُ النِّسَاءَ فَلَا اَتَزَوَّجُ اَبَدًا، فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِلَيْهِمْ فَقَالَ اَنْتُمُ الَّذِيْنَ قُلْتُمْ كَذَا وَ كَذَا؟ اَمَا وَاللّٰهِ اِنِّى لَاَخْشَاكُمْ لِلّٰهِ وَاَتْقَاكُمْ لَهٗ لٰكِنِّى اَصُوْمُ وَاُفْطِرُ وَاُصَلِّى وَ اَرْقُدُ وَاَتَزَوَّجُ النِّسَاءَ فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِى فَلَيْسَ مِنِّى. (مسلم-انسؓ)

(13) *जाआ सलासतु रहतिन इला अज़वाजिन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यसअलूना अन इबादतिन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फलम्मा उख़बिरू बिहा कअन्नहुम तक़ाल्लूहा, फक़ालू ऐना नहनु मिनन-नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा वक़द ग़फ़रल्लाहु मा तक़द्दमा मिन ज़ंबिही वमा तअख़्ख़रा, फक़ाला अहदुहुम अम्मा अना फउसल्लिल्लैला अबदन, व कालल्आख़रु अना असूमुननहारा अबदवं वला उफ़तिरु व क़ालल आख़रु अना अअ़तज़िलुन्निसाआ फला अतज़व्वजु अबदन, फ-जाअन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इलैहिम फक़ाला अनतुमुल्लज़ीना कुलतुम कज़ा व कज़ा? अमा वल्लाहि इन्नी ल-अख़शाकुम लिल्लाहि व अतक़ाकुम लहू लाकिन्नी असूमु व उफ़तिरु व उसल्ली व अरकुदु व अतज़व्वजुन- निसाआ*

फमन रग़िबा अन सुन्नती फलैसा मिन्नी। (मुस्लिम - अनस रज़ि॰)

अनुवादः- तीन आदमी हुज़ूर (सल्ल॰) की इबादत के बारे में मालूमात हासिल करने के लिये हुज़ूर (सल्ल॰) की बीवियों के पास आये, जब उन्हें बताया गया तो उन्हों ने आप की इबादत की मिक़दार को कम जाना उन्हों ने अपने दिल में सोचा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हमारा क्या मुक़ाबला? उन से न तो पहले गुनाह हुये और न बाद में होंगे (और हम मासूम नहीं, तो हमें ज़्यादा से ज़्यादा इबादत करनी चाहिये) चुनाचे उन में से एक ने अपने लिये यह तैय किया कि वह हमेशा पूरी रात नफ़्ल नमाज़ों में गुज़ारेगा, और दूसरे ने यह कहा कि मैं हमेशा नफ़्ली रोज़े रखूंगा, दिन में कभी खाना न खाऊँगा और तीसरे साहब ने कहा, मैं औरतों से अलग रहूँगा, कभी शादी न करूँगा (जब आप (सल्ल॰) को इस की ख़बर मिली) तो आप उन के पास गये और कहा क्या वह तुम ही लोग हो जिन्हों ने ऐसा ऐसा कहा! फिर आप ने फ़रमाया यक़ीनन मैं तुम से ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला, और उस की नाफ़रमानी (अवज्ञा) से बचने वाला हूँ। लेकिन देखो मैं (नफ़्ली) रोज़े कभी रखता हूँ, कभी नहीं रखता। इसी तरह मैं (रात में) नवाफ़िल भी पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ। और देखो मैं बीवियाँ भी रखता हूँ (तो तुम्हारे लिये ख़ैरियत मेरे तरीक़े की उपासना में है) और जिस की निगाह में मेरी सुन्नत की अहमियत नहीं, जो मेरी सुन्नत से बेरुख़ी करे उस का मुझ से कोई तअल्लुक़ नहीं।

(١٤) صَنَعَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا فَرَخَّصَ فِيْهِ فَتَنَزَّهَ عَنْهُ قَوْمٌ فَبَلَغَ ذٰلِكَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَطَبَ فَحَمِدَ اللّٰهَ ثُمَّ قَالَ مَا بَالُ اَقْوَامٍ يَتَنَزَّهُوْنَ عَنِ الشَّيْءِ اَصْنَعُهُ فَوَاللّٰهِ اِنِّيْ لَاَعْلَمُهُمْ بِاللّٰهِ وَاَشَدُّهُمْ لَهٗ خَشْيَةً

(بخاری ومسلم-عائشہؓ)

(14) *"सनआ रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा*

शैअन फरख़्ख़सा फीहि फतनज़्ज़हा अनहु कौमुन फबलग़ा ज़ालिका रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फख़तबा फ-हमिदल्लाहु सुम्मा काला मा बालु अकवामिन यतनज़्ज़हूना अनिश्शैई असनउहू फ-वल्लाहि इन्नी ल-अअलमुहुम बिल्लाहि व अशद्दुहुम लहू ख़शयतन"।

(बुख़ारी व मुस्लिम-आयशा रज़ि॰)

अनुवादः- हुज़ूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहले एक काम करने से लोगों को रोक दिया था फिर आप ने वह काम किया ताकि लोगों को मालूम हो जाये कि अब आप (सल्ल॰) उस के करने की इजाज़त दे रहे हैं। उस पर भी कुछ लोग वह काम करने के लिये तैयार न हुये जब आप को उन की इस ज़ेहनियत की ख़बर हुई तो आप ने तक़रीर की और अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, क्यों कुछ लोग उस काम को करने से बच रहे हैं जिस को मैं करता हूँ। खुदा की क़सम मैं उन सब से ज़्यादा खुदा का इल्म (ज्ञान) रखता हूँ और उन सब से ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला हूँ।

(١٥) عَنْ جَابِرٍؓ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِيْنَ اَتَاهُ عُمَرُ فَقَالَ اِنَّا نَسْمَعُ اَحَادِيْثَ مِنْ يَّهُوْدَ تُعْجِبُنَا اَفَتَرٰى اَنْ نَّكْتُبَ بَعْضَهَا فَقَالَ اَمُتَهَوِّكُوْنَ اَنْتُمْ كَمَا تَهَوَّكَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى؟ لَقَدْ جِئْتُكُمْ بِهَا بَيْضَاءَ نَقِيَّةً، وَلَوْ كَانَ مُوْسٰى حَيًّا مَا وَسِعَهٗ اِلَّا اِتِّبَاعِيْ. (مسلم-جابرؓ)

(15)*अन जाबिरिन अनिन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा हीना अताहु उमरु फकाला इन्ना नसमउ अहादीसा मिंयहूदा तुअजिबुना अफतरा अन नकतुबा बअज़हा फकाला अमुतहव्विकूना अनतुम कमा तहव्वकतिल यहूदु वन्नसारा? लकद जिअतुकुम बिहा बैज़ाआ नकिय्यतन, वलौ काना मूसा हय्यम मा वसिअहू इल्ला इत्तिबाई* (मुस्लिम-जाबिर रज़ि॰)

अनुवादः- हज़रत जाबिर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हज़रत उमर (रज़ि॰) आये और कहा कि हम को यहूदियों की कुछ बातें अच्छी मालूम होती हैं तो

आप की क्या राय है? क्या उन में से कुछ हम लिख लें? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया क्या तुम भी गुमराही के खड में गिरना चाहते हो, जैसे यहूद और नसारा अपनी किताब को छोड़ कर खड में गिर गये? मैं तुम्हारे पास वह शरीअत लाया हूँ जो सूरज की तरह रौशन और आईना की तरह साफ़ है, और अगर आज मूसा (अलैहिस्सलाम) ज़िन्दा होते तो उन्हें भी ।
मेरा आज्ञापालन

यहूदियों ने अपनी किताब, तौरात की तालीम (शिक्षा) को बिगाड़ डाला था, लेकिन उस में बिगाड़ ही बिगाड़ न था, कुछ सच्ची बातें भी थीं, जिन्हें मुसलमान सुनते और पसन्द करते, अगर हुज़ूर इजाज़त दे देते तो दीन में बड़ी ख़राबी पैदा हो जाती, कौन सा धर्म है जिस में कुछ सच्ची और अच्छी बातें नहीं पाई जातीं? हुज़ूर ने जो जवाब हज़रत उमर (रज़ि०) को दिया उस से यह बात स्पष्ट होती है कि साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ चश्मा जिस के अपने घर में मौजूद हो उसे गदले हौज़ की तरफ़ रुख़ न करना चाहिये।

(١٦) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى يَكُوْنَ هَوَاهُ تَبَعًا لِّمَا جِئْتُ بِهٖ. (مشكوٰة)

(16) *"अन अब्दिल्लाहिब्नि अमरिन काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला यूमिनु अहदुकुम हत्ता यकूना हवाहु तबअन लिमा जिअतु बिही"।* (मिश्कात)

अनुवादः– हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि०) से रिवायत है, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई शख़्स (मुकम्मल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक उस का इरादा और उस के नफ़्स का मैलान मेरी लाई हुई (किताब, क़ुरआन) के ताबेअ (अधीन) नहीं हो जाता।

मतलब यह कि रसूल पर ईमान लाने के बाद ज़रूरी है कि आदमी अपनी ख़्वाहिश, अपने इरादा और अपने दिली रुजहानात को रसूल की लाई हुई हिदायत के ताबेअ कर दे, क़ुरआन मजीद के हाथ में अपनी ख़्वाहिश की लगाम दे दे, अगर कोई ऐसा न करे तो रसूल पर ईमान लाने

का कोई अर्थ नहीं।

(١٧) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ. (بخاری ومسلم۔انسؓ)

(17) *"काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला यूमिनु अहदुकुम हत्ता अकूना अहब्बा इलैहि मिवं वालिदिही व वलदिही वन्नासि अजमईन"* (बुख़ारी व मुस्लिम-अनस रज़ि॰)

> **अनुवादः-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से कोई शख़्स मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस की निगाह में उस के बाप, उस के बेटे और सारे इन्सानों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ।

हुज़ूर (सल्ल॰) के फ़रमान का मतलब यह है कि आदमी मोमिन तभी बनता है जब रसूल और उन के लाए हुये दीन की मुहब्बत तमाम मुहब्बतों पर ग़ालिब आ जाये, बेटे की मुहब्बत किसी और रास्ते पर चलने को कहती है, बाप की मुहब्बत किसी और रास्ते पर चलाना चाहती है, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी दूसरे रास्ते पर चलने को कहते हैं तो जब आदमी सारी मुहब्बतों और उन की मांग को ठुकरा कर सिर्फ़ हुज़ूर के बताए हुये रास्ते पर चलने को तैयार हो जाये तो समझ लीजिये कि वह पक्का मोमिन है, रसूल से मुहब्बत करने वाला है ऐसा ही आदमी इस्लाम को चाहिये और ऐसे ही लोग दुनिया की तारीख़ बनाते हैं, कच्चा ईमान बीवी बच्चों और बाप और भाई की मुहब्बतों पर क़ैंची कहाँ चला सकता है।

(١٨) اِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَوَضَّأَ يَوْمًا فَجَعَلَ اَصْحَابُهٗ يَتَمَسَّحُوْنَ بِوَضُوْئِهٖ، فَقَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا يَحْمِلُكُمْ عَلٰى هٰذَا؟ قَالُوْا حُبُّ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يُّحِبَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اَوْ يُحِبُّهُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ فَلْيَصْدُقْ حَدِيْثَهٗ وَاِذَا حَدَّثَ، وَلْيُؤَدِّ اَمَانَتَهٗ اِذَا اؤْتُمِنَ، وَلْيُحْسِنْ جِوَارَ مَنْ جَاوَرَهٗ. (مشکوٰۃ۔عبدالرحمٰن بن ابی قرادؓ)

(18) *"इन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा तवज़्ज़आ यौमन फजअला असहाबुहू यतमस्सहुना बिवज़ूइही, फक़ाला*

लहुमुन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा यहमिलुकुम अला हाज़ा? क़ालू हुब्बुल्लाहि व रसूलिही, फक़ालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन सर्रहू अय्युहिब्बल्लाहु व रसूलुहू फलयसदुक हदीसहू इज़ा हद्दसा, वल युअद्दि अमानतहू इज़अतुमिना वल युहसिन जिवारा मन जावरहू" (मिश्कात, अब्दुर्रहमान बिन अबी क़िराद रज़ि॰)

अनुवादः- अब्दुर्रहमान बिन अबी क़िराद (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुज़ू किया, तो आप के कुछ साथी आप के वुज़ू का पानी लेकर अपने चेहरों पर मलने लगे, तो आप ने पूछा किस बात ने तुम को इस काम के करने पर उभारा? लोगों ने कहा अल्लाह और उस के रसूल की मुहब्बत, आप ने फ़रमाया जिन लोगों को इस बात से खुशी हो कि वह अल्लाह और उस के रसूल से मुहब्बत करते हैं तो उन्हें चाहिये कि जब बात करें तो सच बोलें, और जब उन के पास अमानत रखी जाये तो उसे हिफ़ाज़त के साथ मालिक के हवाले करें, और पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करें।

आप के वुज़ू का पानी लेकर बरकत के लिये चेहरों और हाथ पर मलना आप (सल्ल॰) से मुहब्बत की वजह से था यह कोई बुरा काम नहीं था जिस पर हुज़ूर उन्हें डांटते, हाँ आप ने उन्हें बताया कि मुहब्बत का ऊँचा मक़ाम यह है कि अल्लाह और रसूल ने जो आदेश दिये हैं उन पर अमल किया जाये। आप (सल्ल॰) जो दीन लाये हैं उसे अपनी ज़िन्दगी का दीन बनाया जाये। रसूल की फ़रमाँबरदारी (आज्ञापालन) करना रसूल की मुहब्बत का सब से ऊँचा मक़ाम है शर्त यह है कि वह रसूल से दिली लगाव के साथ की जाये।

(١٩) جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ إِنِّي أُحِبُّكَ قَالَ انْظُرْ مَاتَقُوْلُ، فَقَالَ وَاللّٰهِ إِنِّي لَأُحِبُّكَ ثَلٰثَ مَرَّاتٍ، قَالَ إِنْ كُنْتَ صَادِقًا فَاَعِدَّ لِلْفَقْرِ تِجْفَافًا لَلْفَقْرُ أَسْرَعُ إِلٰى مَنْ يُّحِبُّنِيْ مِنَ السَّيْلِ إِلٰى مُنْتَهَاهُ. (ترمذی)

(19)*"जाआ रजुलुन इलन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फक़ाला इन्नी उहिब्बुका क़ाल उन्ज़ुर मा तक़ूलु, फक़ाला वल्लाहि*

इन्नी लउहिब्बुका सलासिन मर्रातिन, काला इन कुन्ता सादिकन फअअिद्दा लिलफ़क़्रि तिजफ़ाफ़न ललफ़क़्रु असरउ इला मिंय्युहिब्बुनी मिनस्सबीलि इला मुन्तहाहु" (तिर्मिज़ी)

अनुवादः- हज़रत अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया, और उस ने हुज़ूर से कहा, मैं आप से मुहब्बत करता हूँ, आप ने फ़रमाया, जो तुम कहते हो उस पर सोच विचार कर लो, उस ने तीन बार कहा, खुदा की क़सम मैं आप से मुहब्बत करता हूँ, आप ने फ़रमाया अगर तुम अपनी बात में सच्चे हो तो ग़रीबी और फ़ाक़ा का मुक़ाबला करने के लिये हथियार का इन्तिज़ाम कर लो। जो लोग मुझ से मुहब्बत करते हैं उन की तरफ़ ग़रीबी और फ़ाक़ा सैलाब (बाढ़) से ज़्यादा तेज़रफ़तारी के साथ बढ़ते हैं।

किसी से मुहब्बत करने और उसे महबूब बनाने का मतलब क्या होता है? यही कि उस की पसन्द को अपनी पसन्द और उस की नापसन्दीदगी को अपनी नापसन्दीदगी बना दिया जाये महबूब जिस रास्ते पर चलता है उस रास्ते को अपनी ज़िन्दगी का रास्ता बना दिया जाये, उस का क़रीबी बनने उस की संगति और उस की खुशी के लिये हर चीज़ कुर्बान की जाये और कुर्बान करने के लिये तैयार रहा जाये।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को महबूब बनाने का मतलब यह है कि आप का एक एक नक़्श-ए-क़दम और रास्ते का एक एक निशान मालूम किया जाये और उस पर चला जाये, आप ने जिस रास्ते में चोटें खाई हैं, उस रास्ते में चोटें खाने की ताक़त पैदा की जाये। ग़ार-ए-हिरा भी आप की राह है और बद्र व हुनैन भी आप की राह है।

दीन की राह पर चलने के नतीजे में ग़रीबी व फ़ाक़ा की मार पड़ेगी, और मालूम है कि मआशी (रोज़ी की) मार सब से बड़ी मार है उस का मुक़ाबला सिर्फ़ भरोसा और अल्लाह की मुहब्बत के हथियार से किया जा सकता है। मोमिन ऐसे वक़्त में यह सोचता है कि अल्लाह मेरा वकील है, मैं बेसहारा नहीं हूँ, और मैं ग़ुलाम हूँ, ग़ुलाम का काम सिर्फ़ अपने मालिक की मर्ज़ी पूरी करनी है और यह कि मैं जिस काम पर लगा हुआ

हूँ वह कृपाशील और न्यायवान है। मेरी मेहनत मारी नहीं जा सकती, उस का इस ढंग पर सोचना हर मुसीबत को आसान कर देता है, शैतान के हर हथियार को बेकार कर देता है।

कुरआन मजीद पर ईमान लाने का मतलब

(٢٠) قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رضی مَنِ اقْتَدٰى بِكِتٰبِ اللّٰهِ لَا يَضِلُّ فِى الدُّنْيَا وَ لَايَشْقٰى فِى الْاٰخِرَةِ
ثُمَّ تَلَا هٰذِهِ الْاٰيَةَ "فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى". (مشكوة)

(21)*"कालब्नु अब्बासिन (रज़ि॰) मनिक़्तदा बिकिताबिल्लाहि ला यज़िल्लु फ़िद्दुनिया वला यशक़ा फ़िलआख़िरति सुम्मा तला हाज़िहिल-आयता "फमनित्तबआ हुदाया फला यज़िल्लु वला यशक़ा"।* (मिश्कात)

अनुवाद:- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ ने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह कि किताब की उपासना करेगा वह न तो दुनिया में बेराह होगा और न आख़िरत में उस के हिस्से में महरूमी आएगी। फिर उन्हों ने यह आयत पढ़ी "जो शख़्स मेरे हिदायतनामा का आज्ञापालन करेगा वह न तो दुनिया में भटकेगा और न आख़िरत में दुर्भागी होगा।

(٢١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَزَلَ الْقُرْاٰنُ عَلٰى خَمْسَةِ اَوْجُهٍ حَلَالٍ وَّ
حَرَامٍ وَّمُحْكَمٍ وَّ مُتَشَابِهٍ وَّ اَمْثَالٍ فَاَحِلُّوْا الْحَلَالَ وَحَرِّمُوْا الْحَرَامَ وَاعْمَلُوْا بِالْمُحْكَمِ
وَاٰمِنُوْا بِالْمُتَشَابِهِ وَاعْتَبِرُوْا بِالْاَمْثَالِ. (مشكوة-ابوہريرہؓ)

(21)*"क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा नज़लल-कुरआनु अला ख़मसति औजुहिन हलालिवं व हरामिवं व मुहकमिवं व मुतशाबिहिवं व अमसालिन फअहिल्लुल हलाला व हर्रिमुल हरामा वअमलू बिल- मुहकमि व आमिनू बिल-मुतशाबिहि वअतबिरू बिल अमसालि"।* (मिश्कात- अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवाद:- हुज़ूर ने फ़रमाया, कुरआन मजीद में पाँच चीज़ें हैं। हलाल, हराम, मुहकम, मुतशाबेह और इमसाल, तो हलाल को हलाल समझो, हराम को हराम मानो, मुहकम (कुरआन का वह हिस्सा जिस में अक़ीदा और क़ानून वग़ैरा की शिक्षा दी गई है)

पर अमल करो, और मुतशाबेह (कुरआन का वह हिस्सा जिस में ग़ैब की बातें बयान हुई हैं जैसे जन्नत, दोज़ख़, अर्श, कुर्सी वग़ैरा) पर ईमान रखों (और उस की कुरेद में मत पड़ो) और इमसाल (क़ौमों की तबाही के इबरतनाक क़िस्से) से इबरत (नसीहत) हासिल करो।

(۲۲) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ فَرَضَ فَرَائِضَ فَلَا تُضَيِّعُوْهَا وَحَرَّمَ حُرُمٰتٍ فَلَا تَنْتَهِكُوْهَا وَحَدَّ حُدُوْدًا فَلَا تَعْتَدُوْهَا وَسَكَتَ عَنْ اَشْيَاءَ مِنْ غَيْرِ نِسْيَانٍ فَلَا تَبْحَثُوْا عَنْهَا. (مشكوة - جابرؓ)

22. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नल्लाहा फरज़ा फराइज़ा फला तुज़य्यिऊहा व हर्रमा हुरुमातिन फला तनतहिकूहा व हद्दा हुदूदन फला तअतदूहा व सकता अन अशयाआ मिन ग़ैरि निसयानिन फला तबहसू अनहा।* (मिश्कात-जाबिर रज़ि०)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, कि अल्लाह ने कुछ फ़राइज़ मुक़र्रर किये हैं उन्हें बरबाद न करना, और कुछ चीज़ों को हराम किया है उन को न करना, और कुछ हदबन्दियाँ की हैं उन्हें फलांग कर आगे न बढ़ना, और कुछ चाज़ों से उस ने बग़ैर बोले ख़ामोशी अपनाई है तुम उन की कुरेद में न पड़ना।

(۲۳) عَنْ زِيَادِ بْنِ لَبِيْدٍؓ قَالَ ذَكَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا فَقَالَ ذٰلِكَ عِنْدَ اَوَانِ ذَهَابِ الْعِلْمِ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَكَيْفَ يَذْهَبُ الْعِلْمُ وَنَحْنُ نَقْرَءُ الْقُرْاٰنَ وَنُقْرِئُهٗ اَبْنَائَنَا وَ يُقْرِئُهٗ اَبْنَاؤُنَا اَبْنَاءَ هُمْ؟ فَقَالَ ثَكِلَتْكَ اُمُّكَ زِيَادُ كُنْتُ لَاُرَاكَ مِنْ اَفْقَهِ رَجُلٍ بِالْمَدِيْنَةِ اَوَلَيْسَ هٰذِهِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى يَقْرَءُوْنَ التَّوْرَاةَ وَالْاِنْجِيْلَ لَا يَعْمَلُوْنَ بِشَيْءٍ مِّمَّا فِيْهِمَا. (ابن ماجہ)

23. *अन ज़ियादिबनि लबीदिन (रज़ि०) काला ज़करन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा शैअन फकाला ज़ालिका इनदा अवानि ज़हाबिल इल्मि कुलतु या रसूलल्लाहि व कैफा यज़हबुल-इल्मु व नहनु नक्रउल कुरआना व नुक्रिउहू अबनाअना व युक्रिउहू अबनाउना अबनाअहुम? फकाला सकिलतका उम्मुका ज़ियादु कुनतु लउराका मिन अफ्क़हि रजुलिन बिलमदीनति अवलैसा हाज़िहील*

यहूदु वन्नसारा यक़रऊनत्तौराता वल इंजीला ला यअ़मलूना बिशैइम मिम्मा फ़ीहिमा। (इब्ने माजा)

अनुवादः–हज़रत ज़ियाद बिन लबीद फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक डरावनी चीज़ का ज़िक्र किया और फिर फ़रमाया कि ऐसा उस वक़्त होगा जबकि दीन का इल्म मिट जाएगा, तो मैं ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! इल्म क्यों मिट जाएगा जबकि हम कुरआन पढ़ रहे और अपनी औलाद को पढ़ा रहे हैं और हमारे बेटे अपनी औलाद को पढ़ाते रहेंगे। हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया बहुत ख़ूब ऐ ज़ियाद! मैं तुम्हें मदीने का बहुत ही समझदार आदमी समझता था क्या तुम नहीं देखते कि यहूद व नसारा तौरात और इंजील की कितनी तिलावत करते हैं पर उन की शिक्षाओं पर कुछ भी अमल नहीं करते?।

तक़दीर पर ईमान लाने का मतलब

(۲۴) عَنْ عَلِيٍّ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ اَحَدٍ اِلَّا وَقَدْ كُتِبَ مَقْعَدُهٗ مِنَ النَّارِ وَ مَقْعَدُهٗ مِنَ الْجَنَّةِ قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَفَلَا نَتَّكِلُ عَلٰى كِتٰبِنَا وَنَدَعُ الْعَمَلَ؟ قَالَ اعْمَلُوْا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهٗ اَمَّا مَنْ كَانَ مِنْ اَهْلِ السَّعَادَةِ فَسَيُيَسَّرُ لِعَمَلِ السَّعَادَةِ، وَ اَمَّا مَنْ كَانَ مِنْ اَهْلِ الشَّقَاوَةِ فَسَيُيَسَّرُ لِعَمَلِ الشَّقَاوَةِ ثُمَّ قَرَأَ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى. (بخاری ومسلم)

24. *अन अलिय्यिन काला काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा मिन अहदिन इल्ला वक़द कुतिबा मक़अदुहू मिननारि व मक़अदुहू मिनल जन्नति कालू या रसूलल्लाहि अफ़ला नत्तकिलु अला किताबिना व नदउल अमला? काला अअ़मलू फ़कुल्लुम मुयस्सरुन लिमा ख़ुलिक़ा लहू अम्मा मन काना मिन अहलिस्सआदति फ़सयुयस्सरु लिअमलिस्सआदति, व अम्मा मन काना मिन अहलिश्शक़ावति, फ़सयुयस्सरु लिअमलिश्शक़ावति सुम्मा क़रआ फ़अम्मा मन अअ़ता वत्तक़ा व सद्दक़ा बिल-हुस्ना फ़सनुयस्सिरुहू लिलयुसरा व अम्मा ममबख़िला वसतग़ना व कज़्ज़बा बिल-हुस्ना फ़सनुयस्सिरुहू लिलउस्रा।* (बुख़ारी व मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत अली (रज़ि॰) से रिवायत है, उन्हों ने कहा, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से हर शख़्स की जन्नत और दोज़ख़ लिखी जा चुकी है लोगों ने उस पर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! फिर हम अपने लिखे हुये का क्यों न सहारा लें और अमल (कर्म) छोड़ दें? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया नहीं, अमल करो क्योंकि हर शख़्स को उसी चीज़ की तौफ़ीक़ मिलती है जिस के लिये वह पैदा किया गया है, जो ख़ुशनसीब है उस को जन्नती कामों की तौफ़ीक़ मिलती है और जो बदनसीब (जहन्नमी) है उस को जहन्नमी कामों की तौफ़ीक़ मिलती है, उस के बाद हुज़ूर (सल्ल॰) ने सूरह अल-लैल की यह दो आयतें पढ़ीं (जो ऊपर हदीस में लिखी हुई हैं जिन का मतलब यह है कि) जिस ने माल ख़र्च किया और तक़्वा की राह अपनाई और बेहतरीन बात को स्वीकार किया (यानी इस्लाम लाया) तो हम उस को अच्छी ज़िन्दगी यानी जन्नत की तौफ़ीक़ देंगे और जिस ने अपना माल देने में कंजूसी से काम लिया और (ख़ुदा से) बेपरवाह और अच्छी ज़िन्दगी को झुटलाया तो हम उस को तकलीफ़ वाली ज़िन्दगी (जहन्नम) की तौफ़ीक़ देंगे।

यानी अल्लाह के यहाँ यह बात तैय है कि आदमी अपने किन कर्मों की वजह से दोज़ख़ का हक़दार होगा और वह किन कर्मों की वजह से जन्नत में जाएगा। ख़ुदा ने इस "तक़दीर" को बड़ी तफ़सील (विस्तार) से कुरआन मजीद में बयान किया है और हुज़ूर (सल्ल॰) ने भी अच्छी तरह से स्पष्ट कर दिया है, अब यह आदमी का अपना काम है कि वह जहन्नम की राह पर चलना पसन्द करता है या जन्नत की राह पर, दोनों में से एक को अपनाना यह उस की ज़िम्मेदारी है, और उस की ज़िम्मेदारी इस लिये है कि ख़ुदा ने उस को इरादा की आज़ादी दी है और रास्ते को चुनने में आज़ाद छोड़ दिया है यही आज़ादी उस को सज़ा दिलवाएगी और उसी की वजह से वह जन्नत पाएगा। लेकिन बहुत से कमअक़्ल लोग अपनी ज़िम्मेदारी को ख़ुदा के सिर डाल देते है। और अपने को मजबूर समझते हैं।

(۲۵) عَنْ اَبِیْ خِزَامَۃَ عَنْ اَبِیْہِ قَالَ، قُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ! اَرَاَیْتَ رُقًی نَسْتَرْقِیْھَا وَدَوَاءً
نَتَدَاوٰی بِہٖ تُقَاۃً نَتَّقِیْھَا ھَلْ یَرُدُّ مِنْ قَدَرِ اللّٰہِ شَیْئًا؟ قَالَ ھِیَ مِنْ قَدَرِ اللّٰہِ۔ (ترمذی)

25. *अन अबी ख़िज़ामता अन अबीहि काला, कुलतु या रसूलल्लाहि! अ-रऔता रुक़न नसतरक़ीहा व दवाइन नतदावा बिही तुक़ातन नत्तक़ीहा हल यरुद्दु मिन क़दरिल्लाहि शेआ? काला हिया मिन क़दरिल्लाहि।* (तिर्मिज़ी)

अनुवादः- अबी ख़िज़ामा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने कहा, मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि यह दुआ तअवीज़ जिसे हम अपनी बीमारियों के सिलसिले में करते हैं और यह दवाएँ जो हम अपनी बीमारी को दूर करने के लिये इस्तेमाल करते हैं, और दुखों और मुसीबतों से बचने के लिये जो उपाय हम करते हैं, क्या यह अल्लाह की तक़दीर को टाल सकती हैं? आप ने फ़रमाया यह सब चीज़ें भी तो अल्लाह की तक़दीर में से हैं।

हुज़ूर के जवाब का खुलासा यह है कि जिस ख़ुदा ने यह बीमारी हमारे लिये लिखी उसी ख़ुदा ने यह भी तैय किया कि फ़ुलाँ दवा से और फ़ुलाँ तदबीर से दूर की जा सकती है, ख़ुदा बीमारी का पैदा करने वाला भी है और उस को दूर करने वाली दवा का भी। सब कुछ उस के तैय किये हुये क़ायदे क़ानून के मुताबिक़ हैं।

(۲۶) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍؓ قَالَ کُنْتُ خَلْفَ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَوْمًا فَقَالَ یَا غُلَامُ
اِنِّیْ اُعَلِّمُکَ کَلِمٰتٍ، اِحْفَظِ اللّٰہَ یَحْفَظْکَ، اِحْفَظِ اللّٰہَ تَجِدْہُ تِجَاھَکَ، اِذَا سَاَلْتَ
فَاسْئَلِ اللّٰہَ وَاِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللّٰہِ وَاعْلَمْ اَنَّ الْاُمَّۃَ لَوِ اجْتَمَعَتْ عَلٰی اَنْ یَّنْفَعُوْکَ
بِشَیْءٍ لَمْ یَنْفَعُوْکَ بِشَیْءٍ اِلَّا قَدْ کَتَبَہُ اللّٰہُ لَکَ، وَلَوِ اجْتَمَعُوْا عَلٰی اَنْ یَّضُرُّوْکَ
بِشَیْءٍ لَّمْ یَضُرُّوْکَ اِلَّا بِشَیْءٍ قَدْ کَتَبَہُ اللّٰہُ عَلَیْکَ۔ (مشکوۃ)

26. *अन इब्ने अब्बासिन (रज़ि०) काला कुनतु ख़लफ़न्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यौमन फ़क़ाला या ग़ुलामु इन्नी उअल्लिमुका कलिमातिन, इहफ़ज़िल्लाहा यहफ़ज़्का, इहफ़ज़िल्लाहा तजिदहु तिजाहका, इज़ा सअलता फ़स्अलिल्लाहा व इज़स्तअनता फ़स्तइन बिल्लाहि वअलम अन्नलउम्मता लविजतमअत अला*

अंय्यनफ़ऊका बिशैइल लम यनफ़ऊका बिशैइन इल्ला क़द कतबहुल्लाहु लका व लविजतमऊ अला अंय्यज़ुर्रुका बिशैइल्लम यज़ुर्रुका इल्ला बिशैइन क़द कतबहुल्लाहु अलैका। (मिश्कात)

अनुवादः– इब्ने अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक दिन जबकि मैं आप (सल्ल०) के पीछे सवारी पर बैठा था आप ने फ़रमाया, ऐ लड़के मैं तुझे कुछ बातें बताता हूँ (ध्यान से सुन) देख तू ख़ुदा को याद रख तो ख़ुदा तुझे याद रखेगा तू ख़ुदा को याद रख तो ख़ुदा को अपने सामने पाएगा, जब मांगे तो ख़ुदा से मांग, जब तू किसी मुश्किल में मदद चाहे तो ख़ुदा से मदद मांग, ख़ुदा को अपना मदद करने वाला बना, और इस बात का यक़ीन कर कि लोग जमा होकर एक साथ तुझे कोई नफ़ा पहुंचाना चाहें तो वह तुझे नफ़ा नहीं पहुंचा सकते, सिवाये उस के जो अल्लाह ने तेरे लिये लिख दिया है (यानी किसी के पास देने को कुछ है ही नहीं कि देगा, सब कुछ तो ख़ुदा का है, वह जितना देने का किसी के हक़ में फ़ैसला करता है उतना ही मिलता है चाहे जिस ज़रिये से मिले) और अगर लोग इकट्ठा हो कर तुझे कोई नुक़सान पहुंचाना चाहें तो वह कुछ भी नुक़सान नहीं पहुंचा सकते, सिवाये उस के जो अल्लाह ने तेरी क़िस्मत में लिख दिया है। (तो फिर अल्लाह ही को अपना अकेला सहारा बनाना चाहिये।

(٢٧) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْمُؤْمِنُ الْقَوِيُّ خَيْرٌ وَّاَحَبُّ اِلَى اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِ الضَّعِيْفِ، وَفِيْ كُلٍّ خَيْرٌ، اِحْرِصْ عَلٰى مَا يَنْفَعُكَ وَاسْتَعِنْ بِاللّٰهِ وَلَا تَعْجِزْ، وَاِنْ اَصَابَكَ شَيْءٌ فَلَا تَقُلْ لَوْ اِنِّيْ فَعَلْتُ كَانَ كَذَا وَ كَذَا وَلٰكِنْ قُلْ قَدَّرَ اللّٰهُ، مَا شَاءَ فَعَلَ، فَاِنَّ "لَوْ" تَفْتَحُ عَمَلَ الشَّيْطٰنِ. (مشکوة-ابوہریرہؓ)

27. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल-मोमिनुल क़विय्यु ख़ैरुवं वअहब्बु इलल्लाहि मिनल मूमिनिज़्ज़ईफ़ि, वफ़ी कुल्लिन ख़ैरुन, इहरिस अला मा यनफ़उका वस्तइन बिल्लाहि वला तअजिज़, वइन असाबका शैउन फ़ला तक़ुल लौ इन्नी फ़अलतु काना कज़ा व कज़ा व लाकिन क़ुल क़द्दरल्लाहु, मा शाआ फ़अला, फ़इन्ना "लौ" तफ़तहु अमलश्शैतान।* (मिश्कात-अबू हुरैरा)

अनुवादः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ताक़तवर मोमिन बेहतर, और खुदा को ज़्यादा पसन्द है कमज़ोर मोमिन के मुक़ाबले में, और दोनों ही में भलाई और नफ़ा है, और तू (आख़िरत में) नफ़ा देने वाली चीज़ का हरीस बन, और अपनी मुश्किलों में खुदा से मदद मांग और हिम्मत न हार, और अगर तुझ पर कोई मुसीबत आ पड़े तो यूँ मत सोच कि अगर मैं ऐसा करता तो यूँ हो जाता, बल्कि ऐसा सोच कि अल्लाह ने यह मुक़द्दर फ़रमाया, जो उस ने चाहा वह किया, इस लिये कि "लौ" (अगर) शैतान के अमल का दरवाज़ा खोलता है।

इस हदीस के पहले हिस्से का मतलब यह है कि एक तो वह मोमिन है जो जिस्मानी और फ़िक्री कुव्वत ज़्यादा रखता है तो ज़ाहिर है जब वह अपनी सारी कुव्वत खुदा की राह में ख़र्च करेगा तो दीन का काम उस के हाथों ज़्यादा होगा उस शख़्स के मुक़ाबले में जो कमज़ोर है जिस की सेहत ख़राब है, या फ़िक्री लिहाज़ से ऊँचा नहीं तो खुदा की राह में वह भी अपनी कुव्वतों को लगाएगा मगर उतना काम तो नहीं कर सकता जितना पहला आदमी करता है। इस लिये उसे दूसरे के मुक़ाबले में इनआम ज़्यादा मिलना ही चाहिये, हाँ दोनों चूंकि एक ही राह यानी खुदा की राह के मुसाफ़िर हैं इस लिये इस कमज़ोर मोमिन को थोड़ा काम करने की वजह से इनआम से महरूम न किया जाएगा। असल में ताक़त रखने वाले मोमिन को यह बताना मक़सद है कि अपनी ताक़त की क़द्र करो, उस के ज़रिए जितना आगे बढ़ सकते हो बढ़ो, कमज़ोरी आ जाने के बाद आदमी करना भी चाहे तो नहीं कर पाता, और आख़िरी हिस्से का मतलब यह है कि मोमिन अपनी ज़िहानत और उपाय व कुव्वत को सहारा नहीं बनाता, बल्कि उस पर जब मुसीबत आती है तो उस का ज़ेहन यूँ सोचता है कि यह मुसीबत मेरे रब की तरफ़ से आई है, यह तो मेरे सुधार के कोर्स का एक हिस्सा है और इस तरह यह मुसीबत उस के भरोसे को बढ़ाने का ज़रिया बन जाती है।

आलाम-ए-रोज़गार को आसाँ बना दिया
जो ग़म हुआ, उसे ग़म-ए-जानाँ बना दिया

आख़िरत पर ईमान लाने का मतलब

(۲۸) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ کَیْفَ اَنْعَمُ وَصَاحِبُ الصُّوْرِ قَدِ الْتَقَمَہٗ وَاَصْغٰی سَمْعَہٗ وَقَنٰی جَبْھَتَہٗ یَنْتَظِرُ مَتٰی یُؤْمَرُ بِالنَّفْخِ، فَقَالُوْا یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ فَمَاذَا تَاْمُرُنَا؟ قَالَ قُوْلُوْا حَسْبُنَا اللّٰہُ وَنِعْمَ الْوَکِیْلُ (ترمذی-ابوسعید خدری)

28. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कैफ़ा अनअमु व साहिबुस्सूरि क़दिल तक़महू वस्ग़ा समअहू व क़ना जबहतहू यनतज़िरु मता यूमरु बिन्नफ़्ख़, फ़क़ालू या रसूलल्लाहि फ़माज़ा तामुरुना? काला कूलू हसबुनल्लाहु व निअमल-वकील।*

(तिर्मिज़ी अबू सईद ख़ुदरी)

> **अनुवादः–** हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मैं ऐश व आराम और बे फ़िक्री की ज़िन्दगी कैसे गुज़ार सकता हूँ जबकि हाल यह है कि इसराफ़ील (अलैहिस्सलाम) सूर मुंह में लिये, कान लगाये, माथा झुकाये इन्तिज़ार कर रहे हैं कि कब हुक्म होता है सूर फूंकने का? (सूर बुगल "ढोल" को कहते हैं जिस के ज़रिए फ़ौज को ख़तरे की ख़बर दी जाती है) क़यामत के सूर की हक़ीक़त कौन जान सकता है?) लोगों ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! फिर हमें आप क्या हुक्म देते हैं आप ने फ़रमाया यह पढ़ते रहो हस्बुना......(अल्लाह हम को काफ़ी है और वह बेहतर काम बनाने वाला और देख भाल करने वाला है।

लोग आप की बेचैनी और फ़िक्र को देख कर और ज़्यादा परेशान हुये और पूछा कि जब आप का यह हाल है तो हमारा क्या हाल होगा, बताईये हम क्या करें कि उस दिन कामियाब हों आप (सल्ल०) ने उन को बताया कि ख़ुदा पर भरोसा रखो, उस की निगरानी में ज़िन्दगी गुज़ारो, उस की बन्दगी में जीने वाले कामियाब होंगे।

(۲۹) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَنْ سَرَّہٗ اَنْ یَّنْظُرَ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَۃِ کَاَنَّہٗ رَاْیُ عَیْنٍ، فَلْیَقْرَاْ اِذَا الشَّمْسُ کُوِّرَتْ وَاِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ، وَاِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ.

(ترمذی-ابن عمر)

29. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन सर्रहू अय्यंनज़ुरा इला यौमिल कियामति कअन्नहू रअयु ऐनिन फलयकरअ इज़श्शमसु कुव्विरत वइज़स्समाउन फतरत व इज़स्समाउन शक़्क़त।*

(तिर्मिज़ी - इब्ने उमर)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अगर कोई शख़्स क़यामत के दिन अपनी आँखों से देखना चाहता है तो उसे चाहिये कि यह तीन सूरतें पढ़े, इज़श्शमसू कुव्विरत, व इज़स्समाउन फ़तरत और इज़स्समाउन शक़्क़त (इन तीनों सूरतों में बहुत ही असर डालने वाले अन्दाज़ में क़यामत का नक़शा खींचा गया है)

(٣٠) قَرَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هٰذِهِ الْاٰيَةَ "يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا" قَالَ اَتَدْرُوْنَ مَا اَخْبَارُهَا؟ قَالُوْا اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ، قَالَ فَاِنَّ اَخْبَارَهَا اَنْ تَشْهَدَ عَلٰى كُلِّ عَبْدٍ وَّ اَمَةٍ بِمَا عَمِلَ عَلٰى ظَهْرِهَا اَنْ تَقُوْلَ عَمِلَ عَلَيَّ كَذَا وَ كَذَا يَوْمَ كَذَا وَ كَذَا، قَالَ فَهٰذِهٖ اَخْبَارُهَا. (ترمذی-ابوہریرہ)

30. *करआ रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा हाज़िहिल आयता "यौमइज़िन तुहद्दिसु अख़बारहा" काला अ-तदरूना मा अख़बारहा? कालू अल्लाहु व रसूलुहू अअलमु, काला फइन्ना अख़बारहा अन तशहदा अला कुल्लि अब्दिवं वअमतिन बिमा अमिला अला ज़हरिहा अन तकूला अमला अलय्या कज़ा व कज़ा यौमा कज़ा व कज़ा, काला फहाज़िही अख़बारुहा।*

(तिर्मिज़ी - अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी "यौमइज़िन तुहद्दिसु अख़बारहा" (उस दिन ज़मीन अपने सारे हालात बयान करेगी) और सहाबा (रज़ि॰) से पूछा ज़ानते हो, हालात बयान करने का मतलब क्या है? लोगों ने कहा अल्लाह और उस के रसूल को ही इल्म है, आप ने फ़रमाया कि ज़मीन क़यामत के दिन गवाही देगी कि फ़ुलाँ मर्द या फ़ुलाँ औरत ने मेरी पीठ पर फ़ुलाँ दिन और फ़ुलाँ वक़्त में बुरा या अच्छा काम किया, यही मतलब है इस आयत का, लोगों के इन कर्मों को आयत में "अख़बार" कहा गया है।

(٣١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْكُمْ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا سَيُكَلِّمُهُ رَبُّهُ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ تَرْجَمَانٌ وَّلَا حَاجِبٌ يَّحْجُبُهُ فَيَنْظُرُ اَيْمَنَ مِنْهُ فَلَا يَرٰى اِلَّا مَا قَدَّمَ مِنْ عَمَلِهٖ وَيَنْظُرُ اَشْاَمَ مِنْهُ فَلَا يَرٰى اِلَّا مَا قَدَّمَ، وَيَنْظُرُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَلَا يَرٰى اِلَّا النَّارَ تِلْقَاءَ وَجْهِهٖ فَاتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ. (متفق عليه-عدی)

31. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा मिनकुम मिन अहदिन इल्ला सयुकल्लिमुहू रब्बुहू लैसा बैनहू व बैनहू तरजमानुवं वला हाजिबुयं यहजुबुहू फयंज़ुरु ऐमना मिनहु फला यरा इल्ला मा कद्दमा मिन अमलिही व यंज़ुरु अशअमा मिनहु फला यरा इल्ला मा कद्दमा, व यंज़ुर बैना यदैहि फला यरा इल्लन्नारा तिलकाआ वजहिही फत्तकुन्नारा वलौ बिशिक़्क़ि तमरतिन।* (मुत्तफ़क़ अलैह - अदी)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, तुम में से हर शख़्स से अल्लाह खुद बात करेगा (हिसाब लेगा) और वहाँ न तो उस का कोई सिफ़ारशी होगा और न कोई पर्दा होगा जो उसे छिपा ले, यह शख़्स अपनी दाएँ तरफ़ देखेगा (कि कोई सिफ़ारशी और मदद करने वाला है) तो अपने कर्मों के अलावा उसे और कोई नज़र न आएगा, फिर बाएँ तरफ़ देखेगा तो उधर भी अपने कर्मों के अलावा कोई दिखाई न देगा, फिर सामने की तरफ़ नज़र दौड़ाएगा तो उधर भी सिर्फ़ दोज़ख़ (अपनी तमाम ख़ौफ़नाकियों के साथ) देखेगा, तो ऐ लोगो! आग से बचने की फ़िक्र करो, एक खुजूर का आधा हिस्सा ही दे कर सही।

इस मौक़ा पर हुज़ूर (सल्ल०) को इनफ़ाक़ (खुदा के दीन और खुदा के बेसहारा बन्दों पर ख़र्च करना) की शिक्षा दे रहे थे इस लिये सिर्फ़ इसी का ज़िक्र किया, फ़रमाते हैं कि अगर किसी के पास सिर्फ़ एक खुजूर है और वह उस का आधा हिस्सा देता है तो यह भी खुदा की निगाह में क़ीमती है, वह माल की कमी बेशी नहीं देखता बल्कि ख़र्च करने वाले के जज़्बा को देखता है।

(٣٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَلْقَى الْعَبْدَ فَيَقُوْلُ اَیْ فُلُ اَلَمْ اُكْرِمْكَ وَاُسَوِّدْكَ وَاُزَوِّجْكَ وَاُسَخِّرْ لَكَ الْخَيْلَ وَالْاِبِلَ وَاَذَرْكَ تَرْاَسُ

وَتَرْبَعُ؟ فَيَقُولُ بَلٰى، قَالَ فَيَقُولُ اَفَظَنَنْتَ اَنَّكَ مُلَاقِيَّ؟ فَيَقُولُ لَا، فَيَقُولُ فَاِنِّي قَدْ اَنْسَاكَ كَمَا نَسِيْتَنِيْ، ثُمَّ يَلْقَى الثَّانِيْ فَذَكَرَ مِثْلَهٗ ثُمَّ يَلْقَى الثَّالِثَ فَيَقُولُ لَهٗ مِثْلَ ذٰلِكَ، فَيَقُولُ يَا رَبِّ اٰمَنْتُ بِكَ وَبِكِتَابِكَ وَبِرُسُلِكَ وَصَلَّيْتُ وَصُمْتُ وَتَصَدَّقْتُ وَيُثْنِيْ بِخَيْرٍ مَا اسْتَطَاعَ فَيَقُولُ هٰهُنَا اِذًا، ثُمَّ يُقَالُ الْاٰنَ نَبْعَثُ شَاهِدًا عَلَيْكَ، فَيَتَفَكَّرُ فِيْ نَفْسِهٖ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْهَدُ عَلَيَّ، فَيُخْتَمُ عَلٰى فِيْهِ، وَيُقَالُ لِفَخِذِهٖ اِنْطِقِيْ فَتَنْطِقُ فَخِذُهٗ وَلَحْمُهٗ وَعِظَامُهٗ بِعَمَلِهٖ وَذٰلِكَ لِيُعْذِرَ مِنْ نَفْسِهٖ، فَذٰلِكَ الْمُنَافِقُ وَذٰلِكَ الَّذِيْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِ. (مسلم - ابوہریرہؓ)

32. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फयलकल अब्दा फयकूलु ऐ फुलु अलम उकरिमका व उसव्विदका व उज़व्विजका व उसख़्ख़िर लकल-ख़ैला वल इबिला व अज़रका तरअसु व तरबउ? फयकूलु बला, काला फयकूलु अफज़नन्ता अन्नका मुलाकिय्या? फयकूलु ला, फयकूलु फइन्नी कद अनसाका कमा नसीतनी, सुम्मा यलकस्सानी फज़करा मिसलहू सुम्मा यलकस्सालिसा फयकूलु लहू मिस्ला ज़ालिका, फयकूलु या रब्बि आमन्तु बिका व बिकिताबिका व बिरुसुलिका वसल्लैतु व सुम्तु व तसद्दकतु व युसनी बिख़ैरिम मस्तताआ फयकूलु हाहुना इज़न, सुम्मा युकालुलआना नबअसु शाहिदन अलैका, फयतफक्करु फी नफ़्सिही मन ज़ल्लज़ी यशहदु अलय्या, फयुख़तमु अला फीहि, व युकालु लिफख़िज़िही इनतकी फतनतिकु फख़िज़ुहू व लहमुहू व इज़ामुहू बिअमलिही व ज़ालिका लियुअज़िरा मिन नफ़्सिही, फज़ालिकल मुनाफिकु व ज़ालिकल्लज़ी सख़ितल्लाहु अलैहि।* (मुस्लिम - अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं (क़यामत के दिन) एक बन्दा खुदा के सामने आएगा, खुदा उस से कहेगा ऐ फुलाँ क्या मैं ने तुझे इज़्ज़त नहीं दी थी? क्या तुझे बीवी नहीं दी थी? क्या तेरे क़ब्ज़े में घोड़े और ऊँट नहीं दिये थे? और क्या हम ने तुझे मुहलत नहीं दी थी? तू अपनी हुकूमत चलाता और लोगों से मालिया वुसूल करता था? वह उन नेमतों को स्वीकार करेगा फिर अल्लाह उस से पूछेगा क्या तू समझता था कि एक दिन हमारे सामने पेश होगा? वह कहेगा नहीं, तो अल्लाह उस से कहेगा जिस तरह तूने मुझे दुनिया में भुलाये

रखा उसी तरह आज मैं तुझे भुला दूंगा। फिर ऐसा ही एक दूसरा (क़यामत का इन्कार करने वाला) ख़ुदा के सामने आएगा और उस से भी इसी तरह सवाल होगा। फिर एक तीसरा शख़्स पेश होगा और अल्लाह उस से वही सवालात (प्रश्न) करेगा जो पहले दोनों आदमियों से किये थे (जो काफ़िर थे) तो यह जवाब में कहेगा, ऐ मेरे रब मैं तुझ पर, तेरी किताब पर और तेरे रसूलों पर ईमान लाया था, मैं नमाज़ पढ़ता था, रोज़े रखता था तेरी राह में अपनी दौलत ख़र्च करता था (हुज़ूर ने फ़रमाया) और उसी तरह पूरी कुव्वत से अपने और बहुत से नेक काम गिनाएगा, तब अल्लाह तआला उस से कहेगा बस रुक जाओ। फिर अल्लाह फ़रमाएगा, हम अभी तेरे ख़िलाफ़ गवाही देने वाला बुलाते हैं तो वह अपने दिल में सोचेगा कि भला वह कौन है, जो मेरे ख़िलाफ़ गवाही देगा। फिर उस के मुंह को मुहर लगा कर बन्द कर दिया जाएगा (क्योंकि यह अल्लाह के सामने भी झूट बोलने से न शर्माएगा जिस तरह दुनिया में नबी और मोमिनीन के सामने बेशर्मी से झूटी पवित्रता का ढंढोरा पीटा करता था, और उस की रान, गोश्त और हड्डियों से पूछा जाएगा तो वह सब उस शख़्स के एक-एक मक्काराना अमल को ठीक-ठीक बयान कर देंगे और इस तरह अल्लाह बातें बनाने का दरवाज़ा बन्द कर देगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह वह आदमी है जिस ने दुनिया में मुनाफ़िक़त की, और यह शख़्स है जिस पर ख़ुदा का ग़ज़ब हुआ।

(۳۳) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ فِيْ بَعْضِ صَلٰوتِهٖ اَللّٰهُمَّ حَاسِبْنِيْ حِسَابًا يَّسِيْرًا قُلْتُ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ مَا الْحِسَابُ الْيَسِيْرُ؟ قَالَ اَنْ يُّنْظَرَ فِيْ كِتٰبِهٖ فَيَتَجَاوَزَ عَنْهُ، اِنَّهٗ مَنْ نُوْقِشَ الْحِسَابَ يَاعَائِشَةُ هَلَكَ. (مسند احمد)

33. *अन आयशता क़ालत समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यक़ूलु फ़ी बअज़ि सलवातिही अल्लाहुम्मा हासिब्नी हिसाबंय्यसीरा क़ुल्तु या नबिय्यल्लाहि मलहिसाबुल यसीरु? क़ाला अय्यनज़ुरा फ़ी किताबिही फ़युतजावज़ा अनहु, इन्नहू मन नुक़िशल हिसाबा या आयशतु हलका।* (मुसनद अहमद)

अनुवादः- हज़रत आयशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि मैं ने हुज़ूर (सल्ल॰) को कुछ नमाज़ों में यह दुआ करते हुये सुना "अल्लाहुम्मा हासिब्नी हिसाबयं यसीरा" (ऐ अल्लाह! मुझ से आसान हिसाब कीजियो) तो मैं ने पूछा आसान हिसाब का मतलब क्या है? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, आसान हिसाब यह है कि अल्लाह बन्दा का आमालनामा देखे और उस की बुराईयों को माफ़ कर दे, फिर फ़रमाया ऐ आयशा! जिस का हिसाब लेते वक़्त एक एक चीज़ की कुरेद की गई तो उस क़ी ख़ैर नहीं।

कुरआन मजीद और दूसरी हदीसों में साफ़तौर पर यह खुशख़बरी दी गई है कि जो लोग खुदा की राह पर चलते हैं और बुराई की ताक़तों से लड़ते रहते हैं यहाँ तक कि लड़ते लड़ते उन की ज़िन्दगी की मुहलत ख़त्म हो गई, तो क़यामत में अल्लाह उन की ग़लतियों को माफ़ कर देगा और नेक कामों की क़द्र फ़रमाते हुये उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा।

(٣٤) عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِنِ الْخُدْرِیِّ اَنَّهٗ اَتٰی رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَقَالَ اَخْبِرْنِیْ مَنْ یَّقْوٰی عَلَی الْقِیَامِ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ الَّذِیْ قَالَ اللّٰہُ عَزَّ وَجَلَّ "یَوْمَ یَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ" فَقَالَ یُخَفَّفُ عَلَی الْمُؤْمِنِ حَتّٰی یَکُوْنَ عَلَیْہِ کَالصَّلٰوۃِ الْمَکْتُوْبَۃِ.

(مشکوٰۃ)

34. *अन अबी सईदिनिल ख़ुदरिय्यि अन्नहू अता रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़क़ाला अख़्बिरनी मय्यक़्वा अलल क़ियामि यौमल क़ियामति अल्लज़ी क़ालल्लाहु अज़्ज़ा व जल्ला "यौमा यक़ूमुन्नासु लिरब्बिल आलमीन" फ़क़ाला युख़फ़्फ़फ़ु अलल मुमिनि हत्ता यकूना अलैहि कस्सलातिल मकतूबति।* (मिश्कात)

अनुवादः- अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ कहते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा कि उस दिन जिस के बारे में अल्लाह ने फ़रमाया है *"यौमा यक़ूमुन्नासु लिरब्बिल आलमीन"* (तू उस दिन को सोच जब लोग हिसाब किताब के लिये संसार के मालिक के सामने खड़े होंगे) उस दिन भला कौन लोग खड़े रह सकेंगे (जबकि

वह एक दिन हज़ार बरस के बराबर होगा) आप सल्ल॰ ने फ़रमाया (उस दिन की सख़्ती मुजरिमों और बाग़ियों के लिये है, उन्हें वह एक हज़ार बरस का मालूम होगा, मुसीबत में पड़े हुये आदमी का दिन लम्बा होता है, काटे नहीं कटता) वह दिन मोमिनों के लिये हल्का होगा सिर्फ़ हल्का ही नहीं होगा बल्कि फ़र्ज़ नमाज़ की तरह उस की आँखों की ठंडक बन जाएगा।

(۳۵) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى اَعْدَدْتُ لِعِبَادِیَ الصّٰلِحِيْنَ مَالَا عَيْنٌ رَاَتْ وَلَا اُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلٰى قَلْبِ بَشَرٍ اِقْرَءُوْا اِنْ شِئْتُمْ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا اُخْفِیَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ. (بخاری ومسلم)

35. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कालल्लाहु तआला .अअदत्तु लिइबादियस सालिहीना माला ऐनुन रअत वला उज़ुनुन समिअत वला ख़तरा अला क़ल्बि बशरिन इक़रऊ इन शिअतुम फला तअलमु नफ़्सुन मा उख़फ़िया लहुम मिन क़र्रति अअयुनिन।* (बुख़ारी व मुस्लिम)

अनुवादः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं ने अपने नेक बन्दों के लिये वह कुछ तैयार कर रखा है जिस को किसी आँख ने नहीं देखा, जिस के बारे में किसी कान ने नहीं सुना और किसी के दिल में उस का गुज़र तक नहीं हुआ, तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लो "*फ़ला तअलमु*" (कोई शख़्स नहीं जानता कि नेक बन्दों के लिये कितनी ख़ुशियाँ हैं जो छुपी रखी गई हैं, क़यामत में मिलेंगी)।

(۳۶) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَوْضِعُ سَوْطٍ فِی الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِّنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا. (بخاری ومسلم)

36. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मौज़िउ सौतिन फ़िलजन्नति ख़ैरुम मिनद्दुनिया वमा फ़ीहा।* (बुख़ारी व मुस्लिम)

अनुवादः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत में एक कूड़ा रखने की जगह दुनिया और दुनिया के सामान से बेहतर है।

"कूड़ा रखने की जगह" से मुराद वह थोड़ी सी जगह है जहाँ आदमी अपना बिस्तर बिछा कर पड़ा रहता है, मतलब यह कि ख़ुदा के दीन पर चलने में किसी की दुनिया तबाह हो जाए तमाम साज़ व सामान से महरूम हो जाए और उस के बदले जन्नत की मुख़्तसर और थोड़ी सी ज़मीन मिल जाए तो यह बड़ा सस्ता सौदा है, ख़त्म होने वाली चीज़ की क़ुर्बानी देने के नतीजे में अल्लाह ने उसे वह चीज़ दी जो हमेशा बाक़ी रहने वाली है।

(٣٧) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُؤْتٰى بِاَنْعَمِ اَهْلِ الدُّنْيَا مِنْ اَهْلِ النَّارِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَيُصْبَغُ فِي النَّارِ صَبْغَةً ثُمَّ يُقَالُ يَاابْنَ اٰدَمَ هَلْ رَاَيْتَ خَيْرًا قَطُّ؟ هَلْ مَرَّبِكَ نَعِيْمٌ قَطُّ؟ فَيَقُوْلُ لَا وَاللّٰهِ يَارَبِّ، وَيُؤْتٰى بِاَشَدِّ النَّاسِ بُؤْسًا فِي الدُّنْيَا مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ فَيُصْبَغُ صَبْغَةً فِي الْجَنَّةِ فَيُقَالُ لَهٗ يَاابْنَ اٰدَمَ هَلْ رَاَيْتَ بُؤْسًا قَطُّ؟ هَلْ مَرَّبِكَ شِدَّةٌ قَطُّ؟ فَيَقُوْلُ لَا وَاللّٰهِ يَا رَبِّ مَا مَرَّبِي بُؤْسٌ وَّلَا رَاَيْتُ شِدَّةً قَطُّ. (مسلم)

37. *क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यूता बिअनअमि अहलिद्दुनिया मिन अहलिन्नारि यौमल क़ियामति फयुसबग़ु फिन्नारि सबग़तन सुम्मा युक़ालु यबना आदमा हल रऐता ख़ैरन क़त्तु? हल मर्रा बिका नईमुन क़त्तु? फयक़ूलु ला वल्लाहि या रब्बि व यूता बिअशद्दिन्नासि बूअसन फिद्दुनिया मिन अहलिल जन्नति फयुसबग़ु सबग़तन फिल-जन्नति फयुक़ालु लहू यबना आदमा हल रऐता बुअसन क़त्तु? हल मर्रा बिका शिद्दतुन क़त्तु? फयक़ूलु ला वल्लाहि या रब्बि मा मर्रा बी बूसुवं वला रऐतु शिद्दतन क़त्तु।* (मुस्लिम)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, दुनिया के सब से ज़्यादा ख़ुशहाल दोज़ख़ी को लाया जाएगा और जहन्नम में डाल दिया जाएगा, जब आग उस के पूरे जिस्म पर अपना असर दिखएगी तब उस से पूछा जाएगा कि कभी तूने अच्छी हालत देखी है? तुझ पर कभी ऐश व आराम का ज़माना आया है? वह कहेगा नहीं, तेरी क़सम ऐ मेरे रब! कभी नहीं। फिर दुनिया में बहुत ही तंगी (ग़रीबी) की हालत में ज़िन्दगी गुज़ारने वाले जन्नती को लाया जाएगा, जब उस पर जन्नत की

नेमतों का ख़ूब रंग चढ़ जाएगा तब उस से पूछा जाएगा कि तूने कभी तंगी देखी है? कभी तुझ पर कठिनाईयों का ज़माना गुज़रा है? वह कहेगा ऐ मेरे रब! मैं कभी तंगी और ग़रीबी में गिरिफ़्तार नहीं हुआ, मैं ने कठिनाई का कोई ज़माना कभी नहीं देखा।

(٣٨) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حُفَّتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ وَحُفَّتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ. (بخاری ومسلم)

38. *काला रसूलुल्लहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा हुफ़्फ़तिन्नारु बिश्शहवाति व हुफ़्फ़तिल जन्नतु बिलमकारिही।* (बुख़ारी व मुस्लिम)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जहन्नम को लज़्ज़तों और नफ़्स की ख़्वाहिशों से घेर दिया गया है और जन्नत को सख़्तियों और परेशानियों से घेर दिया गया है।

मतलब यह कि जो शख़्स अपने नफ़्स (असतित्व) की पूजा करेगा और दुनिया की लज़्ज़तों में पड़ेगा उस का ठिकाना जहन्नम है, और जिस को जन्नत लेने की तमन्ना हो तो वह काँटों भरी राह अपनाये अपने नफ़्स को हरा कर उसको हर परेशानी और हर नागवारी को अल्लाह के लिये बरदाश्त करने पर मजबूर करे, जब तक कोई शख़्स इस कठिन घाटी को पार नहीं करता, आराम व सुख में कैसे पहुंचेगा।

(٣٩) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا رَاَيْتُ مِثْلَ النَّارِ نَامَ هَارِبُهَا مِثْلَ الْجَنَّةِ نَامَ طَالِبُهَا. (ترمذی)

39. *काला रसूलुल्लहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा रऐतु मिस्लन्नारि नामा हारिबिहा मिसलल जन्नति नामा तालिबुहा।* (तिर्मिज़ी)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं ने जहन्नम की आग से ज़्यादा ख़तरनाक कोई चीज़ नहीं देखी कि जिस से भागने वाला सो रहा है और जन्नत से ज़्यादा बेहतर चीज़ नहीं देखी कि जिस का चाहने वाला सो रहा है।

मतलब यह कि किसी ख़तरनाक चीज़ को देखने के बाद आदमी की नींद उड़ जाती है वह उस से भागता है, और जब तक सुकून न हो जाये

सोता नहीं, इसी तरह जिस को अच्छी चीज़ की फ़िक्र हो जाती है तो जब तक वह मिल न जाये न वह सोता है न चैन से बैठता है। अगर यह हक़ीक़त है तो जन्नत की तमन्ना करने वाले क्यों सो रहे हैं? यह जहन्नम से भागने की फ़िक्र क्यों नहीं करते? जिस को किसी चीज़ का डर होता है वह बेख़बर नहीं सोता और जिस के अन्दर अच्छी चीज़ की तड़प होती है वह चैन से नहीं बैठता।

(۴۰) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنِّى فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ مَنْ مَرَّ عَلَىَّ شَرِبَ، وَمَنْ شَرِبَ لَمْ يَظْمَأْ اَبَدًا، لَيَرِدَنَّ عَلَىَّ اَقْوَامٌ اَعْرِفُهُمْ وَ يَعْرِفُوْنَنِىْ ثُمَّ يُحَالُ بَيْنِىْ وَ بَيْنَهُمْ فَاَقُوْلُ اِنَّهُمْ مِنِّى، فَيُقَالُ اِنَّكَ لَا تَدْرِىْ مَا اَحْدَثُوْا بَعْدَكَ. فَاَقُوْلُ سُحْقًا سُحْقًا لِمَنْ غَيَّرَ بَعْدِىْ. (بخاری، مسلم، سہل بن سعد)

40. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नी फरतुकुम अललहौज़ि मन मर्रा अलय्या शरिबा, व मन शरिबा लम यज़्मउ अबदन, लयरिदन्ना अलय्या अक्वामुन अअरिफुहुम व यअरिफूननी सुम्मा युहालु बैनी व बैनहुम फअकूलु इन्नहुम मिन्नी, फयुकालु इन्नका ला तदरी मा अहदसू बअदका, फअकूलु सुहकन सुहकन लिमन ग़य्यरा बअदी।* (बुख़ारी, मुस्लिम, सहल बिन सअद)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को मुख़ातिब करते हुये फ़रमाया मैं (हौज़े कौसर) पर तुम से पहले पहुंच कर तुम्हारा इसतक़बाल करूँगा, और तुम्हें पानी पिलाने का इन्तिज़ाम करूंगा, जो मेरे पास आएगा कौसर का पानी पियेगा, और जो पियेगा उसे फिर कभी प्यास न लगेगी, और कुछ लोग मेरे पास आएँगे, मैं उन्हें पहचानता हूँगा, और वह मुझे पहचानते होंगे, लेकिन उन्हें मेरे पास पहुंचने से रोक दिया जाएगा, तो मैं कहूँगा, यह मेरे आदमी हैं (उन्हें मुझ तक आने दो) तो जवाब में मुझ से कहा जाएगा कि आप नहीं जानते कि इन्हों ने आप की वफ़ात के बाद आप के दीन में कितनी नई चीज़ें (बिदआत) दाख़िल कर दी हैं तो (यह सुन कर) मैं कहूँगा, दूरी हो, दूरी हो उन लोगों के लिये जिन्हों ने मेरे बाद दीन के नक़शे को बदल डाला।

यह हदीस अपने अन्दर सब से बड़ी ख़ुशख़बरी भी रखती है और बहुत बड़ा डरावा भी। ख़ुशख़बरी यह कि हुज़ूर पाक (सल्ल०) उन लोगों का इसतक़बाल करेंगे जिन्हों ने आप के लाये हुये दीन को बग़ैर किसी कमी बेशी के कुबूल किया और उस पर अमल किया, और जो लोग जान बूझ कर दीन में नई चीज़ें दीन के नाम पर दाख़िल करेंगे जो दीन से टकराती हैं तो ऐसे लोग हुज़ूर (सल्ल०) तक पहुंचने और कौसर का पानी पीने से महरूम रह जाएँगे।

(٤١) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِیْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ خَالِصًا مِنْ قَلْبِهٖ اَوْ نَفْسِهٖ. (بخاری)

41. *अन अबी हुरैरता अनिन नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला असअदुन्नासि बिशफ़ाअती यौमल क़ियामति मन काला लाइलाहा इल्लल्लाहु ख़ालिसन मिन क़ल्बिही औ नफ़्सिही।*

(बुख़ारी)

अनुवादः- अबू हुरैरा (रज़ि०) की रिवायत है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअत वह हासिल कर सकेगा जिस ने दिल के पूरे ख़ुलूस के साथ कलमा लाइलाहा इल्लल्लाहु कहा होगा।

हुज़ूर (सल्ल०) का यह फ़रमान अपने अलफ़ाज़ के हिसाब से बहुत ही मुख़्तसर है लेकिन अपने मतलब के हिसाब से बहुत बड़ा है। मतलब यह कि जिस ने तौहीद को नहीं अपनाया, जिस ने इस्लाम कुबूल न किया, जो शिर्क की गंदगी ही में पड़ा रहा उस को हुज़ूर (सल्ल०) की शफ़ाअत हासिल न होगी। इसी तरह जिस ने ज़ुबान से तो कलमा कहा और दीन में दाख़िल हुआ, लेकिन दिल से उस को सच्चा न माना, वह भी हुज़ूर की शफ़ाअत से महरूम रहेगा, हुज़ूर सिर्फ़ उन लोगों के लिये शफ़ाअत फ़रमाएँगे जो दिल से ईमान लाये हों, जो तौहीद के हक़ होने पर यक़ीन रखते हों, जैसा कि दूसरी हदीस में مُسْتَيْقِنًا بِهَا قَلْبُهٗ "*मुस्तैक़ीनन बिहा क़ल्बुहू*" के शब्द आए हैं, फिर यह बात भी वाज़ेह है कि यक़ीन, अमल (कर्म) पर उभारता है, आदमी को अपने बच्चे के कुएँ में गिरने की ख़बर मिलती है तो जैसे ही उसे उस ख़बर पर यक़ीन होता है उसी वक़्त

दुखी होकर उसकी जान बचाने के लिये दौड़ पड़ता है, यही हाल दिली ईमान का है, यह आदमी के अन्दर निजात की फ़िक्र पैदा करता और आमाल पर उभारता है।

(۴۲) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَا مَعْشَرَ قُرَیْشٍ اِشْتَرُوْا اَنْفُسَکُمْ لَا اُغْنِیْ عَنْکُمْ مِنَ اللّٰهِ شَیْئًا، وَ یَا بَنِیْ عَبْدِ مَنَافٍ لَا اُغْنِیْ عَنْکُمْ مِنَ اللّٰهِ شَیْئًا یَا عَبَّاسَ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ لَا اُغْنِیْ عَنْکَ مِنَ اللّٰهِ شَیْئًا، وَیَا صَفِیَّةُ عَمَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ لَا اُغْنِیْ عَنْکِ مِنَ اللّٰهِ شَیْئًا، وَیَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَلِیْنِیْ مَا شِئْتِ مِنْ مَالِیْ لَا اُغْنِیْ عَنْکِ مِنَ اللّٰهِ شَیْئًا. (بخاری، مسلم)

42. *अन अबी हुरैरता काला, काला (रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा) या मअशरा कुरैशिन इशतरू अनफुसकुम ला उग़नी अनकुम मिनल्लाहि शैअन, व या बनी अब्दि मनाफिन ला उग़नी अनकुम मिनल्लाहि शैआ या अब्बासब्ना अब्दिल मुत्तलिबि ला उग़नी अनका मिनल्लाहि शैअन, व या सफ़िय्यतु अम्मता रसूलिल्लाहि ला उग़नी अनकि मिनल्लाहि शैअन, व या फ़ातिमतु बिन्ता मुहम्मदिन सलीनी मा शिअता मिम्माली ला उग़नी अनकि मिनल्लाहि शैआ।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवाद:- हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने फ़रमाया (जब सूरह शुअरा की आयत "वनज़िर अशीरतकल अक़रबीन" (अपने क़रीबी ख़ानदान वालों को डराओ) उतरी तो आप ने कुरैश को जमा किया और फ़रमाया: ऐ कुरैश की जमाअत! अपने आप को जहन्नम की आग से बचाने की फ़िक्र करो, मैं ख़ुदा के अज़ाब को तुम से ज़रा भी नहीं टाल सकता। ऐ अब्दे मनाफ़ के ख़ानदान वालो! मैं तुम से अल्लाह के अज़ाब को कुछ भी नहीं टाल सकता। ऐ अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब! (हक़ीक़ी चचा) मैं अल्लाह के अज़ाब को तुम से ज़रा भी नहीं हटा सकता। ऐ सफ़िया! (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हक़ीक़ी फूफी, मैं तुम से अल्लाह के अज़ाब को ज़रा भी नहीं हटा सकता। ऐ मेरी बेटी फ़ातिमा रज़ि० तू मेरे माल में से जितना मांगे मैं दे सकता हूँ लेकिन अल्लाह के अज़ाब को तुझ से नहीं हटा सकता (तो अपने आप को बचाने की फ़िक्र करो कि ईमान और अमल ही वहाँ काम आएँगे)।

(۴۳) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ، قَامَ فِیْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ یَوْمٍ، فَذَكَرَ الْغُلُوْلَ فَعَظَّمَهٗ وَعَظَّمَ اَمْرَهٗ ثُمَّ قَالَ لَا اُلْفِیَنَّ اَحَدَكُمْ یَجِیْءُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَلٰی رَقَبَتِهٖ بَعِیْرٌ لَّهٗ رُغَاءٌ یَّقُوْلُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَغِثْنِیْ، فَاَقُوْلُ لَا اَمْلِكُ لَكَ شَیْئًا، قَدْ اَبْلَغْتُكَ لَا اُلْفِیَنَّ اَحَدَكُمْ یَجِیْءُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَلٰی رَقَبَتِهٖ فَرَسٌ لَّهٗ حَمْحَمَةٌ یَّقُوْلُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَغِثْنِیْ فَاَقُوْلُ لَا اَمْلِكُ لَكَ شَیْئًا قَدْ اَبْلَغْتُكَ، لَا اُلْفِیَنَّ اَحَدَكُمْ یَجِیْءُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَلٰی رَقَبَتِهٖ شَاةٌ لَّهَا ثُغَاءٌ یَقُوْلُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَغِثْنِیْ فَاَقُوْلُ لَا اَمْلِكُ لَكَ شَیْئًا قَدْ اَبْلَغْتُكَ لَا اُلْفِیَنَّ اَحَدَكُمْ یَجِیْءُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَلٰی رَقَبَتِهٖ نَفْسٌ لَّهَا صِیَاحٌ فَیَقُوْلُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَغِثْنِیْ فَاَقُوْلُ لَا اَمْلِكُ لَكَ شَیْئًا قَدْ اَبْلَغْتُكَ لَا اُلْفِیَنَّ اَحَدَكُمْ یَجِیْءُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَلٰی رَقَبَتِهٖ رِقَاعٌ تَخْفُقُ فَیَقُوْلُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَغِثْنِیْ فَاَقُوْلُ لَا اَمْلِكُ لَكَ شَیْئًا قَدْ اَبْلَغْتُكَ، لَا اُلْفِیَنَّ اَحَدَكُمْ یَجِیْءُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَلٰی رَقَبَتِهٖ صَامِتٌ فَیَقُوْلُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَغِثْنِیْ فَاَقُوْلُ لَا اَمْلِكُ لَكَ شَیْئًا قَدْ اَبْلَغْتُكَ.

(بخاری، مسلم بالفاظ مسلم)

43. *अन अबी हुरैरता काला, कामा फीना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ज़ाता यौमिन, फज़करल ग़ुलूला फअज़्ज़महू व अज़्ज़मा अमरहू सुम्मा काला ला उलफियन्ना अहदकुम यजीउ यौमल क़ियामति अला रक़बतिही बईरुन लहू रुग़ाउन यकूलु या रसूलल्लाहि अग़िसनी, फअकूलु ला अमलिकु लका शैअन, कद अबलग़तुका ला उलफियन्ना अहदकुम यजीउ यौमल- क़ियामति अला रक़बतिही फरसुन लहू हम्हमतुन यकूलु या रसूलल्लाहि अग़िसनी फअकूलु ला अमलिकु लका शैअन कद अबलग़तुका, ला उलफियन्ना अहदकुम यजीउ यौमल- क़ियामति अला रक़बतिही शातुन लहा सुग़ाउन यकूलु या रसूलल्लाहि अग़िसनी फअकूलु ला अमलिकु लका शैअन कद अबलग़तुका, ला उलफियन्ना अहदकुम यजीउ यौमल-क़ियामति अला रक़बतिही नफ़्सुल्लहा सियाहुन फयकूलु या रसूलल्लाहि अग़िसनी फअकूलु ला अमलिकु लका शैअन कद अबलग़तुका ला उलफियन्ना अहदकुम यजीउ यौमल क़ियामति अला रक़बतिही रिक़ाउन तख़फुक़ु फयकूलु या रसूलल्लाहि अग़िस्नी फअकूलु ला अमलिकु लका शैअन कद अबलग़तुका, ला उलफियन्ना अहदकुम यजीउ यौमल-क़ियामति अला रक़बतिही सामितुन फयकूलु या रसूलल्लाहि अग़िस्नी फअकूलु ला अमलिकु*

लका शैअन क़द अबलग़तुका (बुख़ारी व मुस्लिम)

अनुवादः- अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे बीच ख़ुत्बा दिया, जिस में माले ग़नीमत की चोरी के मसअले को बड़ी अहमियत के साथ पेश किया, फिर आप ने फ़रमाया, मैं तुम में से किसी को क़यामत के दिन इस हाल में न पाऊँ कि उस की गर्दन पर ऊँट है जो ज़ोर से बिलबिला रहा है, और यह शख़्स कह रहा है कि ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी मदद फ़रमाईये (इस गुनाह के वबाल से बचाईये) तो मैं कहूँ, मैं तेरी कुछ भी मदद नहीं कर सकता मैं ने तो तुझे दुनिया में यह बात पहुंचा दी थी, मैं तुम में से किसी को क़यामत के दिन इस हाल में न पाऊँ कि उस की गर्दन पर कोई घोड़ा है जो हिनहिना रहा है, और यह शख़्स कह रहा है, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी मदद को दौड़िये, तो मैं कहूँ, मैं तेरे लिये कुछ भी नहीं कर सकता, मैं ने तो तुझे दुनिया में बात पहुंचा दी थी, मैं तुम में से किसी को क़यामत के दिन इस हाल में न देखूँ कि उस की गर्दन पर कोई बकरी सवार है, और वह मिमया रही है और यह कह रहा है, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी मदद कीजिये, तो मैं उस की फ़रियाद के जवाब में कहूँ, मैं यहाँ तेरे लिये कुछ नहीं कर सकता, मैं ने तो तुझे दुनिया में अहकाम पहुंचा दिये थे, मैं तुम में से किसी को क़यामत के दिन इस हाल में न देखूँ कि उस की गर्दन पर कोई आदमी सवार है और वह चीख़ रहा है और यह शख़्स कह रहा है, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी मदद को पहुंचिये, तो मैं उस के जवाब में कहूँ, मैं यहाँ तेरे लिये कुछ नहीं कर सकता, मैं ने तो तुझे दुनिया में बात पहुंचा दी थी, मैं तुम में से किसी को क़यामत के दिन इस हाल में न देखूं कि उस की गर्दन पर कपड़े के टुकड़े लहरा रहे हैं, और वह कह रहा है, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी मदद फ़रमाईये तो मैं उस के जवाब में कहूँ, मैं तेरे लिये कुछ भी नहीं कर सकता, मैं ने तो तुझे दुनिया में बात पहुंचा दी थी, मैं तुम में से किसी को क़यामत के दिन इस हाल में न पाऊँ कि उस की गर्दन पर सोना चांदी सवार है, और वह कह

रहा है, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी मदद फ़रमाईये तो मैं उस के जवाब में कहूँ, मैं तेरे गुनाह की सज़ा को ज़रा भी नहीं हटा सकता, मैं ने तो तुझे दुनिया में बात पहुंचा दी थी।

जानवरों के बोलने और कपड़े के लहराने का मतलब यह है कि माले ग़नीमत की यह चोरियाँ क़यामत के दिन छुपाई न जा सकेंगी, हर गुनाह चीख़ चीख़ कर बताएगा, और उस के मुजरिम होने का एलान करेगा, मालूम रहे कि यह सिर्फ़ माले ग़नीमत की चोरी के साथ ख़ास नहीं है, हर बड़े गुनाह का यही हाल होगा। अल्लाह उस बुरे अंजाम से हर मुसलमान को बचाये। और बुरा वक़्त आने से पहले तौबा की तौफ़ीक़ हो।

इबादात

नमाज़ की अहमियत

(۴۴) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَرَاَيْتُمْ لَوْ اَنَّ نَهْرًا بِبَابِ اَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ فِيْهِ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسًا، هَلْ يَبْقٰى مِنْ دَرَنِهٖ شَيْءٌ؟ قَالُوْا لَا يَبْقٰى مِنْ دَرَنِهٖ شَيْءٌ قَالَ فَذٰلِكَ مَثَلُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ يَمْحُوا اللّٰهُ بِهِنَّ الْخَطَايَا. (بخاری، مسلم، ابوہریرہ)

44. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अ-रऐतुम लौ अन्ना नहरन बिबाबि अहदिकुम यग़तसिलु फ़ीहि कुल्ला यौमिन ख़मसन, हल यबक़ा मिन दरनिही शैउन? क़ालू ला यबक़ा मिन दरनिही शैउन क़ाला फ़ज़ालिका मसलुस्सलवातिल ख़ामसि यमहुल्लाहु बिहिन्नल ख़ताया।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अबूहुरैरा)

> **अनुवादः**– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम में से किसी के दरवाज़े पर कोई नहर हो जिस में वह हर दिन पाँच बार गुस्ल करता हो तो बताओ उस के बदन पर कुछ भी मैल कुचैल बाक़ी रह सकता है? सहाबा किराम ने कहा कि नहीं उस के बदन पर कुछ भी मैल कुचैल नहीं रहेगा। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि यही हाल पाँच वक़्त की नमाज़ों का है, अल्लाह उन नमाज़ों के ज़रिए गुनाहों को मिटाता है।

इस हदीस के ज़रिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह हक़ीक़त वाज़ेह की है कि नमाज़ें इन्सान के गुनाहों को माफ़ किये जाने का ज़रिया बनती हैं और इस बात को एक महसूस की जाने वाली मिसाल के ज़रिए समझाया है। नमाज़ से इन्सान के दिल में शुक्र की वह कैफ़ियत पैदा होती है जिस के नतीजे में वह ख़ुदा की इताअत की राह पर बराबर बढ़ता जाता है और नाफ़रमानियों से उस का ज़हन दूर होता जाता है, यहाँ तक कि अगर उस से कभी कोई ग़लती होती भी है तो जान बूझ कर

नहीं होती। और तुरन्त वह अपने रब के सामने गिर पड़ता है, रो रो कर माफ़ी मांगता है।

(۴۵) عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ اِنَّ رَجُلًا اَصَابَ مِنْ اِمْرَاۃٍ قُبْلَةً فَاَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاَخْبَرَهٗ، فَاَنْزَلَ اللّٰهُ تَعَالٰى "وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَىِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ اللَّيْلِ، اِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ." فَقَالَ الرَّجُلُ اَلِيْ هٰذَا؟ قَالَ لِجَمِيْعِ اُمَّتِيْ كُلِّهِمْ.

(بخاری، مسلم)

45(क). *अन इब्ने मसऊदिन रज़ि० काला इन्ना रजुलन असाबा मिन इमरअतिन कुबलतन फ़अतन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़अख़बरहू फ़अनज़लल्लाहु तआला "व अक़िमिस्सलाता तरफ़न्नहारि व ज़ुलफ़म्मिनल-लैलि, इन्नल-हसनाति युज़हिबनस सय्यिआति" फ़क़ालर्रजुलु अ-ली हाज़ा? क़ाला लिजमीइ उम्मती कुल्लिहम।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने एक अजनबी औरत का बोसा ले लिया, फिर वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और आप को इस गुनाह के बारे में बताया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी "व अक़िमिस्सलाता तरफ़न्नहारि व ज़ुलफ़म्मिनल्लैलि, इन्नल हसनाति युज़हिबनस सय्यिआति" इस पर उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या यह मेरे लिये ख़ास है? आप ने फ़रमाया कि नहीं मेरी उम्मत के सब लोगों के लिये है।

यह हदीस ऊपर की हदीस की और ज़्यादा तशरीह (व्याख्या) करती है जिस में बताया गया है कि नमाज़ गुनाहों को मिटा देती है। इस हदीस में जिस आदमी का ज़िक्र है वह एक ईमान वाला आदमी है, वह जान बूझ कर गुनाह नहीं करता था लेकिन इन्सान ही था, रास्ते में जज़्बात की रौ में बह कर उस ने एक अजनबी औरत को चूम लिया, उस पर उस को इतनी परेशानी हुई कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और उस ने यह कहा कि मैं ने सज़ा के लायक़ एक काम किया है मुझ पर हद लागू होनी चाहिये, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

सूरह हूद के आख़िरी रुकूअ की वह आयत उस को सुनाई जो ऊपर लिखी हुई है जिस में अल्लाह तआला ने मोमिनों को दिन और रात के वक़्तों में नमाज़ क़ायम करने का हुक्म दिया है और फिर फ़रमाया, इन्नल *हसनाति युज़हिबनस सय्यिआति*, यानी नेकियाँ बुराईयों को ख़त्म करती हैं और उन का कफ़्फ़ारा बनती हैं इस पर उस शख़्स को इतमीनान हुआ और उस की परेशानी दूर हुई इस से अन्दाज़ा होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने साथियों को कितने ऊँचे दर्जे की तालीम व तर्बियत दी थी।

(۴۵) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَمْسُ صَلَوَاتٍ نِ افْتَرَضَهُنَّ اللّٰهُ تَعَالٰى مَنْ اَحْسَنَ وَضُوْءَهُنَّ وَصَلَّاهُنَّ لِوَقْتِهِنَّ وَاَتَمَّ رُكُوْعَهُنَّ وَخُشُوْعَهُنَّ كَانَ لَهٗ عَلَى اللّٰهِ عَهْدٌ اَنْ يَّغْفِرَ لَهٗ وَمَنْ لَّمْ يَفْعَلْ فَلَيْسَ لَهٗ عَلَى اللّٰهِ عَهْدٌ، اِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهٗ وَاِنْ شَاءَ عَذَّبَهٗ.

(ابوداؤد، عبادہ بن صامت)

45.(ख) *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ख़मसु सलवाति निफ़तरज़हुन्नल्लाहु तआला मन अहसना वज़ुअहुन्ना व सल्लाहुन्ना लिवक़्तिहिन्ना व अतम्मा रुकूअहुन्ना व ख़ुशूअहुन्ना काना लहू अलल्लाहि अहदुन अय्यंग़फ़िरा लहू वमल्लम यफ़अल फ़लैसा लहू अलल्लाहि अहदु, इन शाआ ग़फ़रा लहू व इन शाआ अज़्ज़बहू।* (अबू दाऊद-उबादह बिन सामित)

अनुवाद:- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, यह पाँच नमाज़ें हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर फ़र्ज़ किया है तो जिस शख़्स ने बेहतर तरीक़ा पर वुज़ू किया और उन नमाज़ों के मुक़र्रर किये हुये वक़्तों में उन्हें अदा किया और रुकूअ व सज्दे ठीक से किए, और उस का दिल अल्लाह तआला के सामने नमाज़ों में झुका रहा तो अल्लाह तआला ने उस की मग़फ़िरत अपने ज़िम्मा ले ली, और जिस ने ऐसा नहीं किया तो उस के लिये अल्लाह तआला का यह वादा नहीं है, अगर चाहेगा तो उस को माफ़ कर देगा, और चाहेगा तो उस को अज़ाब देगा।

(۴٦) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَّهُ ذَكَرَ الصَّلٰوةَ يَوْمًا. فَقَالَ مَنْ حَافَظَ عَلَيْهَا كَانَتْ لَهُ نُوْرًا وَّ بُرْهَانًا وَّ نَجَاةً يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَمَنْ لَّمْ يُحَافِظْ عَلَيْهَا لَمْ تَكُنْ لَهُ نُوْرًا وَّ لَا بُرْهَانًا وَّنَجَاةً.

46. *अन अब्दिल्लाहिब्नि अमरिब्निल आसि अनिन नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अन्नहू ज़करस्सलाता यौमन, फ़काला मन हाफ़ज़ा अलैहा कानत लहू नूरवं वबुरहानवं वनजातन यौमल क़ियामति व मल्लम युहाफ़िज़ अलैहा लम तकुल्लहू नूरवं वला बुरहानवं व नजातन।*

अनुवादः- अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (रज़ि०) से रिवायत है, उन्हों ने कहा कि आप (सल्ल०) ने एक दिन नमाज़ पर तक़रीर फ़रमाई और कहा जो शख़्स अपनी नमाज़ों की ठीक तरह से देख भाल करेगा तो वह उस के लिये क़यामत के दिन रौशनी और दलील बनेंगी और निजात का ज़रिया बनेंगी। और जो अपनी नमाज़ों की देख भाल नहीं करेगा तो ऐसी नमाज़ उस के लिये न तो रौशनी बनेगी और न दलील बनेगी और न निजात का ज़रिया बनेगी।

इस हदीस में "मुहाफ़ज़त" का लफ़्ज़ आया है जिस का मतलब देख भाल और निगरानी करने के हैं और उस से मुराद यह है कि आदमी को देखते रहना चाहिये कि उस ने ठीक से वुज़ू किया है या नहीं, वक़्त के अन्दर नमाज़ पढ़ रहा है या नहीं, और रुकूअ व सज्दों का क्या हाल रहा है और आख़िरी बात यह कि नमाज़ में उस के दिल की क्या कैफ़ियत रही है, क्या दुनिया के कारोबार और ख़यालात की वादियों में वह भटकता रहा है या अपने ख़ुदा की तरफ़ उस का ध्यान रहा है, ज़ाहिर बात है कि जिस ने इस तरह की नमाज़ें पढ़ी हों और उस के दिल का यह हाल रहा हो तो ज़िन्दगी के दूसरे मुआमलात में भी वह ख़ुदा का बन्दा बनने की कोशिश करेगा और आख़िरत में कामियाब होगा।

(۴۷) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تِلْكَ صَلٰوةُ الْمُنَافِقِ يَجْلِسُ يَرْقُبُ الشَّمْسَ حَتّٰى إِذَا اصْفَرَّتْ وَكَانَتْ بَيْنَ قَرْنَيِ الشَّيْطٰنِ قَامَ فَنَقَرَ اَرْبَعًا لَا يَذْكُرُ اللّٰهَ فِيْهَا اِلَّا قَلِيْلًا. (مسلم، انسؓ)

47. काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा तिलका सलातुल मुनाफ़िक़ि यजलिसु यरकबुश्शमसा हत्ता इज़स्फ़र्रत व कानत बैना क़रनइश्शैतानि क़ामा फ़नक़रा अरबअन ला-यज़्कुरुल्लाहा फ़ीहा इल्ला क़लीला। (मुस्लिम, अनस)

> **अनुवादः-** नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह मुनाफ़िक़ की नमाज़ है कि वह बैठा सूरज का इन्तिज़ार करता रहता है यहाँ तक कि जब उस में ज़र्दी आ जाती है और मुश्रिकों की सूरज पूजा का वक़्त आ जाता है तब यह उठता है और जल्दी जल्दी चार रकअतें मार लेता है (ऐसे जैसे मुर्ग़ी ज़मीन पर चोंच मारती है और फिर उठा लेती है) यह शख़्स अल्लाह को अपनी नमाज़ में ज़रा भी याद नहीं करता।

इस हदीस के ज़रिए मोमिन और मुनाफ़िक की नमाज़ का फ़र्क़ ज़ाहिर किया गया है मोमिन अपनी नमाज़ वक़्त पर पढ़ता है, रुकुअ और सज्दा ठीक से करता है, उस का दिल ख़ुदा की याद में लगा होता है, और मुनाफ़िक़ नमाज़ ठीक वक़्त पर नहीं पढ़ता, रुकूअ व सज्दा ठीक से नहीं करता और उस का दिल ख़ुदा के सामने नहीं होता, वैसे तो हर नमाज़ अहम है लेकिन फ़ज्र और अस्र की अहमियत ज़्यादा है असर का वक़्त ग़फ़लत का वक़्त होता है आमतौर से लोग अपने कारोबार में लगे रहते हैं और चाहते हैं कि रात आने से पहले तिजारत को पूरा कर लें और अपने फैले हुये कामों को समेट लें, इस लिये अगर मोमिन का ज़हन बेदार न हो तो अस्र की नमाज़ ख़तरे में पड़ सकती है और सुब्ह की नमाज़ की अहमियत इस लिये है कि नींद का वक़्त होता है सब को मालूम है कि रात के आख़िरी हिस्से की नींद बड़ी गहरी और मीठी होती है। अगर इन्सान के दिल में ईमान ज़िन्दा न हो तो अपनी महबूब नींद को छोड़ कर ख़ुदा की याद के लिये नहीं उठ सकता।

(٤٨) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَعَاقَبُوْنَ فِيْكُمْ مَلٰئِكَةٌ بِاللَّيْلِ وَمَلٰئِكَةٌ بِالنَّهَارِ وَيَجْتَمِعُوْنَ فِيْ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَصَلٰوةِ الْعَصْرِ، ثُمَّ يَعْرُجُ الَّذِيْنَ بَاتُوْ فِيْكُمْ فَيَسْاَلُهُمْ رَبُّهُمْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِهِمْ كَيْفَ تَرَكْتُمْ عِبَادِى؟ فَيَقُوْلُوْنَ تَرَكْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّوْنَ وَاَتَيْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّوْنَ (بخاری، مسلم، ابوہریرہ)

48. काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यतआक़बूना फ़ीकुम मलाइकतुन बिल्लैलि व मलाइकतुन बिन्नहारि व यजतमिऊना फ़ी सलातिल फ़ज्रि व सलातिल अस्रि, सुम्मा यअरुजुल्लज़ीना बातू फ़ीकुम फ़यसअलहुम रब्बुहुम व हुवा अअलमु बिहिम कैफ़ा इबादी? फ़यक़ूलूना तरकनाहुम वहुम युसल्लूना व आतैनाहुम वहुम युसल्लूना। (बुख़ारी, मुस्लिम – अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रात और दिन के फ़रिश्ते जो ज़मीन के इन्तिज़ाम पर लगे हुये हैं वह अपनी डियूटी बदलते हैं और फ़ज्र व अस्र की नमाज़ में इकट्ठा होते हैं, फिर जो फ़रिश्ते तुम्हारे अन्दर रहे हैं वह अपने रब के सामने जाते हैं तो वह उन से पूछता है कि तुम ने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा? तो वह कहते हैं कि जब हम उन के पास पहुंचे थे तो उन्हें नमाज़ पढ़ते पाया था और जब हम ने उन्हें छोड़ा है तो नमाज़ पढ़ते हुये छोड़ा है।

यह हदीस फ़ज्र और अस्र की अहमियत को ख़ूब ज़ाहिर करती है, फ़ज्र की नमाज़ में रात के फ़रिश्ते शरीक होते हैं और वह फ़रिश्ते भी जिन्हें दिन में अपना काम करना है। इसी तरह अस्र की नमाज़ में भी दोनों क़िस्म के फ़रिश्ते मोमिनों के साथ जमाअत में शरीक होते हैं मोमिन की इस से बड़ी ख़ुशनसीबी और क्या होगी कि उन को फ़रिश्तों का साथ नसीब हो।

(٤٩) عَنْ عُمَرَبْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهٗ كَتَبَ اِلٰى عُمَّالِهٖ اَنَّ اَهَمَّ اُمُوْرِكُمْ عِنْدِيَ الصَّلٰوةُ، فَمَنْ حَفِظَهَا وَحَافَظَ عَلَيْهَا حَفِظَ دِيْنَهٗ وَمَنْ ضَيَّعَهَا فَهُوَ لِمَا سِوَاهَا اَضْيَعُ. (مشكوة)

49. हन उमरब्निल ख़त्ताबि रज़िअल्लाहु अनहु अन्नहू कतबा इला उम्मालिही अन्ना अहम्मा उमूरिकुम इन्दीयस्सलातु, फ़मन हफ़िज़हा व हाफ़ज़ा अलैहा हफ़िज़ा दीनहू व मन ज़य्यअहा फ़हुआ लिमा सिवाहा अज़यअु। (मिश्कात)

अनुवादः– हज़रत उमर बिन ख़त्ताब से रिवायत है कि उन्हों ने अपने तमाम गवरनरों को लिखा कि तुम्हारे सारे कामों में सब से

ज़्यादा अहमियत मेरे नज़दीक नमाज़ की है जो शख़्स अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करेगा और उस की देख भाल करता रहेगा तो वह अपने पूरे दीन की हिफ़ाज़त करेगा और जो नमाज़ को बरबाद कर देगा तो वह और सारी चीज़ों को उस से ज़्यादा बरबाद करने वाला होगा।

(٥٠) قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللهُ فِيْ ظِلِّهٖ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّهٗ اِمَامٌ عَادِلٌ وَ شَابٌّ نَشَا فِيْ عِبَادَةِ اللهِ، وَرَجُلٌ قَلْبُهٗ مُعَلَّقٌ بِالْمَسْجِدِ اِذَا خَرَجَ مِنْهُ حَتّٰى يَعُوْدَ اِلَيْهِ وَرَجُلَانِ تَحَابَّا فِيْ اللهِ اِجْتَمَعَا عَلَيْهِ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ، وَرَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ حَسَبٍ وَّ جَمَالٍ فَقَالَ اِنِّىْ اَخَافُ اللهَ وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَاَخْفَاهَا حَتّٰى لَا تَعْلَمَ شِمَالُهٗ مَا تُنْفِقُ يَمِيْنُهٗ. (متفق علیہ-ابوہریرہ)

50. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा सबअतुयं युज़िल्लुहुमुल्लाहु फी ज़िल्लिही योमा ला ज़िल्ला इल्ला ज़िल्लहू इमामुन आदिलुवं व शाब्बुन नशा फी इबादतिल्लाहि, व रजुलुन कलबुहू मुअल्लकुन बिल-मस्जिदि इज़ा ख़रजा मिनहु हत्ता यऊदा इलैहि व रजुलानि तहाब्बा फिल्लाहि इजतमआ अलैहि व तफ़र्रका अलैहि व रजुलुन ज़करल्लाहा ख़ालियन फ-फाज़त ऐनाहु, व रजुलुन दअतहु इमरअतुन ज़ातु हसबिवं व जामालिन फकाला इन्नी अख़ाफुल्लाहा व रजुलुन तसद्दका बिसदकतिन फ-अख़फ़ाहा हत्ता ला तअलमा शिमालुहू मा तुनफ़िकु यमीनुहू।* (मुत्तफ़क अलैहि- अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सात क़िस्म के लोगों को अल्लाह अपने साया में जगह देगा उस दिन जिस दिन सिवाए अल्लाह के साये के कोई साया न होगा। (1) इन्साफ़ करने वाला बादशाह (2) वह जवान जिस की जवानी अल्लाह की बन्दगी में गुज़री (3) वह आदमी जिस का दिल मस्जिद से अटका रहता है जब मस्जिद से निकलता है तो फिर दोबारा मस्जिद में दाख़िल होने का इन्तिज़ार करता रहता है (4) वह दो आदमी जिन की दोस्ती की बुनियाद अल्लाह और अल्लाह का दीन है उसी जज़्बे के साथ वह इकट्ठा होते हैं और यही जज़्बा लिये वह जुदा होते हैं (5) वह आदमी जिस ने

तनहाई में ख़ुदा को याद किया और उस की आँखों से आँसू बह पड़े (6) वह आदमी जिस को किसी ऊँचे ख़ानदान की हसीन व ख़ूबसूरत औरत ने बदकारी (ग़लत काम) के लिये बुलाया तो उस ने सिर्फ़ ख़ुदा के डर की वजह से उस से इन्कार कर दिया (7) वह आदमी जिस ने इस तरह सदक़ा किया कि उस का बायाँ हाथ भी नहीं जानता कि दायाँ हाथ क्या दे रहा है।

(٥١) عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَنْ صَلّٰى يُرَائِى فَقَدْ اَشْرَكَ، وَمَنْ صَامَ يُرَائِى فَقَدْ اَشْرَكَ، وَمَنْ تَصَدَّقَ يُرَائِى فَقَدْ اَشْرَكَ. (مسند احمد)

51. *अन शद्दादिब्नि औसिन क़ाला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यक़ूलु मन सल्ला युराई फ़क़द अश्रका, व मन सामा युराई फ़क़द अश्रका, व मन तसद्दक़ा युराई फ़क़द अश्रका।* (मुस्नद अहमद)

अनुवादः- शद्दाद बिन औस फ़रमाते हैं, मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना कि जिस ने दिखाने के लिये नमाज़ पढ़ी तो उस ने शिर्क किया, और जिस ने दिखाने के लिये रोज़ा रखा तो उस ने शिर्क किया, और जिस ने दिखाने के लिये सदक़ा किया तो उस ने शिर्क किया।

इस फ़रमान के ज़रिए हुज़ूर (सल्ल०) यह बात बताना चाहते हैं कि जो भी नेकी का काम किया जाये ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करने के लिये किया जाये, नियत यह हो कि यह मेरे मालिक का हुक्म है और मुझे उसी की ख़ुशी की फ़िक्र है, दूसरों की निगाह में पारसा बनने और दूसरों को ख़ुश करने के लिये जो नेकी का काम किया जाएगा उस की कोई क़ीमत नहीं, क़ीमत तो सिर्फ़ उस नेकी की है जो ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करने की नियत से की गई हो।

जमाअत के साथ नमाज़

(٥٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلٰوةُ الْجَمَاعَةِ تَفْضُلُ صَلٰوةَ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَعِشْرِيْنَ دَرَجَةً. (بخاری، مسلم، عبداللہ بن عمرؓ)

52. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा सलातुल जमाअति तफ़्ज़ुलु सलातल फ़ज़्ज़ि बिसबइवं व इशरीना दरजतन।*

(बुख़ारी, मुस्लिम – अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰)

अनुवादः– असल हदीस में "फ़ज़्ज़" का लफ़्ज़ आया है जिस का मतलब है अलग थलग रहना, जमाअत की नमाज़ में हर तरह के मुसलमान शरीक होते हैं। अमीर भी, ग़रीब भी, अच्छे कपड़े पहनने वाले भी और फटे पुराने कपड़े पहनने वाले भी, तो जिन लोगों के अन्दर बड़ाई का घमंड होता है और मालदारी के नशा में चूर चूर होते हैं इस बात को पसन्द नहीं करते कि उन के साथ कोई और खड़ा हो, इस लिये वह नमाज़ अपने घरों में पढ़ते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बीमारी का इलाज यह बताया कि जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ो, अपने कमरे में या मस्जिद में अकेले नमाज़ न पढ़ों।

फिर यह बात भी है कि आमतौर से जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने में शैतानी ख़यालात कम पैदा होते हैं और आदमी का ख़ुदा से तअल्लुक़ मज़बूत होता है इस वजह से जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का दर्जा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान के मुताबिक़ 27 गुना बढ़ा हुआ होता है। यही हक़ीक़त है जो अगली हदीस (53) में बयान हुई है।

(۵۳)اِنَّ صَـلٰوةَ الرَّجُلِ مَعَ الرَّجُلِ اَزْکٰی مِنْ صَلٰوتِهٖ وَحْدَهٗ صَلٰوتُهٗ مَعَ رَجُلَیْنِ اَزْکٰی مِنْ صَلٰوتِهٖ مَعَ الرَّجُلِ، وَمَا اَکْثَرَ فَهُوَ اَحَبُّ اِلَی اللّٰهِ. (ابوداؤد،ابی بن کعب)

53. *इन्नस सलातर्रजुलि मअर्रजुलि अज़्का मिन सलातिही वहदहू सलातुहू मआ रजुलैनि अज़्का मिन सलातिही मअर्रजुलि, वमा अकसरा फहुवा अहब्बु इलल्लाहि।* (अबू दाऊद – अबी बिन कअब)

अनुवादः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आदमी की नमाज़ जो किसी दूसरे आदमी के साथ पढ़ता है ज़्यादा ईमान की नश्वोनुमा की वजह बनती है, उस नमाज़ के मुक़ाबला में जो वह अकेले पढ़ता है। और जो नमाज़ उस ने दो आदमियों के साथ पढ़ी वह एक आदमी के साथ पढ़ी गई नमाज़ के मुक़ाबले में ईमान की ज़्यादती का सबब बनती है और

फिर जितनी ही ज़्यादा तादाद में लोग पढ़ें तो वह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा पसन्दीदा है। (उतना ही ख़ुदा से तअल्लुक़ मज़बूत होगा)।

(۵۴) مَامِنْ ثَلٰثَةٍ فِیْ قَرْیَةٍ وَّلَابَدْوٍ لَا تُقَامُ فِیْهِمُ الصَّلٰوةُ اِلَّا قَدِ اسْتَحْوَذَ عَلَیْهِمُ الشَّیْطٰنُ، فَعَلَیْکَ بِالْجَمَاعَةِ فَاِنَّمَا یَاْکُلُ الذِّئْبُ الْقَاصِیَةَ. (ابوداؤد، ابودرداءؓ)

54. *मा मिन सलासतिन फी करयतिन वला बदविन ला तुकामु फीहिमुस्सलातु इल्ला कदिसतहवज़ा अलैहिमुश्शैतानु, फअलैका बिल जमाअति फइन्नमा याकुलुज़्ज़िअबुल-कासियता।*

(अबू दाऊद, अबू दरदा रज़ि॰)

अनुवादः- जिस किसी बस्ती या दीहात में तीन मुसलमान हों और वहाँ जमाअत के साथ नमाज़ न पढ़ी जाती हो तो उन पर शैतान ग़लबा पा लेता है तो जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्योंकि भेड़िया सिर्फ़ उस बकरी को खाता है जो अपने चरवाहे से दूर और अपने गल्ला से अलग हो जाती है।

इस हदीस में यह हक़ीक़त बयान हुई है कि जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने वालों पर ख़ुदा की रहमत होती है और वह उन की हिफ़ाज़त करता है, लेकिन अगर कहीं जमाअत क़ायम न की जाये तो अल्लाह अपनी हिफ़ाज़त और देख भाल का हाथ उन से खींच लेता है और वह शैतान के क़ाबू में चले जाते हैं, फिर वह उन को जिस तरह चाहता है शिकार करता है और जिस राह पर चाहता है चलाता है जैसे बकरियों का रेवड़ कि अपने चरवाहे के क़रीब रहती हैं तो वह दोहरी हिफ़ाज़त में रहती हैं एक मालिक की हिफ़ाज़त और दूसरी वह बकरियों का एक साथ रहना (एकता) इन दोनों वजहों से भेड़िया शिकार नहीं कर पाता। लेकिन अगर कोई बेवकूफ़ बकरी अपने चरवाहे की चाहत के ख़िलाफ़ गल्ला से निकल कर पीछे रह जाये या आगे निकल जाये तो बहुत ही आसानी से भेड़िया उस का शिकार कर लेता है, क्योंकि अब यह कमज़ोर भी है और मालिक की हिफ़ाज़त से भी अपने आप को महरूम कर लिया है।

(٥٥) مَنْ سَمِعَ الْمُنَادِیَ فَلَمْ یَمْنَعْهُ مِنْ اِتِّبَاعِهٖ عُذْرٌ، قَالُوْا وَمَاالْعُذْرُ؟ قَالَ خَوْفٌ اَوْ مَرَضٌ لَمْ تُقْبَلْ مِنْهُ الصَّلٰوۃُ الَّتِیْ صَلّٰی. (ابوداؤد،ابن عباسؓ)

55. *मन समिअल मुनादिया फलम यमनअहू मिन इत्तिबाईही उज्रुन, कालू व मलउज्रु? काला ख़ौफुन औ मरज़ुन, लम तुक़बल मिनहुस्सलातुल्लती सल्ला।* (अबू दाऊद, इब्ने अब्बास)

> **अनुवादः-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जिस शख़्स ने ख़ुदा की तरफ़ बुलाने वाले (मुअज़्ज़िन) की आवाज़ सुनी और उसे कोई ऐसा बहाना भी नहीं है जो उस की पुकार पर दौड़ पड़ने से रोकता हो तो उस की यह नमाज़ जो उस ने अकेले पढ़ी है (क़यामत के दिन) क़ुबूल न की जाएगी। लोगों ने उस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि बहाने का क्या मतलब है? और कौन कौन सी चीज़ें बहाना बनती हैं? आप ने फ़रमाया डर और बीमारी।

"डर" से मुराद जान चले जाने का डर है किसी दुश्मन की वजह से या दरिन्दा और सांप की वजह से और "बीमारी" से मुराद वह हालत है जिस की वजह से आदकी मस्जिद तक नहीं जा सकता। तेज़ तूफ़ानी हवा, बारिश और मामूल से ज़्यादा सर्दी भी बहाने में दाख़िल है, लेकिन ठंडे मुल्कों की सर्दी बहाना नहीं है बल्कि गर्म इलाक़ों में कभी कभी ज़्यादा सर्दी आ जाती है और यह उन के लिये जान लेवा होती है ऐसी सर्दी बहाना बन सकती है, इसी तरह उस वक़्त आदमी को अगर बड़े या छोटे इसतिनजा की ज़रूरत महसूस हो तो यह भी बहाने में शामिल है।

(٥٦) عَنْ عَبْدِ اللّٰہِ بْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ رَاَیْتُنَا وَمَا یَتَخَلَّفُ عَنِ الصَّلٰوۃِ اِلَّا مُنَافِقٌ قَدْ عُلِمَ نِفَاقُہٗ اَوْ مَرِیْضٌ، اِنْ کَانَ الْمَرِیْضُ لَیَمْشِیْ بَیْنَ رَجُلَیْنِ حَتّٰی یَاتِیَ الصَّلٰوۃَ، وَقَالَ اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ عَلَّمَنَا سُنَنَ الْھُدٰی، وَاِنَّ مِنْ سُنَنِ الْھُدَی الصَّلٰوۃَ فِی الْمَسْجِدِ الَّذِیْ یُؤَذَّنُ فِیْہِ، وَفِیْ رِوَایَۃٍ قَالَ مَنْ سَرَّہٗ اَنْ یَّلْقَی اللّٰہَ غَدًا مُسْلِمًا فَلْیُحَافِظْ عَلٰی ھٰذِہِ الصَّلَوٰتِ الْخَمْسِ حَیْثُ یُنَادٰی بِھِنَّ. فَاِنَّ اللّٰہَ شَرَعَ لِنَبِیِّکُمْ سُنَنَ الْھُدٰی وَاِنَّھُنَّ مِنْ سُنَنِ الْھُدٰی. وَلَوْ اَنَّکُمْ صَلَّیْتُمْ فِیْ بُیُوْتِکُمْ کَمَا یُصَلِّیْ ھٰذَاالْمُتَخَلِّفُ فِیْ بَیْتِہٖ لَتَرَکْتُمْ سُنَّۃَ نَبِیِّکُمْ وَلَوْ تَرَکْتُمْ سُنَّۃَ نَبِیِّکُمْ لَضَلَلْتُمْ. (مسلم)

56. अन अब्दिल्लाहिब्नि मसऊनि काला रऐतुना वमा यतख़ल्लफु अनिस्सलाति इल्ला मुनाफ़िकुन कद उलिमा निफ़ाकुहू औ मरीजुन, इन कानल मरीजु लयमशी बैना रजुलैनि हत्ता यातियस्सलाता, व काला इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल्लमना सुननल हुदा, व इन्ना मिन सुननिल हुदस्सलाता फ़िल मस्जिदिल्लज़ी युअज़्ज़नु फ़ीहि, व फ़ी रिवायतिन काला मन सर्रहू अय्यलकल्लाहा ग़दम मुस्लिमन फ़लयुहाफ़िज़ अला हाज़िहिस्सलवातिल ख़म्सि हैसु यनादा बिहिन्ना, फ़इन्नल्लाहा शरआ लिनबिय्यिकुम सुननल हुदा व इन्नहुन्ना मिन सुननिल हुदा, वलौ अन्नकुम सल्लैतुम फ़ी बुयूतिकुम कमा युसल्ली हाज़ल मुतख़ल्लिफ़ु फ़ी बैतिही ल-तरकतुम सुन्नता नबिय्यिकुम व लौ तरकतुम सुन्नता नबिय्यिकुम ल-ज़ललतुम। (मुस्लिम)

अनुवादः– अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि (हुज़ूर के ज़मानें में) हमारा हाल यह था कि हम में से कोई नमाज़ बा-जमाअत से पीछे नहीं रहता था सिवाए उस शख़्स के जो मुनाफ़िक़ था और उस का निफ़ाक़ मालूम था और मरीज़ के अलावा (बल्कि उस ज़माने के लोगों का हाल यह था) कि बीमारी में पड़े होते फिर भी दो आदमियों के सहारे मस्जिद पहुंचते और जमाअत में शरीक होते। और अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद ने इसी बारे में फ़रमाया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हम को सुन्नतुल-हुदा सिखाई (सुन्नतुल-हुदा उन सुन्नतों को कहते हैं जिन को क़ानूनी हैसियत हासिल है और वह उम्मत को करने के लिये बताई गई हैं और सन्नते हुदा में से वह नमाज़ भी है जो उस मस्जिद में पढ़ी जाये जिस में अज़ान होती है। और एक दूसरी रिवायत में यह है कि उन्हों ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को यह बात पसन्द हो कि वह फ़रमाबरदारी करने वाले बन्दे की हैसियत से कल क़यामत में अल्लाह से मिले तो उस को उन पाँचों नमाज़ों की देख भाल करनी चाहिये और उन्हें मस्जिद में जमाअत के साथ अदा करना चाहिये क्योंकि अल्लाह ने तुम्हारे नबी (सल्ल॰) को सुनने हुदा की तालीम दी है और यह नमाज़ें सुनने हुदा में से हैं, और

अगर तुम अपने घरों में नमाज़ पढ़ोगे जैसे कि यह मुनाफ़िक़ लोग अपने घरों में नमाज़ पढ़ते हैं तो तुम अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को छोड़ दोगे और अगर तुम ने अपने नबी (सल्ल॰) के तरीक़े को छोड़ा तो सीधे रास्ते को खो दोगे।

इमामत

(٥٧) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَۃَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَلْاِمَامُ ضَامِنٌ وَالْمُؤَذِّنُ مُؤْتَمَنٌ. اَللّٰھُمَّ اَرْشِدِ الْاَئِمَّةَ وَاغْفِرْ لِلْمُؤَذِّنِیْنَ.

57. *अन अबी हुरैरता काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल-इमामु ज़ामिनुन वल मुवज़्ज़िनु मुअतमनुन, अल्लाहुम्मा अरशिदिल अइम्मता वग़फ़िर लिलमुअज़्ज़िनीना।*

(अबू दाऊद)

अनुवादः- हज़रत अबू हुरैरा ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इमाम ज़िम्मेदार है और मुअज़्ज़िन अमानतदार, ऐ अल्लाह! इमामत करने वालों को नेक बना। और ऐ अल्लाह! अज़ान देने वालों को माफ़ कर दे।

इमाम के ज़ामिन होने का मतलब यह है कि वह लोगों की नमाज़ का ज़िम्मेदार है अगर वह नेक और सालेह न हो तो सब की नमाज़ ख़राब करेगा, इस लिये हुज़ूर (सल्ल॰) दुआ फ़रमाते हैं कि ऐ अल्लाह! इमामों को नेक बना, और मुअज़्ज़िन के अमानतदार होने का मतलब यह है कि लोगों ने अपनी नमाज़ के मुआमले को उस के हवाले कर दिया है उस का फ़र्ज़ है कि वक़्त पर अज़ान दे ताकि अज़ान सुन कर लोग तैयारी करें और सुकून के साथ जमाअत में शरीक हो सकें। अगर वक़्त पर अज़ान न हो तो बहुत से लोग जमाअत से महरूम रह जाएँ या एक दो रकअत छूट जाये।

यह हदीस एक तरफ़ तो इमामों और मुअज़्ज़िनों को इस बात की तरफ़ ध्यान दिलाती है कि वह अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करें, दूसरी तरफ़ उम्मत को बताया जा रहा है कि इमामत के लिये उस आदमी को चुने जो नेक और अल्लाह से ज़्यादा डरने वाला हो और अज़ान के लिये ऐसे

आदमी को चुने जिस के अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास हो।

(٥٨) اِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا صَلّٰى اَحَدُكُمْ لِلنَّاسِ فَلْيُخَفِّفْ فَاِنَّ فِيْهِمُ الضَّعِيْفَ وَالسَّقِيْمَ وَالْكَبِيْرَ، وَاِذَا صَلّٰى اَحَدُكُمْ لِنَفْسِهٖ فَلْيُطَوِّلْ مَا شَاءَ.

(بخاری، مسلم۔ ابوہریرۃؓ)

58. *इन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला इज़ा सल्ला अहदुकुम लिन्नासि फलयुख़फ़्फ़िफ़ फइन्ना फ़ीहिमुज़्ज़ईफ़ा वस्सक़ीमा वलकबीरा, वइज़ा सल्ला अहदुकुम लिनफ़्सही फलयुतव्विल मा शाआ।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू हुरैरा)

अनुवादः– नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम में से कोई इमामत करे तो (हालात का अंदाज़ा कर के और नमाज़ियों का लिहाज़ करते हुये) हल्की नमाज़ पढ़ाये इस लिये कि तुम्हारे पीछे कमज़ोर भी होंगे, बीमार और बूढ़े लोग भी। लेकिन जब तुम में से कोई अकेले अपनी नमाज़ पढ़े तो जितनी लम्बी नमाज़ पढ़नी चाहे पढ़े।

(٥٩) عَنْ اَبِيْ مَسْعُوْدٍؓ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ اِنِّيْ لَاَتَاَخَّرُ عَنْ صَلٰوةِ الصُّبْحِ مِنْ اَجْلِ فُلَانٍ مِمَّا يُطِيْلُ بِنَا، فَمَا رَاَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَضِبَ فِيْ مَوْعِظَةٍ قَطُّ اَشَدَّ مِمَّا غَضِبَ يَوْمَئِذٍ، فَقَالَ يٰاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ مِنْكُمْ مُنَفِّرِيْنَ، فَاَيُّكُمْ اَمَّ النَّاسَ فَلْيُوْجِزْ، فَاِنَّ مِنْ وَّرَائِهِ الْكَبِيْرَ وَالصَّغِيْرَ وَ ذَاالْحَاجَةِ.

(متفق علیہ)

59. *अन अबी मसऊदिन रज़ि॰ काला जाआ रजुलुन इला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फकाला इन्नी ला तअख़्ख़रु अन सलातिस्सुब्हि मिन अजलि फुलानिन मिम्मा युतीलु बिना, फमा रऐतुन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ग़ज़िबा फी मौईज़तिन कत्तु अशद्दा मिम्मा ग़ज़िबा यौमइज़िन, फकाला या अय्युहन्नासु इन्ना मिनकुम मुनफ़्फ़िरीना, फअय्युकुम अम्मन्नासा फलयूजिज़, फइन्ना मिंव्वराइहील कबीरा वस्सग़ीरा व ज़लहाजति।*

(मुत्तफ़क़ अलैह)

अनुवादः– हज़रत अबू मसऊद अंसारी रज़ि॰ का बयान है कि

एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया, उस ने कहा कि फुलाँ इमाम फ़ज्र की नमाज़ लम्बी पढ़ाता है उस की वजह से सुब्ह की नमाज़ बा जमाअत में मैं देर से पहुंचता हूँ (अबू मसऊद फ़रमाते हैं) मैं ने किसी वअज़ व तक़रीर (भाषण) में हुज़ूर (सल्ल॰) को इतना गुस्सा करते नहीं देखा जितना उस दिन की तक़रीर में देखा। आप ने फ़रमाया, ऐ लोगो! तुम में से कुछ इमामत करने वाले अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की इबादत करने से बिदकाते हैं (ख़बरदार) तुम में से जो भी इमामत करे इख़्तिसार से काम ले, क्योंकि उस के पीछे बूढ़े भी होंगे, बच्चे भी, और काम काज पर निकलने वाले ज़रूरतमंद भी।

इख़्तिसार से काम लेने का मतलब यह नहीं कि उल्टी सीधी, जल्दी जल्दी नमाज़ पढ़ पढ़ा दी जाये और चार रकअत नमाज़ डेढ़ मिनट में पूरी कर दी जाये ऐसी नमाज़ इस्लाम की नमाज़ नहीं है। हाँ नमाज़ियों का और वक़्त व हालात का ज़रूरी हद तक लिहाज़ किया जाना चाहिये।

(٦٠) عَنْ جَابِرٍ قَالَ كَانَ مُعَاذُبْنُ جَبَلٍ يُصَلِّيْ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ يَاتِيْ فَيَؤُمُّ قَوْمَهٗ فَصَلّٰى لَيْلَةً مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعِشَاءَ ثُمَّ اَتٰى قَوْمَهٗ فَافْتَتَحَ بِسُوْرَةِ الْبَقَرَةِ، فَانْحَرَفَ رَجُلٌ فَسَلَّمَ ثُمَّ صَلّٰى وَحْدَهٗ وَانْصَرَفَ، فَقَالُوْ لَهٗ نَافَقْتَ يَا فُلَانُ. قَالَ لَا وَاللّٰهِ لَاٰتِيَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّا اَصْحٰبُ نَوَاضِحَ نَعْمَلُ بِالنَّهَارِ، وَ اِنَّ مُعَاذًا صَلّٰى مَعَكَ الْعِشَاءَ ثُمَّ اَتٰى قَوْمَهٗ فَافْتَتَحَ بِسُوْرَةِ الْبَقَرَةِ، فَاَقْبَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلٰى مُعَاذٍ. فَقَالَ يَا مُعَاذُ اَفَتَّانٌ اَنْتَ؟ اِقْرَاْ وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا، وَاللَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى، وَسَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى.

(بخاری، مسلم)

60. अन जाबिरिन काला काना मुआज़ुब्नु जबलिन युसल्ली मअन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा सुम्मा याती फयउम्मु कौमहू फसल्ला लैलतन मअन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल-इशाआ सुम्मा अता कौमहू फफतहा बिसूरतिल बक़रति, फनहरफा रजुलुन फसल्लमा सुम्मा सल्ला वहदहू वनसरफा, फकालू लहू नाफक्ता या फुलानु, काला ला, वल्लाहि लआतियन्ना

रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा, फकाला या रसूलल्लाहि इन्ना असहाबु नवाज़िहा नअमलु बिन्नहारि, वइन्ना मुआज़न सल्ला मअकल इशाआ सुम्मा अता कौमहू फफतहा बिसूरतिल बकरति, फअकबला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अला मुआज़िन, फकाला या मुआज़ु अ-फत्तानुन अन्ता? इकरअ वश्शमसि व ज़ुहाहा, वल्लैलि इज़ा यग़शा, व सब्बिहिस्मा रब्बिकल-अअ़ला।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत जाबिर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मुआज़ बिन जबल रज़ि॰ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ (मस्जिदे नबवी में नफ़्ल की निय्यत से) नमाज़ पढ़ते, फिर जा कर अपनी क़ौम की इमामत करते, तो उन्हों ने एक रात इशा की नमाज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पढ़ी, और फिर जाकर इमामत की और सूरह बक़रा शुरू की, तो एक आदमी ने सलाम फ़ेर दिया और अलग अपनी नमाज़ पढ़ कर घर चला गया, दूसरे नमाज़ियों ने (नमाज़ पढ़ने के बाद) उस से कहा, तूने निफ़ाक़ का काम किया, उस ने कहा नहीं, मैं ने मुनाफ़िक़ाना काम नहीं किया। ख़ुदा की क़सम मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाऊँगा (और मुआज़ की लम्बी नमाज़ का क़िस्सा ज़िक्र करूँगा) चुनाचे उस ने आकर कहा ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! हम आबपाशी के ऊँट रखते हैं (मज़दूरी पर लोगों के बाग़ और खेतों की सिंचाई का काम करते हैं) दिन भर अपने काम में लगे रहते हैं, और मुआज़ का हाल यह है कि इशा की नमाज़ आप (सल्ल॰) के साथ पढ़ कर गये, और सूरह बक़रा शुरू कर दी (हम दिन भर के थके मांदे कैसे इतनी देर तक खड़े रह सके हैं)? आप यह सुन पर मुआज़ की तरफ़ मुतवज्जेह हुये और फिर फ़रमाया "ऐ मुआज़! क्या तुम लोगों को फ़ितना में डालते हो? वश्शमसि व ज़ुहाहा पढ़ा करो, वल्ललि इज़ा यग़शा पढ़ा करो, सब्बिहिस्मा रब्बिकल अअला पढ़ा करो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इशा की नमाज़ एक तिहाई रात गुज़रने के बाद पढ़ते। हज़रत मुआज़ (रज़ि॰) हुज़ूर के साथ नफ़्ल की

निय्यत से शरीक होते, फिर जाने में कुछ वक्त लगता, फिर सूरह बक़रा जैसी लम्बी सूरतें पढ़ते, अच्छा ख़ासा वक्त उस में लगता और उधर यह हाल कि लोग दिन भर खेतों और बाग़ों में काम करते करते थक कर चूर हो जाते, ऐसे हालात में और ऐसे लोगों के बीच लम्बी नमाज़ पढ़ाने का नतीजा यही हो सकता है कि लोग भाग खड़े हों। इस पर हुज़ूर ने हज़रत मुआज़ (रज़ि॰) को आगाह किया।

अल्लाह तआला हज़रत मुआज़ (रज़ि॰) से राज़ी हो कि उन के अमल से उम्मत के इमामों को कितनी बड़ी हिदायत मिली।

ज़कात, सदक़-ए-फ़ित्र और उश्र

(٦١) إنَّ اللّٰهَ قَدْ فَرَضَ عَلَيْهِمْ صَدَقَةً تُؤْخَذُ مِنْ اَغْنِيَاءِ هِمْ فَتُرَدُّ عَلٰى فُقَرَاءِ هِمْ.

(متفق عليه)

61. *इन्नल्लाहा क़द फ़रज़ा अलैहिम सदक़तन तूख़ज़ु मिन अग़नियाईहिम फ़तुरद्दु अला फ़ुक़राईहिम।* (मुत्तफ़क़ अलैहि)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बेशक अल्लाह तआला ने लोगों पर सदक़ा फ़र्ज़ किया है जो उन के मालदार लोगों से लिया जाएगा और उसे उन के ज़रूरतमंदों को लौटा दिया जाएगा।

सदक़ा का लफ़्ज़ ज़कात के लिये भी इस्तेमाल होता है जिस का अदा करना ज़रूरी है, और यहाँ यही मुराद है और उस का इतलाक़ (जारी होना) हर उस माल पर भी होता है जो ख़ुद आदमी अपनी ख़ुशी से अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करता है इस हदीस का लफ़्ज़ "तुरद्दु" (लौटाया जाएगा) साफ़ साफ़ बताता है कि ज़कात जो मालदारों से वसूल की जाएगी वह असल में सोसाईटी के ग़रीबों और ज़रूरतमंदों का हक़ है जो उन्हें दिलवाया जाएगा।

(٦٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اٰتَاهُ اللّٰهُ مَالًا فَلَمْ يُؤَدِّ زَكٰوتَهٗ مُثِّلَ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ شُجَاعًا اَقْرَعَ لَهٗ زَبِيْبَتَانِ يُطَوَّقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ثُمَّ يَاخُذُ بِلِهْزِمَتَيْهِ يَعْنِىْ شِدْقَيْهِ ثُمَّ يَقُوْلُ اَنَا مَالُكَ اَنَا كَنْزُكَ، ثُمَّ تَلَا وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ الْاٰيَة. (صحيح بخاری)

62. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन अताहुल्लाहु मालन फलम युअद्दि ज़कातहू मुस्सिला लहू यौमल क़ियामति शुजाअन अक़रआ लहू ज़बीबतानि युतव्वक़ुहू यौमल क़ियामति सुम्मा याख़ुज़ु बिलिहज़िमतैहि यअ़नी शिदक़ैहि सुम्मा यक़ूलु अना मालुका अना कनज़ुका, सुम्मा तला वला यहसबन्नल लज़ीना यबख़लूनल आयति।* (सहीह बुख़ारी)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को अल्लाह तआला ने माल दिया और फिर उस ने उस की ज़कात नहीं अदा की उस का माल क़यामत के दिन बहुत ही ज़हरीले सांप की शक्ल का हो जाएगा जिस के सिर पर दो काले नुक़ते होंगे (यह बहुत ही ज़हरीले होने की निशानी है) और वह उस के गले का तौक़ बन जाएगा, फिर उस के दोनों जबड़ों को यह सांप पकड़ेगा और कहेगा मैं तेरा माल हूँ, मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ।

फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरआन की यह आयत पढ़ी-

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ.

वला यहसबन्नल लज़ीना यबख़लूना।

यानी वह लोग जो अपने माल को ख़र्च करने में कंजूसी करते हैं वह यह न सोचें कि उन की यह कंजूसी उन के हक़ में बेहतर होगी बल्कि वह बुरी होगी। उन का यह माल क़यामत के दिन उन के गले का तौक़ बन जाएगा। यानी वह उन के लिये तबाही व बरबादी का सबब होगा।

(٦٣) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَا خَالَطَتِ الزَّكٰوةُ مَالًا قَطُّ اِلَّا اَهْلَكَتْهُ. (مشكوة)

63. *अन आयशता कालत समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यक़ूलु मा ख़ालततिज़्ज़कातु मालन क़त्तु इल्ला अहलकतहु।* (मिश्कात)

अनुवादः- हज़रत आयशा फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना है कि जिस माल में से ज़कात न निकाली जाये और वह उसी में मिली

जुली रहे तो वह माल को तबाह कर के छोड़ती है।

"तबाह करने" से मुराद यह नहीं है कि जो कोई शख़्स ज़कात न दे और खुद ही खाये तो हर हालत में उस का पूरा सरमाया तबाह हो जाएगा, बल्कि तबाही से मुराद यह है कि वह माल जिस से फ़ायदा उठाने का उस को हक़ न था और जो ग़रीबों ही का हिस्सा था उस ने उसे खाकर अपने दीन व ईमान को तबाह किया। इमाम अहमद बिन हंबल ने यही तशरीह की है और ऐसा भी देखने में आया है कि ज़कात मार खाने वाले का पूरा सरमाया अचानक तबाह हो गया है।

(٦٤) فَرَضَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَكٰوةَ الْفِطْرِ طُهْرَ الصِّيَامِ مِنَ اللَّغْوِ
وَالرَّفَثِ وَطُعْمَةً لِّلْمَسٰكِيْنِ. (ابوداؤد)

64. *फ़रज़ा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ज़कातल फ़ित्रि तुहरस्सियामि मिनल लग़्वि वर्रफ़सि व तुअमतल लिलमसाकीनि।* (अबू दाऊद)

> **अनुवादः-** नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ितरा की ज़कात को उम्मत पर फ़र्ज़ (वाजिब) किया ताकि वह उन बेकार और बेहयाई की बातों से जो रोज़े की हालत में रोज़ादार से हो जाती हैं, कफ़्फ़ारा बने, और ग़रीबों व मिसकीनों के खाने का इन्तिज़ाम हो जाये।

मतलब यह है कि सदक़-ए-फ़ित्र जो शरीअत में वाजिब किया गया है उस के अन्दर दो खूबियाँ काम कर रही हैं, एक यह कि रोज़ादार से रोज़ा की हालत में कोशिश के बावजूद जो कमी और कमज़ोरी रह जाती है उस माल के ज़रिए उस की तलाफ़ी हो जाती है, और दूसरा मक़सद यह है कि जिस दिन सारे मुसलमान ईद की खुशी मना रहे होते हैं उस दिन सोसाईटी के ग़रीब लोग फ़ाक़ा से न रहें, बल्कि उन की खुराक का कुछ न कुछ इन्तिज़ाम हो जाये, शायद यही वजह है कि घर के सारे ही लोगों पर फ़ित्रा वाजिब किया गया है और ईद की नमाज़ से पहले देने को कहा गया है।

(٦٥) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْمَا سَقَتِ السَّمَاءُ وَالْعُيُوْنُ اَوْكَانَ عَثَرِيًّا
الْعُشْرُ وَمَا سُقِيَ بِالنَّضْحِ نِصْفُ الْعُشْرِ. (بخاری، ابن عمرؓ)

65. कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फीमा सकतिस्समाउ वल उयूनु औ काना असरिय्यल उश्रु वमा सुकिया बिन्नज़हि निसफुल उशिर। (बुख़ारी,इब्ने उमर)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो ज़मीन बारिश के पानी से या बहते चश्मे से सींची जाती हो या दरिया के क़रीब होने की वजह से पानी देने की ज़रूरत न पड़ती हो, उन की पैदावार का दसवाँ हिस्सा ज़कात के तौर पर निकाला जाएगा और जिन को मज़दूर लगा कर सींचा जाये उन में बीसवाँ हिस्सा है।

रोज़ा

(٦٦) عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ قَالَ خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ اٰخِرِ يَوْمٍ مِّنْ شَعْبَانَ، فَقَالَ يٰاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ اَظَلَّكُمْ شَهْرٌ عَظِيْمٌ شَهْرٌ مُّبَارَكٌ فِيْهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ، جَعَلَ اللّٰهُ صِيَامَهٗ فَرِيْضَةً وَّ قِيَامَ لَيْلِهٖ تَطَوُّعًا، مَنْ تَقَرَّبَ بِخَصْلَةٍ مِّنَ الْخَيْرِ كَانَ كَمَنْ اَدّٰى فَرِيْضَةً فِيْمَا سِوَاهُ، وَمَنْ اَدّٰى فَرِيْضَةً فِيْهِ كَانَ كَمَنْ اَدّٰى سَبْعِيْنَ فَرِيْضَةً فِيْمَا سِوَاهُ، وَهُوَ شَهْرُ الصَّبْرِ، وَالصَّبْرُ ثَوَابُهُ الْجَنَّةُ، وَ شَهْرُ الْمُوَاسَاةِ.

(مشكوة)

66. अन सलमानल फारिसिय्यि काला ख़तबना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फी आख़िरि यौमिन मिन शअबाना, फकाला या अय्युहन्नासु कद अज़ल्लकुम शहरुन अज़ीमुन शहरुन मुबारकुन फीहि लैलतुन ख़ैरुम्मिन अलफि शह्रिन, जअलल्लाहु सियामहू फरीज़तवं व क़ियामा लैलिही ततव्वुअन, मन तक़र्रबा बिख़सलतिम मिनलख़ैरि काना कमन अद्दा फरीज़तन फीमा सिवाहु, व मन अद्दा फरीज़तन फीहि काना कमन अद्दा सबईना फरीज़तन फीमा सिवाहु, व हुवा शह्रुस्सबि, वस्सबु सवाबुहुल जन्नतु, व शह्रुल मुवासाति। (मिश्कात)

अनुवादः- सलमान फ़ारसी से रिवायत है उन्हों ने कहा कि शअबान की आख़िरी तारीख़ को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुतबा दिया जिस में फ़रमाया, ऐ लोगो! एक बड़ी अज़मत वाला, बड़ी बरकत वाला महीना क़रीब आ गया है, वह

ऐसा महीना है कि जिस की एक रात हज़ार महीनों से बेहतर है अल्लाह तआला ने इस महीना में रोज़ा रखना फ़र्ज़ क़रार दिया है और इस महीना की रातों में तरावीह पढ़ना नफ़्ल कर दिया है (यानी फ़र्ज़ नहीं है बल्कि सुन्नत है जिस को अल्लाह तआला पसन्द फ़रमाता है) जो शख़्स इस महीना में कोई एक नेक काम अपने दिल की ख़ुशी से ख़ुद बख़ुद करेगा तो वह ऐसा होगा जैसे कि रमज़ान के सिवा और महीनों में फ़र्ज़ अदा किया हो, और जो इस महीना में फ़र्ज़ अदा करेगा तो वह ऐसा होगा जैसे कि रमज़ान के सिवा दूसरे महीना में किसी ने सत्तर फ़र्ज़ अदा किये। और यह सब्र का महीना है और सब्र का बदला जन्नत है। और यह महीना सोसाईटी के ग़रीब और ज़रूरतमंदों के साथ हमदर्दी का महीना है।

"सब्र का महीना" होने से मतलब यह है कि रोज़ों के ज़रिए मोमिन को ख़ुदा की राह में जमने और अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाने की तर्बियत दी जाती है। आदमी एक मुक़र्ररह वक़्त तक अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ न खाता है और न पीता है और न बीवी के पास जाता है उस से उस के अन्दर ख़ुदा की इताअत का जज़्बा पैदा होता है। इस से इस बात की मश्क़ होती है कि मौक़ा पड़ने पर वह अपने जज़्बात व ख़्वाहिशात पर और अपनी भूक प्यास पर कितना क़ाबू रख सकता है। दुनिया में मोमिन की मिसाल मैदाने जंग के सिपाही की तरह है जिसे शैतानी ख़्वाहिशों और बुरी ताक़तों से लड़ना है, अगर उस के अन्दर सब्र की सलाहियत न हो तो हमला (आकर्मण) के शुरू ही में अपने आप को दुश्मन के हवाले कर देगा।

"हमदर्दी का महीना" होने का मतलब यह है कि वह रोज़ादार जिन को अल्लाह तआला ने खाता पीता बनाया है उन को चाहिये कि बस्ती के ज़रूरतमंदों को ख़ुदा के दिये हुये इनआम में शरीक करें और उन की सहरी और इफ़्तार का इन्तिज़ाम करें।

असल हदीस में "मुवासात" का लफ़्ज़ आया है जिस का मतलब है माली हमदर्दी करना जिस में ज़ुबानी हमदर्दी भी शामिल है।

(٦٧) مَنْ صَامَ رَمَضَانَ اِيْمَانًا وَّ احْتِسَابًا غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ وَمَنْ قَامَ رَمَضَانَ اِيْمَانًا وَّ احْتِسَابًا غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ. (متفق علیہ)

67. मन सामा रमज़ाना ईमानवं व इहतिसाबन ग़ुफ़िरा लहू मा तक़द्दमा मिन ज़ंबिही व मन क़ामा रमज़ाना ईमानवं व इहतिसाबन ग़ुफ़िरा लहू मा तक़द्दमा मिन ज़ंबिही। (मुत्तफ़क़ु अलैह)

अनुवादः- जिस शख़्स ने ईमानी कैफ़ियत के साथ और आख़िरत के बदले की नियत से रमज़ान के रोज़े रखे तो अल्लाह उस के गुनाहों को माफ़ कर देगा जो पहले हो चुके हैं। जिस ने रमज़ान की रातों में ईमानी कैफ़ियत और आख़िरत के बदले की नियत के साथ नमाज़ (तरावीह) पढ़ी तो उस के उन गुनाहों को अल्लाह तआला माफ़ कर देगा जो पहले हो चुके हैं।

(٦٨) اَلصِّيَامُ جُنَّةٌ، وَاِذَا كَانَ يَوْمُ صَوْمِ اَحَدِكُمْ فَلَا يَرْفُثْ وَلَا يَصْخَبْ، فَاِنْ سَابَّهٗ اَحَدٌ اَوْقَاتَلَهٗ فَلْيَقُلْ اِنِّىْ امْرُؤٌ صَائِمٌ. (بخاری، مسلم)

68. अस्सियामु जुन्नतुन, व इज़ा काना यौमु सौमि अहदिकुम फला यरफुस वला यसख़ब, फइन साब्बहू अहदुन औ क़ातलहू फलयक़ुल इन्नीम रुउन साईमुन। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ा ढाल है और जब तुम में से किसी के रोज़ा का दिन हो तो अपनी ज़ुबान से गन्दी बात न निकाले और न शोर व हंगामा करे और अगर कोई उससे गाली गुलूच करे या लड़ाई करने के लिये तैयार हो तो उस रोज़ादार को सोचना और याद करना चाहिये कि मैं तो रोज़ादार हूँ (भला मैं किस तरह गाली दे सकता और लड़ सकता हूँ)

(٦٩) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصِّيَامُ وَالْقُرْاٰنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ، يَقُوْلُ الصِّيَامُ اَىْ رَبِّ اِنِّىْ مَنَعْتُهُ الطَّعَامَ وَالشَّهَوَاتِ بِالنَّهَارِ فَشَفِّعْنِىْ فِيْهِ، وَيَقُوْلُ الْقُرْاٰنُ مَنَعْتُهُ النَّوْمَ بِاللَّيْلِ فَشَفِّعْنِىْ فِيْهِ فَيُشَفَّعَانِ. (بیہقی، مشکوۃ، عبداللہ بن عمرؓ)

69. क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अस्सियामु

वल कुरआनु यश्फ़आनि लिलअब्दि, यकूलुस्सियामु ऐ रब्बि इन्नी मनअतुहु त्तआमा वश्शहवाति बिन्नहारि फ़शफ़्फ़िअनी फ़ीहि, व यकूलुल कुरआनु मनअतुहू अन्नौमा बिल्लैलि फ़शफ़्फ़िअनी फ़ीहि फ़युशफ़्फ़आनि। (बैहक़ी, मिश्कात, अब्दुल्लाह बिन उमर)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ा और कुरआन मोमिन के लिये सिफ़ारिश करेंगे, रोज़ा कहेगा ऐ मेरे रब! मैं ने इस शख़्स को दिन में खाने और दूसरी लज़्ज़तों से रोका तो यह रुका रहा तो ऐ मेरे रब! इस शख़्स के बारे में मेरी सिफ़ारिश कुबूल कर और कुरआन कहेगा कि मैं ने इस को रात में सोने से रोका (अपनी मीठी नींद छोड़ कर नमाज़ में कुरआन पढ़ता रहा) तो ऐ ख़ुदा इस शख़्स के बारे में मेरी सिफ़ारिश कुबूल कर तो अल्लाह तआला इन दोनों की सिफ़ारिश को कुबूल फ़रमाएगा।

(٧٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ لَّمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّوْرِ وَالْعَمَلَ بِهٖ فَلَيْسَ لِلّٰهِ حَاجَةٌ فِيْ اَنْ يَّدَعَ طَعَامَهٗ وَشَرَابَهٗ. (بخاری، ابوہریرۃؓ)

70. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मल्लम यदअ कौलज़्ज़ूरि वल अमला बिही फ़लैसा लिल्लाहि हाजतुन फ़ी अय्यदआ तआमहू व शराबहू।* (बुख़ारी, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि जिस शख़्स ने रोज़ा रखने के बावजूद झूट बात कहना और उस पर अमल करना नहीं छोड़ा तो अल्लाह को उस से कोई दिलचसपी नहीं कि वह भूका और प्यासा रहता है।

यानी रोज़ा रखवाने से अल्लाह तआला का मक़सद इन्सान को नेक बनाना है अगर वह नेक ही न बना और सच्चाई पर उस ने अपनी ज़िन्दगी की इमारत नहीं उठाई, रमज़ान में भी ग़लत और नाहक़ बात कहता और करता रहा और रमज़ान के बाहर भी उस की ज़िन्दगी में सच्चाई नहीं दिखाई देती तो ऐसे शख़्स को सोचना चाहिये कि वह आख़िर क्यों सुब्ह से शाम तक खाने पीने से रुका रहा।

इस हदीस का मक़सद यह है कि रोज़ादार को रोज़ा रखने के मक़सद

और उस की असल रूह से वाक़िफ़ होना चाहिये और हर वक़्त इस बात को ज़हन में ताज़ा रखना चाहिये कि क्यों खाना पानी छोड़ रखा है।

(٧١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَمْ مِنْ صَائِمٍ لَيْسَ لَهُ مِنْ صِيَامِهٖ

اِلَّا الظَّمَأُ وَكَمْ مِنْ قَائِمٍ لَيْسَ لَهُ مِنْ قِيَامِهٖ اِلَّا السَّهَرُ.

71. काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मिन साईमिन लैसा लहू मिन सियामिही इल्लज़्ज़मउ व कम मिन काईमिन लैसा लहू मिन क़ियामिही इल्लस्सहरु।

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कितने ही बदक़िस्मत रोज़ादार हैं जिन को अपने रोज़े से भूक प्यास के अलावा और कुछ हासिल नहीं होता और (कितने ही रोज़ा की रात में) तरावीह पढ़ने वाले हैं जिन को अपनी तरावीह से जागने के अलावा और कुछ नहीं हाथ आता।

यह हदीस भी पहली हदीस की तरह यह सबक़ देती है कि आदमी को रोज़ा की हालत में रोज़ा के मक़सद को सामने रखना चाहये।

(٧٢) قَالَ حُذَيْفَةُ اَنَا سَمِعْتُهُ يَقُوْلُ فِتْنَةُ الرَّجُلِ فِيْ اَهْلِهٖ وَمَالِهٖ وَجَارِهٖ يُكَفِّرُهَا

الصَّلٰوةُ وَالصِّيَامُ وَالصَّدَقَةُ. (بخاری باب الصوم)

72. काला हुज़ैफ़तु अना समिअतुहू यकूलु फ़ितनतुर्रजुलि फ़ी अहलिही व मालिही व जारिही युकफ़्फ़िरुहा अस्सलातु, वस्सियामु वस्सदक़तु। (बुख़ारी बाबुस्सौम)

अनुवादः- हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि॰ ने कहा कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना कि आदमी जो कुछ अपने घर वालों और माल और पड़ोसी के सिलसिले में ग़लती करता है, नमाज़ रोज़ा और सदक़ा उन ग़लतियों का कफ़्फ़ारा बनते हैं।

मतलब यह कि आदमी अपने बीवी बच्चों के लिये गुनाह में पड़ जाता है इस तरह तिजारत और पड़ोसियों के सिलसिले में आमतौर से कोताही हो जाती है तो इन इबादतो के नतीजे में अल्लाह तआला इन कोताहियों को माफ़ कर देंगे (शर्त यह है कि यह गुनाह जान बूझ कर न

किये गये हों, बल्कि अनजाने में हो गये हों)

(۷۳) قَالَ اَبُوْ هُرَيْرَةَ اِذَا صَامَ فَلْيَدَّهِنْ لَا يُرىٰ عَلَيْهِ اَثَرُ الصَّوْمِ. (الادب المفرد)

73. *काला अबू हुरैरता इज़ा सामा फलयद्दहिन ला युरा अलैहि असरुस्सौमि।* (अल अदबुल मुफ़रद)

अनुवाद:- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) ने फ़रमाया आदमी जब रोज़ा रखे तो चाहिये कि तेल लगाये ताकि उस पर रोज़ा का असर व निशान दिखाई न दे।

हज़रत का मतलब यह है कि रोज़ादार को चाहिये कि अपने रोज़ा की नुमाइश से बचे, नहा धो ले, तेल लगा ले ताकि रोज़ा की वजह से पैदा होने वाली सुस्ती व काहिली दूर हो जाये और रिया (दिखावे) का दरवाज़ा बन्द हो जाये।

(۷۴) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسَحَّرُوْا، فَاِنَّ فِي السُّحُوْرِ بَرَكَةً.

(بخاری)

74. *कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा तसह्हरू, फइन्ना फ़िस्सुहूरि बरकतन।* (बुख़ारी)

अनुवाद:- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों से फ़रमाया कि सहरी खा लिया करो इस लिये कि सहरी खाने में बरकत है।

मतलब यह कि सहरी खा कर रोज़ा रखोगे तो दिन आसानी से कटेगा, ख़ुदा की इबादत और दूसरे कामों में कमज़ोरी और सुस्ती न आएगी सहरी न खाओगे तो भूक की वजह से सुस्ती और कमज़ोरी आएगी, इबादत में जी न लगेगा और यह बड़ी बेबरकती की बात होगी। चुनाचे दूसरी हदीस में फ़रमाया-

اِسْتَعِيْنُوْا بِطَعَامِ السَّحَرِ عَلٰى صِيَامِ النَّهَارِ وَ بِقَيْلُوْلَةِ النَّهَارِ عَلٰى قِيَامِ اللَّيْلِ.

इस्तईनू बितआमिस्सहरि अला सियामिन्नहारि व बिकैलूलतिन्नहारि अला कियामिल्लैलि।

अनुवाद:- दिन को रोज़ा रखने में सहरी से मदद लो और तहज्जुद के लिये उठने में दिन के कैलूले से मदद लो।

عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا يَزَالُ النَّاسُ بِخَيْرٍ مَّا عَجَّلُوْا الْفِطْرَ. (بخاری)

75. अन सहलिब्नि सअदिन अन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला ला यज़ालुन्नासु बिख़ैरिम्मा अज्जलुल फित्रा। (बुख़ारी)

> **अनुवादः-** सहल बिन सअद रज़ि० से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया लोग (यानी मुसलमान) अच्छी हालत में रहेंगे जब तक इफ़्तार में जल्दी करेंगे।

मतलब यह कि यहूद की मुख़ालिफ़त करो, वह अंधेरा छा जाने के बाद रोज़ा खोलते हैं तो अगर तुम इफ़्तार सूरज डूबते ही करोगे और यहूद की पैरवी न करोगे तो यह इस बात की दलील होगी कि तुम दीनी लिहाज़ से अच्छी हालत पर हो।

(٧٦) عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ كُنَّا نُسَافِرُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يَعِبِ الصَّائِمُ عَلَى الْمُفْطِرِ وَلَا الْمُفْطِرُ عَلَى الصَّائِمِ. (بخاری)

76. अन अनसिब्नि मालिकिन काला कुन्ना नुसाफ़िरु मअन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़लम यईबिस्साईमु अललमुफ़्तिरि व ललमुफ़्तिरु अलस्साईमि। (बुख़ारी)

> **अनुवादः-** अनस बिन मालिक (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हम (रमज़ान के महीना में हुज़ूर सल्ल० के साथ सफ़र पर जाते तो कुछ लोग रोज़ा रखते और कुछ न रखते, न रोज़ेदार खाने वाले को टोकता और न खाने वाला रोज़ेदार को टोकता।

मुसाफ़िर को कुरआन में रोज़ा न रखने की इजाज़त दी गई है, जो शख़्स आसानी के साथ सफ़र में रोज़ा रख सके तो उस के लिये रोज़ा रखना बेहतर है और जिसे परेशानी हो तो उस के लिये रोज़ा न रखना बेहतर है, किसी को किसी पर एतराज़ न करना चाहिये।

(٧٧) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو اَلَمْ اُخْبَرْ اِنَّكَ تَصُوْمُ النَّهَارَ وَتَقُوْمُ اللَّيْلَ؟ قُلْتُ بَلٰى يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، قَالَ فَلَا تَفْعَلْ صُمْ وَ اَفْطِرْ وَنَمْ وَ قُمْ، فَاِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا وَّ اِنَّ لِعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا وَّاِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا

وَاِنَّ لِزَوْرِکَ عَلَیْکَ حَقًّا وَّ اِنَّ بِحَسْبِکَ اَنْ تَصُوْمَ فِیْ کُلِّ شَهْرٍ ثَلٰثَةَ اَیَّامٍ.

(بخاری)

77. कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लिअब्दिल्लाहिब्नि अमरिन अलम उख़बर इन्नका तसूमुन्नहारा व तकूमुल्लैला? कुल्तु बला या रसूलल्लाहि काला फला तफ़अल सुम व अफ़्तिर व नम व कुम, फइन्ना लिजसदिका अलैका हक़्क़वं व इन्ना लिऐनिका अलैका हक़्क़न व इन्ना लिज़ौजिका अलैका हक़्क़वं व इन्ना लिज़ौरिका अलैका हक़्क़वं व इन्ना बिहस्बिका अन तसूमा फी कुल्लि शह्‌रिन सलासता अय्यामिन। (बुख़ारी)

अनुवाद:- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (रज़ि॰) से कहा क्या यह बात जो मुझे बताई गई है सही है कि तुम पाबन्दी से दिन में रोज़ा रखते और रात भर नफ़्ल नमाज़ पढ़ते हो? उन्हों ने कहा हाँ हुज़ूर (सल्ल॰) यह बात सही है, आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया तुम ऐसा न करो कभी रोज़ा रखो और कभी खाओ पियो, इसी तरह सोओ भी और तहज्जुद भी पढ़ो, क्योंकि तुम्हारे जिस्म का तुम पर हक़ है, तुम्हारी आँख का तुम पर हक़ है तुम्हारी बीवी का तुम पर हक़ है और तुम्हारे मुलाक़ातियों, मेहमानों का तुम पर हक़ है, और तुम हर महीना में तीन दिन रोज़े रखो, इतना तुम को बस है।

लगातार रोज़ा रखने और रात भर नमाज़ पढ़ने से सेहत बरबाद हो जाएगी और ख़ुसूसियत से ज़्यादा रोज़ा रखने की वजह से आँखों पर बहुत ही ख़राब असर पड़ता है इस लिये हुज़ूर (सल्ल॰)ने उन्हें मना किया मोमिन को हर काम में तवाज़ुन और एतदाल (बराबरी) की तालीम दी गई है।

(۷۸) عَنْ اَبِیْ جُحَیْفَةَ قَالَ اٰخَی النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ بَیْنَ سَلْمَانَ وَ اَبِی الدَّرْدَاءِ، فَزَارَ سَلْمَانُ اَبَا الدَّرْدَاءِ فَرَاٰی اُمَّ الدَّرْدَاءِ مُتَبَذِّلَةً فَقَالَ مَاشَانُکِ؟ قَالَتْ اَخُوْکَ اَبُوْ الدَّرْدَاءِ لَیْسَ لَهٗ حَاجَةٌ فِی الدُّنْیَا فَجَاءَ اَبُوْ الدَّرْدَاءِ فَصَنَعَ لَهٗ طَعَامًا، فَقَالَ لَهٗ کُلْ فَاِنِّیْ صَائِمٌ قَالَ مَا اَنَا بِاٰکِلٍ حَتّٰی تَاْکُلَ فَلَمَّا کَانَ اللَّیْلُ ذَهَبَ اَبُو الدَّرْدَاءِ یَقُوْمُ فَقَالَ لَهٗ نَمْ، فَنَامَ ثُمَّ ذَهَبَ یَقُوْمُ فَقَالَ لَهٗ نَمْ، فَلَمَّا کَانَ مِنْ اٰخِرِ اللَّیْلِ قَالَ سَلْمَانُ قُمِ الْاٰنَ، فَصَلَّیَا جَمِیْعًا، فَقَالَ لَهٗ سَلْمَانُ اِنَّ لِرَبِّکَ عَلَیْکَ حَقًّا، اِنَّ لِاَهْلِکَ عَلَیْکَ

حَقًّا فَاَعْطِ كُلَّ ذِیْ حَقٍّ حَقَّهٗ. فَاَتَی النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَكَرَ ذٰلِكَ لَهٗ فَقَالَ
النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَدَقَ سَلْمَانُ. (بخاری)

78. अन अबी जुहैफता काला अख़न्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बैना सलमाना व अबिद्दरदाअि, फज़ारा सलमानु अबद्दरदाई फरअया उम्मद्दरदाई मुतबज़्ज़िलतन फकाला मा शानुकि? कालत अख़ूका अख़ूका अबद्दरदाई लैसा लहू हाजतुन फिद्दुनिया फजाआ अबुद्दरदाई फसनआ लहू तआमन, फकाला लहू कुल फइन्नी साएमुन काला मा अना बिआकिलिन हत्ता ताकुला, फलम्मा कानल्लैलु ज़हबा अबुद्दरदाई यकूमु फकाला लहू नम, फनामा सुम्मा ज़हबा यकूमु, फकाला लहू नम, फलम्मा काना मिन आख़िरिल्लैलि काल सलमानु कुमिलआना, फसल्लया जमीअन, फकाला लहू सलमानु इन्ना लिरब्बिका अलैका हक़्कन, व इन्ना लिनफ़्सिका अलैका हक़्कन, इन्ना लिअहलिका अलैका हक़्कन फ-अअति कुल्ला ज़ी-हक़्किन हक़्क़हू फअतन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा, फज़करा ज़ालिका लहू फकालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा सदका सलमानु। (बुख़ारी)

अनुवादः- अबू जुहैफ़ा (रज़ि॰) ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (मदीन: आने के बाद) अबुद्दरदा (रज़ि॰) और सलमान फ़ारसी (रज़ि॰) को आपस में भाई बनाया था, तो सलमान अबुद्दरदा (रज़ि॰) के यहाँ मुलाक़ात को गये तो उम्मुद्दरदा (अबुद्दरदा की बीवी) को मामूली लिबास में देखा (कोई बनाव सिंगार नहीं था) तो सलमान (रज़ि॰) ने पूछा कि तुम्हारा यह क्या हाल है (क्यों बेवा औरतों की तरह हालत बना रखी है?) तो उन्हों ने कहा तुम्हारे भाई अबुद्दरदा को दुनिया से कोई मतलब रहा नहीं (फिर बनाव सिंगार किस के लिये करूँ?) उस के बाद अबुद्दरदा आये और मेहमान भाई के लिये खाना तैयार कराया और कहा खाओ मैं तो रोज़े से हूँ, सलमान (रज़ि॰) ने कहा जब तक तुम न खाओगे मैं नहीं खा सकता, तो उन्हों ने रोज़ा तोड़ कर उन के साथ खाना खाया, फिर जब रात आई तो नवाफ़िल के इरादे से उठे, सलमान ने कहा सोओ,

तो वह (घर में) जा कर सोये, फिर नवाफ़िल के लिये उठे तो सलमान (रज़ि॰) ने कहा सोओ, और रात के आख़िरी हिस्से में सलमान ने फ़रमाया उठो, चुनाचे दोनों ने इकट्ठे तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी, फिर सलमान ने उन से कहा, देखों तुम पर तुम्हारे रब का हक़ है, तुम्हारे नफ़्स का हक़ है, तुम्हारी बीवी का हक़ है तो सब का हक़ अदा करो, फिर हुज़ूर के पास आये और सारा क़िस्सा बयान किया तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया सलमान ने सही बात कही।

(٧٩) عَنْ مُجِيْبَةَ الْبَاهِلِيَّةِ عَنْ اَبِيْهَا اَوْعَمِّهَا اَنَّهُ اَتَى رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ انْطَلَقَ فَاَتَاهُ بَعْدَ سَنَةٍ وَّ قَدْ تَغَيَّرَتْ حَالَتُهُ وَهَيْئَتُهُ فَقَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَمَا تَعْرِفُنِيْ؟ قَالَ مَنْ اَنْتَ؟ قَالَ اَنَا الْبَاهِلِيُّ الَّذِيْ جِئْتُكَ عَامَ الْاَوَّلِ، قَالَ فَمَا غَيَّرَكَ وَقَدْ كُنْتَ حَسَنَ الْهَيْئَةِ؟ قَالَ مَا اَكَلْتُ طَعَامًا مُنْذُ فَارَقْتُكَ اِلَّا بِلَيْلٍ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ عَذَّبْتَ نَفْسَكَ، ثُمَّ قَالَ صُمْ شَهْرَ الصَّبْرِ وَ يَوْمًا مِّنْ كُلِّ شَهْرٍ، قَالَ زِدْنِيْ فَاِنَّ بِيْ قُوَّةً قَالَ صُمْ يَوْمَيْنِ، قَالَ زِدْنِيْ، قَالَ صُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ، قَالَ زِدْنِيْ، قَالَ صُمْ مِنَ الْحُرُمِ وَاتْرُكْ، صُمْ مِنَ الْحُرُمِ وَاتْرُكْ وَقَالَ بِاَصَابِعِهِ الثَّلٰثِ فَضَمَّهَا ثُمَّ اَرْسَلَهَا. (ابوداؤد)

79. अन मुजीबतल बाहिलिय्यति अन अबीहा अव अम्मिहा अन्नहु अता रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा सुम्मा अनतलक़ा फअताहु बअदा सनतिवं व क़द तग़य्यरत हालतुहू व हैअतुहू फक़ाला या रसूलल्लाहि अमा तअरिफुनी? क़ाला मन अन्ता? क़ाला अनल बाहिलिय्युल्लज़ी जिअतुका आमल अव्वलि, क़ाला फमा ग़य्यरका व क़द कुन्ता असनल हैअति? क़ाला मा अकल्तु तआमम मुन्ज़ु फारक़्तुका इल्ला बिलैलिन, फक़ाला रसूलुल्लाहि अज़्ज़ब्ता नफ़्सका, सुम्मा क़ाला सुम शहरस्सब्रि व यौमम्मिन कुल्लि शहरिन, क़ाला ज़िदनी फइन्ना बी कुव्वतन क़ाला सुम यौमैनि, क़ाला ज़िदनी, क़ाला सुम सलासतन अय्यामिन, क़ाला ज़िदनी, क़ाला सुम मिनल हुरुमि वतरुक, सुम मिनलहुरुमि वतरुक व क़ाला बिअसाबिहिस्सलासि फज़म्महा सुम्मा अरसलहा। (अबूदाऊद)

अनुवाद:- हज़रत मुजीबा (रज़ि॰) ने (जो क़बील-ए-बाहिला की एक औरत थीं) अपने बाप या चचा के बारे में बताया कि वह

(दीन सीखने के लिये) हुज़ूर (सल्ल०) के पास गये फिर वापस घर आये और एक साल के बाद फिर हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुये, उस वक़्त उन की हालत बिल्कुल बदली हुई थी उन्हों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) आप ने मुझे नहीं पहचाना? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया नहीं, तुम अपना तआरुफ़ (परिचय) कराओ कौन हो? उन्हों ने कहा हुज़ूर! मैं क़बील-ए-बाहिला का आदमी हूँ, गुज़रे हुये साल में हाज़िर हुआ था, आप ने फ़रमाया कि तुम्हारा यह क्या हाल हुआ? गुज़रे हुये साल जब तुम आये तो अच्छी शक्ल व सूरत में थे, उन्हों ने बताया कि जब से मैं आप के पास से गया उस वक़्त से अब तक लगातार रोज़े रख रहा हूँ, सिर्फ़ रात में खाना खाता हूँ, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम ने अपने आप को अज़ाब में डाला (यानी लगातार रोज़े रख कर जिस्म को घुला दिया) फिर आप ने उन को हिदायत की कि रमज़ान के रोज़ों के अलावा हर महीना एक रोज़ा रख लिया करो, उन्हों ने कहा हुज़ूर! और बढ़ा दें मेरे अन्दर ताक़त है (एक से ज़्यादा रोज़ा रखने की) आप ने कहा अच्छा हर महीने दो दिन रख लिया करो, उन्हों ने कहा कि कुछ और बढ़ा दीजिये, आप (सल्ल०) ने कहा अच्छा हर महीने में तीन दिन, उन्हों ने कहा कुछ और बढ़ा दीजिये, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अच्छा हर साल मुहतरम महीनों में रोज़ा रखो और छोड़ दो, ऐसा ही हर साल करो, यह फ़रमाते हुये आप ने अपनी तीन उंगलियों को मिलाया फिर छोड़ दिया (इस से इशारा देना था कि मुहतरम महीनों रजब, ज़ीक़अदा, ज़िलहिज्जा और मुहर्रम में रोज़े रखा करो, और किसी साल नाग़ा भी कर दो।

एअतकाफ़

(٨٠) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْتَكِفُ الْعَشْرَ الْاَوَاخِرَ مِنْ رَمَضَانَ. (بخاری، مسلم)

80. *अनिब्नि उमरा काला काना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यअतकिफुल अश्रल अवाख़िरा मिन रमज़ाना।* (बुख़ारी)

अनुवादः–अब्दुल्लाह बिन उमर का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के आख़िरी दस दिनों में एअतकाफ़ करते थे।

यूँ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा ख़ुदा की बन्दगी में लगे रहते लेकिन रमज़ान में आप का ज़ौक़ व शौक़ और बढ़ जाता, और उस में भी आख़िरी दस दिन तो बिल्कुल अल्लाह की इबादत में गुज़ारते, मस्जिद में जा बैठते, नफ़्ल नमाज़ और कुरआन की तिलावत और ज़िक्र व दुआ में लगे रहते और ऐसा इस लिये करते कि रमज़ान का महीना मोमिन की तैयारी का ज़माना होता है, ताकि ग्यारह महीने शैतान और शैतानी ताक़तों से लड़ने के लिये ताक़त हासिल हो जाये।

(٨١) عَنْ عَائِشَةَ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ اِذَا دَخَلَ الْعَشْرُ الْاَوَاخِرُ اَحْيَا اللَّيْلَ وَاَيْقَظَ اَهْلَهُ وَشَدَّ الْمِئْزَرَ.

81. *अन आयशता अन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काना इज़ा दख़लल अश्रुल अवाख़िरु अहयल्लैला व ऐक़ज़ा अह्लहू व शद्दल मिअज़रा।*

हज़रत आयशा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हाल यह था कि जब रमज़ान का आख़िरी अशरा (आख़िरी दस दिन) आता तो रातों को ज़्यादा से ज़्यादा जाग कर इबादत करते, और अपनी बीवियों को जगाते (ताकि वह भी ज़्यादा से ज़्यादा जाग कर नवाफ़िल और तहज्जुद पढ़ें) और ख़ुदा की इबादत के लिये आप तहबन्द कस कर बांधते (यह मुहावरा है, मतलब यह कि पूरे जोश मशग़ूलियत के साथ इबादत में लग जाते।

हज

(٨٢) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ قَالَ خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يٰاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الْحَجَّ فَحُجُّوْا. (منتقى)

82. *अन अबी हुरैरता काला ख़तबना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फकाला या अय्युहन्नासु क़द फरज़ल्लाहु अलैकुमुल हज्जा फहुज्जू।* (मुन्तक़ा)

अनुवादः– अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तक़रीर फ़रमाई, कहा ऐ लोगो! अल्लाह ने तुम पर हज फ़र्ज़ किया है तो हज करो।

(٨٣) قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اَتَى هٰذَا الْبَيْتَ فَلَمْ يَرْفُثْ وَلَمْ يَفْسُقْ، رَجَعَ كَمَا وَلَدَتْهُ اُمُّهٗ.

83. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन अता हाज़ल बैता फलम यरफुस व लम यफसुक, रजआ कमा वलदतहु उम्मुहू।*

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स इस घर (काबा) की ज़ियारत को आया और उस ने न तो शहवत (लालसा) की कोई बात की और न खुदा की नाफ़रमानी का कोई काम किया तो वह अपने घर को उस हालत में लौटेगा जिस हालत में उस की माँ ने उसे पैदा किया था (यानी बिल्कुल पाक-साफ़ हो कर लौटेगा, अल्लाह तआला उस के गुनाहों को माफ़ कर देगा)।

(٨٤) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ قَالَ سُئِلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَىُّ الْاَعْمَالِ اَفْضَلُ؟ قَالَ اِيْمَانٌ بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ قِيْلَ ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ اَلْجِهَادُ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قِيْلَ ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ ثُمَّ حَجٌّ مَّبْرُوْرٌ. (متفق)

84. *अन अबी हुरैरता काला सुईला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अय्युल अअमालि अफज़लु? काला ईमानुम बिल्लाहि व बिरसूलिही कीला सुम्मा माज़ा? काला अल-जिहादु फी सबीलिल्लाहि कीला सुम्मा माज़ा? काला सुम्मा हज्जुम मबरूरुन।*

(मुत्तफ़क़)

अनुवादः– अबू हुरैरा रज़ि॰ फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कौन का काम बेहतर है? आप ने फ़रमाया अल्लाह और रसूल पर ईमान लाना। पूछने वाले ने कहा उस के बाद कौन सा काम सब से बेहतर है? आप ने फ़रमाया खुदा के दीन के लिये जिहाद करना, पूछा गया उस के बाद कौन सा अमल बेहतर है? आप ने फ़रमाया वह हज जिस में

आदमी से खुदा की नाफ़रमानी (अवज्ञा) न हुई हो।

(٨٥) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اَرَادَ الْحَجَّ فَلْيَتَعَجَّلْ فَاِنَّهُ قَدْ يَمْرَضُ الْمَرِيْضُ وَتَضِلُّ الرَّاحِلَةُ وَتَعْرِضُ الْحَاجَةُ. (ابن ماجہ، ابن عباسؓ)

85. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन अरादल हज्जा फलयतअज्जल फ-इन्नहू कद यमरज़ुल मरीज़ु व तज़िल्लुर्राहिलतु व तअरिज़ुल हाजतु।* (इब्ने माजा, इब्ने अब्बास रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स हज का इरादा करे उसे जल्दी करनी चाहिए क्योंकि हो सकता है वह बीमार पड़ जाए, हो सकता है ऊँटनी खो जाए (यानी सफ़र करने का ज़रिया न रहे, रास्ता ख़तरनाक हो जाए, सफ़र ख़र्च बाक़ी न रहे) और हो सकता है कोई ज़रूरत ऐसी पेश आ जाए जो हज के सफ़र को नामुम्किन बना दे (इस लिये जल्दी करो, मालूम नहीं क्या मजबूरी आ जाए और तुम हज न कर सको।

(٨٦) عَنِ الْحَسَنِ قَالَ، قَالَ عُمَرُبْنُ الْخَطَّابِ لَقَدْ هَمَمْتُ اَنْ اَبْعَثَ رِجَالًا اِلٰى هٰذِهِ الْاَمْصَارِ فَيَنْظُرُوْا كُلَّ مَنْ كَانَ لَهُ جِدَةٌ وَّلَمْ يَحُجَّ فَيَضْرِبُوْا عَلَيْهِمُ الْجِزْيَةَ، مَاهُمْ بِمُسْلِمِيْنَ، مَا هُمْ بِمُسْلِمِيْنَ. (المنتقى)

86. *अनिलहसनि काला, काला उमरुब्नुल ख़त्ताबि लकद हममतु अन अबअसा रिजालन इला हाज़िहिल अमसारि फयनज़ुरू कुल्ला मन काना लहू जिदतुन व लम यहुज्जु फयज़रिबू अलैहिमुल जिज़्यता, माहुम बिमुस्लिमीना, माहुम बिमुस्लिमीना।* (मुन्तक़ा)

अनुवादः- हसन (रज़ि०) कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने फ़रमाया, मेरा इरादा यह है कि इन शहरों (इस्लामी मुल्कों) में कुछ आदमी भेजूं जो देखें कि कौन लोग हज कर सकते हैं और उन्हों ने नहीं किया है फिर वह उन पर जिज़िया लगा दें (वह हिफ़ाज़ती टैक्स जो ग़ैर मुस्लिम शहरियों से लिया जाता है) यह लोग मुस्लिम नहीं हैं, यह लोग मुस्लिम नहीं हैं (अगर "मुस्लिम" होते तो कभी का हज कर चुके होते। मुस्लिम का

मतलब होता है अपने आप को अल्लाह के हवाले कर देने वाला, अगर उस ने वाक़ई अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दिया है तो वह बग़ैर किसी मजबूरी के हज जैसी अहम इबादत से ग़फ़लत क्यों करेगा।

(٨٧) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ خَرَجَ حَاجًّا اَوْمُعْتَمِرًا اَوْغَازِيًا ثُمَّ مَاتَ فِيْ طَرِيْقِهٖ كَتَبَ اللّٰهُ لَهٗ اَجْرَالْغَازِىْ وَالْحَاجِّ وَالْمُعْتَمِرِ.

(مشکوۃ، ابوہریرۃؓ)

87. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन ख़रजा हाज्जन औ मुअतमिरन औ ग़ाज़ियन सुम्मा माता फी तरीक़िही कतबल्लाहु लहू अजरल ग़ाज़ी वल हाज्जि वल मुअतमिरि।*

(मिश्कात–अबू हुरैरा)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स हज या उमरा या जिहाद के इरादे से अपने घर से निकला फिर रास्ता में उसे मौत आ गई तो अल्लाह उस को वही सवाब व बदला देगा जो उस के यहाँ हाजी, ग़ाज़ी और उमरा करने वालों के लिये मुक़र्रर है।

मुआमलात

हलाल कमाई

(٨٨) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا اَكَلَ اَحَدٌ طَعَامًا قَطُّ خَيْرًا مِنْ اَنْ يَّاْكُلَ مِنْ عَمَلِ يَدَيْهِ، وَاِنَّ نَبِيَّ اللّٰهِ دَاوٗدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَاْكُلُ مِنْ عَمَلِ يَدَيْهِ.
(بخاری، مقدام بن معدی کربؓ)

88. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा अकला अहदुन तआमन क़त्तु ख़ैरम मिन अय्याकुला मिन अमलि यदैहि, व इन्ना नबिय्यल्लाहि दाऊदा अलैहिस्सलामु काना याकुलु मिन अमलि यदैहि।* (बुख़ारी, मिक़दाम बिन मअदी करब)

> **अनुवादः**– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपने हाथ की कमाई से बेहतर खाना किसी शख़्स ने कभी नहीं खाया और अल्लाह तआला के नबी दाऊद अलैहिस्सलाम अपने हाथों की कमाई खाते थे।

इस हदीस के बयान करने का मक़सद मोमिनों को भीक माँगने और दूसरों के सामने हाथ फैलाने से रोकना है और इस बात की तालीम देनी है कि आदमी को अपनी रोज़ी ख़ुद कमानी चाहिये किसी शख़्स पर बोझ बन कर ज़िन्दगी नहीं गुज़ारनी चाहिये।

(٨٩) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ طَيِّبٌ لَا يَقْبَلُ اِلَّا طَيِّبًا، وَاِنَّ اللّٰهَ اَمَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ بِمَا اَمَرَ بِهِ الْمُرْسَلِيْنَ فَقَالَ يٰاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا، وَقَالَ تَعَالٰى يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ، ثُمَّ ذَكَرَ الرَّجُلَ يُطِيْلُ السَّفَرَ اَشْعَثَ اَغْبَرَ يَمُدُّ يَدَيْهِ اِلَى السَّمَاءِ يَارَبِّ وَمَطْعَمُهٗ حَرَامٌ وَّمَشْرَبُهٗ حَرَامٌ وَّمَلْبَسُهٗ حَرَامٌ وَّغُذِيَ بِالْحَرَامِ فَاَنّٰى يُسْتَجَابُ لِذٰلِكَ. (مسلم، ابوہریرہؓ)

89. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नल्लाहा तय्यबुन लायकबलु इल्ला तय्यिबन, व इन्नल्लाहा अमरल मुमिनीना*

बिमा अमरा बिहिल मुरसलीना फकाला या अय्युहर्रसुलु कुलू मिनत्तयियबाति वअमलू सालिहन, व काला तआला या अय्युहल्लज़ीना आमनू कुलू मिन तय्यिबाति मा रज़कनाकुम, सुम्मा ज़करर्रजुला युतीलुस्सफरा अशअसा अग़बरा यमुद्दु यदैहि इलस्समाई या रब्बि व मतअमुहू हरामुवं वमशरबुहू हरामुवं व मलबसुहू हरामुवं व ग़ुज़िया बिलहरामि फअन्ना युसतजाबु लिज़ालिका।

(मुस्लिम-अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला पाक है और वह सिर्फ़ पाक माल ही को कुबूल करता है और अल्लाह तआला ने मोमिनों को इसी बात का हुक्म दिया है जिस का उस ने रसूलों को हुक्म दिया है, चुनाचे उस ने फ़रमाया ऐ पैग़म्बरो पाकीज़ा रोज़ी खाओ, और नेक अमल करो और मोमिनों को ख़िताब करते हुये उस ने कहा ऐ ईमान वालो जो पाक और हलाल चीज़ें हम ने तुम को दी हैं वह खाओ, फिर आप ने एक ऐसे आदमी का ज़िक्र किया जो लम्बी दूरी तैय कर के मुक़द्दस जगह पर आता है गुबार से अटा हुआ है, और अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ फैला कर कहता है, ऐ मेरे रब! (और दुआएँ माँगता है) हालाँकि उस का खाना हराम है, उस का पानी हराम है, उस का लिबास हराम है और हराम ही पर वह पला है तो ऐसे शख़्स की दुआ क्यों कुबूल हो सकती है।

इस हदीस में पहली बात यह कही गई है कि ख़ुदा सिर्फ़ वही सदक़ा कुबूल करता है जो पाक और जाइज़ कमाई का हो, हराम माल अगर उस के रास्ते में ख़र्च किया जाये तो वह उसे कुबूल नहीं करता।

दूसरी बात यह फ़रमाई कि जिस आदमी की कमाई हराम हो, नाजाइज़ तरीक़े से हासिल की गई हो तो उस की दुआ अल्लाह तआला कुबूल नहीं करता।

(٩٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَاتِىْ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يُبَالِى الْمَرْءُ مَا اَخَذَ مِنْهُ مِنَ الْحَلَالِ اَمْ مِنَ الْحَرَامِ.

(بخاری،ابو ہریرہؓ)

90. काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा याती अलन्नासि ज़मानुन लाउबालिल मरउ मा अख़ज़ा मिनहु मिनल हलालि अम मिनल हरामि। (बुख़ारी-अबू हुरैरा)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा जिस में आदमी इस बात की परवाह नहीं करेगा कि उस ने जो माल कमाया है वह हलाल है या हराम।

(٩١) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا يَكْسِبُ عَبْدٌ مَالَ حَرَامٍ فَيَتَصَدَّقُ مِنْهُ فَيُقْبَلُ مِنْهُ، وَلَا يُنْفِقُ مِنْهُ فَيُبَارَكُ لَهُ فِيْهِ وَلَا يَتْرُكُهُ خَلْفَ ظَهْرِهٖ اِلَّا كَانَ زَادَهٗ اِلَى النَّارِ، اِنَّ اللّٰهَ لَا يَمْحُو السَّيِّءَ بِالسَّيِّءِ وَلٰكِنْ يَمْحُو السَّيِّءَ بِالْحَسَنِ، اِنَّ الْخَبِيْثَ لَا يَمْحُو الْخَبِيْثَ. (مشكوٰة)

91. अन अब्दिल्लाहिब्नि मसऊदिन अन रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला ला यकसिबु अब्दुन माला हरामिन फयतसद्दकु मिनहु फयुक़्बलु मिनहु, वला युनफ़िकु मिनहु फयुबारकु लहू फ़ीहि वला यतरुकुहू ख़ल्फ़ा ज़हरिही इल्ला काना ज़ादहू इलन्नारि, इन्नल्लाहा ला यमहुस्सय्यिआ बिस्सय्यिई व लाकिंयमहुस्सय्यिआ बिल हसनि, इन्नल ख़बीसा ला यमहुल ख़बीसा। (मिश्कात)

अनुवादः- अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई बन्दा हराम माल खाये फिर उस में से ख़ुदा के रास्ते में सदक़ा करे तो यह सदक़ा उस की तरफ़ से कुबूल नहीं किया जाएगा और अगर अपने आप पर और अपने घर वालों पर ख़र्च करेगा तो बरकत से ख़ाली होगा, अगर वह उस को छोड़ कर मरा तो वह उस के जहन्नम के सफ़र में रास्ते का सामान बनेगा। अल्लाह तआला बुराई को बुराई के ज़रिए नहीं मिटाता है बल्कि बुरे अमल को अच्छे अमल से मिटाता है, ख़बीस ख़बीस को नहीं मिटाता है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि नेकी का काम जाइज़ तरीक़े से किया

जाऐगा तब वह नेक काम समझा जाएगा, मक़सद भी पाक होना चाहिये और उस का ज़रिया भी पाक होना चाहिये।

(٩٢) عَنْ سَعِيْدِبْنِ اَبِى الْحَسَنِ قَالَ كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ عَبَّاسٍ اِذْ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ يَاابْنَ عَبَّاسٍ اِنِّى رَجُلٌ اِنَّمَا مَعِيْشَتِىْ مِنْ صَنْعَةِ يَدِىْ وَاِنِّى اَصْنَعُ هٰذِهِ التَّصَاوِيْرَ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ لَا اُحَدِّثُكَ اِلَّا مَا سَمِعْتُ مِنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعْتُهُ يَقُوْلُ مَنْ صَوَّرَ صُوْرَةً فَاِنَّ اللّٰهَ مُعَذِّبُهٗ حَتّٰى يَنْفُخَ فِيْهِ الرُّوْحَ وَلَيْسَ بِنَافِخٍ فِيْهَا اَبَدًا. فَرَبَا الرَّجُلُ رَبْوَةً شَدِيْدَةً وَاصْفَرَّ وَجْهُهٗ فَقَالَ وَيْحَكَ اِنْ اَبَيْتَ اِلَّا اَنْ تَصْنَعَ فَعَلَيْكَ بِهٰذَا الشَّجَرِ وَكُلِّ شَىْءٍ لَيْسَ فِيْهِ رُوْحٌ. (بخارى)

92. अन सईदिब्नि अबिल हसनि काला कुन्तु इन्दब्नि अब्बासिन इज़ जाअहू रजुलुन फ़काला यबना अब्बासिन इन्नी रजुलुन इन्नमा मईशती मिन सनअति यदी व इन्नी अस्नउ हाज़िहित्तसावीरा फ़कालब्नु अब्बासिन ला उहद्दिसुका इल्ला मा समिअतु मिन रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा समिअतुहू यक़ूलु मन सव्वरा सूरतन फ़इन्नल्लाहा मुअज़्ज़िबुहू हत्ता यनफ़ुख़ा फ़ीहिर्रूहा व लैसा बिनाफ़िख़िन फ़ीहा अबदा। फ़-रबर्रजुलु रब्वतन शदीदतन वस्फ़र्रा वज्हुहू फ़काला वैहका इन अबैता इल्ला अन तस्नआ फ़-अलैका बिहाज़श्शजरि व कुल्लि शैइन लैसा फ़ीहि रूहुन। (बुख़ारी)

अनुवाद:- सईद बिन अबुलहसन (ताबई) फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि॰) के पास बैठा हुआ था, इतने में एक आदमी आया उस ने कहा ऐ इब्ने अब्बास (रज़ि॰) मैं एक दस्तकार आदमी हूँ, दस्तकारी ही मेरी कमाई का ज़रिया है। मैं जानदारों की तसवीरें बनाता और बेचता हूँ (इस के बारे में आप की क्या राय है, मेरा यह पेशा हराम तो नहीं?) इब्ने अब्बास (रज़ि॰) ने फ़रमाया कि मैं अपनी तरफ़ से कुछ न कहूँगा, मैं तुम को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनी हुई हदीस सुनाऊँगा, मैं ने आप (सल्ल॰) को यह फ़रमाते हुये सुना कि जो शख़्स तसवीर बनाएगा तो अल्लाह उस को सज़ा देगा, यहाँ तक कि वह उस तसवीर में रूह फूंक दे और वह बिल्कुल रूह न फूंक सकेगा। यह सुन कर उस आदमी का

चेहरा पीला पड़ गया और ज़ोर से ऊपर को साँस खींची, इब्ने अब्बास ने उस से कहा कि अगर तुम्हें यही काम करना है तो पेड़ों और ऐसी चीज़ों की तसवीरें बनाया करो जिन में जान नहीं होती।

तसवीर बनाने वाले को अपने काम के बारे में शक हो गया, इस लिये उस ने आकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि॰) से पूछा, यह उस के मोमिन होने की निशानी है, अगर उस के दिल में ख़ुदा का डर न होता, अगर उसे पाक और जाइज़ कमाई की फ़िक्र न होती तो उन के पास जाता ही क्यों, जिन को आख़िरत में पकड़ का डर नहीं होता वह हलाल व हराम की कब परवाह करते हैं?।

तिजारत (व्यापार)

(٩٣) عَنْ رَّافِعِ بْنِ خَدِيْجٍ قَالَ، قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَیُّ الْكَسْبِ اَطْيَبُ؟ قَالَ عَمَلُ الرَّجُلِ بِيَدِهٖ وَكُلُّ بَيْعٍ مَّبْرُوْرٍ. (مشکوٰۃ)

93. *अन राफ़िइब्नि ख़दीजिन काला क़ीला या रसूलल्लाहि अय्युल कस्बि अतयबु? काला अमलुर्रजुलि बियदिही व कुल्लु बैइम मबरूरिन।* (मिश्कात)

अनुवादः– राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया ऐ अल्लाह के रसूल! सब से ज़्यादा अच्छी कमाई कौन सी है? आप ने फ़रमाया आदमी का अपने हाथ से काम करना, और वह तिजारत जिस में ताजिर बेईमानी और झूट से काम नहीं लेता।

(٩٤) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَحِمَ اللّٰهُ رَجُلًا سَمْحًا اِذَا بَاعَ وَاِذَا اشْتَرٰى وَاِذَا اقْتَضٰى. (بخاری، جابرؓ)

94. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा रहिमल्लाहु रजुलन समहन इज़ा बाआ व इज़्शतरा व इज़क़्तज़ा।* (बुख़ारी–जाबिर रज़ि॰)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस शख़्स पर अल्लाह रहम फ़रमाये जो नर्मी और अच्छा बर्ताव करता है ख़रीदने में और बेचने में और अपना क़र्ज़ मांगने में।

(٩٥) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ التَّاجِرُ الصَّدُوْقُ الْاَمِيْنُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ. (ترمذی۔ابوسعید خدریؓ)

95. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अत्ताजिरुस सदूकुल अमीनु मअन्नबिय्यीना वस्सिद्दीकीना वश्शुहदाई।*

(तिर्मिज़ी- अबू सईद खुदरी रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सच्चाई के साथ मुआमला करने वाला ईमानदार ताजिर क़यामत के दिन नबियों, सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ होगा।

तिजारत ज़ाहिर में एक दुनियादाराना काम है लेकिन अगर इसे सच्चाई और ईमानदारी के साथ किया जाये तो इबादत बन जाती है और ऐसे ताजिर को खुदा के पाक बन्दों यानी अम्बिया अलैहिमुस्सलाम और सच्चों और खुदा की राह में शहीद होने वालों का साथ नसीब होगा।

सिद्दीक़ से मुराद वह मोमिन है जिस की ज़िन्दगी सच्चाई में गुज़री हो, जिस ने अल्लाह तआला और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किये हुये वादे को ज़िन्दगी भर निबाहा हो जिस की ज़िन्दगी में कहने और करने में फ़र्क़ न हो।

(٩٦) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ التُّجَّارُ يُحْشَرُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فُجَّارًا اِلَّا مَنِ اتَّقٰى وَبَرَّ وَصَدَقَ. (ترمذی۔رفاعہ)

96. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अत्तुज्जारु युहशरूना यौमल क़ियामति फुज्जारन इल्ला मनित्तक़ा व बर्रा व सदक़ा।* (तिर्मिज़ी-रिफ़ाआ)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ताजिर लोग क़यामत के दिन बदकार की हैसियत से उठाए जाएँगे, उन ताजिरों के अलावा जिन्हों ने अपने कारोबार में तक़्वा अपनाया (यानी खुदा की नाफ़रमानी से बचे रहे और नेकी का काम अपनाया) यानी लोगों को पूरा हक़ दिया और सच्चाई के साथ मुआमला किया।

(٩٧) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِيَّاكُمْ وَكَثْرَةَ الْحَلْفِ فِى الْبَيْعِ فَاِنَّهُ يُنَفِّقُ ثُمَّ يَمْحَقُ. (مسلم، ابوقتادہؓ)

97. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इय्याकुम व कसरतल हल्फि फिल बैई फ-इन्नहू युनफिकु सुम्मा यमहकु।*

(मुस्लिम अबू क़तादा)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताजिरों को ख़बरदार करते हुये) फ़रमाया अपने माल बेचने में ज़्यादा क़स्में खाने से बचो यह चीज़ (वक़्ती तौर पर) तो कारोबार को बढ़ाती है लेकिन आख़िर में बरकत को ख़त्म कर देती है।

ताजिर अगर गाहक को क़ीमत वग़ैरा के बारे में क़सम के ज़रिए यक़ीन दिलाये कि उस की यही क़ीमत है और यह माल बहुत अच्छा है तो वक़्ती तौर पर तो हो सकता है कुछ गाहक धोका खा जाएँ और ख़रीद लें लेकिन जब उन पर बाद में हक़ीक़त खुलेगी तो फिर कभी वह उस दुकान का रुख़ न करेंगे और इस तरह इस ताजिर का कारोबार ठप हो कर रह जाएगा।

(٩٨) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلٰثَةٌ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ. قَالَ اَبُوْذَرٍّ خَابُوْا وَخَسِرُوْا مَنْ هُمْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ الْمُسْبِلُ وَالْمَنَّانُ وَالْمُنَفِّقُ سِلْعَتَهُ بِالْحَلْفِ الْكَاذِبِ.

98. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा सलासतुन ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु यौमल क़ियामति वला यनज़ुरु इलैहिम वला युज़क्कीहिम व लहुम अज़ाबुन अलीम, काला अबू ज़र्रिन ख़ाबू व ख़सिरु मन हुम या रसूलल्लाहि? काला अल-मुस्बिलु वलमन्नानु वलमुनफ़िकु सिलअतहू बिल हलफ़िल काज़िबि।* (मुस्लिम-अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन क़िस्म के लोग ऐसे हैं कि जिन से अल्लाह तआला क़यामत के दिन न तो बात करेगा और न उन की तरफ़ देखेगा और न उन को पाक कर के जन्नत में दाख़िल करेगा बल्कि उन को बड़ा अज़ाब देगा। हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी (रज़ि०) ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! यह नाकाम व नामुराद लोग कौन हैं?

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया एक वह शख़्स जो घमंड और तकब्बुर की वजह से अपने तहबन्द को टख़नों से नीचे तक लटकाता है, दूसरा वह शख़्स जो एहसान जताता है, तीसरा वह शख़्स जो झूटी क़सम के ज़रिए अपने कारोबार में तरक़्क़ी करता है।

बात न करने और न देखने का मतलब यह है कि अल्लाह तआला उस से नाराज़ (क्रोधित) होगा उस के साथ मुहब्बत और दया का मुआमला न करेगा, आप भी तो जिस से नाराज़ होते हैं उस की तरफ़ न तो देखते हैं और न उस से बोलते हैं।

तहबन्द और पाजामा को टख़नों से नीचे लटकाने की यह धमकी सिर्फ़ उस शख़्स के लिये है जो घमंड व तकब्बुर की वजह से ऐसा करता है, रहा वह शख़्स जो टख़नों से नीचे तो पहनता है लेकिन उसे बड़ाई का घमंड नहीं है तो उस का भी यह काम गुनाह का है क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मोमिनों को टख़ने से नीचे पहनने से रोका है इस लिये ऐसा शख़्स भी गुनहगार होगा, हक़ीक़त यह है कि मोमिन तो किसी गुनाह को हल्का नहीं समझता। वफ़ादार ग़ुलाम के लिये मालिक की हल्की सी नाराज़ी भी क़यामत से कम नहीं होती।

(٩٩) عَنْ قَيْسِ اَبِيْ غَرْزَةَ قَالَ كُنَّا نُسَمّٰى فِيْ عَهْدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ السَّمَاسِرَةَ فَمَرَّ بِنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَمَّانَا بِاسْمٍ هُوَ اَحْسَنُ مِنْهُ فَقَالَ يَامَعْشَرَ التُّجَّارِ اِنَّ الْبَيْعَ يَحْضُرُهُ اللَّغْوُ وَالْحَلْفُ فَشُوْبُوْهُ بِالصَّدَقَةِ.

(ابوداؤد)

99. अन क़ैसिन अबी ग़रज़ता काला कुन्ना नुसम्मा फ़ी अहदि रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अस्समासिरता फ़मर्रा बिना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़सम्माना बिस्मिन हुवा अहसनु मिनहु फ़क़ाला या मअशरत्तुज्जारि इन्नल बैआ यहज़ुरुहुल लग़्वु वल हल्फ़ु फ़शूबूहु बिस्सदक़ति। (अबू दाऊद)

अनुवादः– हज़रत क़ैस रज़ि० अबू ग़रज़ा फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में हम ताजिरों को "समासिरा" कहा जाता था, तो हुज़ूर (सल्ल०) का हमारे पास

से गुज़र हुआ तो आप ने उस नाम से बेहतर नाम दिया, आप ने फ़रमाया "ऐ ताजिरों के गिरोह! माल को बेचने में, ग़लत बात कहने और झूटी क़सम खा जाने का बहुत डर होता है तो तुम अपने कारोबार में सदक़ा को मिलाओ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस फ़रमान का मतलब यह है कि कारोबार में ऐसा बहुत होता है कि आदमी अंजाने में भी ग़लत काम कर जाता है और कभी झूटी क़सम खा लेता है, इस लिये ताजिरों को चाहिये कि वह ख़ासतौर से ख़ुदा के रास्ते में दान किया करें ताकि यह चीज़ उन की ग़लतियों और कमियों को पूरा करे।

(١٠٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِاَصْحٰبِ الْكَيْلِ وَالْمِيْزَانِ اِنَّكُمْ قَدْ
وُلِّيْتُمْ اَمْرَيْنِ هَلَكَتْ فِيْهِمَا الْاُمَمُ السَّابِقَةُ قَبْلَكُمْ. (ترمذی،ابن عباسؓ)

100. *क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लिअसहाबिल कैलि वल मीज़ानि अन्नकुम क़द वुल्लीतुम अमरैनि हलकत फ़ीहिमल उममुस्साबिक़तु क़ब्लकुम।* (तिर्मिज़ी–इब्ने अब्बास)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नाप तौल करने वाले ताजिरों को मुख़ातिब करते हुये फ़रमाया कि तुम लोग दो ऐसे कामों के ज़िम्मेदार बनाये गये हो जिन की वजह से तुम से पहले गुज़री हुई क़ौमें हलाक व बरबाद हुई।

मतलब यह है कि अगर नाप और तौल में तुम ने ग़लत तरीक़े अपनाये यानी लेने के पैमाने और बनाये और देने के और, तो यह तुम्हारी तबाही का सबब होगा और पूरी क़ौम की तबाही का सबब होगा। क़ुरआन मजीद में उन क़ौमों का हाल बयान हुआ है जिन का पेशा तिजारत था और जो नाप तौल में कमी करती थीं, उन को सही बात बताई गई लेकिन वह ना मानीं और आख़िर में वह तबाह हो गईं।

(١٠١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنِ احْتَكَرَ فَهُوَ خَاطِئٌ.

101. *क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मनिहतकिर फ़हुआ ख़ातिउन।*

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने एहतिकार किया वह गुनहगार है।

एहतिकार का मतलब है ज़रूरत की चीज़ों को रोक लेना और बाज़ार में न लाना, और क़ीमतों के ख़ूब चढ़ने का इन्तिज़ार करना और जब क़ीमतें चढ़ जाएँ तो माल को बाहर निकालना और ख़ूब पैसा वसूल करना, यह ज़ेहन ताजिरों का होता है इस लिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा करने से रोका क्योंकि यह ज़ेहन आदमी को संगदिल और बेरहम बना देती है और इस्लाम इन्सानों के साथ रहमत व मुहब्बत का मुआमला करने की तालीम देता है।

कुछ आलिमों (विद्वानों) की राय है कि एहतिकार जिस से रोका गया है सिर्फ़ ग़ल्ला के लिये ख़ास है और दूसरी चीज़ों को अगर ताजिर बाज़ार में नहीं लाते तो वह इस बात में शामिल नहीं है। इस के मुक़ाबले में दूसरे गिरोह का ख़याल है कि यह सिर्फ़ ग़ल्ला के साथ ख़ास नहीं है, बल्कि ज़रूरत की तमाम चीज़ों को इस निय्यत से रोकने वाला गुनहगार होगा और इस वईद (धमकी) में शामिल है। आजिज़ के नज़दीक दूसरे गिरोह की राय ज़्यादा वज़नी मालूम होती है, और इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह के पास है।

(١٠٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْجَالِبُ مَرْزُوْقٌ وَالْمُحْتَكِرُ مَلْعُوْنٌ.

(سنن ابن ماجہ، حضرت عمرؓ)

102. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अलजालिबु मरज़ूकुन वलमुहतकिरु मलऊनुन।* (सुनन इब्नि माजा)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह शख़्स जो ज़रूरत की चीज़ों को नहीं रोकता बल्कि वक़्त पर बाज़ार में लाता है तो वह अल्लाह की रहमत का हक़दार है और उसे अल्लाह रोज़ी देगा और वह शख़्स जो एहतिकार करता है वह लानत का हक़दार है।

(١٠٣) عَنْ مُعَاذٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ بِئْسَ الْعَبْدُ الْمُحْتَكِرُ اِنْ اَرْخَصَ اللّٰهُ الْاَسْعَارَ حَزِنَ، وَاِنْ اَغْلَاهَا فَرِحَ. (مشکوٰۃ)

103. *अन मुआज़िन काला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यकूलु बिअसल अब्दु अल-मुहतकिरु इन अरख़सल्लाहुल असआरा हज़िना, व इन अग़लाहा फरिहा।* (मिश्कात)

अनुवादः-हज़रत मुआज़ (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुये सुना कि कितना बुरा है ज़रूरत की चीज़ों को रोकने वाला आदमी, अगर अल्लाह चीज़ों की क़ीमत को सस्ता करता है तो उसे ग़म होता है और जब क़ीमतें चढ़ जाती हैं तो खुश होता है।

(۱۰۴) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَحِلُّ لِاَحَدٍ اَنْ يَّبِيْعَ شَيْئًا اِلَّا بَيَّنَ مَا فِيْهِ، وَلَا يَحِلُّ لِاَحَدٍ يَعْلَمُ ذٰلِكَ اِلَّا بَيَّنَهُ. (منتقى، واثلہؓ)

104. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला यहिल्लु लिअहदिन अय्यंबीआ शैअन इल्ला बय्यना मा फ़ीहि, वला यहिल्लु लिअहदिन यअलमु ज़ालिका इल्ला बय्यनहू।* (मुन्तक़ा-वासिला रज़ि०)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि किसी शख़्स के लिये जाइज़ नहीं है कि वह कोई चीज़ बेचे, मगर यह कि जो कुछ उस के अन्दर ऐब है उसे बयान कर दे, और नहीं जाइज़ है किसी के लिये जो उस ऐब को जानता हो मगर यह कि उसे साफ़ साफ़ कह दे।

इस हदीस में ताजिर को हिदायत दी गई है कि वह बेचते वक़्त अपनी चीज़ के ऐब ख़रीदार के सामने रख दे, इसी तरह दुकान पर कोई ऐसा आदमी खड़ा है जो उस चीज़ के ऐब को जानता है तो उस को चाहिये कि ख़रीदार को साफ़ साफ़ बता दे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ताजिर के पास से गुज़रे वह ग़ल्ला बेच रहा था, आप (सल्ल०) ने अपना हाथ ग़ल्ला के अन्दर डाला, अन्दर का हिस्सा पानी से भीगा हुआ था, आप ने पूछा यह क्या? उस ने कहा हुज़ूर बारिश से भीग गया है, आप ने कहा फ़िर इसे ऊपर क्यों नहीं रखा? फिर आप ने फ़रमाया जो लोग हम से धोका करें वह हम में से नहीं है।

क़र्ज़दार के साथ नर्मी का बर्ताव

(۱۰۵) اِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ كَانَ رَجُلٌ يُدَايِنُ النَّاسَ فَكَانَ يَقُوْلُ لِفَتَاهُ اِذَا اَتَيْتَ مُعْسِرًا تَجَاوَزْ عَنْهُ لَعَلَّ اللّٰهَ اَنْ يَّتَجَاوَزَ عَنَّا قَالَ فَلَقِيَ اللّٰهَ فَتَجَاوَزَ عَنْهُ.

(بخاری، مسلم)

105. *इन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला काना रजुलुन युदाईनुन्नासा फकाना यकूलु लिफताहु इज़ा अतैता मुअसिरन तजावज़ अनहु लअल्लल्लाहा अय्यतजावज़ा अन्ना काला फलकियल्लाहा फतजावज़ा अनहु।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः— नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक आदमी लोगों को क़र्ज़ा दिया करता था, फिर वह अपने कारिंदे को जिसे वह क़र्ज़ा वुसूल करने के लिये भेजता यह समझा देता कि अगर तू किसी ग़रीब क़र्ज़दार के पास पहुंचे तो उस को माफ़ कर देना, शायद कि अल्लाह तआला हमारे साथ माफ़ी का मुआमला करे। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया यह शख़्स जब अल्लाह तआला से मिला तो अल्लाह तआला ने उस के साथ माफ़ी का मुआमला किया।

(١٠٦) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يُّنْجِيَهُ اللّٰهُ مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلْيُنَفِّسْ عَنْ مُّعْسِرٍ اَوْيَضَعْ عَنْهُ. (مسلم۔ابوقتادہؓ)

106. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन सर्रहू अय्युनजियहुल्लाहु मिन कुरबि यौमिल क़यामति फलयुनफ़्फ़िस अम्मुअसिरिन औ यज़अ अनहु।* (मुस्लिम-अबू क़तादा)

अनुवादः— रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स को यह बात पसन्द हो कि अल्लाह तआला उसे क़यामत के दिन ग़म और घुटन से बचाये तो उसे चाहिये कि ग़रीब क़र्ज़दार को मुहलत दे या क़र्ज़ का बोझ उस के ऊपर से उतार दे।

(١٠٧) عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِنِ الْخُدْرِیِّ قَالَ اُتِیَ النَّبِیُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِجَنَازَةٍ لِيُصَلِّیَ عَلَيْهَا، فَقَالَ هَلْ عَلٰى صَاحِبِكُمْ دَيْنٌ؟ قَالُوْا نَعَمْ، قَالَ هَلْ تَرَکَ لَهٗ مِنْ وَّفَاءٍ؟ قَالُوْ لَا، قَالَ صَلُّوْا عَلٰى صَاحِبِكُمْ، قَالَ عَلِیُّ بْنُ اَبِیْ طَالِبٍ عَلَیَّ دَيْنُهٗ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! فَتَقَدَّمَ فَصَلّٰى عَلَيْهِ وَفِیْ رِوَايَةٍ مَّعْنَاهُ وَقَالَ فَکَّ اللّٰهُ رِهَانَکَ مِنَ النَّارِ كَمَا فَكَكْتَ رِهَانَ اَخِيْکَ الْمُسْلِمِ، لَيْسَ مِنْ عَبْدٍ مُّسْلِمٍ يَّقْضِیْ عَنْ اَخِيْهِ دَيْنَهٗ اِلَّا فَکَّ اللّٰهُ رِهَانَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ. (شرح السنہ)

107. *अन अबी सईदिनिल ख़ुदरिय्यि काला उतियन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बिजनाज़तिन लियुसल्लिया अलैहा, फ़क़ाला हल अला साहिबुकुम दैनुन? क़ालू नअम, क़ाला हल तरका लहू मिंव्वफ़ाइन? क़ालू ला, क़ाला सल्लू अला साहिबिकुम क़ाला अलिय्युब्नु अबी तालिबिन अलय्या दैनुहू या रसूलुल्लाहि! फ़तक़द्दमा फ़सल्ला अलैहि व फ़ी रिवायतिम मअनाहु वक़ाला फ़क्कल्लाहु रिहानका मिनन्नारि कमा फ़कता रिहाना अख़ीकल मुस्लिमि, लैसा मिन अब्दिम्मुस्लिमियं यक़ज़ी अन अख़ीहि दैनहू इल्ला फ़क्कल्लाहु रिहानहू यौमल क़ियामति।* (शरहुस्सुन्ना)

अनुवादः- हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में नमाज़ पढ़ाने के लिये एक जनाज़ा लाया गया, तो आप (सल्ल॰) ने पूछा कि इस मरने वाले पर कोई क़र्ज़ तो नहीं है? लोगों ने कहा हाँ! इस पर क़र्ज़ है। आप (सल्ल॰) ने पूछा कि इस ने कुछ माल छोड़ा है कि जिस से यह क़र्ज़ अदा किया जा सके? लोगों ने कहा नहीं तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि तुम लोग इस की जनाज़े की नमाज़ पढ़ लो (मैं नहीं पढूंगा) हज़रत अली रज़ि॰ ने यह सूरतेहाल देख कर कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मैं इस क़र्ज़ को अदा करने की ज़िम्मेदारी लेता हूँ तब आप (सल्ल॰) आगे बढ़े और नमाज़ पढ़ाई। और फ़रमाया (जैसा कि एक दूसरी हदीस में है) ऐ अली! अल्लाह तुझे आग से बचाये और तेरी जान बख़्शे जैसे कि तूने अपने इस मुसलमान भाई की क़र्ज़ की ज़िम्मेदारी ले कर उस की जान छुड़ाई, कोई भी मुसलमान आदमी ऐसा नहीं है जो अपने मुसलमान भाई की तरफ़ से उस का क़र्ज़ अदा करे मगर यह कि अल्लाह क़यामत के दिन उस को रिहाई देगा।

(١٠٨) إِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يُغْفَرُ لِلشَّهِيْدِ كُلُّ ذَنْبٍ إِلَّا الدَّيْنَ۔

(مسلم۔ عبداللہ بن عمرؓ)

108. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला युग़फ़रु लिश्शहीदि कुल्लु ज़म्बिन इल्लद्दैना।* (मुस्लिम-अब्दुल्लाह बिन उमर)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह शख़्स जिस ने ख़ुदा के रास्ते में जान दी है उस का हर गुनाह माफ़ हो जाएगा क़र्ज़ के अलावा।

ऊपर की दोनों हदीसें क़र्ज़ अदा करने की अहमियत को ख़ूब वाज़ेह व ज़ाहिर करती हैं, जिस शख़्स ने अपनी जान तक ख़ुदा के रास्ते में कुर्बान कर दी, उस के ऊपर अगर किसी का क़र्ज़ा है और देकर नहीं आया है तो वह माफ़ नहीं होगा, क्योंकि इस का तअल्लुक़ बन्दों के हक़ से है, जब तक क़र्ज़ख़्वाह माफ़ न करे उस वक़्त तक अल्लाह तआला भी माफ़ न करेगा। अगर आदमी देने की निय्यत रखता हो और मर जाये और दे न सके, तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला हक़ वाले को बुलाएगा और माफ़ करने के लिये उस से कहेगा और उस के बदले उसे जन्नत की नेमतें देने का वादा करेगा तो हक़ वाला अपने हक़ को माफ़ कर देगा लेकिन अगर किसी के पास अदा करने की ताक़त है फिर भी उस ने अदा नहीं किया और हक़ वाले को उस का हक़ नहीं लौटाया, या दुनिया में उस से माफ़ नहीं कराया तो उस की माफ़ी की क़यामत में कोई सूरत नहीं।

क़र्ज़ की अदायगी की अहमियत और टाल मटोल से मनाही

(١٠٩) عَنْ اَبِی رَافِعٍ قَالَ اِسْتَسْلَفَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ بَکْرًا فَجَاءَتْهُ اِبِلٌ مِّنَ الصَّدَقَةِ، قَالَ اَبُوْ رَافِعٍ فَاَمَرَنِیْ اَنْ اَقْضِیَ الرَّجُلَ بَکْرَهٗ فَقُلْتُ لَا اَجِدُ اِلَّا جَمَلًا خِیَارًا رَبَاعِیًا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَعْطِهٖ اِیَّاهُ فَاِنَّ خَیْرَ النَّاسِ اَحْسَنُهُمْ قَضَاءً۔ (مسلم)

109. *अन अबी राफ़िइन क़ाला इस्तस्लफ़ा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बकरन फजाअतहु इब्लुम मिनस्सदक़ति, क़ाला अबू राफ़िइन फअमरनी अन अक़ज़ियर्रजुला बकरहू फक़ुल्त ला अजिदु इल्ला जमलन ख़ियारन रबाईयन, फक़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अअतिही इय्याहु फइन्ना ख़ैरन्नासि अहसनुहुम क़ज़ाअन।* (मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत अबू राफ़ेअ (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक नये उम्र का ऊँट किसी से

क़र्ज़ के तौर पर लिया, फिर आप (सल्ल०) के पास ज़कात के कुछ ऊँट आये तो आप ने मुझे हुक्म दिया कि उस आदमी को वह ऊँट दे दूँ ता मैं ने कहा कि इन ऊँटों में सिर्फ़ एक ऊँट है जो बहुत अच्छा है और सात साल का है तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया वही उसे दे दो, इस लिये कि बेहतरीन आदमी वह है जो बेहतरीन तरीक़े पर क़र्ज़ अदा करता हो।

(١١٠) إِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَطْلُ الْغَنِيِّ ظُلْمٌ فَإِذَا اُتْبِعَ اَحَدُكُمْ عَلٰى مَلِيْءٍ فَلْيَتْبَعْ. (بخاری ومسلم۔ابوہریرہؓ)

110. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला मअतलुल ग़निय्यि ज़ुल्मुन फइज़ा उतबिआ अहदुकुम अला मलिइन फलयतबअ।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि०)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मालदार क़र्ज़दार का क़र्ज़ा अदा करने में बहाना करना ज़ुल्म है, और अगर क़र्ज़दार कहे कि तुम अपना क़र्ज़ा फ़ुलाँ ख़ुशहाल आदमी से लेलो तो बिला वजेह क़र्ज़दार के सिर पर सवार न रहना चहिये, उस की यह बात मान ले और जिस का उस ने हवाला दिया है उस से जाकर लेले।

मतलब यह कि आदमी के पास क़र्ज़ अदा करने के लिये कुछ नहीं है और वह कहता है कि जाओ फ़ुलाँ शख़्स से ले लो, हमारे उस के बीच बात चीत हो चुकी है वह अदा करने पर राज़ी है तो क़र्ज़ख़्वाह को न चाहिये कि वह कहे मैं तो तुझी से लूंगा, मैं किसी और को क्या जानूं, बल्कि उस के साथ नर्मी का मुआमला करे जिस का वह हवाला दे रहा है उस से वुसूल करे।

(١١١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اَخَذَ اَمْوَالَ النَّاسِ يُرِيْدُ اَدَاءَ هَا اَدَّى اللّٰهُ عَنْهُ، وَمَنْ اَخَذَ يُرِيْدُ اِتْلَافَهَا اَتْلَفَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ. (بخاری۔ابوہریرہؓ)

111. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन अख़ज़ा अमवालन्नासि युरीदु अदाअहा अद्दल्लाहु अनहु, वमन अख़ज़ा युरीदु इतलाफहा अतलफहुल्लाहु अलैहि।* (बुख़ारी- अबू हुरैरा)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो लोगों का माल (क़र्ज़ के तौर पर) ले और वह निय्यत उस के अदा करने की रखता है, तो अल्लाह तआला उस की तरफ़ से अदा कर देगा, और जिस शख़्स ने माल क़र्ज़ के तौर पर लिया और निय्यत अदा करने की नहीं रखता तो अल्लाह तआला उस शख़्स को उस की वजह से तबाह कर देगा।

(١١٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيُّ الْوَاجِدِ يُحِلُّ عِرْضَهٗ وَعُقُوْبَتَهٗ.

(ابوداؤد،شرید سلمیؓ)

112. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लय्युल वाजिदि युहिल्लु इरज़हू व उक़ूबतहू।* (अबूदाऊद, शरीद सुलमी रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, क़र्ज़ अदा कर सकने वाले का बहाना बनाना हलाल कर देता है उस की आबरू को और उस की सज़ा को।

"आबरू" के हलाल कर देने का मतलब यह है कि जो शख़्स क़र्ज़ ले और क़र्ज़ अदा करने की ताक़त होने के बावजूद अदा न करे तो उस का यह जुर्म ऐसा है कि सोसाईटी की निगाह में उस को गिराया जा सकता है और उस को सज़ा दी जा सकती है, अगर इस्लामी क़ानून किसी मुल्क में क़ायम है और वहाँ कोई ऐसा शख़्स पाया जाये तो इस्लामी क़ानून के कारिन्दे उस को सज़ा भी दे सकते हैं और उस को बेइज़्ज़त करने के दूसरे तरीक़े भी अपना सकते हैं।

ग़सब व ख़यानत

(١١٣) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اَخَذَ شِبْرًا مِنَ الْاَرْضِ ظُلْمًا فَاِنَّهٗ يُطَوَّقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنْ سَبْعِ اَرَضِيْنَ. (بخاری،مسلم،سعید بن زیدؓ)

113. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन अख़ज़ा शिबरन मिनल अर्ज़ि ज़ुल्मन फइन्नहू युतव्वक़ुहू यौमल क़यामति मिन सबई अर्ज़ीना।* (बुख़ारी, मुस्लिम- सईद बिन ज़ैद)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो

शख़्स किसी की एक बालिश्त ज़मीन भी ज़ुल्मन ले लेगा तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन सात ज़मीनों का तौक़ उस की गर्दन में डालेगा।

(۱۱۴) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَلَا لَاتَظْلِمُوْا اَلَا لَا یَحِلُّ مَالُ امْرِیءٍ اِلَّا بِطِیْبِ نَفْسٍ مِّنْہُ. (بیہقی)

114. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अला ला तज़्लिमू अला लायहिल्लु मालुमरिइन इल्ला बितीबि नफ़्सिम्निहु* (बैहिक़ी)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, सुनो! ज़ुल्म न करो, किसी आदमी का माल जाइज़ नहीं है मगर उस वक़्त जबकि माल वाला अपनी ख़ुशी से दे।

(۱۱۵) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَلْعَارِیَۃُ مُؤَدَّاۃٌ وَّالْمِنْحَۃُ مَرْدُوْدَۃٌ وَالدَّیْنُ مَقْضِیٌّ وَالْکَفِیْلُ غَارِمٌ. (ترمذی۔ابوامامہؓ)

115. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल आरियतु मुअद्दातुवं वलमिनहतु मरदूदतुन वद्दैनु मक्ज़िय्युन वल कफ़ीलु ग़ारिमुन।* (तिर्मिज़ी, अबू उमामा)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "आरिया" अदा की जाएगी और "मिनहा" वापस की जाएगी और क़र्ज़ अदा किया जाएगा और ज़मानत लेने वाला ज़मानत अदा करेगा।

"आरियतुन" का मतलब मंगनी के हैं यानी जो चीज़ आप किसी से मंगनी के तौर पर मांग लाएँ तो उसे अदा करना होगा और "मिनहा" का मतलब दूधारी ऊँटनी के हैं, अरब में रिवाज था कि मालदार लोग अपने अज़ीज़ों, रिश्तेदारों या दोस्तों को दूध इस्तेमाल करने के लिये ऊँटनी देते थे, तो आप (सल्ल०) के फ़रमान का मतलब यह है कि दूध खाने के लिये जो जानवर किसी को दिया जाए तो जब उस का दूध ख़त्म हो जाये तो जानवर असल मालिक को दे दिया जाएगा, और क़र्ज़ा अदा किया जाएगा, उसे हज़्म नहीं किया जा सकता और जो कोई शख़्स किसी का ज़िम्मेदार है तो उस से वुसूल किया जाएगा।

(۱۱۶) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَدِّ الْاَمَانَةَ اِلٰى مَنِ ائْتَمَنَكَ وَلَا تَخُنْ مَنْ خَانَكَ. (ترمذی، ابوہریرہؓ)

116. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अद्दिल अमानता इला मनिअतमनका वला तख़ुन मन ख़ानका।*

(तिर्मिज़ी- अबू हुरैरा)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने तुम्हें एतबार करने वाला जान कर अपनी अमानत तुम्हारे पास रखी है उस की अमानत वापस कर दो, और जो तुम से ख़यानत करे तो तुम उस के साथ ख़यानत का मुआमला न करो बल्कि अपने हक़ को वुसूल करने के लिये दूसरे जाइज़ तरीक़े अपनाओ।

(۱۱۷) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ يَقُوْلُ اَنَا ثَالِثُ الشَّرِيْكَيْنِ مَالَمْ يَخُنْ اَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ فَاِذَا خَانَهُ خَرَجْتُ مِنْ بَيْنِهِمَا (وَفِيْ رِوَايَةٍ) وَجَاءَ الشَّيْطٰنُ. (ابوداؤد۔ ابوہریرہؓ)

117. *कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नल्लाहा अज़्ज़ा व जल्ला यकूलु अना सालिसुश्शरीकैनि मालम यख़ुन अहदुहुमा साहिबहू फइज़ा ख़ानहु ख़रजतु मिम्बैनिहिमा (वफ़ी रिवायतिन) व जाअश्शैतानु।* (अबू दाऊद- अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब तक किसी कारोबार के दो साथी एक दूसरे के साथ ख़यानत न करें मैं उन के साथ रहता हूँ, लेकिन जब एक शरीक दूसरे शरीक से ख़यानत करता है तो मैं उन दोनों के बीच से निकल आता हूँ और शैतान आ जाता है।

इस हदीस का मतलब यह है कि कारोबार में शरीक लोग जब तक आपस में ख़यानत और चालबाज़ी नहीं करते तब तक मैं उन की मदद करता हूँ, उन पर रहमत करता हूँ, और उन के कारोबार में और आपसी तअल्लुक़ात में बरकत करता हूँ, लेकिन जब उन में से किसी की निय्यत बुरी हो जाती है और ख़यानत करने लगता है तब मैं अपनी मदद और

रहमत का हाथ खींच लेता हूँ, और फिर शैतान आ जाता है जो उन को और उन के कारोबार को तबाही और बरबादी की राह पर डाल देता है।

खेती और बाग़बानी

(۱۱۸) عَنْ اَنَسٍ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ مُّسْلِمٍ يَّزْرَعُ زَرْعًا اَوْ يَغْرِسُ غَرْسًا فَيَاكُلُ مِنْهُ طَيْرٌ اَوْاِنْسَانٌ اَوْبَهِيْمَةٌ اِلَّا كَانَ لَهٗ بِهٖ صَدَقَةٌ۔ (مسلم)

118. *अन अनसिन काला काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा मिम्मुस्लिमिन यज़रउ ज़रअन औ यग़रिसू ग़रसन फयाकुलु मिनहु तैरुन औ इन्सानुन औ बहीमतुन इल्ला काना लहू बिही सदक़तुन।* (मुस्लिम)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मुसलमान खेती का काम करता है या पेड़ पौदे लगाता है और उस में से चिड़िया या कोई इन्सान या कोई जानवर खा ले तो यह उस के लिये सदक़ा बनता है।

ज़ाइद पानी को रोकना

(۱۱۹) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلٰثَةٌ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ، رَجُلٌ حَلَفَ عَلٰى سِلْعَةٍ لَقَدْ اُعْطِىَ بِهَا اَكْثَرَ مِمَّا اُعْطِىَ وَهُوَ كَاذِبٌ، وَرَجُلٌ حَلَفَ عَلٰى يَمِيْنٍ كَاذِبَةٍ بَعْدَ الْعَصْرِ لِيَقْتَطِعَ بِهَا مَالَ رَجُلٍ مُّسْلِمٍ، وَرَجُلٌ مَّنَعَ فَضْلَ مَاءٍ فَيَقُوْلُ اللّٰهُ الْيَوْمَ اَمْنَعُكَ فَضْلِىْ كَمَا مَنَعْتَ فَضْلَ مَاءٍ لَّمْ تَعْمَلْ يَدَاكَ۔

(بخاری، مسلم)

119. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा सलासतुन लायुकल्लिमुहुमुल्लाहु यौमलकियामति वला यनज़ुरु इलैहिम, रजुलुन हलफा अला सलअतिन लक़द उअतिया बिहा अकसरा मिम्मा उअतिया वहुवा काज़िबुन, व रजुलुन हलफा अला यमीनिन काज़िबतिन बअदल अस्रि लियक़ततिआ बिहा माला रजुलिम्मुस्लिमिन, व रजुलुम्मनआ फ़ज़्ला माइन फ-यक़ूलुल्लाहुल यौमा अमनउका फ़ज़्ली कमा मनअता फ़ज़्ला माइल लम तअमल यदका।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं, तीन क़िस्म के लोग हैं जिन से अल्लाह तआला क़यामत के दिन न तो बात करेगा और न उन की तरफ़ देखेगा। पहली क़िस्म उन लोगों की है जिन्हों ने अपने तिजारत के सामान को बेचने में झूटी क़सम खाई कि उस के जितने दाम लगाए हैं उस से ज़्यादा लग चुके हैं। दूसरे वह लोग जिन्हों ने अस्र के बाद झूटी क़सम खाई और उस के ज़रिए किसी मुसलमान आदमी का माल ले लिया। तीसरे वह लोग जो ज़रूरत से ज़्यादा पानी को रोकें तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन कहेगा मैं तुझ से आज अपना फ़ज़्ल रोक लूंगा जैसे कि तूने वह ज़ाइद पानी रोका जो तेरा अपना पैदा किया हुआ न था।

मज़दूर की मज़दूरी

(١٢٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَعْطُوا الْاَجِيْرَ اَجْرَهٗ قَبْلَ اَنْ يَّجِفَّ عَرَقُهٗ. (ابن ماجہ، ابن عمرؓ)

120. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अअ्तुल अजीरा अजरहू क़ब्ला अंय्यजिफ़्फ़ा अरक़ुहू।* (इब्ने माजा, इब्ने उमर रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मज़दूर का पसीना सूखने से पहले उस की मज़दूरी दे दो।

क्योंकि मज़दूर कहते ही उस शख़्स को हैं जिस को अपना और अपने बाल बच्चों का पेट भरने के लिये रोज़ मेहनत करनी पड़ती है। अब अगर उस की मज़दूरी किसी दूसरे दिन पर टाल दी जाये या मार ली जाये तो वह शाम को क्या खाएगा और अपने बच्चों को क्या खिलाएगा?।

(١٢١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى ثَلٰثَةٌ اَنَا خَصْمُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ رَجُلٌ اَعْطٰى بِيْ ثُمَّ غَدَرَ، وَرَجُلٌ بَاعَ حُرًّا فَاَكَلَ ثَمَنَهٗ، وَرَجُلٌ اِسْتَاْجَرَ اَجِيْرًا فَاسْتَوْفٰى مِنْهُ وَلَمْ يُعْطِهٖ اَجْرَهٗ. (بخاری، ابوہریرہؓ)

121. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कालल्लाहु तआला सलासतुन अना ख़समुहुम यौमल क़ियामति रजुलुन अअ्ता बी सुम्मा ग़दरा, व रजुलुन बाआ हुर्रन फ-अकला समनहू व*

रजुलुनिसताजरा अजीरन फस्तौफा मिनहु वलम युअतिही अजरहू।

(बुख़ारी-अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तीन आदमी हैं जिन से क़यामत के दिन मेरा झगड़ा होगा, एक वह शख़्स जिस ने मेरा नाम ले कर कोई मुआहिदा (वादा) किया फिर उस ने उस वादे को तोड़ डाला, दूसरा वह शख़्स जिस ने किसी शरीफ़ और आज़ाद आदमी को अग़वा (अपहरण) कर के उसे बेचा, और उस की क़ीमत खाई, तीसरा वह शख़्स जिस ने किसी मज़दूर को मज़दूरी पर लगाया फिर उस से पूरा काम लिया और काम लेने के बाद उस को उस की मज़दूरी नहीं दी।

नाजाइज़ वसिय्यत

(١٢٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ وَالْمَرْأَةَ بِطَاعَةِ اللّٰهِ سِتِّيْنَ سَنَةً ثُمَّ يَحْضُرُهُمَا الْمَوْتُ فَيُضَارَّانِ فِى الْوَصِيَّةِ فَتَجِبُ لَهُمَا النَّارُ، ثُمَّ قَرَأَ اَبُوْ هُرَيْرَةَ "مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِىْ بِهَا اَوْدَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ" اِلٰى قَوْلِهٖ تَعَالٰى وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ. (مسند احمد، ابوہریرہؓ)

122. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नर्रजुला ल-यअमलु वलमरअतु बिताअतिल्लाहि सित्तीना सनतन सुम्मा यहज़ुरुहुमल मौतु फयुज़ार्रानि फिलवसिय्यति फतजिबु लहुमन्नारु, सुम्मा करआ अबू हुरैरता "मिम्बअदि वसिय्यतियं यूसा बिहा औ दैनिन ग़ैरा मुज़ार्रिन" इला क़ौलिही तआला व ज़ालिकल फ़ौज़ुल अज़ीमु।* (मुस्नद अहमद- अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई मर्द और इसी तरह कोई औरत साठ साल तक अल्लाह तआला की इताअत करने में गुज़ारते हैं फिर उन के मरने का वक़्त आता है तो वसिय्यत के ज़रिए वरसा को नुक़सान पहुंचा देते हैं तो उन दोनों के लिये जहन्नम वाजिब हो जाती है। उस के बाद हदीस के रावी अबू हुरैरा (रज़ि॰) ने हदीस के मज़मून की ताईद में यह आयत पढ़ी "*मिम्बअदि वसिय्यतिन* से लेकर *ज़ालिकल फ़ौज़ुल अज़ीम*" तक।

नेक आदमी भी अपने अज़ीज़ों रिश्तेदारों से नाराज़ हो जाता है और चाहता है कि उस के तरका में से उन्हें कुछ न मिले तो मरते वक़्त अपने सारे माल के बारे में ऐसी वसिय्यत कर जाता है जिस से यह एक वारिस या तमाम वुरसा महरूम हो जाते हैं, हालाँकि अल्लाह तआला की किताब और नबी (सल्ल॰) की बताई हुई तशरीहात के हिसाब से उसे हिस्सा मिलना चाहिये ऐसे मर्द और औरत के बारे में आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि वह साठ साल तक अल्लाह की इताअत करने के बावजूद आख़िर में जहन्नम के लायक़ हो जाते हैं।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) ने हदीस के मज़मून की ताईद में जो आयत पढ़ी वह सूरह निसा के दूसरे रुकू में है जिस में अल्लाह तआला ने हिस्सादारों का हिस्सा मुक़र्रर करने के बाद फ़रमाया कि यह हिस्से मय्यत की वसिय्यत को और क़र्ज़ो को अदा करने के बाद वरसा में बाँटे जाएँगे उस के बाद अल्लाह तआला ने फ़रमाया ख़बरदार! वसिय्यत के ज़रिए वरसा को नुक़सान न पहुंचाना, यह अल्लाह तआला का फ़रमान है और अल्लाह तआला इल्म और हिकमत वाला है, उस ने यह जो क़ानून बनाया है वह ग़लत नहीं है बल्कि इल्म पर मबनी (बुनियाद रखने की जगह) है और उस में हिकमत काम कर रही है नाइन्साफ़ी और ज़ुल्म का नाम व निशान नहीं है, इस लिये इस क़ानून को ख़ुशदिली से क़ुबूल करो इस के बाद फ़रमाया कि यह अल्लाह तआला की मुक़र्रर की हुई हदें हैं और जो लोग अल्लाह तआला और रसूल (सल्ल॰) की बात मानेंगे तो अल्लाह तआला उन्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, और जिन में वह हमेशा रहेंगे, और यही बड़ी कामियाबी है और जो लोग अल्लाह और रसूल (सल्ल॰) की नाफ़रमानी करेंगे और उस की मुक़र्रर की हुई हदों को तोड़ेंगे तो अल्लाह तआला उन को जहन्नम में दाख़िल करेगा जिस में वह हमेशा रहेंगे और उन के लिये ज़लील करने वाला अज़ाब होगा।

(١٢٣) قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَطَعَ مِيْرَاثَ وَارِثِهٖ قَطَعَ اللهُ مِيْرَاثَهٗ مِنَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ. (ابن ماجه، انسؓ)

123. *क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन*

कतआ मीरासा वारिसिही कतअल्लाहु मीरासहू मिनल जन्नति यौमल कियामति। (इब्ने माजा, अनस रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो अपने वारिस को मीरास से महरूम कर देगा, तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस को जन्नत की मीरास से महरूम कर देगा।

(١٢٤) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَجُوْزُ وَصِيَّةٌ لِوَارِثٍ اِلَّا اَنْ يَّشَاءَ الْوَرَثَةُ. (مشکوۃ)

124. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला तजूज़ु वसिय्यतुन लिवारिसिन इल्ला अय्यशाअल वरसतु।* (मिश्कात)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि किसी वारिस के हक़ में मरने वाले की वसिय्यत जारी न होगी मगर जबकि दूसरे वरसा चाहें।

(١٢٥) عَنْ سَعْدِبْنِ اَبِىْ وَقَّاصٍ قَالَ عَادَنِىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنَا مَرِيْضٌ، فَقَالَ اَوْصَيْتَ؟ قُلْتُ نَعَمْ قَالَ بِكَمْ؟ قُلْتُ بِمَالِىْ كُلِّهٖ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ، قَالَ فَمَا تَرَكْتَ لِوَلَدِكَ؟ قُلْتَ هُمْ اَغْنِيَاءُ بِخَيْرٍ، فَقَالَ اَوْصِ بِالْعُشْرِ، فَمَا زِلْتُ اُنَاقِصُهٗ حَتّٰى قَالَ اَوْصِ بِالثُّلُثِ وَالثُّلُثُ كَثِيْرٌ. (ترمذی)

125. *अन सईदिब्नि अबी वक़्क़ासिन काला आदनी रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा व अना मरीज़ुन, फकाला औसैता? कुल्तु नअम, काला बिकम? कुल्तु बिमाली कुल्लिही फी सबीलिल्लाहि, काला फमा तरकता लिवलदिका? कुल्त हुम अग़नियाऊ बिख़ैरिन, फकाला औसि बिलउश्रि, फमा ज़िल्तु उनाकिसुहू हत्ता काला औसि बिस्सुलुसि वस्सुलुसु कसीरुन।* (तिर्मिज़ी)

अनुवादः– सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि मैं बीमार था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे देखने के लिये तशरीफ़ लाये तो आप (सल्ल॰) ने पूछा कि क्या तूने वसिय्यत की है? मैं ने कहा हाँ! हुज़ूर ने पूछा कि कितने की वसिय्यत की है? मैं ने कहा अल्लाह तआला की राह में मैं ने अपने पूरे माल की वसिय्यत की है, आप ने फ़रमाया फिर

अपने बच्चों के लिये क्या छोड़ा? मैं ने कहा वह मालदार हैं अच्छी हालत में हैं तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया नहीं! बल्कि खुदा की राह में अपने माल के दस्वें हिस्से की वसिय्यत करो। सअद बिन अबी वक़्क़ास फ़रमाते हैं कि मैं बराबर कहता रहा कि हुज़ूर! यह तो बहुत कम है कुछ और बढ़ाईये, आख़िर में नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया अच्छा अपने माल के तिहाई की वसिय्यत करो और यह बहुत है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि मरने वाला अपने माल के सिर्फ़ एक तिहाई में वसिय्यत कर सकता है, इस में उस को इख़्तियार है कि चाहे किसी मदरसा या मस्जिद के लिये वक़्फ़ करे या किसी भी ज़रूरतमंद मुसलमान के हक़ में वसिय्यत करे, उस को आज़ादी है लेकिन मुनासिब यह है कि वह पहले यह देखे कि अज़ीज़ों, रिश्तेदारों में से किस को हिस्सा नहीं मिला है और उस की हालत कैसी है अगर कोई ऐसा है जिस को क़ानून के हिसाब से विरासत में हिस्सा नहीं मिला, और बाल बच्चों वाला है और माली हालत अच्छी नहीं है तो उस के हक़ में वसिय्यत करना ज़्यादा सवाब का काम होगा।

सूद

(۱۲۶) عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ لَعَنَ اٰكِلَ الرِّبَا وَمُوْكِلَهٗ وَشَاهِدَیْهِ وَكَاتِبَهٗ. (بخاری، مسلم)

126. *अन इब्नि मसऊदिन अन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लअना आकिलर्रिबा व मुअकिलहू व शाहिदैहि व कातिबहू।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लअनत भेजी सूद खाने वाले पर, सूद खिलाने वाले पर, उस के दोनों गवाहों पर और सूद के लिखने वाले पर।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस चीज़ की वजह से लानत फ़रमाएँ वह गुनाह कितना बड़ा होगा। यही नहीं बल्कि निसाई की रिवायत में है कि जान बूझ कर सूद खाने, खिलाने, गवाही देने और लिखने वालों

पर, क़यामत के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लअनत फ़रमाएँगे, इस का मतलब यह हुआ कि क़यामत के दिन आप ऐसे लोगों के लिये (अगर बग़ैर तौबा किए मर गये) शिफ़ाअत नहीं बल्कि लअनत फ़रमाएँगे। اَلْعِيَاذُ بِاللّٰهِ

लअनत– के मतलब धुतकारने और भगा देने के हैं।

रिश्वत

(١٢٧) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الرَّاشِيْ وَالْمُرْتَشِيْ. (بخاری، مسلم)

127. *अन अब्दिल्लाहिब्नि अमरिन क़ाला, क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लअनतुल्लाहि अलर्राशी वल मुर्तशी।*

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अब्दुल्लाह बिन अमर से रिवायत है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की लअनत हो रिश्वत देने वाले पर और रिश्वत लेने वाले पर।

(١٢٨) عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الرَّاشِيْ وَالْمُرْتَشِيْ فِي الْحُكْمِ. (منتقٰی)

128. *अन अबी हुरैरता क़ाला क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लअनतुल्लाहि अलर्राशी वल मुर्तशी फ़िलहुक्मि।*

(मुन्तक़ा)

अनुवादः- अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह की लअनत हो रिश्वत देने वाले पर और उस हाकिम पर भी जो रिश्वत ले।

रिश्वत उस रक़म को कहते हैं जो दूसरों का हक़ मारने के लिये हुकूमत के कलर्कों और अफ़सरों को दी जाती है। रही वह रक़म जो अपने जाइज़ हक़ को वुसूल करने के लिये बातिल निज़ामे हुकूमत के बेईमान कारिन्दों को, दिल की पूरी नफ़रत के साथ अपनी जेब से निकाल कर देनी पड़ती है जिस के बग़ैर अपना हक़ नहीं निकलता। इस की वजह

से यह मोमिन अल्लाह के यहाँ धुतकारा नहीं जाएगा, इनशाअल्लाह। ऐसे हालात और ज़्यादा मांग करते हैं कि ख़ुदा का दीन ग़ालिब और हुकमराँ हो।

मुशतबहात से परहेज़

(۱۲۹) عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الْحَلَالُ بَيِّنٌ، وَبَيْنَهُمَا اُمُوْرٌ مُشْتَبِهَةٌ فَمَنْ تَرَكَ مَايَشْتَبِهُ عَلَيْهِ مِنَ الْاِثْمِ كَانَ لِمَا اسْتَبَانَ اَتْرَكَ، وَمَنِ اجْتَرَءَ عَلٰى مَا يَشُكُّ فِيْهِ مِنَ الْاِثْمِ اَوْشَكَ اَنْ يُّوَاقِعَ مَااسْتَبَانَ، وَالْمَعَاصِيْ حِمَى اللّٰهِ، مَنْ يَّرْتَعُ حَوْلَ الْحِمٰى يُوْشِكُ اَنْ يُّوَاقِعَهٗ. (بخاری، مسلم)

129. *अनिन्नुअमानिब्नि बशीरिन अन्ननबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ालल हलालु बरियनुन, व बैनहुमा उमूरुम्मुशतबिहतुन फमन तरका मा यशतबिहु अलैहि मिनल इस्मि काना लिमसतबाना अतरका, व मनिजतरआ अला मा यशुक्कु फीहि मिनल इस्मि औशका अय्युवाक़िआ मसतबाना, वल मआसी हिमल्लाहि, मय्यरतउ हौललहिमा यूशिकु अय्युवाक़िअहू।*

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत नुअमान बिन बशीर (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हलाल भी वाज़ेह है और हराम भी, लेकिन इन दोनों के बीच कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो मुशतबेह (शक वाली) हैं, तो जो शख़्स मुशतबेह गुनाह से बचेगा तो वह उस से ज़्यादा खुले हुये गुनाहों से बचेगा। और जो शख़्स मुशतबेह गुनाहों के कर डालने में बहादुरी दिखाएगा तो खुले हुये गुनाहों में उस के पड़ जाने की उम्मीद है और गुनाह करने से अल्लाह ने रोका हुआ है (जिस के अन्दर किसी को जाने की इजाज़त नहीं, और उस के अन्दर बिला इजाज़त घुस जाना जुर्म है) जो जानवर मना किये हुये इलाक़े के आस पास चरता है उस का मना किये हुये इलाक़े में जा पड़ने की उम्मीद बहुत ज़्यादा है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान का मतलब यह है कि ऐसी चीज़ें जिस का न तो हराम होना क़तई तौर पर मालूम हो और न हलाल होना साफ़ मालूम हो, उस के कुछ पहलू हलाल मालूम होते हों

और कुछ हराम दिखाई देते हों तो मोमिन का काम यह है कि उस के पास न जाये, और ज़ाहिर है कि जो मुशतबह चीज़ों से दूर भागता हो वह खुले हुये हराम काम कैसे कर सकता है, अगर कोई शख़्स शक व शुबहा वाली चीज़ों को नाजाइज़ जानते हुए भी उसे अपनाता है तो उस का नतीजा यह होगा कि दिल खुले हुये हराम को अपनाने पर बहादुर और दिलेर हो जाएगा और यह दिल की बहुत ही ख़तरनाक हालत है।

(١٣٠) عَنْ عَطِيَّةَ السَّعْدِيِّ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا يَبْلُغُ الْعَبْدُ اَنْ يَّكُوْنَ
مِنَ الْمُتَّقِيْنَ حَتّٰى يَدَعَ مَالَا بَاسَ بِهٖ حَذَرًا لِمَا بِهِ الْبَاسُ. (ترمذی)

130. *अन अतिय्यतस्सअदियि अन्नननबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला ला यबलुग़ुल अब्दु अंय्यकूना मिनल मुत्तक़ीना हत्ता यदआ मा-ला-बासा बिही हज़रल लिमा बिहिलबासु।* (तिर्मिज़ी)

> **अनुवादः–** हज़रत अतिय्या सअदी (रज़ि॰) से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई शख़्स अल्लाह के मुत्तक़ी बन्दों की फ़ेहरिस्त में नहीं आ सकता जब तक कि गुनाह में पड़ने के डर से वह चीज़ न छोड़े जिस में कोई गुनाह नहीं है।

मतलब यह कि एक चीज़ जो मुबाह (जाइज़, हलाल) के दर्जे की है जिस के करने में गुनाह नहीं है लेकिन उस की सरहद गुनाह से मिली हुई है, आदमी महसूस करता है कि अगर मैं उस मुबाह की मेंड पर गश्त लगाता रहूँगा तो हो सकता है क़दम फिसल जाये और मैं गुनाह में गिर पड़ूं, इस डर से वह मुबाह से फ़ायदा उठाना छोड़ देता है। दिल की यही वह हालत है जिस को शरीअत की ज़ुबान में तक़वा का नाम दिया गया है। और ऐसा दिल वाला आदमी वास्तव में मुत्तक़ी है। क़ुरआन मजीद में जहाँ अहकाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी से रोकना मक़सूद होता है वहाँ वह यह नहीं कहता कि "मेरी मुक़र्रर की हुई हदों को न फलांगना" बल्कि वह यूँ कहता है कि यह अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हदें हैं उन के क़रीब न जाना।

मुआशरत

निकाह

(١٣١) عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا مَعْشَرَ الشَّبَابِ مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمَ الْبَاءَةَ فَلْيَتَزَوَّجْ، فَإِنَّهُ اَغَضُّ لِلْبَصَرِ وَاَحْصَنُ لِلْفَرْجِ، وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَعَلَيْهِ بِالصَّوْمِ، فَإِنَّهُ لَهُ وَجَاءٌ. (بخاری، مسلم)

131. *अनिब्नि मसऊदिन काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा या मअशरश्शबाबि मनिसतताआ मिनकुमुल बाअता फलयतज़व्वज, फइन्नहू अग़ज़्ज़ु लिलबसरि व अहसनु लिलफर्जि, व मल्लम यसततेअ फअलैहि बिस्सौमि, फइन्नहू लहू वजाउन।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ नवजवानो! तुम में से जो निकाह की ज़िम्मेदारियां उठाने की ताक़त रखता है उसे निकाह कर लेना चाहिये क्योंकि यह निगाह को नीचा रखता और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करता है (यानी नज़र को इधर उधर आवारा फिरने से और शहवानी ताक़त को बेलगाम होने से बचाता है) और जो निकाह की ज़िम्मेदारियों को उठाने की ताक़त नहीं रखता उसे चाहिये कि शहवत का ज़ोर तोड़ने के लिये कभी कभी रोज़ा रखा करे।

(١٣٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُنْكَحُ الْمَرْأَةُ لِاَرْبَعٍ لِمَالِهَا وَلِحَسَبِهَا وَلِجَمَالِهَا وَلِدِيْنِهَا فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّيْنِ تَرِبَتْ يَدَاكَ. (متفق علیہ، ابو ہریرہؓ)

132. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा तुनकहुल मरअतु लिअरबइन लिमालिहा व लिहसबिहा व लिजमालिहा व लिदीनिहा फज़्फर बिज़ातिद्दैनि तरिबत यदाका।* (मुत्तफ़क़ अलैहि-अबूहुरैरा रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरत से चार चीज़ों की बुनियाद पर शादी की जाती है, उस के माल की बुनियाद पर, उस की ख़ानदानी शराफ़त की बुनियाद पर, उस की ख़ूबसूरती की बुनियाद पर और उस के दीन की बुनियाद पर, तो तुम दीनदार औरत को हासिल करो, तुम्हारा भला हो।

हदीस का मतलब यह है कि औरत में यह चार चीज़ें देखी जाती हैं कोई माल देखता है कोई ख़ानदानी इज़्ज़त का लिहाज़ करता है और कोई उस के हुस्न व जमाल की वजह से शादी करता है और कोई उस के दीन को देखता है लेकिन हुज़ूर (सल्ल०) ने मुसलमानों को हिदायत की कि असल चीज़ जो देखने की है वह उस की दीनदारी और तक़वा है, वैसे अगर और सब ख़ूबियाँ भी उस के साथ जमा हो जाएँ तो यह बहुत अच्छी बात है लेकिन दीन को भुला देना और सिर्फ़ माल व जमाल की बुनियाद पर शादी करना मुसलमानों का काम नहीं।

(١٣٣) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا تَزَوَّجُوا النِّسَاءَ لِحُسْنِهِنَّ فَعَسٰى حُسْنُهُنَّ اَنْ يُّرْدِيَهُنَّ وَلَا تَزَوَّجُوْهُنَّ لِاَمْوَالِهِنَّ فَعَسٰى اَمْوَالُهُنَّ اَنْ تُطْغِيَهُنَّ وَلٰكِنْ تَزَوَّجُوْهُنَّ عَلَى الدِّيْنِ، وَلَاَمَةٌ سَوْدَاءُ ذَاتُ دِيْنٍ اَفْضَلُ. (منتقی)

133. *अन अब्दिल्लाहिब्नि अमरिन अन्ननबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला ला तज़व्वजुन्निसाआ लिहुस्निहिन्ना फअसा हुस्नुहुन्ना अय्युरदियहुन्ना वला तज़व्वजूहुन्ना लिअमवालिहिन्ना फ-असा अमवालुहुन्ना अन तुतग़ियहुन्ना व लाकिन तज़व्वजूहुन्ना अलद्दीनि, व-ल-अमतुन सौदाउ ज़ातु दैनिन अफ्ज़लु।* (मुन्तक़ा)

अनुवादः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया औरतों से उन के हुस्न व जमाल की वजह से शादी न करो, हो सकता है उन का हुस्न उन को तबाह कर दे और न उन के मालदार होने की वजह से शादी करो, हो सकता है उन का माल उन को तुग़यान व सरकशी में मुबतला कर दे, बल्कि दीन की बुनियाद पर शादी करो और काले रंग की लौंडी जो दीनदार हो अल्लाह की निगाह में गोरी ख़ानदानी औरत से बेहतर है।

(۱۳۴) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا خَطَبَ إِلَيْكُمْ مَنْ تَرْضَوْنَ دِيْنَهُ وَخُلُقَهُ فَزَوِّجُوْهُ، إِنْ لَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ. (ترمذی)

134. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा ख़तबा इलैकुम मन तरज़ौना दीनहू व ख़ुलुकहू फ-ज़व्विजूहु, इल्ला तफ़अलूहु तकुन फ़ितनतुन फ़िलअर्ज़ि व फ़सादुन कबीरुन।* (तिर्मिज़ी)

अनुवाद:- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब तुम्हारे पास शादी का पैग़ाम कोई ऐसा शख़्स लाये जिस के दीन व अख़लाक़ को तुम पसन्द करते हो तो उस से शादी कर दो, अगर तुम ऐसा न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना और बड़ी ख़राबी पैदा होगी।

यह हदीस पहली हदीस के मज़मून की ताईद करती है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मतलब यह है कि शादी के सिलसिले में देखने की चीज़ दीन व अख़लाक़ है। अगर यह न देखा जाये बल्कि माल व जाएदाद और ख़ानदानी शराफ़त ही देखी जाये तो मुसलमानों में इस से बड़ी ख़राबी पैदा होगी। जो लोग इतने दुनियापरस्त बन जाएँ कि दीन उन की नज़र से गिर जाये और माल व जाएदाद ही उन के यहाँ देखने की चीज़ें बन जाएँ तो ऐसे लोग दीन की खेती को सींचने की फ़िक्र कहाँ कर सकते हैं? इसी हालत को हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़ितना और फ़साद कहा है।

(۱۳۵) عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ عَلَّمَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ التَّشَهُّدَ فِي الصَّلٰوةِ وَالتَّشَهُّدَ فِي الْحَاجَةِ، وَذَكَرَ تَشَهُّدَ الصَّلٰوةِ قَالَ وَالتَّشَهُّدُ فِي الْحَاجَةِ إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ أَنْفُسِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ. قَالَ وَيَقْرَأُ ثَلَاثَ ايَاتٍ، فَفَسَّرَهَا سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ. اِتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهِ وَلَا تَمُوْتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ. اِتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَاءَلُوْنَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ، إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا. اِتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا. الآية. (ترمذی)

135. *अनिब्नि मसऊदिन काला अल्लमना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अत्तशह्हुदा फ़िस्सलाति वत्तशह्हुदा फ़िलहाजति, व ज़करा तशह्हुदस्सलाति काला वत्तशह्हुदा फ़िलहाजति*

इन्नल हम्दा लिल्लाहि नसतईनुहू व नसतग़फ़िरुहू व नऊज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अनफुसिना, मय्यहदिहिल्लाहु फला मुज़िल्ललहू व मय्युज़लिल फला हादिया लहू, व अशहदुअल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अशहदुअन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू, काला व यकरउ सलासा आयातिन, फ-फस्सरहा सुफियानुस्सौरिय्यु, इत्तकुल्लाहा हक़्क़ा तुक़ातिही वला तमूतुन्ना इल्ला व अनतुम मुस्लिमून। इत्तकुल्लाहल्लज़ी तसाअलूना बिही वलअरहामा इन्नल्लाहा काना अलैकुम रक़ीबा, इत्तकुल्लाहा व कूलू कौलन सदीदा। अलआयः (तिर्मिज़ी)

अनुवादः– हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि हम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ का तशह्हुद भी सिखाया और निकाह का तशह्हुद भी, इब्नि मसऊद ने नमाज़ का तशह्हुद बताने के बाद कहा, और निकाह का तशह्हुद यह है (जो असल हदीस में ऊपर लिखा गया जिस का मतलब यह है) शुक्र और तारीफ़ सिर्फ़ अल्लाह के लिये है हम उसी से मदद मांगते हैं हम उसी से मग़फ़िरत चाहने वाले हैं और अपने नफ़्स (अस्तित्व) की बुराईयों के मुक़ाबला में अल्लाह की पनाह में अपने आप को देते हैं जिस को अल्लाह हिदायत दे (और हिदायत चाहने वाले ही को वह हिदायत देता है) उस को कोई गुमराह नहीं कर सकता, और जिसे वह गुमराह कर दे (और गुमराह सिर्फ़ उसी को करता है जो गुमराह होना चाहता है) उस को कोई हिदायत नहीं दे सकता, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। फिर तीन आयतें पढ़ते जो सुफ़ियान सौरी की तशरीह के मुताबिक़ यह हैं–

(۱) يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُسْلِمُوْنَ.

(۲) يٰاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَاءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ. اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا.

(٣) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا.

(1) या अय्युहल्लज़ीना आमनुत्तकुल्लाहा हक़्क़ा तुक़ातिही वला तमूतुन्ना इल्ला व अनतुम मुस्लिमून।

(2) या अय्युहन्नासुत्तकू रब्बकुमुल्लज़ी ख़लक़कुम मिन नफ़्सिव्वाहिदतिवं व ख़लक़ा मिनहा ज़ौजहा व बस्सा मिनहुमा रिजालन कसीरवं वनिसाआ, वत्तकुल्लाहल्लज़ी तसाअलूना बिही वल अरहामा, इन्नल्लाहा काना अलैकुम रक़ीबा।

(3) या अय्युहल्लज़ीना आमनुत्तकुल्लाहा व कूलू क़ौलन सदीदा, युसलिहलकुम अअमालकुम व यग़फ़िर लकुम ज़ुनूबकुम व मय्युतिइल्लाहा व रसूलहू फक़द फाज़ा फौज़न अज़ीमा।

यह ख़ुतबा है जो निकाह के वक़्त पढ़ा जाता है यहाँ पर इस को लाने का मक़सद यह बताना है कि निकाह सिर्फ़ ख़ुशी का नाम नहीं है बल्कि वह एक मुआहिदा (वादा) है जो एक मर्द और एक औरत के बीच तैय पाता है कि हम दोनों ज़िन्दगी भर के साथी और मददगार बन गये, और यह वादा करते वक़्त ख़ुदा और ख़ल्क़ (मानवजाति) दोनों को गवाह बनाया जाता है, और निकाह के ख़ुतबे की आयतें इस बात की तरफ़ साफ़ साफ़ इशारा करती हैं कि अगर इस मुआहिदे में मियाँ या बीवी की तरफ़ से कोई ख़राबी पैदा की गई और उसे ठीक से निबाहा न गया तो ख़ुदा का ग़ुस्सा उस पर भड़केगा और जहन्नम की सज़ा का हक़दार होगा, इन तीनों आयतों में ईमान वालों से कहा गया है और अल्लाह के ग़ुस्से से बचने की ताकीद की गई है पहली आयत का अनुवाद यह है-

> **अनुवादः-** ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह के ग़ज़ब से बचने की पूरी फ़िक्र रखना, और मरते दम तक ख़ुदा के अहकामात (आदेशों) को मानते रहना। दूसरी आयत का अनुवाद- ऐ लोगो! अपने पालने वाले की नाराज़ी से बचते रहना जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया और उस से उस का जोड़ा बनाया, और फिर उन दोनों के ज़रिए बहुत से मर्द व औरत दुनिया में फैला

दिये तो ऐसे ख़ालिक़, पालनहार की नाराज़गी से डरते रहना जिस का नाम लेकर तुम आपस में एक दूसरे से अपने हक़ की माँग करते हो, और रिश्तेदारों के हुक़ूक़ का लिहाज़ रखना, याद रखो अल्लाह तुम पर निगराँ (संरक्षक) है। तीसरी दोनों आयतों का अनुवाद- ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह से डरते रहना और सही बात अपनी ज़ुबान से कहना, तो अल्लाह तुम्हारे कर्मों को नेक बनाएगा, और इत्तिफ़ाक़ से कोई गुनाह हो जाये तो उसे माफ़ कर देगा और जो लोग अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी करेंगे वह बड़ी कामियाबी पाएँगे।

महर

(١٣٥) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَحَقُّ الشُّرُوْطِ اَنْ تُوَفُّوْا بِهٖ مَا اسْتَحْلَلْتُمْ بِهِ الْفُرُوْجَ. (بخاری، مسلم، عقبہ بن عامرؓ)

135. *क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अहक़्क़ुश्शुरूति अन तूफ़ू बिही मस्तहललतुम बिहिल फ़ुरूजा।*

(बुख़ारी, मुस्लिम- उक़बा बिन आमिर)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, शर्तों में से वह शर्त पूरी की जाने के लायक़ है जिस के ज़रिए तुम औरतों की इज़्ज़त के मालिक बने हो।

(١٣٦) عَنْ عُمَرَبْنِ الْخَطَّابِ قَالَ اَلَا لَاتُغَالُوْا صَدُقَةَ النِّسَاءِ فَاِنَّهَا لَوْ كَانَتْ مَكْرُمَةً فِی الدُّنْيَا وَتَقْوٰی عِنْدَ اللّٰهِ، لَكَانَ اَوْلَاكُمْ بِهَا نَبِیُّ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا عَلِمْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَكَحَ شَيْئًا مِّنْ نِسَائِهٖ وَلَا اَنْكَحَ شَيْئًا مِّنْ بَنَاتِهٖ عَلٰى اَكْثَرَ مِنِ اثْنَتَیْ عَشَرَةَ اُوْقِيَةً. (ترمذی)

136. *अन उमरब्निल ख़त्ताबि क़ाला अला लातुग़ालू सदुक़तन्निसाई फ़इन्नहा लौ कानत मकरुमतन फ़िद्दुनिया व तक़वा इन्दल्लाहि, लकाना औलाकुम बिहा नबिय्युल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा अलिम्तु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा नकहा शैअम मिन निसाईही वला अनकहा शैअम मिम्बनातिही अला अकसरा मिनिसनतै अशरता औक़ियतन।* (तिर्मिज़ी)

अनुवाद:- हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) ने फ़रमाया, ऐ लोगो! औरतों के भारी भारी मह्र न बाँधा करो, इस लिये कि अगर दुनिया में यह कोई बड़ाई और इज़्ज़त की चीज़ होती और अल्लाह की निगाह में यह कोई मुत्तक़ियाना काम होता है तो इस के सब से ज़्यादा हक़दार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे लेकिन मुझे नहीं मालूम कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बारह औक़िया से ज़्यादा पर किसी औरत से निकाह किया हो, या अपनी लड़कियों में से किसी लड़की की शादी की हो।

हज़रत उमर (रज़ि०) जिस चीज़ से रोक रहे हैं वह यह है कि लोग ख़ानदानी शराफ़त के गुरूर की वजह से भारी भारी मह्र मुक़र्रर कर देते हैं जिन का अदा करना उन के बस में नहीं होता और फिर वह उन के गले की फाँस बन जाती है। इस लिये हज़रत उमर (रज़ि०) मुसलमान ख़ानदानों और बस्तियों को इस तरह की शेख़ी से रोकते हैं और सादगी की शिक्षा देते हैं और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी का अमली नमूना पेश फ़रमाते हैं।

एक औक़िया साढ़े दस तोला चाँदी के बराबर होता है ख़ुद हुज़ूर ने आमतौर से जिस औरत से निकाह किया या अपनी लड़कियों का निकाह कराया उस से ज़्यादा मह्र आप (सल्ल०) ने नहीं बांधा यह उम्मत के लिये एक अमली नमूना है। रहा उम्मेहबीबा का मह्र जो इस से बहुत ज़्यादा था तो यह मह्र हबश के बादशाह नज्जाशी ने मुक़र्रर किया था और उसी ने अदा किया था, निकाह ग़ायबाना हुआ था।

(١٣٧) عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرُ الصَّدَاقِ اَيْسَرُهٗ. (نیل الاوطار)

137. *अन उक़बतब्नि आमिरिन काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ख़ैरुस्सदाक़ि ऐसरुहू।* (नैनुल-औतार)

अनुवाद:- उक़बा बिन आमिर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बेहतरीन मह्र वह है जो मामूली हो।

यानी भारी मह्र ख़ानदानों में बड़ी मुश्किलें पैदा कर देता है। बीवी रहना नहीं चाहती और मियाँ रखना नहीं चाहता लेकिन तलाक़ नहीं देते इस लिये कि फिर मह्र का मसला उठ खड़ा होगा जिस का अदा करना उन की बरदाश्त से बाहर है नतीजा यह होता है कि घर दोनों के लिये जहन्नम बन जाता है।

(١٣٨) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَرُّ الطَّعَامِ طَعَامُ الْوَلِيْمَةِ يُدْعٰى لَهَا الْاَغْنِيَاءُ وَيُتْرَكُ الْفُقَرَاءُ وَمَنْ تَرَكَ الدَّعْوَةَ فَقَدْ عَصَى اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ.

(بخاری، مسلم۔ابو ہریرہؓ)

138. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा शर्रुत्तआमि तआमुल वलीमति युदआ लहलअग़नियाउ व युतरकुल फुक़राउ व मन तरकद्दअवता फक़द असल्लाहा व रसूलहू।*

(बुख़ारी, मुस्लिम- अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सब से बुरा खाना उस वलीमे का खाना है जिस में मालदारों को बुलाया जाये और ग़रीबों को भुला दिया जाये, और जिस शख़्स ने वलीमे की दावत कुबूल न की उस ने अल्लाह और रसूल की नाफ़रमानी की।

इस हदीस से मालूम हुआ कि वलीमा सुन्नत है और जिस वलीमे में मालदारों को बुलाया जाये और सोसाईटी के ग़रीबों को न बुलाया जाए वह बुरा वलीमा है, और दावत को बग़ैर किसी मजबूरी के कुबूल न करना सुन्नत के ख़िलाफ़ है।

(١٣٩) نَهٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ اِجَابَةِ طَعَامِ الْفٰسِقِيْنَ.

(مشکوٰۃ،عمرانؓ بن حصین۔)

139. *नहा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अन इजाबति तआमिल फासिक़ीना।* (मिश्कात, इमरान बिन हुसैन)

अनुवादः- इमरान बिन हुसैन (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ासिक़ (बुरे) लोगों की दावत कुबूल करने से रोका है।

"फ़ासिक़" वह जो अल्लाह और रसूल (सल्ल०) के आदेशों को पूरी ढिठाई के साथ तोड़ता हो, हलाल व हराम का ख़याल नहीं रखता तो ऐसे शख़्स की दावत में न जाना चाहिये जो शख़्स दीन की बेइज़्ज़ती करता है, दीन वाले उस की इज़्ज़त को बढ़ाने कैसे जा सकते हैं, दोस्त का दुश्मन दोस्त नहीं हो सकता हाँ उस की दावत को अच्छे अन्दाज़ में और मोमिनों की ज़ुबान में क़ुबूल करने से मना कर दे।

वालिदैन और रिश्तेवारों के हुक़ूक़

(١٤٠) قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَنْ اَحَقُّ بِحُسْنِ صَحَابَتِیْ؟ قَالَ اُمُّکَ، قَالَ ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ اُمُّکَ، قَالَ ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ اُمُّکَ، قَالَ ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ اَبُوْکَ، وَفِیْ رِوَایَةٍ قَالَ اُمُّکَ ثُمَّ اُمُّکَ ثُمَّ اُمُّکَ ثُمَّ اَبَاکَ ثُمَّ اَدْنَاکَ فَاَدْنَاکَ. (بخاری، مسلم۔ابوہریرۃؓ)

140. *काला रजुलुन या रसूलल्लाहि मन अहक़्क़ु बिहुस्नि सहाबती? काला उम्मुका, काला सुम्मा मन? काला उम्मुका, काला सुम्मा मन? काला उम्मुका, काला सुम्मा मन? काला अबूका, वफ़ी रिवायतिन काला उम्मुका सुम्मा उम्मुका सुम्मा उम्मुका सुम्मा अबाका सुम्मा अदनाका फ़अदनाका।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि०)

> **अनुवादः-** एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे अच्छे सुलूक (व्यवहार) का ज़्यादा हक़दार कौन है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तेरी माँ, उस ने कहा फिर कौन? आप ने फ़रमाया तेरी माँ, उस ने कहा फिर कौन? आप ने फ़रमाया तेरी माँ, उस ने कहा फिर कौन? आप ने फ़रमाया तेरा बाप, फिर दर्जा बदर्जा जो तेरे क़रीबी लोग हों।

इस हदीस से मालूम हुआ कि माँ का दर्जा बाप से बढ़ा हुआ है, यही बात क़ुरआन मजीद से भी मालूम होती है, सूरह लुक़्मान में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि "हम ने इन्सान को माँ बाप की शुक्रगुज़ारी का हुक्म दिया" और उस के तुरन्त बाद यह फ़रमाया कि "उस की माँ ने उस को तकलीफ़ पर तकलीफ़ झेल कर 9 महीने तक अपने पेट में उठाये रखा फिर दो साल तक अपने ख़ून से उसे पाला" इसी वजह से उलमा(विद्वानों) ने लिखा है कि जहाँ तक अदब व इज़्ज़त (आदर व सम्मान) का सवाल है बाप ज़्यादा हक़दार है और ख़िदमत (सेवा) के

लिहाज़ से माँ का दर्जा बढ़ा हुआ है।

(١٤١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَغِمَ اَنْفُهٗ، رَغِمَ اَنْفُهٗ، رَغِمَ اَنْفُهٗ، قِيْلَ مَنْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ مَنْ اَدْرَكَ وَالِدَيْهِ عِنْدَ الْكِبَرِ اَحَدُهُمَا اَوْ كِلَاهُمَا ثُمَّ لَمْ يَدْخُلِ الْجَنَّةَ. (مسلم، ابو ہریرۃؓ)

141. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा रगिमा अनफुहू, रगिमा अनफुहू, रगिमा अनफुहू, कीला मन या रसूलल्लाहि? काला मन अदरका वालिदैहि इनदल किबरि अहदुहुमा औ किलाहुमा सुम्मा लम यदख़ुलिल जन्नता।* (मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस की नाक ख़ाकआलूद हो (यानी ज़लील हो) यह बात आप (सल्ल॰) ने तीन बार फ़रमाई, लोगों ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! कौन ज़लील हो? और यह शब्द किन लोगों के हक़ में आप फ़रमा रहे हैं) आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि वह शख़्स जिस ने अपने माँ बाप को बुढ़ापे की हालत में पाया, उन दोनों में से एक को या दोनों को फिर (उन की सेवा कर के) जन्नत में दाख़िल न हुआ।

(١٤٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَيْكُمْ عُقُوْقَ الْاُمَّهَاتِ وَوَادَ الْبَنَاتِ وَمَنْعًا وَّهَاتِ، وَكَرِهَ لَكُمْ قِيْلَ وَقَالَ وَكَثْرَةَ السُّوَالِ وَاِضَاعَةَ الْمَالِ.

142. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नल्लाहा हर्रमा अलैकुम उकूकल उम्महाति व वादल-बनाति व मनअवं व हाति, व करिहा लकुम कीला व काला व कसरतस्सुआलि व इज़ाअतल मालि।*

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तुम पर माँ बाप के साथ बुरा सुलूक करने को हराम किया है और लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करना, और लालच व कंजूसी, और तुम्हारे लिये उस ने नापसन्द किया है बेकार क़िस्म की बात चीत, और ज़्यादा सवाल करना, और माल को बरबाद करना।

सवाल ज़्यादा करने से मुराद किसी चीज़ के बारे में बिला वजह

कुरेद करना है, इस का मतलब यह नहीं है कि आदमी जो बात नहीं जानता उस के बारे में भी न पूछे, बल्कि इस का मतलब यह है कि उस तरह की कुरेद न करे जिस तरह की कुरेद बनी इस्राईल ने गाय ज़िब्ह करने के मुआमले में की थी, और आज भी इस तरह की कुरेद वह लोग करते हैं जो दीन पर अमल करना नहीं चाहते।

(١٤٣) عَنْ اَبِیْ اُسَیْدِ السَّاعِدِیِّ قَالَ بَیْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِذْ جَاءَہٗ رَجُلٌ مِنْ بَنِیْ سَلْمَۃَ فَقَالَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ ھَلْ بَقِیَ مِنْ اَبَوَیَّ شَیْءٌ اَبَرُّھُمَا بِہٖ بَعْدَ مَوْتِہِمَا. قَالَ نَعَمْ، اَلصَّلٰوۃُ عَلَیْہِمَا وَالْاِسْتِغْفَارُ لَھُمَا وَاِنْفَاذُ عَھْدِھِمَا مِنْ بَعْدِھِمَا وَصِلَۃُ الرَّحِمِ الَّتِیْ لَا تُوْصَلُ اِلَّا بِھِمَا وَاِکْرَامُ صَدِیْقِھِمَا. (ابوداؤد)

143. *अन अबी उसैदिनिस्साईदिय्यि काला बैना नहनु इन्दा रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़् जाअहू रजुलुम मिम्बनी सलिमता फक़ाला या रसूलल्लाहि हल बक़ी मिन अबवय्या शैउन अबर्रुहुमा बिही बादा मौतिहिमा, काला नअम, अस्सलातु अलैहिमा वल इस्तिग़फ़ारु लहुमा व इनफ़ाज़ु अहदिहिमा मिम्बअदिहिमा व सिलतुर्रहीमि अल्लती ला तूसलु इल्ला बिहिमा इकरामु सदीक़िहिमा।* (अबू दाऊद)

अनुवादः- अबू उसैद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में बैठे हुये थे, बनू सलमा का एक आदमी आप (सल्ल०) के पास आया, उस ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! माँ बाप की वफ़ात (मृत्यु) के बाद उन का कोई हक़ बाक़ी रहता है जिसे मैं अदा करूँ? आप ने फ़रमाया हाँ! उन के लिये दुआ और इस्तिग़फ़ार करो और जो (जाइज़) वसिय्यत कर गये हैं उसे पूरा करो, और माँ बाप से जिन लोगों का रिश्तेदारी का तअल्लुक़ (संबंध) है उन के साथ सिला रहमी करो, और माँ बाप के दोस्त और सहेलियों की इज़्ज़त और ख़ातिरदारी आवभगत करो।

(١٤٤) عَنْ اَبِی الطُّفَیْلِ قَالَ رَاَیْتُ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقْسِمُ لَحْمًا بِالْجِعْرَانَۃِ اِذْ اَقْبَلَتِ امْرَاَۃٌ حَتّٰی دَنَتْ اِلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَبَسَطَ لَھَا رِدَاءَہٗ فَجَلَسَتْ عَلَیْہِ فَقُلْتُ مَنْ ھِیَ قَالُوْا ھِیَ اُمُّہُ الَّتِیْ اَرْضَعَتْہُ. (ابوداؤد)

144. *अन अबित्तुफ़ैलि काला रऐतुन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़बसता लहा रिदाअहू फ़जलसत अलैहि फ़कुल्तु मन हिया कालू हिया उम्मुहुल्लती अरज़अतहु।* (अबू दाऊद)

अनुवाद:– अबुत्तुफ़ैल फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक़ामे जिइर्राना में देखा कि आप गोश्त बाँट रहे थे कि इतनें में एक औरत आई और हुज़ूर के क़रीब गई तो आप ने अपनी चादर बिछा दी जिस पर वह बैठ गई तो मैं ने पूछा यह कौन है? लोगों ने मुझे बताया कि यह आप की माँ हैं जिन्हों ने आप को दूध पिलाया है।

(۱۴۵) عَنْ اَسْمَاءَ بِنْتِ اَبِیْ بَكْرٍ قَالَتْ قَدِمَتْ عَلَیَّ اُمِّیْ وَهِیَ مُشْرِكَةٌ فِیْ عَهْدِ قُرَیْشٍ، قُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّ اُمِّیْ قَدِمَتْ عَلَیَّ وَهِیَ رَاغِبَةٌ اَفَاَصِلُهَا؟ فَقَالَ نَعَمْ صِلِیْهَا. (بخاری، مسلم)

145. *अन असमाआ बिन्ते अबी बकरिन कालत क़दिमत अलय्या उम्मी व हिया मुश्रिकतुन फ़ी अहदि कुरैशिन या रसूलल्लाहि इन्ना उम्मी क़दिमत अलय्या वहिया राग़िबतुन अफ़असिलुहा? फ़काला नअम सिलीहा।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवाद:– हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की बेटी हज़रत असमा (रज़ि०) फ़रमाती है। कि उस ज़माना में जबकि कुरैश और मुसलमानों के बीच सुलह हुई थी (सलहे हुदैबिया) मेरी माँ (रज़ाई माँ) मेरे पास आई और वह अभी इस्लाम नहीं लाई थी बल्कि शिर्क की हालत पर थी तो मैं ने नबी (सल्ल०) से पूछा कि मेरी माँ मेरे पास आई है और वह चाहती हे कि मैं उसे कुछ दूँ तो क्या मैं उसे दे सकती हूँ? आप ने फ़रमाया हाँ तुम उस के साथ मेहरबानी का सुलूक करो।

(۱۴۶) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ لَیْسَ الْوَاصِلُ بِالْمُكَافِیْ وَلٰكِنَّ الْوَاصِلَ الَّذِیْ اِذَا قُطِعَتْ رَحِمُهٗ وَصَلَهَا. (بخاری، ابن عمرؓ)

146. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लैसल वासिलु बिलमुकाफ़ी वलाकिन्नल वासिलल्लज़ी इज़ा कुतिअत रहिमुहू वसलहा।* (बुख़ारी, इब्ने उमर)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह शख़्स जो बदले में रिश्तेदारी का लिहाज़ करता है, वह पूरे दर्जे की सिलारहमी करने वाला नहीं है, पूरे दर्जे की सिलारहमी यह है कि जब दूसरे रिश्तेदार उस के साथ बेतअल्लुक़ी करें तो यह उन के साथ अपना संबंध जोड़े और उन का हक़ दे।

मतलब यह है कि रिश्तेदारों के हुस्नेसुलूक के जवाब में हुस्नेसुलूक करना यह कमाल दर्जा का हुस्नेसुलूक नहीं है। सब से बड़ा सिलारहमी करने वाला हक़ीक़त में वह शख़्स है कि रिश्तेदार तो उस को काट रहे हों और वह उन से जुड़ने की कोशिश करता हो, वह इस का कोई हक़ अदा न करें पर यह उन के सारे हुकूक़ अदा करने के लिये तैयार हो, यह एक ऐसी चीज़ है जो कमाल दर्जा तक़्वा के बग़ैर मुम्किन नहीं है।

(١٤٧) اِنَّ رَجُلًا قَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّ لِیْ قَرَابَةً اَصِلُهُمْ وَيَقْطَعُوْنِیْ وَاُحْسِنُ اِلَيْهِمْ وَيُسِيْئُوْنَ اِلَیَّ، وَاَحْلُمُ عَنْهُمْ وَيَجْهَلُوْنَ عَلَیَّ فَقَالَ لَئِنْ كُنْتَ كَمَا قُلْتَ فَكَاَنَّمَا تُسِفُّهُمُ الْمَلَّ وَلَا يَزَالُ مَعَكَ مِنَ اللّٰهِ ظَهِيْرٌ عَلَيْهِمْ مَّا دُمْتَ عَلٰى ذَالِكَ. (مسلم، ابوہریرہؓ)

147. *इन्ना रजुलन काला या रसूलल्लाहि इन्ना ली कराबतन असिलुहुम व यक़तऊनी व उहसिनु इलैहिम व युसीऊना इलय्या व अहलुमु अनहुम व यजहलूना अलय्या फक़ाला लइन कुनता कमा कुल्ता फकअन्नमा तुसिफ़्फ़ुहुमुल-मल्ला वला यज़ालु मअका मिनल्लाहि ज़हीरुन अलैहिम मा दुमता अला ज़ालिका।*

(मुस्लिम, अबू हुरैरा)

अनुवादः- एक आदमी ने हुज़ूर (सल्ल॰) से कहा कि ऐ अल्लाह तआला के रसूल! मेरे कुछ रिश्तेदार हैं जिन के हुकूक़ मैं अदा करता हूँ और वह मेरे हुकूक़ अदा नहीं करते हैं मैं उन के साथ हुस्ने सुलूक करता हूँ और वह मेरे साथ बुरा सुलूक करते हैं। मैं उन के साथ हिल्म व बुर्दबारी (नर्मदिली) से पेश आता हूँ और वह मेरे साथ जिहालत से पेश आते हैं, आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया अगर तू ऐसा ही है जैसा कि तू कहता है तो गोया तू उन के चेहरों पर सियाही फेर रहा है और अल्लाह

उन के मुकाबले में हमेशा तेरा मददगार रहेगा जब तक तू इस हालत पर क़ायम रहेगा।

बीवियों के हुकूक़

(١٤٨) عَنْ حَكِيْمِ بْنِ مُعَاوِيَةَ الْقُشَيْرِيْ عَنْ اَبِيْهِ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا حَقُّ زَوْجَةِ اَحَدِنَا عَلَيْهِ؟ قَالَ اَنْ تُطْعِمَهَا اِذَا طَعِمْتَ، وَتَكْسُوَهَا اِذَا اكْتَسَيْتَ وَلَا تَضْرِبِ الْوَجْهَ، وَلَا تُقَبِّحْ، وَلَا تَهْجُرْ اِلَّا فِى الْبَيْتِ. (ابوداؤد)

148. *अन हकीमिब्नि मुआवियतल कुशैरी अन अबीहि काला कुल्तु या रसूलल्लाहि मा हक़्क़ु ज़ौजति अहदिना अलैहि? काला अन तुतईमहा इज़ा तइम्ता, व तकसुवहा इज़कतसैता वला तज़रिबिल-वजहा, वला तुक़ब्बिह, वला तहजुर इल्ला फ़िलबैति।*

(अबू दाऊद)

अनुवादः- हकीम बिन मुआविया अपने बाप मुआविया से रिवायत करते हैं, उन्हों ने कहा कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि किसी शौहर की बीवी का उस पर क्या हक़ है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया उस का हक़ यह है कि जब तू खाये तो उसे खिलाये और जब तू पहने तो उसे पहनाये और उस के चेहरे पर न मारे और उस को बददुआ के अलफ़ाज़ न कहे, और अगर उस से तअल्लुक़ (संबंध) तोड़े तो सिर्फ़ घर में तोड़े।

यानी जैसा तुम खाओ वैसा ही अपनी बीवी को खिलाओ, और जिस मेयार के कपड़े तुम पहनो उसी मेयार का कपड़ा उसे दो।

आख़िरी शब्द का मतलब यह है कि अगर बीवी की तरफ़ से नाफ़रमानी और शरारत ज़ाहिर हो तो कुरआन की हिदायत के मुताबिक़ पहले उस को नर्मी से समझाए, अगर उस से भी वह ठीक न हो तो घर में अपना बिस्तर अलग करे और बात बाहर न पहुंचने दे क्योंकि यह शराफ़त के ख़िलाफ़ है, इस से भी अगर ठीक न हो तो फिर उस को मारा जा सकता है लेकिन चेहरे पर नहीं बल्कि जिस्म के दूसरे हिस्से पर, और उस में भी हिदायत है कि हड्डी को तोड़ देने वाली या ज़ख़्मी कर देने वाली मार न मारी जाये।

(١٤٩) عَنْ لَقِيطِ بْنِ صَبْرَةَ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ إِنَّ لِيْ امْرَأَةً فِيْ لِسَانِهَا شَيْءٌ يَعْنِي الْبَذَاءَ قَالَ طَلِّقْهَا، قُلْتُ إِنَّ لِيْ مِنْهَا وَلَدًا وَلَهَا صُحْبَةٌ، قَالَ فَمُرْهَا يَقُوْلُ عِظْهَا، فَإِنْ يَكُ فِيْهَا خَيْرٌ فَسَتَقْبَلُ، وَلَا تَضْرِبَنَّ ظَعِيْنَتَكَ ضَرْبَكَ أُمَيَّتَكَ. (ابوداؤد)

149. *अन लकीतिब्नि सबरता काला कुल्तु या रसूलल्लाहि इन्ना ली इम्रअतन फी लिसानिहा शैउन यअनिल बज़ाआ काला तल्लिक़हा, कुल्तु इन्ना ली मिनहा वलदन व लहा सुहबतुन, काला फमुरहा यक़ूलु इज़्हा, फइय्यकु फीहा ख़ैरुन फसतक़बलु, वला तज़रिबन्ना ज़ईनतका ज़रबका उमय्यतका।* (अबू दाऊद)

अनुवादः- लक़ीत बिन सबरा फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि मेरी बीवी बदगो है तो आप ने फ़रमाया उसे तलाक़ दे दो मैं ने कहा कि उस से मेरे बच्चे हैं, सालों से हम दोनों साथ रहते हैं, तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया उसे नसीहत करो अगर उस के अन्दर भलाई को क़ुबूल (स्वीकार) करने की सलाहियत (योग्यता) होगी तो वह तुम्हारी बात मान लेगी, और ख़बरदार! अपनी बीवी को इस तरह न मारना जैसे तू अपनी लौंडी को मारता है।

इस हदीस के आख़िरी टुकड़े का यह मतलब नहीं है कि लौंडियों को ख़ूब पीटो और बीवियों को न पीटो, बल्कि मतलब यह है कि जिस तरह लोग अपनी लौडियों के साथ पेश आते हैं उस तरह का मुआमला बीवी के साथ न होना चाहिये।

(١٥٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَضْرِبُوْا إِمَاءَ اللّٰهِ فَجَاءَ عُمَرُ إِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ ذَئِرْنَ النِّسَاءُ عَلٰى أَزْوَاجِهِنَّ فَرَخَّصَ فِيْ ضَرْبِهِنَّ فَطَافَ بِاٰلِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نِسَاءٌ كَثِيْرٌ يَشْكُوْنَ أَزْوَاجَهُنَّ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقَدْ طَافَ بِاٰلِ مُحَمَّدٍ نِسَاءٌ كَثِيْرٌ يَشْكُوْنَ أَزْوَاجَهُنَّ لَيْسَ أُولٰئِكَ بِخِيَارِكُمْ. (ابوداؤد)

150. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला तज़रिबू इमाअल्लाहि फजाआ उमरु इला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फकाला ज़इरनन्निसाउ अला अज़्वाजिहिन्ना फरख़्ख़सा फी ज़रबिहिन्ना फताफा बिआलि रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि*

वसल्लमा निसाउन कसीरुय्यंशकूना अज़वाजहुन्ना, फ़काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लक़द ताफ़ा बिआलि मुहम्मदिन निसाउन कसीरुय्यंशकूना अज़वाजहुन्ना लैसा उलाइका बिख़ियारिकुम। (अबू दाऊद, अयास बिन अब्दुल्लाह)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ लोगो! अल्लाह की बाँदियों (यानी अपनी बीवियों) को मत मारो। उस के बाद हज़रत उमर (रज़ि॰) नबी (सल्ल॰) के पास आये और कहा कि आप (सल्ल॰) की इस हिदायत की वजह से शौहरों ने मारना छोड़ दिया तो औरतें अपने शौहरों के सिर चढ़ गईं और दिलेर हो गईं तो नबी (सल्ल॰) ने उन को मारने की इजाज़त दे दी, इस के बाद नबी (सल्ल॰) की बीवियों के पास बहुत सी औरतें आईं और उन्हों ने अपने शौहरों की मार पीट की शिकायत की तो नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया मेरी बीवियों के पास बहुत सी औरतें अपने शौहरों की शिकायत ले कर आईं ऐसे लोग तुम में के बेहतर लोग नहीं हैं।

(١٥١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَايَفْرُكْ مُؤْمِنٌ مُؤْمِنَةً، إِنْ كَرِهَ مِنْهَا خُلُقًا رَضِيَ مِنْهَا اٰخَرَ. (مسلم-ابوہریرۃؓ)

151. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला यफ़रुक मोमिनुन मोमिनतुन, इन करिहा मिनहा ख़ुलुक़न रज़िया मिनहा आख़रा।* (मुस्लिम, अबू हुरैरा)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई मोमिन शौहर अपनी मोमिन बीवी से नफ़रत न करे, अगर उस की एक आदत पसन्द नहीं आती तो दूसरी और आदतें पसन्द आएँगी।

मतलब यह है कि बीवी अगर ख़ूबसूरत नहीं है या किसी और तरह की कमी उस में पाई जाती है तो उस वजह से तुरन्त उस से संबंध तोड़ने का फ़ैसला न करो, एक औरत के अन्दर और किसी तरह की कोई कमी होती है तो उस के अन्दर बहुत सी ऐसी अच्छाईयाँ भी होती हैं जिन की वजह से वह शौहर के दिल पर क़ब्ज़ा कर लेती है मगर जबकि उस को मौक़ा दिया जाये और सिर्फ़ उस की एक कोताही की बिना पर हमेशा के

लिये दिल में नफ़रत न बिठा ली जाये।

(۱۵۲) عَنْ عَمْرِوبْنِ الْاَحْوَصِ الْجُشَمِيِّ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ حَجَّةِ الْوَدَاعِ يَقُوْلُ بَعْدَ اَنْ حَمِدَ اللّٰهَ تَعَالٰى وَاَثْنٰى عَلَيْهِ وَذَكَرَ وَوَعَظَ ثُمَّ قَالَ اَلَا وَاسْتَوْصُوْا بِالنِّسَاءِ خَيْرًا، فَاِنَّمَا هُنَّ عَوَانٍ عِنْدَكُمْ لَيْسَ تَمْلِكُوْنَ مِنْهُنَّ شَيْئًا غَيْرَ ذٰلِكَ اِلَّا اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ، فَاِنْ فَعَلْنَ فَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ضَرْبًا غَيْرَ مُبَرِّحٍ، فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا. اَلَا اَنَّ لَكُمْ عَلٰى نِسَائِكُمْ حَقًّا وَلِنِسَائِكُمْ عَلَيْكُمْ حَقًّا فَحَقُّكُمْ عَلَيْهِنَّ اَنْ لَّا يُوْطِئْنَ فُرُشَكُمْ مَّنْ تَكْرَهُوْنَ، وَلَا يَاْذَنَّ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لِمَنْ تَكْرَهُوْنَ اَلَا وَحَقُّهُنَّ عَلَيْكُمْ اَنْ تُحْسِنُوْا اِلَيْهِنَّ فِيْ كِسْوَتِهِنَّ وَطَعَامِهِنَّ. (ترمذی)

152. *अन अमरिब्निल अहवसिल जुशमिरिय अन्नहू समिअन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फी हज्जतिल वदाई यकूलु बअदा अन हमिदल्लाहा तआला व असना अलैहि व ज़करा व वअज़ा सुम्मा काला अला वस्तौसू बिन्निसाई ख़ैरन फइन्नमा हुन्ना अवानिन इन्दकुम लैसा तमलिकूना मिनहुन्ना शैअन ग़ैरा ज़ालिका इल्ला अयंयातीना बिफाहिशतिम मुबय्यनतिन, फइन फअलना फहजुरुहुन्ना फिल मज़ाजिई वज़रिबूहुन्ना ज़रबन ग़ैरा मुबर्रिजिन, फइन अतअ़नकुम फला तबग़ू अलैहिन्ना सबीलन, अला अन्ना लकुम अला निसाईकुम हक़्क़व वलिनिसाईकुम अलैकुम हक़्क़न फहक़्क़ुकुम अलैहिन्ना अल्ला यूअतिअना फुरुशकुम मन तकरहूना, वला याज़न्ना फी बुयुतिकुम लिमन तकरहूना, अला व हक़्क़ुहुन्ना अलैकुम अन तुहसिनू इलैहिन्ना फी किस्वतिहिन्ना व तआमिहिन्ना।* (तिर्मिज़ी)

अनुवादः– अमर बिन अहवस जुशमी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज्जतुल-विदाअ में फ़रमाते सुना, पहले आप ने हम्द व सना फ़रमाई फिर और बातों की नसीहतें कीं फिर फ़रमाया लोगो सुनो! औरतों के साथ अच्छा व्यवहार करना इस लिये कि वह तुम्हारे पास क़ैदी की तरह हैं, उन के साथ सख़्ती सिर्फ़ उस शक्ल में की जा सकती है जबकि उन की तरफ़ से खुली हुई नाफ़रमानी ज़ाहिर हो, तो

अगर वह ऐसा करें तो उन से उन की ख़्वाबगाहों में संबंध तोड़ लो और उन को इतना मार सकते हो जो ज़ख़्मी करने वाली न हो फिर अगर वह तुम्हारा कहना मानें तो उन को सताने के लिये रास्ता मत ढूंढो। सुनो! कुछ हुकूक़ तुम्हारी बीवियों के तुम पर हैं, और कुछ तुम्हारे हुकूक़ उन पर हैं। तुम्हारा हक़ उन के ऊपर यह है कि तुम्हारे फ़र्श को ऐसे लोगों से न रौंदवाएँ जिन को तुम नापसन्द करते हो, और तुम्हारे घरों में ऐसे लोगों को आने की इजाज़त न दें जिन को तुम नापसन्द करते हो। सुनो! और उन का हक़ तुम पर यह है कि तुम उन को ठीक से खाना और कपड़ा दो।

(١٥٣) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اَنْفَقَ الرَّجُلُ عَلٰى اَهْلِهٖ يَحْتَسِبُهَا فَهُوَ لَهٗ صَدَقَةٌ. (متفق علیہ، ابو مسعود بدریؓ)

153. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा अनफ़क़र्रजुलु अला अहलिही यहतसिबुहा फहुवा लहू सदक़तुन।*

(मुत्तफ़ अलैहि, अबू मसऊद बदरी रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब आदमी अपने घर वालों पर आख़िरत में फल पाने की नियत से ख़र्च करता है तो यह उस के लिए सदक़ा बनता है।

(١٥٤) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَفٰى بِالْمَرْءِ اِثْمًا اَنْ يُّضِيْعَ مَنْ يَّقُوْتُ.

(ابوداؤد۔ عبداللہ بن عمروؓ)

154. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कफ़ा बिल मरई इस्मन अय्युज़ीआ मय्यकूतु।*

(अबू दाऊद, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आदमी को गुनहगार करने के लिये यह बात काफ़ी है कि वह उन लोगों को ज़ायअ कर दे जिन को वह खिलाता है।

(١٥٥) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ إِذَا كَانَتْ عِنْدَ الرَّجُلِ امْرَأَتَانِ فَلَمْ يَعْدِلْ بَيْنَهُمَا جَاءَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَشِقُّهٗ سَاقِطٌ. (ترمذی)

155. अन अबी हुरैरता अनिन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला इज़ा कानत इन्दर्रजुलि इमरातानि फलम यअदिल बैनहुमा जाआ यौमल क़ियामति व शिक़्क़ुहू साकितुन। (तिर्मिज़ी)

अनुवादः- अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब आदमी के पास दो बीवियाँ हों और उस ने उन के हुक़ूक़ में इन्साफ़ और बराबरी न रखी हो तो क़यामत के दिन इस हाल में आएगा कि उस का आधा धड़ गिर गया होगा।

वह आधे धड़ के साथ इस लिये आएगा कि जिस बीवी के हुक़ूक़ उस ने अदा नहीं किये वह उसी के जिस्म ही का हिस्सा तो थी, अपने जिस्म के आधे हिस्से को दुनिया में काट कर फेंक आया था फिर क़यामत के दिन उस के पास पूरा जिस्म कहाँ से होगा।

शौहर का हक़

(١٥٦) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْمَرْاَةُ اِذَا صَلَّتْ خَمْسَهَا وَصَامَتْ شَهْرَهَا وَاَحْصَنَتْ فَرْجَهَا وَاَطَاعَتْ بَعْلَهَا فَلْتَدْخُلْ مِنْ اَیِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَ تْ.
(مشکوٰۃ۔انسؓ)

156. क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल-मरअतु इज़ा सल्लत ख़म्सहा व सामत शह्रा मा व अहसनत फरजहा व अताअत बअलहा फल-तदख़ुल मिन अय्यि अबवाबिल जन्नति शाअत। (मिश्कात, अनस रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया औरत जबकि वह पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़े और रमज़ान के रोज़े रखे और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करे और अपने शौहर (पति) की इताअत आज्ञापालन करे तो वह जन्नत के दरवाज़ों में से जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो।

(١٥٧) قِيْلَ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَیُّ النِّسَاءِ خَيْرٌ؟ قَالَ الَّتِیْ تَسُرُّهُ اِذَا نَظَرَ، وَتُطِيْعُهُ اِذَا اَمَرَ، وَلَا تُخَالِفُهُ فِیْ نَفْسِهَا وَلَا مَالِهَا بِمَا يَكْرَهُ. (نسائی۔ابوہریرہؓ)

157. कीला लिरसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा

अय्युन्निसाई खैरुन? कालल्लती तसुर्रुहू इज़ा नज़रा, व तुतीउहू इज़ा अमरा, वला तुख़ालिफुहू फी नफ़्सिहा वला मालिहा बिमा यकरहु। (निसई, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि कौन सी बीवी सब से बेहतर है? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि वह बीवी जो अपने शौहर को खुश करे जबकि वह उस की तरफ़ देखे, उस की इताअत करे, और अपने माल के बारे में कोई ऐसा रवय्या न अपनाये जो शौहर को नापसन्द हो।

अपने माल से मुराद वह माल है जो शौहर ने घर की मालिका की हैसियत से उस के हवाले कर दिया है।

(١٥٨) عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ قَالَ جَاءَ تِ امْرَاَةٌ اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ عِنْدَهُ، فَقَالَتْ زَوْجِيْ صَفْوَانُ بْنُ الْمُعَطِّلِ يَضْرِبُنِيْ اِذَا صَلَّيْتُ، وَيُفَطِّرُنِيْ اِذَا صُمْتُ، وَلَا يُصَلِّي الْفَجْرَ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ، قَالَ وَصَفْوَانُ عِنْدَهُ، قَالَ فَسَاَلَهُ، عَمَّا قَالَتْ فَقَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَمَّا قَوْلُهَا "يَضْرِبُنِيْ اِذَا صَلَّيْتُ" فَاِنَّهَا تَقْرَاُ بِسُوْرَتَيْنِ وَقَدْ نَهَيْتُهَا، قَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَوْ كَانَتْ سُوْرَةٌ وَّاحِدَةٌ لَكَفَتِ النَّاسَ، قَالَ وَاَمَّا قَوْلُهَا "يُفَطِّرُنِيْ اِذَا صُمْتُ" فَاِنَّهَا تَنْطَلِقُ تَصُوْمُ وَاَنَا رَجُلٌ شَابٌّ فَلَا اَصْبِرُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَصُوْمُ امْرَاَةٌ اِلَّا بِاِذْنِ زَوْجِهَا وَاَمَّا قَوْلُهَا "اِنِّيْ لَا اُصَلِّيْ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ" فَاِنَّا اَهْلُ بَيْتٍ قَدْ عُرِفَ لَنَا ذٰلِكَ لَانَكَادُ نَسْتَيْقِظُ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ، قَالَ فَاِذَا اسْتَيْقَظْتَ يَا صَفْوَانُ فَصَلِّ (ابوداؤد)

158. *अन अबी सईदिन काला जाअति इम्रअतुन इला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा व नहनु इन्दहू, फकालत ज़ौजी सफवानुब्नुल मुअत्तलि यज़रिबुनी इज़ा सल्लैतु, व युफत्तिरुनी इज़ा सुम्तु, वला युसल्लिल फज्रा हत्ता ततलुअश्शमसु, काला व सफवानु इन्दहू, काला फसअलहू, अम्मा कालत फकाला या रसूलल्लाहि अम्मा कौलुहा "यज़रिबुनी इज़ा सल्लैतु" फइन्नहा तकरउ बिसूरतैनि वकद नहैतुहा, काला लहू रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लौ कानत सूरतवं वाहिदतल लकफतिन्नासा, काला व अम्मा कौलुहा "युफत्तिरुनी इज़ा सुम्तु" फइन्नहा तनतलिकु तसूमु व अना रजुलुन शाब्बुन फला असबिरु, फकाला*

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला तसूमु इमरअतुन इल्ला बिइज़्नि ज़ौजिहा व अम्मा क़ौलुहा "इन्नी ला उसल्ली हत्ता ततलुअश्शमसु" फइन्ना अह्लु बैतिन क़द उरिफ़ा लना ज़ालिका ल-अनकादु नसतैक़िज़ु हत्ता ततलुअश्शमसु, क़ाला फइज़स्तैक़ज़्ता या सफ़वानु फसल्लि। (अबू दाऊद)

अनुवादः- हज़रत सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) से रिवायत है उन्हों ने फ़रमाया कि हुजुर (सल्ल॰) के पास एक औरत आई और हम आप (सल्ल॰) के पास बैठे हुये थे। उस ने कहा मेरे शौहर सफ़वान बिन मुअत्तिल मुझे मारते हैं जब मैं नमाज़ पढ़ती हूँ और मुझे रोज़ा तोड़ने के लिये कहते हैं जबकि मैं रोज़ा रखती हूँ, और वह फ़जर की नमाज़ नहीं पढ़ते जब तक कि सूरज नहीं निकल आता। अबू सईद (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि सफ़वान (रज़ि॰) वहीं बैठे हुये थे, तो आप (सल्ल॰) ने उन से उन की बीवी की शिकायत के बारे में पूछा तो उन्हों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! नमाज़ पढ़ने पर मारने की शिकायत की हक़ीक़त यह है कि वह दो दो सूरतें पढ़ती है और मैं उसे मना करता हूँ। तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक ही सूरत काफ़ी है। सफ़वान ने फिर कहा कि रोज़ा तोड़ने की शिकायत की हक़ीक़त यह है कि यह रोज़ा रखे चली जाती है और मैं जवान आदमी हूँ सब्र नहीं कर सकता है, तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कोई औरत अपने शौहर की इजाज़त के बग़ैर रोज़ा नहीं रख सकती। उस के बाद उन्हों ने कहा कि सूरज निकलने के बाद नमाज़ पढ़ने की बात यह है कि हम उस ख़ानदान से संबंध रखते हैं जिस के लिये यह बात मशहूर है कि हम नहीं जाग सकते जब तक सूरज न निकल आये, इस पर आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि ऐ सफ़वान! जब तुम जागो तो नमाज़ पढ़ लिया करो।

इस हदीस से यह बातें वाज़ेह होती हैं-

1. शौहरों को यह हक़ नहीं है कि वह अपनी बीवियों को फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ने से रोकें, हाँ औरत के लिये यह ज़रूरी है कि वह शौहर की

ज़रूरतों का ख़याल रखे और दीनदारी के शौक़ में वह लम्बी लम्बी सूरतें न पढ़े। रही नफ़्ल नमाज़ तो उस में शौहर की ज़रूरतों का ख़याल रखना ज़रूरी है बग़ैर उस की इजाज़त के नफ़्ल नमाज़ों में न लगे इसी तरह नफ़्ली रोज़ा भी उस की इजाज़त के बग़ैर न रखे।

2. सफ़वान बिन मुअतिल का हाल यह था कि वह रात को लोगों के खेतों में पानी देते थे, ज़ाहिर है कि जब रात का ज़्यादातर हिस्सा इस तरह की मेहनत मज़दूरी में लग जाये तो आदमी ठीक वक़्त पर फ़जर के लिये नहीं जाग सकता। सफ़वान बिन मुअतिल ऊँचे दर्जे के सहाबी हैं उन के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि वह फ़जर की नमाज़ के बारे में बेपरवाही करते रहे, बल्कि ऐसा इत्तिफ़ाक़ से हो जाता होगा कि रात को देर में सोये और किसी ने जगाया नहीं और फ़जर की नमाज़ क़ज़ा हो गई यही हालत थी जिस की वजह से हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ऐ सफ़वान! जब तुम नींद से उठो तो नमाज़ पढ़ लिया करो। वर्ना अगर आप के नज़दीक वह नमाज़ से बेपरवाही और ग़फ़लत करने वाले होते तो आप उन पर नाराज़ होते।

(١٥٩) عَنْ اَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيْدَ الْاَنْصَارِيَّةِ قَالَتْ، مَرَّبِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنَا فِيْ جَوَارٍ اَتْرَابٍ لِّيْ. فَسَلَّمَ عَلَيْنَا وَقَالَ اِيَّاكُنَّ وَكُفْرَ الْمُنْعِمِيْنَ قَالَ وَلَعَلَّ اِحْدَاكُنَّ تَطُوْلُ اَيْمَتُهَا مِنْ اَبَوَيْهَا، ثُمَّ يَرْزُقُهَا اللّٰهُ زَوْجًا وَّيَرْزُقُهَا مِنْهُ وَلَدًا، فَتَغْضَبُ الْغَضْبَةَ فَتَكْفُرُ فَتَقُوْلُ مَارَأَيْتُ مِنْكَ خَيْرًا قَطُّ. (الادب المفرد)

159. *अन असमाआ बिन्ति यज़ीदल अंसारिय्यति कालत मर्रा बियन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा व अना फी जवारिन अतराबिल ली, फसल्लमा अलैना वक़ाला इय्याकुन्ना व कुफरल मुनईमीना काला व लअल्ला इहदाकुन्ना ततूलु ऐमतुहा मिन अबवैहा, सुम्मा यरज़ुक़ुहल्लाहु ज़ौजवं वयरज़ुक़ुहा मिनहु वलदन, फतग़ज़बुल ग़ज़बता फतकफुरु फतकूलु मा रऐतु मिनका ख़ैरन क़त्तु।*

(अल अदबुल मुफ़रद)

अनुवादः– हज़रत असमा बिन्ते यज़ीद फ़रमाती हैं मैं अपनी कुछ हम उम्र लड़कियों के साथ बैठी थी कि हमारे पास से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुज़रे, तो आप (सल्ल०) ने हमें

सलाम किया और फ़रमाया तुम अच्छा व्यवहार करने वाले शौहरों की नाशुक्री से बचो और फिर फ़रमाया तुम औरतों में से किसी का यह हाल होता है कि अपने माँ बाप के घर लम्बी मुद्दत तक कुंवारी बैठी रहती है फिर अल्लाह तआला उसे शौहर देता है और उसे औलाद होती है, फिर किसी बात पर गुस्सा हो जाती है और शौहरों से यूँ कहती है मुझ को तुझ से कभी आराम न मिला, तूने मेरे साथ कोई एहसान नहीं किया।

इस हदीस में औरतों को नाशुक्री से बचने की तालीम दी गई है, यह बीमारी आमतौर से औरतों में पाई जाती है, इस लिये औरतों को इस से बचने की बहुत कोशिश करनी चाहिये।

(١٦٠) عَنْ ثَوْبَانَ قَالَ لَمَّا نَزَلَتْ، وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ بَعْضِ اَسْفَارِهٖ، فَقَالَ بَعْضُ اَصْحَابِهٖ نَزَلَتْ فِي الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ لَوْ عَلِمْنَا اَيُّ الْمَالِ خَيْرٌ فَنَتَّخِذَهٗ فَقَالَ اَفْضَلُهٗ لِسَانٌ ذَاكِرٌ وَ قَلْبٌ شَاكِرٌ وَزَوْجَةٌ مُؤْمِنَةٌ تُعِيْنُهٗ عَلٰى دِيْنِهٖ. (ترمذی)

160. *अन सौबाना काला लम्मा नज़लत, वल्लज़ीना यकनिज़ूनज़्ज़हबा वल फ़िज़्ज़ता कुन्ना मआ रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फी बअज़ि असफ़ारिही, फकाला बअज़ू असहाबिही नज़लत फ़िज़्ज़हबि वल फ़िज़्ज़ति लौ अलिमना अय्युल मालि ख़ैरुन फनत्तख़िज़हू फकाला अफ्ज़लुहू लिसानुन ज़ाकिरुवं व कल्बुन शाकिरुवं व ज़ौजतुन मूमिनतुन तुईनुहू अला दीनिही।* (तिर्मिज़ी)

अनुवादः— हज़रत सौबान (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफ़र में थे कि आयत "वल्लज़ीना यकनिज़ूनज़्ज़हबा वल-फ़िज़्ज़ता" नाज़िल हुई तो हम में से कुछ ने कहा सोना चाँदी के जमा करने के सिलसिले में तो यह आयत उतरी जिस से मालूम हुआ कि उस को जमा करना पसन्दीदा नहीं है, अगर हमें मालूम हो जाये कि कौन सा माल बेहतर है तो उसे जमा करने की सोचें। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया सब से बेहतर ज़ख़ीरा ख़ुदा को याद करने वाली ज़ुबान और ख़ुदा के शुक्र से भरा हुआ दिल और नेक बीवी है जो

दीन की राह पर चलने में शौहर की मददगार बनती है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि अल्लाह का ज़िक्र ज़ुबान से होना चाहिये और ज़िक्र से मुराद वही ज़िक्र है जो शुक्र के जज़्बे के साथ किया जाये और यह भी मालूम हुआ कि बीवी जो अपने दीनदार शौहर की तंगियों और सख़्तियों में सब्र के साथ रहती है दीन की राह पर चलने में सहारा बनती है, रास्ते का पत्थर नहीं बनती तो हक़ीक़त में ऐसी बीवी अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है।

(١٦١) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُلُّكُمْ رَاعٍ وَّكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ وَالْاَمِيْرُ رَاعٍ وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلٰى اَهْلِ بَيْتِهٖ وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلٰى بَيْتِ زَوْجِهَا وَوَلَدِهٖ فَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَّكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ وَفِيْ رِوَايَةٍ وَالْخَادِمُ رَاعٍ عَلٰى مَالِ سَيِّدِهٖ.

(متفق علیہ۔ ابن عمرؓ)

161. *कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कुल्लुकुम राइन व कुल्लुकुम मसऊलुन अन रईय्यतिही वल अमीरु राईन वर्रजुलु राईन अला अह्लि बैतिही वल मरअतु राईयतुन अला बैति ज़ौजिहा व वलदिही फकुल्लुकुम राईन व कुल्लुकुम मसऊलुन अन रईय्यतिही व फी रिवायतिन वलख़ादिमु राईन अला मालि सय्यिदिही।*

(मुत्तफ़क़ अलैहि, इब्ने उमर)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से हर एक निगराँ व मुहाफ़िज़ है और तुम में से हर एक से पूछा जाएगा उन लोगों के बारे में जो तुम्हारी निगरानी में होंगे, अमीर भी निगराँ है और उस से भी उस की रईय्यत के बारे में पूछा जाएगा और शौहर अपने घर वालों का निगराँ है और औरत अपने शौहर के घर और उस के बच्चों की निगराँ है, और नौकर अपने आक़ा के माल का निगराँ है तो तुम में से हर एक निगराँ है और तुम में से हर एक से उन लोगों के बारे में पूछा जाएगा जो उस की निगरानी में दिये गये हैं।

इस हदीस का यह टुकड़ा यहाँ ख़ासतौर पर ग़ौर करने के क़ाबिल है कि औरत अपने शौहर के घर और उस के लड़कों की निगराँ है। यह हदीस बताती है कि शौहर अपनी बीवी को सिर्फ़ खिलाने पिलाने ही का

ज़िम्मेदार नहीं है उस के दीन व अख़लाक़ की हिफ़ाज़त व निगरानी भी उस के ज़िम्मे है और बीवी की ज़िम्मेदारी दुगनी है वह शौहर के घर और माल की निगराँ तो है ही उस के बच्चों की तर्बियत की ख़ास ज़िम्मेदारी भी उस पर है क्योंकि शौहर तो रोज़ी हासिल करने के लिये ज़्यादातर बाहर रहता है और घर में बच्चे अपनी माओं ही से ज़्यादा हिले मिले होते हैं इस लिये बच्चों की निगरानी और तालीम व तर्बियत की दुहरी ज़िम्मेदारी उन की माँ पर आती है।

औलाद का हक़

(۱۶۲) اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ مَانَحَلَ وَالِدٌ وَلَدَہٗ مِنْ نُحَلٍ اَفْضَلَ مِنْ اَدَبٍ حَسَنٍ۔ (جامع الاصول، مشکوٰۃ۔ سعید بن العاصؓ)

162. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला मा नहला वालिदुन वलदहू मिन नुहलिन अफ्ज़ला मिन अदबिन हसनिन।* (जामिउल उसूल, मिश्कात, सईदन बिन अल-आस)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बाप अपनी औलाद को जो कुछ देता है उस में सब से बेहतर अतिय्या (भेंट) उस की अच्छी तालीम व तर्बियत है।

(۱۶۳) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مُرُوْا اَوْلَادَکُمْ بِالصَّلٰوۃِ وَھُمْ اَبْنَاءُ سَبْعِ سِنِیْنَ وَاضْرِبُوْھُمْ عَلَیْھَا وَھُمْ اَبْنَاءُ عَشْرٍ وَّفَرِّقُوْا بَیْنَھُمْ فِی الْمَضَاجِعِ۔

163. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मुरू औलादकुम बिस्सलाति व हुम अब्नाउ सब्इ सिनीना वज़्रिबूहुम अलैहा वहुम अब्नाउ अश्रिवं व फर्रिकू बैनहुम फिलमज़ाजिई।*

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपनी औलाद को नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो जब कि वह सात साल के हो जाएँ, और नमाज़ के लिये उन को मारो जब वह दस साल की उम्र के हो जाएँ और इस उम्र को पहुंचने के बाद उन के बिस्तर अलग कर दो।

इस हदीस से यह मालूम हुआ कि बच्चे जब सात साल के हो जाएँ तो उन को नमाज़ का तरीक़ा सिखाना और नमाज़ पढ़ने को कहना चाहिये

और जब वह दस साल के हो जाएँ और नमाज़ न पढ़ें तो उन्हें मारा भी जा सकता है। उन पर यह ज़ाहिर कर देना चाहिये कि तुम्हारा नमाज़ न पढ़ना हमारी नाराज़ी का सबब होगा। और इस उम्र को पहुंचने के बाद बच्चों का बिसतर अलग कर देना चाहिये, कई बच्चे एक साथ एक चारपाई पर न लेटें।

(۱۶۴) اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا مَاتَ الْاِنْسَانُ اِنْقَطَعَ عَمَلُهٗ اِلَّا
مِنْ ثَلَاثٍ، صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ اَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهٖ، اَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَّدْعُوْ لَهٗ. (مسلم، ابوہریرہؓ)

164. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला इज़ा मातल इन्सानु इनक़तआ अमलुहू इल्ला मिन सलासिन, सदक़तिन जारियतिन औ इल्मिन युनतफ़उ बिही, औ वलदिन सालिहिन यदऊ लहू।* (मुस्लिम, अबू हुरैरा)

> **अनुवादः**– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब इन्सान मर जाता है तो उस का अमल (कर्म) ख़तम हो जाता है मगर तीन तरह के कर्म ऐसे हैं कि उन का सवाब मरने के बाद भी मिलता रहता है एक यह कि वह सदक़-ए-जारिया कर जाये या ऐसा इल्म छोड़ जाये जिस से लोग फ़ायदा उठाएँ तीसरे नेक लड़का जो उस के लिये दुआ करता रहे।

सदक़-ए-जारिया से मुराद वह सदक़ा है जिस से ज़्यादा दिनों तक फ़ायदा उठाया जा सके, नहर खुदवा दे या कुआँ खुदवा दे या मुसाफ़िरों के लिये सराय बनवा दे या रास्ते पर पेड़ लगवा दे या किसी दीनी मदरसों में किताबें दान कर जाये वग़ैरा तो जब तक उस काम से लोग फ़ायदा उठाएँगे उसे सवाब मिलता रहेगा। इसी तरह वह किसी को तालीम दे या दीनी क़िताबें लिख जाये तो उस का सवाब भी मिलता रहेगा।

तीसरा अमल जिस का सवाब मिलता रहेगा वह उस का अपना लड़का है जिस को उस ने शुरू ही से बेहतरीन तर्बियत दी हो और इस कोशिश के नतीजे मे वह मुत्तक़ी और परहेज़गार बना है तो जब तक यह लड़का दुनिया में ज़िन्दा रहेगा उस की नेकियों का सवाब उस के बाप को मिलता रहेगा, और यह कि वह नेक है इस लिये वह अपने माँ बाप के हक़ में दुआएँ करेगा।

(١٦٥) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اوٰى يَتِيْمًا اِلٰى طَعَامِهٖ وَشَرَابِهٖ اَوْجَبَ اللّٰهُ لَهُ الْجَنَّةَ الْبَتَّةَ اِلَّا اَنْ يَّعْمَلَ ذَنْبًا لَّا يُغْفَرُ، وَمَنْ عَالَ ثَلٰثَ بَنٰتٍ اَوْ مِثْلَهُنَّ مِنَ الْاَخَوَاتِ فَاَدَّبَهُنَّ وَرَحِمَهُنَّ حَتّٰى يُغْنِيَهُنَّ اللّٰهُ اَوْجَبَ اللّٰهُ لَهُ الْجَنَّةَ فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَوِ اثْنَتَيْنِ؟ قَالَ اَوِاثْنَتَيْنِ حَتّٰى لَوْ قَالُوْا اَوْ وَاحِدَةً لَقَالَ وَاحِدَةً وَمَنْ اَذْهَبَ اللّٰهُ كَرِيْمَتَيْهِ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ، قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا كَرِيْمَتَاهُ ؟ قَالَ عَيْنَاهُ.

(مشكوٰة۔ابن عباسؓ)

165. *अनिब्नि अब्बासिन काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन आवा यतीमन इला तआमिही व शराबिही औजबल्लाहु लहुल जन्नतल बत्तता इल्ला अंय्यअमला ज़म्बल ला-युग़फ़रु, व मन आला सलासा बनातिन औ मिसलहुन्ना मिनल अख़वाति फ-अद्दबहुन्ना व रहिमहुन्ना हत्ता युग़नियहुन्नल्लाहु औजबल्लाहु लहुल जन्नता फ़काला रजुलुन या रसूलल्लाहि अविसनतैनि? काला अविसनतैनि हत्ता लौ कालू औ वाहिदतन लक़ाला वाहिदतन व मन अज़्हबल्लाहु करीमतैहि वजबत लहुल जन्नतु, क़ीला या रसूलल्लाहि वमा करीमताहु? काला ऐनाहु।*

(मिश्कात, इब्नि अब्बास)

अनुवादः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने किसी यतीम को अपने साथ मिलाया और अपने खाने पीने में उसे शरीक किया तो वास्तव में अल्लाह ने उस के लिये जन्नत वाजिब कर दी, मगर जबकि वह कोई ऐसा गुनाह करे जो माफ़ी की क़ाबिल न हो, और जिस शख़्स ने तीन लड़कियों या तीन बहनों की देख भाल की और उन्हें शिक्षा व तर्बियत दी और उन के साथ रहम का सुलूक किया यहाँ तक कि अल्लाह उन्हें बेनियाज़ कर दे तो ऐसे शख़्स के लिये अल्लाह ने जन्नत वाजिब कर दी, इस पर एक आदमी ने कहा कि अगर दो ही हों? तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया दो लड़कियों की देख भाल पर भी यही अज्र है। इब्ने अब्बास कहते हैं कि "अगर लोग एक के बारे में पूछते तो आप एक के बारे में भी यही ख़ुशख़बरी देते और जिस शख़्स से अल्लाह ने उस की दो

बेहतर चीज़ें ले लीं तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई। पूछा गया ऐ अल्लाह के रसूल! दो बेहतर चीज़ें क्या हैं? आप ने फ़रमाया उस की दोनों आँखें।

इस हदीस में एक बात यह बयान हुई कि अगर किसी के लड़कियाँ ही लड़कियाँ हों तो उन के साथ बुरा सुलूक न करना चाहिये बल्कि उन की पूरी देख भाल करनी चाहिये उन को दीनी शिक्षा व तर्बियत देनी चाहिये और उन के साथ मेहरबानी और मुहब्बत उस वक़्त तक करना चाहिये जब तक उन की शादी न हो जाये, जो शख़्स ऐसा करेगा हुज़ूर (सल्ल०) उस को जन्नत की ख़ुशख़बरी देते हैं। इसी तरह एक भाई है जिस के छोटी छोटी बहनें हैं तो उसे भी अपनी इन बहनों को वबाले जान न समझना चाहिये बल्कि उन का पूरा ख़र्च बरदाश्त करना चाहिये और उन को शिक्षा व दीनदारी के ज़ेवर से सजाना चाहिये और शादी होने तक मेहरबानी करना चाहिये।

(١٦٦) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ كَانَتْ لَهُ اُنْثٰى فَلَمْ يَئِدْهَا وَلَمْ يُهِنْهَا وَلَمْ يُؤْثِرْ وَلَدَهُ عَلَيْهَا يَعْنِى الذُّكُوْرَ اَدْخَلَهُ اللّٰهُ الْجَنَّةَ.

(ابوداؤد، ابن عباسؓ)

166. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन कानत लहू उनसा फलम यइदहा वलम युहनिहा वलम यूसिर वलदहू अलैहा यानीज़्ज़ुकूरा अदख़लहुल्लाहुल जन्नता।* (अबू दाऊद, इब्ने अब्बास)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स के कोई बच्ची पैदा हुई और उस ने जाहिलियत के तरीक़े पर ज़िन्दा दफ़्न नहीं किया और न उस को कमतर जाना और न लड़कों को उस के मुक़ाबले में तरजीह (महानता) दी, तो अल्लाह ऐसे लोगों को जन्नत में दाख़िल करेगा।

(١٦٧) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ جَاءَتْنِىْ امْرَاَةٌ وَمَعَهَا ابْنَتَانِ لَهَا تَسْأَلُنِىْ، فَلَمْ تَجِدْ عِنْدِىْ غَيْرَ تَمْرَةٍ وَاحِدَةٍ، فَاَعْطَيْتُهَا اِيَّاهَا فَقَسَمَتْهَا بَيْنَ ابْنَتَيْهَا وَلَمْ تَاْكُلْ مِنْهَا، ثُمَّ قَامَتْ فَخَرَجَتْ فَدَخَلَ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَدَّثْتُهُ فَقَالَ مَنِ ابْتُلِىَ مِنْ هٰذِهِ الْبَنَاتِ بِشَىْءٍ فَاَحْسَنَ اِلَيْهِنَّ كُنَّ لَهُ سِتْرًا مِّنَ النَّارِ. (بخاری، مسلم)

167. अन आयशता कालत जाअतनी इमरअतुन व मआहब्नतानि लहा तसाअलुनी, फलम तजिद इन्दी गैरा तमरतिवं वाहिदतिन, फअअतैतुहा इय्याहा फकसमतहा बैनब्नतैहा व लम ताकुल मिनहा, सुम्मा कामत फख़रजत फदख़लन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फहद्दसतुहू फकाला मनिबतुलिया मिन हाज़िहिल बनाति बिशैइन फअहसना इलैहिन्ना कुन्ना लहू सितरम मिनन्नारि।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत आयशा (रज़ि॰) से रिवायत है वह फ़रमाती हैं कि "मेरे पास एक औरत आई उस के साथ दो बच्चियाँ थीं, वह मुझ से कुछ माँगने के लिये आई थी, उस वक़्त मेरे पास सिवाये एक खुजूर के कुछ न था, वही मैं ने उसे दे दी, उस ने उस खुजूर को उन दोनों लड़कियो में बाँट दिया और ख़ुद कुछ न खाया फिर वह उठी और चली गई उस के बाद जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास आये तो मैं ने उस औरत का हाल बयान किया (कि भूकी होने के बावजूद उस ने अपने ऊपर अपनी दो बच्चियों को तरजीह दी) आप ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को उन बच्चियों के ज़रिए आज़माइश में डाला गया फिर उस ने उन बच्चियों के साथ अच्छा व्यवहार किया तो यह बच्चियाँ उस के लिये जहन्नम से पर्दा बन जाएँगी।

यानी जिस शख़्स को अल्लाह सिर्फ़ लड़कियाँ देता है वह भी ख़ुदा का इनआम होती हैं और अल्लाह देखना चाहता है कि माँ बाप उन बच्चियों के साथ क्या सुलूक करते हैं जो न उन्हें कमा कर देने वाली हैं और न ख़िदमत के लिये उन के साथ हमेशा रहने वाली हैं, फिर भी उन के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये तो यह अपने माँ बाप की बख़शिश (छमा) का सबब बनेंगी।

(١٦٨) عَنِ النُّعْمَانِ ابْنِ بَشِيْرٍ اَنَّ اَبَاهُ اَتٰى بِهٖ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ اِنِّی نَحَلْتُ ابْنِیْ هٰذَا غُلَامًا كَانَ لِیْ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَكُلَّ وَلَدِکَ نَحَلْتَهٗ مِثْلَ هٰذَا؟ فَقَالَ لَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَارْجِعْهُ، وَفِیْ رِوَايَةٍ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفَعَلْتَ هٰذَا بِوَلَدِکَ كُلِّهِمْ؟ قَالَ

لَا، قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْدِلُوْا فِي اَوْلَادِكُمْ فَرَجَعَ اَبِيْ فَرَدَّ تِلْكَ الصَّدَقَةَ، وَفِيْ رِوَايَةٍ قَالَ فَلَا تُشْهِدْنِيْ اِذًا، فَاِنِّيْ لَا اَشْهَدُ عَلٰى جَوْرٍ، وَفِيْ رِوَايَةٍ قَالَ اَيَسُرُّكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا اِلَيْكَ فِي الْبِرِّ سَوَاءً؟ قَالَ بَلٰى، قَالَ فَلَا اِذًا. (بخاری، مسلم)

168. *अनिन्नुअमानिब्नि बशीरिन अन्ना अबाहु अता बिही रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा, फ़काला इन्नी नहलतुब्नी हाज़ा ग़ुलामन काना ली फ़काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अ-कुल्ला वलदिका नहलतहू मिस्ला हाज़ा? फ़काला ला, फ़काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़रजिअहु, वफ़ी रिवायतिन फ़काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अ-फ़अलता हाज़ा बिवलदिका कुल्लिहिम? क़ाला ला, क़ालात्तक़ुल्लाहा वअदिलू फ़ी औलादिकुम फ़रजआ अबी फ़रद्दा तिलकस्सदक़ता, व फ़ी रिवायतिन क़ाला फ़ला तुशहिदनी इज़न, फ़इन्नी ला अशहदु अला जौरिन, व फ़ी रिवायतिन क़ाला अ-यसुर्रुका अय्यकूनू इलैका फ़िलबिर्रि सवाअन? क़ाला बला, क़ाला फ़ला इज़न।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– नुअमान बिन बशीर से रिवायत है कि उन्हों ने कहा कि मेरे पिता (बशीर) मुझे लिये हुये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुये और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! एक गुलाम मेरे पास था मैं ने इस लड़के को दे दिया, आप ने पूछा क्या अपने सब लड़कों को दिया है? उन्हों ने कहा नहीं, तब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस गुलाम को तू वापस ले ले, एक दूसरी रिवायत में यह है "क्या तुम ने अपने सब लड़कों के साथ ऐसा ही मुआमला किया है? उन्हों ने कहा नहीं, तो आप ने फ़रमाया अल्लाह से डरो और अपनी औलाद में बराबरी व मसावात का मुआमला करो"। तो मेरे बाप घर आये और उस गुलाम को वापस ले लिया। एक दूसरी रिवायत में यह है "आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तो फिर तू मुझे गवाह न बना, मैं ज़ालिम का गवाह न बनूंगा, एक तीसरी रिवायत में यह है "आप ने फ़रमाया क्या तुम्हें यह बात पसन्द है कि सब लड़के तुम्हारे साथ अच्छा

सुलूक करें? मेरे बाप ने कहा हाँ आप ने फ़रमाया फिर ऐसा मत करो।

इस हदीस से मालूम हुआ कि औलाद के साथ बराबरी का सुलूक करना चाहिये, वर्ना यह जोर व जुल्म होगा, और अगर ऐसा किया गया तो उन के दिल आपस में फटेंगे और जिन बच्चों को नहीं दिया गया है उन के दिल में बाप के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा होगी।

(۱۶۹) عَنْ اُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَلْ اَجْرٌ لِّي فِيْ بَنِيْ اَبِيْ سَلَمَةَ اَنْ اُنْفِقَ عَلَيْهِمْ وَلَسْتُ بِتَارِكَتِهِمْ هٰكَذَا وَ هٰكَذَا؟ اِنَّمَا هُمْ بَنِيَّ فَقَالَ نَعَمْ لَكِ اَجْرُ مَا اَنْفَقْتِ عَلَيْهِمْ. (بخاری،مسلم)

169. *अन उम्मे सल्मता कालत कुल्तु या रसूलल्लाहि हल अजरुल्ली फी बनी अबी सल्मता अन उनफिका अलैहिम व लस्तु बितारिकतिहिम हाकज़ा व हाकज़ा? इन्नमा हुम बनिय्या फकाला नअम लकि अजरु मा अनफ़क़्ति अलैहिम।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) से रिवायत है उन्हों ने कहा कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या मुझे सवाब मिलेगा अबू सलमा की बेटियों पर ख़र्च करने से और मैं उन्हें इस तरह मुहताज और दर-ब-दर मारे फिरने के लिये छोड़ नहीं सकती, वह तो मेरे ही बेटे हैं? आप ने फ़रमाया कि हाँ जो कुछ तुम उन पर ख़र्च करोगी तुम्हें उस का अज्र (बदला) मिलेगा।

उम्मे सल्मा (रज़ि०) के पहले शौहर का नाम अबू सल्मा (रज़ि०) है उन की मृत्यु के बाद यह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आ गई थीं इस लिये अबू सल्मा से जो उन के बच्चे पैदा हुये थे उन के बारे में पूछा।

(۱۷۰) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَا وَامْرَأَةٌ سَفْعَاءُ الْخَدَّيْنِ كَهَاتَيْنِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَاَوْمَايَزِيْدُبْنُ زُرَيْعٍ اِلَى الْوُسْطٰى وَالسَّبَّابَةِ، اِمْرَأَةٌ اٰمَتْ مِنْ زَوْجِهَا ذَاتُ مَنْصِبٍ وَّجَمَالٍ حَبَسَتْ نَفْسَهَا عَلٰى يَتَامَاهَا حَتّٰى بَانُوْا اَوْمَاتُوْا. (ابوداؤد۔عوف بن مالكؓ)

170. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अना*

वमरअतुन सफ़आउल ख़द्दैनि कहातैनि यौमल कियामति व औमा यज़ीदुब्नु ज़ुरैइन इललवस्ता वस्सब्बाबति, इमरअतुन आमत मिन ज़ौजिहाजातु मंसिबिवं व-जमालिन हबसत नफ़्सहा अला यतामाहा हत्ता बानू औ मातू। (अबू दाऊद, औफ़ बिन मालिक)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं और झुलसे हुये चेहरे वाली औरत क़यामत के दिन इन दो उंगलियों की तरह होंगे (यज़ीद बिन ज़रीअ ने यह हदीस बयान करते हुये अपनी बीच की उंगली और कलम-ए-शहादत की उंगली की तरफ़ इशारा किया) यानी वह औरत जिस का शौहर मर गया और वह ख़ानदानी शराफ़त और ज़ाती हुस्न व जमाल रखती है लेकिन उस ने अपने मरने वाले शौहर के बच्चों के लिये अपने आप को निकाह से रोके रखा यहाँ तक कि वह जुदा हो गये या मर गये।

इस हदीस का मतलब यह हुआ कि अगर कोई औरत बेवा हो जाये और उस के छोटे बच्चे हों और लोग उस से शादी करना चाहते भी हों लेकिन वह अपने उन यतीम बच्चों की परवरिश की वजह से शादी नहीं करती और इज़्ज़त व पाकदामनी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारती है तो ऐसी औरत को क़यामत के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़दीकी हासिल होगी।

(١٧١) إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلٰى أَفْضَلِ الصَّدَقَةِ اِبْنَتُكَ مَرْدُوْدَةً إِلَيْكَ لَيْسَ لَهَا كَاسِبٌ غَيْرُكَ. (ابن ماجہ، سراقہؓ بن مالک)

171. *इन्ननन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला अला अदुल्लुकुम अला अफ़्ज़लिस्सदक़ति इब्नतुका मरदूदतन इलैका लैसा लहा कासिबुन ग़ैरुका।* (इब्ने माजा, सुराक़ा बिन मालिक)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें बेहतरीन सदक़ा बताऊँ? वह तेरी बेटी है जो तेरे पास लौटा दी गई है और उस को कोई तेरे सिवा कमा कर खिलाने वाला नहीं है।

यानी ऐसी लड़की जिस की बदसूरती या जिस्मानी कमी की वजह

से शादी नहीं होती या शादी के बाद तलाक़ मिल गई है और तुम्हारे सिवा कोई उस को खिलाने पिलाने वाला नहीं है तो उस पर जो कुछ तुम ख़र्च करोगे वह अल्लाह की निगाह में बेहतरीन सदक़ा (दान) होगा।

यतीम का हक़

(۱۷۲) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَا وَكَافِلُ الْيَتِيْمِ لَهٗ وَلِغَيْرِهٖ فِى الْجَنَّةِ هٰكَذَا، وَاَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ وَالْوُسْطٰى وَفَرَّجَ بَيْنَهُمَا. (بخاری، سہل بن سعدؓ)

172. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अना व काफ़िलुल यतीमि लहू व लिग़ैरिही फ़िलजन्नति हाकज़ा, व अशारा बिस्सब्बाबति वल वुस्ता व फ़र्रजा बैनहुमा।* (बुख़ारी सहल बिन सअद)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं और यतीम की देख भाल करने वाला और दूसरे मुहताजों की देख भाल करने वाला हम दोनों जन्नत में इस तरह होंगे यह कह कर आप ने बीच की उंगली और शहादत की उंगली से इशारा किया और उन दोनों उंगिलों के बीच थोड़ा सा फ़ासला किया।

यानी यतीमों की देख भाल करने वाले जन्नत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब रहेंगे और यह ख़ुशख़बरी सिर्फ़ यतीम ही की देख भाल करने वाले के लिये नहीं है बल्कि हर उस शख़्स के लिये है जो मजबूर और मुहताज लोगों की देख भाल करता है।

(۱۷۳) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرُ بَيْتٍ فِى الْمُسْلِمِيْنَ بَيْتٌ فِيْهِ يَتِيْمٌ يُحْسَنُ اِلَيْهِ، وَشَرُّ بَيْتٍ فِى الْمُسْلِمِيْنَ بَيْتٌ فِيْهِ يَتِيْمٌ يُسَاءُ اِلَيْهِ. (ابن ماجہ، ابوہریرہؓ)

173. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ख़ैरु बैतिन फ़िलमुस्लिमीना बैतुन फ़ीहि यतीमुन युहसनु इलैहि, व शर्रु बैतिन फ़िलमुस्लिमीना बैतुन फ़ीहि यतीमुन युसाउ इलैहि।*

(इब्ने माजा, अबू हुरैरा)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुसलमानों के घरों में सब से बेहतर घर वह है जिस में कोई यतीम हो और उस के साथ अच्छा व्यवहार किया जाता हो,

और मुसलमानों का सब से बुरा घर वह है जिस में कोई यतीम हो और उस के साथ बुरा व्यवहार किया जाता हो।

(۱۷۴) اِنَّ رَجُلًا شَكَا اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَسْوَةَ قَلْبِهٖ قَالَ اِمْسَحْ رَأْسَ الْيَتِيْمِ وَاَطْعِمِ الْمِسْكِيْنَ. (مشکوۃ۔ابوہریرۃؓ)

174. *इन्ना रजुलन शका इलन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा क़स्वता क़ल्बिही काला इम्सह रासल यतीमि व अतईमिल मिस्कीना।* (मिश्कात, अबू हुरैरा रज़ि०)

अनुवादः- एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने दिल की बेरहमी और सख़्ती का ज़िक्र किया, तो आप ने फ़रमाया कि यतीम के सिर पर शफ़क़त का हाथ फेरो और मिस्कीनों को खाना खिला।

इस हदीस से मालूम हुआ कि अगर कोई आदमी अपने दिल की सख़्ती का इलाज करना चाहे तो शफ़क़त व रहमत का काम करना शुरू कर दे। ज़रूरतमंद और बेसहारा लोगों की ज़रूरत पूरी करे, और उन के कामों में उन की मदद करे तो उस के दिल की सख़्ती ख़त्म हो जायेगी और उस के दिल में दया व रहम पैदा होगा।

(۱۷۵) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اُحَرِّجُ حَقَّ الضَّعِيْفَيْنِ الْيَتِيْمِ وَالْمَرْاَةِ. (نسائی۔خویلد بن عمرؓ)

175. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल्लाहुम्मा इन्नी उहर्रिजु हक़्क़ज़्ज़ईफ़ैनिल यतीमि वल-मरअति।*

(निसाई, ख़ुवैलिद बिन उमर)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ मेरे अल्लाह! मैं दो कमज़ोर क़िस्म के लोगों के हक़ को मुहतरम (श्रेधयय) क़रार देता हूँ यानी यतीम और बीवी के हक़ को।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने का यह अन्दाज़ बड़ा ही प्रभावित है जिस के ज़रिए आप (सल्ल०) ने लोगों को यह हिदायत दी कि यतीमों और बीवियों के हुक़ूक़ का एहतराम करो। इस्लाम से पहले अरब दुनिया में यह दोनों सब से ज़्यादा मज़लूम थे। यतीमों के साथ

आमतौर पर बुरा सुलूक किया जाता और उन की हक़मारी की जाती। इसी तरह औरत का भी कोई मक़ाम न था।

(١٧٦) إِنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ إِنِّي فَقِيْرٌ لَيْسَ لِي شَيْءٌ وَلِي يَتِيْمٌ، فَقَالَ كُلْ مِنْ مَالِ يَتِيْمِكَ غَيْرَ مُسْرِفٍ وَلَا مُبَادِرٍ وَلَا مُتَأَثِّلٍ. (ابوداؤد)

176. इन्ना रजुलन अतन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़क़ाला इन्नी फ़क़ीरुन लैसा ली शैउवं वली यतीमुन, फ़क़ाला कुल मिम्मालि यतीमुका ग़ैरा मुस्रिफ़िवं वला मुबादिरिवं वला मुतअसिल्लिन।

(अबू दाऊद)

अनुवादः- एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और उस ने कहा मै मुहताज हूँ मेरे पास कुछ नहीं है और मेरी निगरानी में एक यतीम है (जिस के पास जायदाद है) तो क्या मैं उस के माल में से खा सकता हूँ) आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हाँ तुम अपने यतीम के माल में से खा सकते हो, इस शर्त पर कि फ़ुज़ूलख़र्ची न करो, और जल्दबाज़ी से काम न लो, और न अपनी जायदाद बनाने की फ़िक्र करो।

यानी अगर किसी यतीम की देख भाल करने वाला मालदार है तो उस को क़ुरआन की हिदायत के मुताबिक़ कुछ न लेना चाहिये लेकिन अगर वह ग़रीब है और यतीम के पास जायदाद है तो यह उस के माल की हिफ़ाज़त करेगा उस को बढ़ाने की कोशिश करेगा और उस में से अपना ख़र्च लेगा लेकिन उस के लिये जाइज़ नहीं कि उस के माल को उस के जवान होने से पहले जल्दी जल्दी हज़्म कर जाये, और वह यतीम के माल से अपनी जायदाद नहीं बना सकता। खुदा से न डरने वाले बेईमान लोग यतीमों के माल को होशियारी के साथ अपनी जायदाद बना लेते हैं या उस के बड़े होने से पहले उस की पूरी जायदाद को खा पी कर उड़ा देते हैं।

सूरह निसा में अल्लाह तआला ने यतीमों के माल के सिलसिले में यही हिदायत दी है जो इस हदीस में बयान हुई है। फ़रमाया-

وَلَا تَأْكُلُوْهَا إِسْرَافًا وَّبِدَارًا أَنْ يَّكْبَرُوْا وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ.

वला ताकुलूहा इसराफवं वबिदारन अय्यंकबरू व मन काना ग़निय्यन फलयस्तअफिफ व मन काना फकीरन फलयाकुल बिलमअरूफि।

अनुवादः– और यतीमों के माल न खाओ फ़ुज़ूलख़र्ची के साथ, और जल्दी करते हुये उन के बड़े होने के डर से, और जो मालदार हो तो उस को चाहिये कि यतीम का माल खाने से बहुत बचे और जो ग़रीब हो तो उस को यतीम के माल में से दस्तूर के मुताबिक़ खाना चाहिये।

(١٧٧) عَنْ جَابِرٍ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مِمَّا اَضْرِبُ يَتِيْمِىْ؟ قَالَ مِمَّا كُنْتَ ضَارِبًا مِنْهُ وَلَدَكَ غَيْرَ وَاقٍ مَالَكَ بِمَالِهِ وَلَا مُتَأَثِّلًا مِنْ مَالِهِ مَالًا.

(معجم طبرانی)

177. *अन जाबिरिन काला कुल्तु या रसूलल्लाहि मिम्मा अज़्रिबु यतीमी? काला मिम्मा कुन्ता ज़ारिबम्मिनहु वलदका ग़ैरा वाक़िन मालका बिमालिही वला मुतअस्सिलम मिम्मालिही मालन।*

(मुअजम तिबरानी)

अनुवादः– हज़रत जाबिर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, किन वजहों से मैं उस यतीम को मार सकता हूँ जो मेरी देख भाल में है? आप ने फ़रमाया जिन वजहों से तुम अपनी हक़ीक़ी औलाद को मार सकते हो ख़बरदार! अपने माल को बचाने के लिये उस का माल बरबाद न करना और न उस के माल से अपनी जायदाद बनाना।

अपनी औलाद को तालीम व तर्बियत के सिलसिले में मारा जा सकता है इसी तरह यतीम को भी दीन और तहज़ीब व तमीज़ सिखाने के सिलसिले में मारा जा सकता है, बिलावजह बात बात पर बच्चों की पिटाई करना, हुज़ूर के तरीक़ा के ख़िलाफ़ है और यतीम को मारना तो बहुत बड़ा गुनाह है।

मेहमान का हक़

(١٧٨) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهٗ. (بخاری، مسلم۔ابوہریرۃؓ)

178. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन काना यूमिनु बिल्लाहि वल यौमिल आख़िरि फल युक्रिम ज़ैफ़हू।*

(बुख़ारी, मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं उन्हें चाहिये कि वह अपने मेहमानों की आव भगत करें।

(١٧٩) اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهٗ جَائِزَتُهٗ يَوْمٌ وَّلَيْلَةٌ وَّالضِّيَافَةُ ثَلٰثَةُ اَيَّامٍ فَمَا بَعْدَ ذٰلِكَ فَهُوَ لَهٗ صَدَقَةٌ وَّلَا
يَحِلُّ لَهٗ اَنْ يَّثْوِيَ عِنْدَهٗ حَتّٰى يُحْرِجَهٗ. (بخاری، مسلم۔خویلد بن عمرؓ)

179. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला मन काना यूमिनु बिल्लाहि वल यौमिल आख़िरि फलयुक्रिम ज़ैफ़हू जाईज़तुहू यौमुवं वलैलतुवं वज़्ज़ियाफ़तु सलासतु अय्यामिन फ़मा बअदा ज़ालिका फहुवा लहू सदक़तुवं वला यहिल्लु लहू अय्यसविया इन्दहू हत्ता युहरिजहू।* (बुख़ारी, मुस्लिम, ख़ुवैलिद बिन अमर रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं तो उन्हें चाहिये कि अपने मेहमान की आव भगत करें। पहला दिन इनआम का दिन है जिस में मेहमान को अच्छे से अच्छा खाना खिलाना चाहिये और मेहमानी तीन दिन तक है (यानी दूसरे और तीसरे दिन उस की मेहमानी में तकल्लुफ़ करना अख़्लाक़ी तौर पर ज़रूरी नहीं) उस के बाद जो कुछ भी वह करेगा उस के लिये सदक़ा होगा। और मेहमान के लिये जाइज़ नहीं है कि अपने मेज़बान के साथ ठहरा रहे यहाँ तक कि उस को तंगी और परेशानी में डाल दे।

इस हदीस में मेज़बान और मेहमान दोनों को हिदायत दी गई है।

मेज़बान को इस बात की कि वह अपने मेहमान की आव भगत करे। आव भगत का मतलब सिर्फ़ खिला पिला देना नहीं है बल्कि हंस कर बोलना, ख़ुशी ख़ुशी पेश आना, सभी कुछ मुराद है और मेहमान को यह हिदायत दी गई कि जब किसी के यहाँ मेहमान बन कर जाये तो वहीं धरना मार कर बैठ न जाये कि उस से मेज़बान परेशान हो जाये। "मुस्लिम" की एक रिवायत इस हदीस की अच्छी तरह व्याख्या करती है जिस में आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं है कि वह अपने भाई के पास ठहरे यहाँ तक कि उसे परेशानी में डाल दे लोगों ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! वह किस तरह उस को परेशानी में डाल देगा? तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया इस तरह कि यह वहीं उस के पास ठहरा रहे और उस के पास मेज़बानी के लिये कुछ न हो।

पड़ोसी का हक़

(١٨٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَايُؤْمِنُ وَاللّٰهِ لَا يُؤْمِنُ، وَاللّٰهِ لَا يُؤْمِنُ. قِيْلَ مَنْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ الَّذِىْ لَايُؤْمَنُ جَارُهٗ بَوَائِقَهٗ. (بخاری، مسلم۔ ابوہریرۃؓ)

180. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला यूमिनु वल्लाहि ला यूमिनु, वल्लाहि ला यूमिनु, कीला मन या रसूलल्लाह! काला अल्लज़ी ला यूमिनु जारुहू बवाकिहू।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम वह ईमान नहीं रखता, पूछा गया ऐ अल्लाह के रसूल! कौन ईमान नहीं रखता? फ़रमाया कि वह शख़्स जिस का पड़ोसी उस की तकलीफ़ों से महफ़ूज़ न रहे।

(١٨١) قَالَ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَازَالَ جِبْرِيْلُ يُوْصِيْنِىْ بِالْجَارِ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ سَيُوَرِّثُهٗ. (متفق علیہ۔ عائشہؓ)

181. *कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा ज़ाला जिबरीलु यूसीनी बिलजारि हत्ता ज़नन्तु अन्नहू सयुवर्रिसुहू*

(मुत्तफ़क़ अलैह, आयशा रज़ि॰)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि

जिबरील मुझ को पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करने की बराबर वसिय्यत करते रहे यहाँ तक कि मैं ने ख़याल किया कि पड़ोसी को पड़ोसी का वारिस बना देंगे।

(۱۸۲) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ لَيْسَ الْمُؤْمِنُ بِالَّذِىْ يَشْبَعُ وَجَارُهٗ جَائِعٌ اِلٰى جَنْبِهٖ. (مشکوٰۃ)

182. *अन इब्ने अब्बासिन काला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यकूलु लैसल मुमिनु बिल्लज़ी यशबउ व जारुहु जाइउन इला जंबिही।* (मिश्कात)

अनुवादः- इब्ने अब्बास (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना कि मोमिन ऐसा नहीं होता है कि खुद तो पेट भर कर खाये और उस का पड़ोसी जो उस के पहलू में रहता है भूका रहे।

(۱۸۳) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا اَبَا ذَرٍّ اِذَا طَبَخْتَ مَرَقَةً فَاَكْثِرْ مَاءَهَا وَتَعَاهَدْ جِيْرَانَكَ. (مسلم)

183. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा या अबा ज़र्रिन इज़ा तबख़्ता मरकतन फ़-अकसिर माअहा व तआहद जीरानका।* (मुस्लिम)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू ज़र से फ़रमाया, ऐ अबूज़र जब तू शोरबा पकाये तो कुछ पानी ज़्यादा कर दे और अपने पड़ोसियों की ख़बरगीरी कर।

(۱۸۴) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا نِسَاءَ الْمُسْلِمَاتِ لَا تَحْقِرَنَّ جَارَةٌ لِجَارَتِهَا وَلَوْ فِرْسِنَ شَاةٍ. (بخاری، مسلم۔ ابوہریرہؓ)

184. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा या निसाअल मुस्लिमाति ला तहक़िरन्ना जारतुन लिजारतिहा व लौ फ़रसिना शातिन।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ मुसलमान औरतो! कोई पड़ोसन अपनी पड़ोसन को तोहफ़ा देने को हक़ीर न समझे अगरचे वह एक बकरी का खुर ही क्यों न हो।

औरतों का ज़ेहन यह होता है कि कोई मामूली चीज़ अपनी पड़ोसन के घर भेजना पसन्द नहीं करतीं, उन की ख़्वाहिश यह होती है कि उन के यहाँ कोई अच्छी चीज़ भेजें। इसी लिये आप ने औरतों को हिदायत फ़रमाई कि छोटा से छोटा तोहफ़ा भी अपने पड़ोसियों के यहाँ भेजो, और जिन औरतों के पास पड़ोस से हदिया आये और वह मामूली हो तो भी उन्हें मुहब्बत से ले लेना चाहिये, उस को न तो कमतर समझें और न उस में किसी तरह की कोई कमी निकालें।

(١٨٥) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ إِنَّ لِيْ جَارَيْنِ فَإِلٰى أَيِّهِمَا أُهْدِيْ؟ قَالَ إِلٰى أَقْرَبِهِمَا مِنْكِ بَابًا. (بخاری)

185. *अन आयशता कालत कुल्तु या रसूलल्लाहि इन्ना ली जारैनि फइला अय्यिहिमा उहदी? काला इला अक़रबिहिमा मिनकि बाबन।* (बुख़ारी)

अनुवादः- हज़रत आयशा (रज़ि॰) कहती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि मेरे दो पड़ोसी हैं तो उन में से किस के यहाँ हदिया भेजूं? आप ने फ़रमाया उस पड़ोसी के यहाँ जिस का दरवाज़ा तेरे दरवाज़े से ज़्यादा क़रीब हो।

पड़ोस का दायरा आस पास के चालीस घरों तक है और उन में से सब से ज़्यादा हक़दार वह है जिस का घर सब से क़रीब हो।

(١٨٦) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُحِبَّهُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ فَلْيَصْدُقْ حَدِيْثَهُ إِذَا حَدَّثَ، وَلْيُؤَدِّ أَمَانَتَهُ إِذَا اؤْتُمِنَ وَلْيُحْسِنْ جِوَارَ مَنْ جَاوَرَهُ.

(مشکوٰۃ۔ عبدالرحمٰن بن ابی قرادؓ)

186. *कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन सर्रहू अय्युहिब्बुहुल्लाहु व रसूलुहू फलयसदुक हदीसहू इज़ा हद्दसा, वल युअद्दि अमानतहू इज़अतुमिना वल युहसिन जिवारा मन जावरहू।*

(मिश्कात, अब्दुर्रहमान बिन अबी क़िराद रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को यह पसन्द हो कि अल्लाह और रसूल उस से

मुहब्बत करें तो उस को चाहिये कि जब वह बात चीत करे तो सच बोले, और उस के पास जब अमानत रखी जाये तो अपने पास रखी गई अमानत को मालिक के पास सुरक्षित लौटाये और अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करे।

(١٨٧) قَالَ رَجُلٌ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ إِنَّ فُلَانَةَ تُذْكَرُ مِنْ كَثْرَةِ صَلَاتِهَا وَصِيَامِهَا وَصَدَقَتِهَا غَيْرَ أَنَّهَا تُؤْذِىْ جِيْرَانَهَا بِلِسَانِهَا قَالَ هِىَ فِى النَّارِ، قَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ فَإِنَّ فُلَانَةَ تُذْكَرُ قِلَّةُ صِيَامِهَا وَصَدَقَتِهَا وَصَلَاتِهَا وَأَنَّهَا تَصَدَّقُ بِالْأَثْوَارِ مِنَ الْإِقِطِ وَلَا تُؤْذِىْ بِلِسَانِهَا جِيْرَانَهَا، قَالَ هِىَ فِى الْجَنَّةِ. (مشکوٰۃ۔ابوہریرہؓ)

187. *काला रजुलुन या रसूलल्लाहि इन्ना फुलानता तुज़्करु मिन कसरति सलातिहा व सियामिहा व सदक़तिहा ग़ैरा अन्नहा तूज़ी जीरानहा बिलिसानिहा काला हिया फ़िन्नारि, काला या रसूलल्लाहि फइन्ना फुलानता तुज़्करु क़िल्लतु सियामिहा व सदक़तिहा व सलातिहा व अन्नहा तसद्दकु बिल असवारि मिनल इक़िति वला तूज़ी बिलिसानिहा जीरानहा, क़ाला हिया फ़िल-जन्नति।* (मिश्कात, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि फुलाँ औरत बहुत ज़्यादा नफ़्ल नमाज़ें पढ़ती, नफ़्ल रोज़े रखती और दान करती है, और उस लिहाज़ से वह मशहूर है लेकिन अपने पड़ोसियों को अपनी ज़ुबान से तकलीफ़ पहुंचाती है, आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि वह जहन्नम में जाएगी इस आदमी ने फिर कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! फुलाँ औरत के बारे में बयान किया जाता है कि वह कम नफ़्ल रोज़े रखती है और बहुत कम नफ़्ल नमाज़ पढ़ती है और पनीर के कुछ टुकड़े सदक़ा करती है लेकिन अपनी ज़ुबान से पड़ोसियों को तकलीफ़ नहीं पहुंचाती, आप ने फ़रमाया कि वह जन्नत में जाएगी।

पहली औरत जहन्नम में इस लिये जाएगी कि उस ने बन्दों के हक़ मारे हैं पड़ोसी का हक़ यह है कि उसे तकलीफ़ न दी जाये और उस ने यह हक़ अदा न किया, और दुनिया में उस ने अपने पड़ोसी से माफ़ी भी नहीं मांगी इस लिये उसे जहन्नम ही में जाना चाहिये।

(١٨٨) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَوَّلُ خَصْمَيْنِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ جَارَانِ.
(مشکوۃ۔عقبہ بن عامرؓ)

188. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अव्वलु ख़समैनि यौमल क़यामति जारानि।* (मिश्कात, उक़्बा बिन आमिर)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिन दो आदमियों का मुक़द्दमा क़यामत के दिन सब से पहले पेश किया जाएगा वह दो पड़ोसी होंगे।

यानी क़यामत में बन्दों के हुकूक़ के सिलसिले में सब से पहले ख़ुदा के सामने दो शख़्स पेश होंगे जो दुनिया में एक दूसरे के पड़ोसी रहे और एक ने दूसरे के सताया और ज़ुल्म किया। इन दोनों का मुक़द्दमा सब से पहले पेश होगा।

फ़ुक़रा और मसाकीन का हक़

(١٨٩) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ يَقُوْلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَا ابْنَ اٰدَمَ اِسْتَطْعَمْتُكَ فَلَمْ تُطْعِمْنِيْ قَالَ يَا رَبِّ كَيْفَ اُطْعِمُكَ وَاَنْتَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ؟ قَالَ اَمَا عَلِمْتَ اَنَّهٗ اسْتَطْعَمَكَ عَبْدِيْ فُلَانٌ فَلَمْ تُطْعِمْهُ؟ اَمَا عَلِمْتَ اِنَّكَ لَوْ اَطْعَمْتَهٗ لَوَجَدْتَّ ذٰلِكَ عِنْدِيْ يَا ابْنَ اٰدَمَ اِسْتَسْقَيْتُكَ فَلَمْ تَسْقِنِيْ، قَالَ يَا رَبِّ كَيْفَ اَسْقِيْكَ وَاَنْتَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ؟ قَالَ اسْتَسْقَاكَ عَبْدِيْ فُلَانٌ فَلَمْ تَسْقِهٖ اَمَا اِنَّكَ لَوْسَقَيْتَهٗ لَوَجَدْتَّ ذٰلِكَ عِنْدِيْ.
(مسلم۔ابوہریرہؓ)

189. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नल्लाहा अज़्ज़ा व जल्ला यक़ूलु यौमल क़ियामति यब्ना आदमा इस्ततअमतुका फलम तुतइम्नी काला या रब्बि कैफ़ा उतईमुका व अन्ता रब्बुलआलमीना? काला अमा अलिम्ता अन्नहुस्ततअमका अब्दी फुलानुन फलम तुतइमहू? अमा अलिम्ता इन्नका लौ अतअम्तहू ल-वजत्ता ज़ालिका इन्दी यब्ना आदमा इस्तसक़ैतुका फलम तुसक़िनी, काला या रब्बि कैफ़ा असक़ीका व अन्ता रब्बुल आलमीना? कालस्तस्क़ाका अब्दी फुलानुन फलम तसक़िही अमा इन्नका लौ सक़ैतहू ल-वजत्ता ज़ालिका इन्दी।*

(मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह अज़्ज़ा वजल्ल क़यामत के दिन कहेगा, ऐ आदम के बेटे! मैं ने तुझ से खाना माँगा था लेकिन तूने नहीं खिलाया तो वह कहेगा कि ऐ मेरे रब! मैं तुझे क्योंकर खिलाता जबकि तू सब लोगों की परवरिश करने वाला है? अल्लाह कहेगा कि क्या तुझे ख़बर नहीं कि तुझ से मेरे फलाँ बन्दे ने खाना मांगा था लेकिन तूने उसे नहीं खिलाया? क्या तुझे ख़बर नहीं कि क्या तुझे ख़बर नहीं कि अगर तू उस को खिलाता तो अपने खिलाये हुये खाने को मेरे यहाँ पाता? ऐ आदम के बेटे! मैं ने तुझ से पानी मांगा था लेकिन तूने मुझे नहीं पिलाया तो वह कहेगा ऐ मेरे रब! मैं तुझे कैसे पिलाता जबकि तू खुद संसार का रब है? अल्लाह तआला कहेगा कि मेरे फुलाँ बन्दे ने तुझ से पानी मांगा था लेकिन तूने उसे पानी नहीं पिलाया अगर तू उस को पानी पिला देता तो वह पानी मेरे यहाँ पाता।

इस हदीस से मालूम हुआ कि भूके को खाना खिलाना और प्यासे को पानी पिलाना बड़ा अज्र व सवाब का काम है और इस से खुदा की नज़दीकी हासिल होती है।

(١٩٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفْضَلُ الصَّدَقَةِ اَنْ تُشْبِعَ كَبِدًا جَائِعًا.

(مشکوٰۃ۔انسؓ)

190. *क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अफ़ज़लुस्सदक़ति अन तुश्बिआ कबिदन जाईअन।* (मिश्क़ात, अनस रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बेहतर दान यह है कि तू किसी भूके को पेट भर खिलाये।

(١٩١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رُدُّوْا السَّائِلَ وَلَوْ بِظِلْفٍ مُّحْرَقٍ.

(مشکوٰۃ)

191. *क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा रुद्दुस्साईला वलौ बिज़िल्फ़िम मुहरक़िन।* (मिश्क़ात)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

कि मांगने वाले को कुछ देकर वापस करो, अगरचे जली हुई खुर ही क्यों न हो।

मतलब यह है कि ग़रीब मुहताज अगर तुम्हारे दरवाज़े पर आये तो उसे ख़ाली हाथ न लौटाओ, कुछ न कुछ उसे दे दो, अगरचे वह बहुत ही मामूली चीज़ हो।

(١٩٢) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ الْمِسْكِيْنُ الَّذِىْ يَطُوْفُ عَلَى النَّاسِ تَرُدُّهُ اللُّقْمَةُ وَاللُّقْمَتَانِ وَالتَّمْرَةُ وَالتَّمْرَتَانِ وَلٰكِنِ الْمِسْكِيْنُ الَّذِىْ لَا يَجِدُ غِنًى يُّغْنِيْهِ وَلَا يُفْطَنُ لَهٗ فَيُتَصَدَّقُ عَلَيْهِ وَلَا يَقُوْمُ فَيَسْأَلُ النَّاسَ. (بخاری۔مسلم)

192. *क़ालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लैसल-मिस्कीनुल्लज़ी यतूफ़ु अलन्नासि तरुद्दुहुल्लुक़मतु वल्लुक़मतानि वत्तमरतु वत्तमरतानि वलाकिनिल मिस्कीनुल्लज़ी ला यजिदु ग़िनय्युग़नीहि वला युफ़तनु लहू फ़युतसद्दक़ा अलैहि वला यक़ूमु फ़यसअलन्नासा।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मिस्कीन वह नहीं है जो लोगों के दरवाज़े का चक्कर लगाता है और एक लुक़मा दो लुक़मे और एक खुजूर दो खुजूर लेकर लौटता है बल्कि मिस्कीन वह है कि जो इतना माल नहीं रखता कि अपनी ज़रूरत पूरी करे और उस की ग़रीबी को लोग समझ नहीं पाते कि उसे दान दें और न ही वह लोगों के सामने खड़ा होकर हाथ फैलाता है।

इस हदीस के ज़रिए उम्मत को यह हिदायत दी गई है कि तुम को सब से ज़्यादा तलाश ऐसे ग़रीबों की होनी चाहिये जो ग़रीब तो हैं लेकिन वह शर्म व शराफ़त की वजह से अपना हाल लोगों पर ज़ाहिर नहीं होने देते और मिस्कीनों की तरह चेहरा बनाये नहीं फिरते और न ही वह दूसरों के सामने हाथ फैलाते हैं ऐसे लोगों को ढूंढ ढूंढ कर देना बहुत बड़ी नेकी है।

(١٩٣) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلسَّاعِيْ عَلَى الْاَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِيْنِ كَالْمُجَاهِدِ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاَحْسَبُهٗ قَالَ وَكَالْقَائِمِ الَّذِىْ لَا يَفْتُرُ وَكَالصَّائِمِ الَّذِىْ لَا يُفْطِرُ. (بخاری، مسلم۔ ابوہریرہؓ)

193. *क़ालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अस्साई अललअरमलति वल मिस्कीनि कलमुजाहिदि फ़ी सबीलिल्लाहि व अहसबुहू क़ाला व कलक़ाईमिल्लज़ी ला यफ़तुरु व कस्साईमिल्लज़ी ला युफ़तिरु।* (बुख़ारी, मुस्लिम अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेवाओं (विधवाओं) और मिस्कीनों के लिये दौड़ धूप करने वाला उस शख़्स की तरह है जो ख़ुदा की राह में जंग करता है, और उस शख़्स की तरह है जो रात भर ख़ुदा के सामने खड़ा रहता है थकता नहीं, और उस रोज़ादार की तरह है जो दिन को खाता नहीं बराबर रोज़े रखता है।

ख़ादिमों के हुकूक़

(١٩٤) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْمَمْلُوْكِ طَعَامُهٗ وَكِسْوَتُهٗ وَلَا يُكَلَّفُ مِنَ الْعَمَلِ اِلَّا مَا يُطِيْقُ. (مسلم۔ ابوہریرہؓ)

194. *क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लिलममलूकि तआमुहू व किस्वतुहू वला युकल्लफ़ु मिनलअमलि इल्ला मा युतीक़ु।* (मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया गुलाम का हक़ यह है कि उसे खाना और कपड़ा दे दिया जाये और उस पर काम का सिर्फ़ इतना ही बोझ डाला जाये जिस को वह सह सकता हो।

असल हदीस में ममलूक का लफ़्ज़ आया है जिस से मुराद गुलाम और बाँदी है जो इस्लाम से पहले अरब सोसाईटी में पाये जाते थे, लोग उन गुलामों और बाँदियों के साथ हैवानों से भी बुरा व्यवहार करते थे, उन्हें न तो ठीक से खाना देते और न ठीक से कपड़े पहनाते, और इतना काम लेते कि उन के लिये करना मुश्किल हो जाता, जब इस्लाम आया तो उस वक़्त यह तबक़ा (वर्ग) मौजूद था, आप (सल्ल॰) ने मुसलमान सोसाईटी को यह हिदायत की कि उन के साथ इन्सानों की तरह व्यवहार करो, उन को वही कुछ खिलाओ जो तुम खाते हो, और वह कपड़े पहनाओ जो तुम पहनते हो, और उन से सिर्फ़ उतना ही काम लो जितना

उन के बस में हो।

ऐसा ही मुआमला उस नौकर के साथ होना चाहिये जिस का रात और दिन आप के पास गुज़रता है। ख़ादिमों के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिये इस को जानने के लिये अबू क़लाबा (रज़ि०) की यह रिवायत पढ़िये। अबू क़लाबा (रज़ि०) कहते हैं हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि०) के पास गवरनरी के ज़माने में एक आदमी गया, उस ने देखा कि आप अपने हाथ से आटा गूंध रहे हैं, पूछा यह क्या? हज़रत सलमान (रज़ि०) ने कहा हम ने अपने ख़ादिम को एक काम से बाहर भेज दिया है और हमें यह नापसन्द है कि उस के ऊपर दोनों कामों का बोझ डाल दें।

(١٩٥) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِخْوَانُكُمْ جَعَلَهُمُ اللّٰهُ تَحْتَ اَيْدِيْكُمْ، فَمَنْ جَعَلَ اللّٰهُ اَخَاهُ تَحْتَ يَدَيْهِ فَلْيُطْعِمْهُ مِمَّا يَاْكُلُ، وَلْيَلْبِسْهُ مِمَّا يَلْبَسُ، وَلَا يُكَلِّفْهُ مِنَ الْعَمَلِ مَا يَغْلِبُهُ، فَاِنْ كَلَّفَهُ مَا يَغْلِبُهُ فَلْيُعِنْهُ عَلَيْهِ. (بخاری، مسلم۔ ابوہریرہؓ)

195. *क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इख़वानुकुम जअलहुमुल्लाहु तहता ऐदीकुम, फ़मन जअलल्लाहु अख़ाहु तहता यदैहि फ़लयुतईमुहू मिम्मा याकुलु, वल युलबिसहू मिम्मा यलबसु, वला युकल्लिफ़हु मिनल अमलि मा यग़लिबुहू, फ़इन कल्लफ़हू मा यग़लिबुहू फ़लयुईनहु अलैहि।*

(बुख़ारी, मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि०)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया लौंडी और गुलाम तुम्हारे भाई हैं उन्हें अल्लाह ने तुम्हारे क़ब्ज़े में दे रखा है तो जिस भाई को अल्लाह ने तुम में से किसी के क़ब्ज़ा में दे रखा है तो उस को चाहिये कि उसे वही खिलाये जो खुद खाता है और उसे वह कपड़ा पहनाये जो वह खुद पहनता है और उस पर काम का इतना बोझ न डाले जो उस की ताक़त से बाहर हो, और अगर उस पर किसी ऐसे काम का बोझ डाले तो उस की ताक़त से बाहर हो और वह उसे न कर पा रहा हो तो उस काम में उस की मदद करे।

(١٩٦) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَنَعَ لِاَحَدِكُمْ خَادِمُهُ طَعَامَهُ ثُمَّ جَاءَهُ بِهٖ وَقَدْ وَلِىَ حَرَّهُ وَدُخَانَهُ فَلْيُقْعِدْهُ مَعَهُ فَلْيَاْكُلْ، فَإِنْ كَانَ الطَّعَامُ مَشْفُوْهًا قَلِيْلًا فَلْيَضَعْ فِىْ يَدِهٖ مِنْهُ اُكْلَةً اَوْ اُكْلَتَيْنِ. (مسلم۔ابوہریرۃؓ)

196. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा सनआ लिअहदिकुम ख़ादिमुहू तआमहू सुम्मा जाअहू बिही वक़द वलिया हर्रहू व दुख़ानहू फलयुक़इदहु मअहू फलयाकुल, फ़इन कानत तआमु मशफूहन क़लीलन फलयज़अ फी यदिही मिनहु उकलतन औ उकलतैनि।* (मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम में से किसी का ख़ादिम खाना पकाये फिर उसे उस के पास लाये और हाल यह है कि उस ने खाना पकाने में गर्मी और धुएँ की मुसीबत बरदाश्त की है, तो मालिक को चाहिये कि उसे साथ बिठा कर खिलाये और अगर खाना थोड़ा हो तो एक लुक़मा या दो लुक़मा उस में से उस के हाथ में रख दे।

(١٩٧) عَنْ اَبِىْ بَكْرِ الصِّدِّيْقِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ سَيِّءُ الْمَلَكَةِ، قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلَيْسَ اَخْبَرْتَنَا اَنَّ هٰذِهِ الْاُمَّةَ اَكْثَرُ الْاُمَمِ مَمْلُوْكِيْنَ وَيَتَامٰى؟ قَالَ نَعَمْ فَاَكْرِمُوْهُمْ كَكَرَامَةِ اَوْلَادِكُمْ وَاَطْعِمُوْهُمْ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ. (ابن ماجہ)

197. *अन अबी बकरिनिस्सिद्दीकि रज़िअल्लाहु अनहु काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला यदख़ुलुल जन्नता सय्यिउल मलकति, कालू या रसूलल्लाहि अ-लैसा अख़बरतना अन्ना हाज़िहिल उम्मता अकसरुल उममि ममलूकीना व यतामा? काला नअम फअकरिमूहुम क-करामति औलादिकुम व अतईमूहुम मिम्मा ताकुलूना।* (इब्ने माजा)

अनुवादः- हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) से रिवायत है वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपने गुलामों और ख़ादिमों पर अपने इख़्तियार को ग़लत इस्तेमाल करने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा। लोगों ने पूछा

कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आप ने हम को नहीं बताया कि उस उम्मत में दूसरी उम्मतों के मुक़ाबले में गुलाम और यतीम ज़्यादा होंगे? आप ने फ़रमाया हाँ मैं ने तुम्हें यह बात बताई है तो तुम लोग अपनी औलाद की तरह उन की आवभगत करो और उन को वह खाना खिलाओ जो तुम खाते हो।

(١٩٨) إِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهَبَ لِعَلِيٍّ غُلَامًا فَقَالَ لَا تَضْرِبْهُ فَإِنِّي نُهِيْتُ عَنْ ضَرْبِ أَهْلِ الصَّلٰوةِ، وَقَدْ رَأَيْتُهُ يُصَلِّيْ. (مشکوۃ۔ ابوامامہؓ)

198. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा वहबा लिअलिय्यिन ग़ुलामन फकाला ला तज़रिबहु फइन्नी नुहीतु अन ज़रबि अहलिस्सलाति, वकद रएैतुहू युसल्ली।* (मिश्कात, अबू उमामा रज़ि॰)

अनुवादः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली (रज़ि॰) को एक गुलाम दिया और कहा इसे मारना मत, क्योंकि मुझे नमाज़ी को मारने से रोका गया है और मैं ने इसे नमाज़ पढ़ते देखा है।

रफ़ीक़े सफ़र का हक़

(١٩٩) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَيِّدُ الْقَوْمِ خَادِمُهُمْ فَمَنْ سَبَقَهُمْ بِخِدْمَةٍ لَمْ يَسْبِقُوْهُ بِعَمَلٍ إِلَّا الشَّهَادَةَ. (مشکوۃ۔ سہل بن سعدؓ)

199. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा सय्यिदुल कौमि ख़ादिमुहुम फमन सबकहुम बिख़िदमतिल लम यसबिकूहु बिअमलिन इल्लश्शहादता* (मिश्कात, सहल बिन सअद रज़ि॰)

अनुवादः–रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ौम का सरदार उन का ख़ादिम होता है तो जो शख़्स लोगों की ख़िदमत करने में पहल कर जाये तो लोग उस से किसी अमल की बदौलत नहीं बढ़ सकते शहादत के अलावा।

यानी जो शख़्स किसी गिरोह के साथ सफ़र कर रहा हो चाहिये कि उन की ख़िदमत करे, उन की ज़रूरतों का लिहाज़ रखे और उन को हर तरह आराम पहुंचाने की कोशिश करे, इस का बहुत बड़ा सवाब है इस नेकी से बढ़ कर अगर कोई और नेकी हो सकती है तो यह कि आदमी

खुदा की राह में लड़ते हुये शहादत पाये।

(۲۰۰) عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ قَالَ بَیْنَمَا نَحْنُ فِیْ سَفَرٍ اِذْجَاءَہٗ رَجُلٌ عَلٰی رَاحِلَۃٍ فَجَعَلَ یَصْرِفُ وَجْھَہٗ یَمِیْنًا وَشِمَالًا فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَنْ کَانَ مَعَہٗ فَضْلُ ظَھْرٍ فَلْیَعُدْبِہٖ عَلٰی مَنْ لَّاظَھْرَ لَہٗ وَمَنْ کَانَ فَضْلُ زَادٍ فَلْیَعُدْ بِہٖ عَلٰی مَنْ لَّا زَادَلَہٗ، قَالَ فَذَکَرَ مِنْ اَصْنَافِ الْمَالِ حَتّٰی رَاَیْنَا اَنَّہٗ لَاحَقَّ لِاَحَدٍمِّنَّا فِی الْفَضْلِ.

(مسلم)

200. *अन अबी सईदिनिल ख़ुदरिय्यि काला बैनमा नहनु फी सफ़रिन इज़ जाअहू रजुलुन अला राहिलतिन फजअला यसरिफु वजहहू यमीनवं वशिमालन फकाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन काना मअहू फज़लु ज़हरिन फलयउद बिही अला मल्ला ज़हरा लहू व मन काना फज़लु ज़ादिन फलयउद बिही अला मल्ला ज़ादा लहू, काला फज़करा मिन असनाफिल मालि हत्ता रऐना अन्नहू ला हक़्क़ा लिअहदिम मिन्ना फिलफज़लि।* (मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत है वह फ़रमाते हैं कि एक बार जब कि हम सफ़र में थे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक आदमी ऊँटनी पर सवार हो कर आया तो उस ने दाएँ बाएँ मुड़ कर देखना शुरू किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के पास कोई ज़ायद सवारी हो तो उसे चाहिये कि वह अपनी सवारी उस शख़्स को दे दे जिस के पास सवारी नहीं है और जिस शख़्स के पास ज़्यादा खाना हो तो उसे उन लोगों को दे देना चाहिये जिन के पास खाना नहीं है। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ का कहना है कि हुज़ूर (सल्ल॰) ने माल की बहुत सारी क़िस्में गिना डालीं यहाँ तक कि हम ने यह समझा कि हम में से किसी का ज़रूरत से ज़्यादा माल में कोई हक़ नहीं है।

आने वाले ने दाएँ बाएँ नज़र दौड़ाई क्योंकि असल में वह ज़रूरतमंद था चाहता था कि लोग उस की मदद करें।

(۲۰۱) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ تَکُوْنُ اِبِلٌ وَّبُیُوْتٌ لِّلشَّیٰطِیْنِ، فَاَمَّا اِبِلُ الشَّیٰطِیْنِ فَقَدْ رَاَیْتُھَا یَخْرُجُ اَحَدُکُمْ بِنَجِیْبَاتٍ مَعَہٗ قَدْ اَسْمَنَھَا فَلَا یَعْلُوْ بَعِیْرًا مِّنْھَا

وَيَمُرُّ بِأَخِيهِ قَدِ انْقَطَعَ بِهِ فَلَا يَحْمِلُهُ وَأَمَّا بُيُوتُ الشَّيَاطِيْنِ فَلَمْ أَرَهَا.

(ابوداؤد۔ سعید بن ابی ہند عن ابی ہریرۃؓ)

201. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा तकूनु इबिलुन व बुयूतुल लिश्शैतानि, फअम्मा इबिलुश्शैतानि फकद रऐतुहा यख़रुजु अहदुकुम बिनजीबातिन मअहू कद असमनहा फला यअलू बईरम मिनहा व यमुर्रु बिअख़ीहि कदिनकतआ बिही फला यहमिलुहू व अम्मा बुयूतुश्शयातीनि फलम अराहा।*

(अबू दाऊद, सईद बिन अबी हिन्द अन अबी हुरैरता)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कुछ ऊँट शैतानों का हिस्सा होते हैं, कुछ घर शैतानों का हिस्सा होते हैं, शैतानों के ऊँट तो मैं ने देखे हैं, तुम में से कोई अपने साथ बहुत सी ऊँटनियाँ लेकर निकलता है और उसे ख़ूब मोटा ताज़ा कर रखा है और उन में से किसी पर चढ़ता नहीं और वह अपने भाई के पास से गुज़रता है जो बग़ैर सवारी के है तो उसे अपनी ऊँटनियों पर सवार नहीं करता, और रहे शैतानों के घर तो मैं ने उन्हें नहीं देखा।

शैतानी घरों से मुराद वह मकान हैं जिन्हें लोग बिला ज़रूरत बनाते हैं सिर्फ़ अपनी मालदारी दिखाने के लिये, न तो वह लोग उस में रहते हैं और न दूसरे ज़रूरतमंद लोगों को रहने के लिये देते हैं। इस्लाम दौलत के इस क़िस्म के दिखावे को पसन्द नहीं करता, हुज़ूर (सल्ल॰) ने ऐसे मकान नहीं देखे क्यों कि उस ज़माने में ऐसे नुमाईशी लोग नहीं थे हाँ बाद में हमारे बुज़ुर्गों ने ऐसे मकान देखे और हम भी अपने ज़माना के दौलतमंद मुसलमानों के यहाँ ऐसे नुमाइशी मकानात देख रहे हैं।

(۲۰۲) عَنْ مُعَاذٍ قَالَ غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَضَيَّقَ النَّاسُ الْمَنَازِلَ وَقَطَعُوا الطَّرِيْقَ فَبَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُنَادِيًا يُنَادِي فِي النَّاسِ اَنَّ مَنْ ضَيَّقَ مَنْزِلًا اَوْ قَطَعَ الطَّرِيْقَ فَلَا جِهَادَ لَهُ. (ابوداؤد)

202. *अन मुआज़िन काला ग़ज़ौना मअन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फज़य्यक़न्नासुल मनाज़िला व कतउत्तरीका फ-बअसन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मुनादियंयुनादी*

फ़िन्नासि अन्ना मन ज़य्यका मंज़िलन औ कतअत्तरीका फला जिहादा लहू। (अबू दाऊद)

अनुवादः– हज़रत मुआज़ (रज़ि॰) से रिवायत है उन्हों ने कहा हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक ग़ज़्वा में गये, लोगों ने ठहरने की जगहों को तंग कर दिया और रास्ता बन्द कर दिया, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक आदमी भेज कर ऐलान कराया कि जो शख़्स ठहरने की जगह में तंगी पैदा करे या रास्ता बन्द करेगा तो उस को जिहाद का सवाब न मिलेगा।

इस हदीस से मालूम होता है कि लोगों ने अपनी ठहरने की जगह को लम्बा चौड़ा और कुशादा कर दिया था और फैल कर ठहरे थे जिस के नतीजे में चलने वालों को परेशानी हो सकती थी इस लिये हुज़ूर (सल्ल॰) ने यह ऐलान कराया, जो लोग सफ़र में निकलें और उन का यह सफ़र नेकी का सफ़र हो, तो उन को चाहिये कि फैल कर न ठहरें, बल्कि उतनी ही जगह लें जितनी की ज़रूरत हो ऐसा न करें कि दूसरे साथियों को जगह न मिले, या आने जाने में उन को परेशानी हो।

बीमार की अयादत

(٢٠٣) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ عَزَّ وَجَلَّ يَقُوْلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَاابْنَ اٰدَمَ مَرِضْتُ فَلَمْ تَعُدْنِىْ قَالَ يَا رَبِّ كَيْفَ اَعُوْدُكَ وَاَنْتَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ؟ قَالَ اَمَا عَلِمْتَ اَنَّ عَبْدِىْ فُلَانًا مَرِضَ فَلَمْ تَعُدْهُ اَمَا عَلِمْتَ اَنَّكَ لَوْعُدْتَهٗ لَوَجَدْتَنِىْ عِنْدَهٗ.

(مسلم، ابوہریرۃؓ)

203. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्ना अज़्ज़ा वजल्ला यकूलु यौमल कियामति यब्ना आदमा मरिज़्तु फलम तउदनी काला या रब्बि कैफा अऊदुका व अनता रब्बुलआलमीन? काला अमा अलिमता अन्ना अब्दी फुलानन मरीज़ा फलम तउदहु अमा अलिमता अन्नका लौ उत्तहू ल-वजत्तनी इन्दहू।*

(मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

कि अल्लाह अज़्ज़ा वजल्ला क़यामत के दिन कहेगा ऐ आदम के बेटे! मैं बीमार हुआ था तो तूने मेरी अयादत नहीं की, तो वह कहेगा कि ऐ मेरे रब! मैं तेरी अयादत कैसे करता तू तो पूरे संसार का रब है? तो अल्लाह फ़रमाएगा क्या तुझे मालूम नहीं कि मेरा फ़ुलाँ बन्दा बीमार पड़ा था तो तूने उस की अयादत नहीं की, क्या तुझे ख़बर न थी कि अगर तू उस की अयादत को जाता तो उस के पास मुझे पाता?।

अयादत से मुराद सिर्फ़ किसी मरीज़ के यहाँ चला जाना और उस का हाल चाल पूछ लेना ही नहीं है बल्कि बीमार की हक़ीक़ी और असल अयादत यह है कि अगर वह ग़रीब हो तो उस की दवा दारू का इन्तिज़ाम किया जाये या ग़रीब तो नहीं है मगर कोई वक़्त पर दवा लाने और पिलाने वाला नहीं है तो उस की फ़िक्र की जाये।

(۲۰۴) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُوْدُوْا الْمَرِيْضَ وَاَطْعِمُوْا الْجَائِعَ وَفُكُّوا الْعَانِيَ. (بخاری۔ ابوموسیٰؓ)

204. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ऊदुल मरीज़ा व उअतईमुल जाईआ व फुक्कुलआनिया।* (बुख़ारी, अबू मूसा रज़ि०)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बीमार की अयादत करो और भूके को खाना खिलाओ और क़ैदी की रिहाई का इन्तिज़ाम करो।

(۲۰۵) كَانَ غُلَامٌ يَهُوْدِيٌّ يَخْدِمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَرِضَ فَاَتَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُوْدُهُ، فَقَعَدَ عِنْدَ رَأْسِهٖ فَقَالَ لَهٗ اَسْلِمْ، فَنَظَرَ اِلٰى اَبِيْهِ وَهُوَ عِنْدَهٗ فَقَالَ اَطِعْ اَبَا الْقَاسِمِ فَاَسْلَمَ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَقُوْلُ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَنْقَذَهٗ مِنَ النَّارِ. (بخاری۔ انسؓ)

205. *कांना ग़ुलामन यहुदिय्युन यख़दिमुन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ-मरिज़ा फ-अताहुन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यऊदुहू, फकअदा इन्दा रअसिही फकाला लहू अस्लिम, फनज़रा इला अबीहि व हुवा इन्दहू फकाला अतिअ अबलकासिमि फ-अस्लमा, फ-ख़रजन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा व हुवा यकूलु अलहमदुलिल्लाहिल्लज़ी अनकज़हू मिनन्नारि।* (बुख़ारी, अनस रज़ि०)

अनुवादः- एक यहूदी लड़का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत किया करता था, वह बीमार पड़ा तो हुज़ूर (सल्ल॰) उस की अयादत को तशरीफ़ ले गये उस के सरहाने बैठे और उस से कहा तू इस्लाम ले आ, उस ने अपने बाप की तरफ़ देखा जो वहीं उस के पास था, उस ने कहा तू अबुलक़ासिम (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कहना कर, चुनाचे वह इस्लाम लाया, उस के बाद नबी (सल्ल॰) उस के यहाँ से यह कहते हुये निकले, शुक्र है अल्लाह का जिस ने जहन्नम से उसे बचा लिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीज़ा सीरत को दोस्त और दुश्मन सभी जानते थे और सारे यहूदी आप के दुश्मन न थे, इस यहूदी से हुज़ूर का ज़ाती संबंध था इस लिये उस ने अपने लड़के को हुज़ूर की ख़िदमत के लिये भेज दिया था।

(٢٠٦) قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ مِنَ السُّنَّةِ تَخْفِيْفُ الْجُلُوْسِ وَقِلَّةُ الصَّخَبِ فِي الْعِيَادَةِ عِنْدَ الْمَرِيْضِ. (مشكوٰة)

206. *काला इब्नु अब्बासिम मिनस्सुन्नति तख़फ़ीफ़ुल जुलूसि व क़ुल्लतुस्सख़बि फ़िलअयादति इन्दलमरीज़ि।* (मिश्कात)

अनुवादः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि मरीज़ के पास अयादत करने के सिलसिले में शोर न करना और कम बैठना सुन्नत है।

यह हिदायत आम बीमारों के लिये हैं लेकिन अगर किसी का बेतकल्लुफ़ दोस्त बीमार पड़े और उसे अन्दाज़ा हो कि वह उस के बैठने को पसन्द करता है तब वह बैठा रह सकता है।

मुसलमान का हक़ मुसलमान पर

(٢٠٧) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ حَجَّةِ الْوَدَاعِ اَلَا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَيْكُمْ دِمَائَكُمْ وَاَمْوَالَكُمْ وَاَعْرَاضَكُمْ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا فِيْ بَلَدِكُمْ هٰذَا فِيْ شَهْرِكُمْ هٰذَا، اَلَا هَلْ بَلَّغْتُ؟ قَالُوْا نَعَمْ، قَالَ اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ ثَلَاثًا، وَيْلَكُمْ اَوْ وَيْحَكُمْ اُنْظُرُوْا لَا تَرْجِعُوْا بَعْدِيْ كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ. (بخاری، ابن عمرؓ)

207. कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फी हज्जतिल वदाई अला इन्नल्लाहा हर्रमा अलैकुम दिमाअकुम व अमवालकुम व अअराज़कुम क-हुरमति यौमिकुम हाज़ा फी बलदिकुम हाज़ा फी शह्रिकुम हाज़ा, अला हल बल्लग़तु? क़ालू नअम, क़ाला अल्लाहुम्मा अश्हद सलासा, वैलकुम औ वैहकुम उन्ज़ुरू ला तरजिऊ बअ़दी कुफ़्फ़ारयं यज़्रिबु बअ़ज़ुकुम रिक़ाबा बअ़ज़िन।

(बुख़ारी, इब्ने उमर रज़ि॰)

अनुवादः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने आख़िरी हज में (जिस के बाद आप दुनिया से चले गये) उम्मत को ख़िताब करते हुए फ़रमाया–

सुनो! अल्लाह ने तुम्हारा ख़ून और माल व आबरू मुहतरम बनाया है जिस तरह तुम्हारा यह दिन, यह महीना और यह शह्र मुहतरम हैं। सुनो क्या मैं ने तुम को पहुंचा दिया। लोगों ने कहा हाँ आप (सल्ल॰) ने पहुंचा दिया आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह तू गवाह रहना कि मैं ने उम्मत को संदेश पहुंचा दिया, यह बात आप ने तीन बार फ़रमाई। फिर फ़रमाया सुनो! देखो मेरे बाद काफ़िर न बन जाना कि तुम मुसलमान हो कर आपस में एक दूसरे की गर्दन मारने लगो।

(۲۰۸) عَنْ جَرِيْرِبْنِ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ بَايَعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلٰى اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاءِ الزَّكٰوةِ وَالنُّصْحِ لِكُلِّ مُسْلِمٍ. (بخاری،مسلم)

208. अन जरीरिब्नि अब्दिल्लाहि क़ाला बायअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अ़ला इक़ामिस्सलाति व ईताईज़्ज़काति वन्नुस्हि लिकुल्लि मुस्लिमिन। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– जरीर बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं, मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की नमाज़ क़ायम करने, ज़कात देने और हर मुसलमान की ख़ैरख़्वाही करने पर।

बैअत के असल मअने (अर्थ) है बेच देना, यानी आदमी जिस के हाथ पर बैअत करता है असल में वह इस बात का वादा करता है कि मैं

पूरी ज़िन्दगी इस वादे को निबाहूँगा। हज़रत जरीर (रज़ि०) ने हुज़ूर (सल्ल०) से तीन बातों का वादा किया, नमाज़ को उस की तमाम शर्तों के साथ अदा करना और ज़कात देना और तीसरी बात यह कि अपने मुसलमान भाईयों के साथ कोई खोट का मुआमला न करना उन के साथ रहमत व शफ़क़त और ख़ैरख़्वाहाना मुआमला करना। इस हदीस से मालूम होता है कि मुसलमानों को आपस में किस तरह से रहना चाहिये।

(۲۰۹) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ فِيْ تَرَاحُمِهِمْ وَتَوَادِّهِمْ وَتَعَاطُفِهِمْ كَمَثَلِ الْجَسَدِ، إِذَا اشْتَكَى عُضْوٌ تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ الْجَسَدِ بِالسَّهَرِ وَالْحُمَّى. (بخاری، مسلم۔ نعمان بن بشیرؓ)

209. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा तरलमोमिनीना फी तराहुमिहिम व तवाद्दिहिम व तआतुफिहिम क-मसलिलजसदि, इज़श्तका उज़्वुन तदाआ लहू साईरुल जसदि बिस्सहरि वल हुम्मा।* (बुख़ारी, मुस्लिम, नुअमान बिन बशीर)

> **अनुवादः**– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तू मुसलानों को आपस में रहम करने, मुहब्बत करने और एक दूसरे की तरफ़ झुकने में ऐसा देखेगा जैसा कि जिस्म का हाल होता है कि अगर एक अंग को कोई बीमारी होती है तो शरीर के बक़िया अंग बेख़्वाबी और बुख़ार के साथ उस का साथ देते हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस्म की मिसाल देते हुये यह नहीं फ़रमाया कि मुसलमानों को जिस्म के अंगों की तरह होना चाहिये बल्कि मुसलमानों की एक हमेशा रहने वाली सिफ़त के तौर पर फ़रमाते हैं कि जब भी तू उन को देखेगा तो उन्हें एक दूसरे के साथ रहमत व शफ़क़त से पेश आने वाला ही पाएगा।

(۲۱۰) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا، ثُمَّ شَبَّكَ بَيْنَ اَصَابِعِهِ. (بخاری، مسلم۔ ابوموسیٰؓ)

210. *कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल मोमिनु लिल-मोमिनि कल-बुनियानि यशुद्दु बअज़ुहू बअज़ा, सुम्मा शब्बका*

बैना असाबिईही। (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू मूसा रज़ि॰)

> **अनुवादः–** नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान मुसलमान के लिये इमारत (भवन) की तरह है जिस का एक हिस्सा दूसरे हिस्से को ताक़त पहुंचाता है फिर आप ने एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों में मिला कर बताया।

इस हदीस में मुसलमान सोसाईटी को इमारत से तशबीह दी गई है कि जिस तरह उस की ईंटें एक दूसरे से जुड़ी होती हैं उसी तरह मुसलमानों को आपस में चिमटे रहना चाहिये और फिर जिस तरह हर ईंट दूसरी ईंट को कुव्वत और सहारा देती है उसी तरह उन्हें भी एक दूसरे को सहारा देना चाहिये, और जिस तरह बिखरी हुई ईंटें एक दूसरे से जुड़ कर मज़बूत इमारत की शक्ल अपना लेती हैं, उसी तरह मुसलमानों की ताक़त का राज़ उन के आपस में जुड़ने में है अगर वह बिखरी हुई ईंटों की तरह रहे तो उन को हवा का हर झोंका उड़ा ले जा सकता है, और पानी का हर रेला बहा ले जा सकता है, आख़िर में इस हक़ीक़त को एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों में मिला कर के महसूस शक्ल में बयान फ़रमाया।

(٢١١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْمُؤْمِنُ مِرْاٰةُ الْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنُ

اَخُو الْمُؤْمِنِ يَكُفُّ عَنْهُ ضَيْعَتَهٗ وَ يَحُوْطُهٗ مِنْ وَّرَائِهٖ۔ (مشکوٰۃ۔ابوہریرہؓ)

211. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल-मोमिनु मिरआतुल मोमिनि वल-मोमिनु अख़ुल-मोमिनि यकुफ़्फ़ु अनहु ज़ैअतहू व यहूतुहू मिंव्वराईही।* (मिश्कात, अबू हुरैरा रज़ि॰)

> **अनुवादः–** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान मुसलमान का आईना है और मुसलमान मुसलमान का भाई है, वह उस को बरबादी से बचाता है और पीछे से उस की हिफ़ाज़त करता है।

एक मुसलमान दूसरे मुसलमान "के लिये आईना है" यानी उस की तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ जानता है जिस तरह वह अपनी तकलीफ़ से तड़पता है इसी तरह यह भी तड़प उठे और उस को दूर करने के लिये

बेचैन हो जाये, एक दूसरी हदीस के शब्द यह हैं-

إِنَّ أَحَدَكُمْ مِرْآةُ أَخِيْهِ، فَإِنْ رَءَىٰ بِهِ أَذًى فَلْيُمِطْ عَنْهُ.

इन्ना अहदकुम मिरअतु अख़ीहि, फइन रअया बिही अज़न फलयुमित अनहु।

> **अनुवादः**- यानी तुम में से हर एक अपने भाई का आईना है तो अगर उस को तकलीफ़ में देखे तो उस की तकलीफ़ को दूर कर दे।

इसी तरह अगर उस के अन्दर कोई कमज़ोरी देखता है तो उसे अपनी कमज़ोरी समझ कर दूर करने की कोशिश करे।

(٢١٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اُنْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُوْمًا، فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ أَنْصُرُهُ مَظْلُوْمًا فَكَيْفَ أَنْصُرُهُ ظَالِمًا؟ قَالَ تَمْنَعُهُ مِنَ الظُّلْمِ فَذٰلِكَ نَصْرُكَ إِيَّاهُ. (بخاری، مسلم۔انسؓ)

212. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा उनसुर अख़ाका ज़ालिमन औ मज़लूमन, फ-काला रजुलुन या रसूलल्लाहि अनसुरुहू मज़लूमन फ-कैफा अनसुरुहू ज़ालिमन? काला तमनउहू मिनज़्ज़ुल्मि फज़ालिका नसरुका इय्याहु।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अनस रज़ि०)

> **अनुवादः**- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तू अपने भाई की मदद कर चाहे वह ज़ालिम हो या मज़लूम, तो एक आदमी ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मज़लूम होने की सूरत में तो मैं उस की मदद करूंगा, लेकिन उस के ज़ालिम होने की सूरत में किस तरह मदद करूंगा? आप ने फ़रमाया कि तू उसे ज़ुल्म करने से रोक दे, यही उस की मदद करना है।

(٢١٣) إِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ لَا يَظْلِمُهُ وَلَا يُسْلِمُهُ، وَمَنْ كَانَ فِيْ حَاجَةِ أَخِيْهِ كَانَ اللّٰهُ فِيْ حَاجَتِهِ، وَمَنْ فَرَّجَ عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً فَرَّجَ اللّٰهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرُبَاتِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ، وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ.

(بخاری، مسلم۔ابن عمرؓ)

213. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला अल-मुस्लिमु अख़ुल मुस्लिमि ला यज़लिमुहू वला युस्लिमुहू, वमन*

काना फ़ी हाजति अख़ीहि कानल्लाहु फ़ी हाजतिही, वमन फ़रजा अम्मुस्लिमिन कुरबतन फ़रजल्लाहु अनहु कुरबतम मिन कुरुबाति यौमिलक़ियामति, वमन सतरा मुस्लिमन सतरहुल्लाहु यौमलक़ियामति। (बुख़ारी, मस्लिम, इब्ने उमर रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान मुसलमान का भाई है न तो उस पर वह जुल्म करता है और न उस को अकेला छोड़ता है और जो अपने भाई की ज़रूरत पूरी करेगा अल्लाह उस की ज़रूरत पूरी करेगा। और जो शख़्स किसी मुसलमान की परेशानी दूर करेगा अल्लाह क़यामत के दिन उस की परेशानी दूर करेगा, और जो शख़्स किसी मुसलमान के ऐबों को छुपाएगा अल्लाह क़यामत के दिन उस के ऐबों को छुपाएगा।

हदीस के आख़िरी शब्दों का मतलब यह है कि अगर नेक मुसलमान कोई ग़लती कर बैठे तो उस को लोगों की नज़र से गिराने के लिये जगह जगह बयान न करते फिरो, बल्कि उस के ऐब पर पर्दा डालो उस शख़्स के बख़िलाफ़ (विपरीत) जो ज़ाहिरी तौर पर ख़ुदा के अहकाम (आदेशों) को तोड़ता है तो उस के ऐबों को छुपाने के बजाये उस को नंगा करने का हुक्म हुज़ूर ने दिया है।

(۲۱۴) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِيَدِهٖ لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰى يُحِبَّ لِاَخِيْهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهٖ. (بخاری، مسلم۔ انسؓ)

214. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा वल्लज़ी नफ़्सी बियदिही ला-यूमिनु अब्दुन हत्ता युहिब्बु लिअख़ीहि मा युहिब्बु लिनफ़्सिही।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अनस रज़ि०)

अनुवादः-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ा में मेरी जान है, कोई शख़्स ईमानदार नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिये वही कुछ पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।

(۲۱۵) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ مِنْ عِبَادِ اللّٰهِ لَاُنَاسًا مَّا هُمْ بِاَنْبِيَاءَ وَلَا شُهَدَاءَ، يَغْبِطُهُمُ الْاَنْبِيَاءُ وَالشُّهَدَاءُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ بِمَكَانِهِمْ مِنَ اللّٰهِ، قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

تُخْبِرُنَا مَنْ هُمْ؟ قَالَ هُمْ قَوْمٌ تَحَابُّوا بِرُوْحِ اللّٰهِ عَلٰى غَيْرِ اَرْحَامٍ بَيْنَهُمْ وَلَا اَمْوَالٍ يَتَعَاطَوْنَهَا، فَوَاللّٰهِ اِنَّ وَجُوْهَهُمْ لَنُوْرٌ، وَاِنَّهُمْ لَعَلٰى نُوْرٍ، لَا يَخَافُوْنَ اِذَا خَافَ النَّاسُ، وَلَا يَحْزَنُوْنَ اِذَا حَزِنَ النَّاسُ وَقَرَاَ هٰذِهِ الْاٰيَةَ اَلَا اِنَّ اَوْلِيَاءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ.

215. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्ना मिन इबादिल्लाहि लउनासम्माहुम बि-अंबियाआ वला शुहदाआ, यग़बितुहुमुल अंबियाउ वश्शुहदाउ यौमल-क़ियामति बिमकानिहिम मिनल्लाहि, कालू या रसूलल्लाहि तुख़बिरुना मन हुम? काला हुम क़ौमुन तहब्बू बिरुहिल्लाहि अला ग़ैरि अरहामिन बैनहुम वला अमवालियं यतआतौनहा, फवल्लाहि इन्ना वजूहहुम लनूरुन, वइन्नहुम ल-अला नूरिन, लायख़ाफ़ूना इज़ा ख़ाफ़न्नासु, वला यहज़नूना इज़ा हज़िनन्नासु व करआ हाज़िहिल-आयता अला इन्ना औलियाअल्लाहि ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वला हुम यहज़नूना।*

अनुवादः– रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह के बन्दों में से कुछ ऐसे लोग हैं जो न नबी हैं और न शहीद, फिर भी अंबिया और शुहदा क़यामत के दिन उन के उहदे पर रश्क करेंगे जो उन्हें अल्लाह के यहाँ मिलेगा। लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! यह कौन लोग होंगे? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि यह वह लोग होंगे जो आपस में एक दूसरे के रिश्तेदार न थे और न आपस में माली लेन देन करते थे बल्कि सिर्फ़ ख़ुदा के दीन की बुनियाद पर एक दूसरे से मुहब्बत करते थे, ख़ुदा की क़सम उन के चेहरे नूरानी होंगे और उन के चारों तरफ़ नूर ही नूर होगा उन्हें कोई डर न होगा उस वक़्त जबकि लोग डरे हुये होंगे, और न कोई ग़म होगा उस वक़्त जबकि लोग ग़म में पड़े हुये होंगे और फिर आप ने यह आयत पढ़ी اَلَا اِنَّ اَوْلِيَاءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ. "अला इन्ना औलियाअल्लाहि ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वला हुम यहज़नून"।

असल हदीस में "ग़बित" का शब्द आया है जिस के मतलब बहुत ज़्यादा ख़ुश होने के हैं, यह शब्द रश्क और हसद के लिये भी इस्तेमाल

हुआ है यहा पर पहला अर्थ मुराद है। हदीस का मतलब यह है कि जिस तरह एक उसताद अपने शागिर्द के ऊँचा मक़ाम हासिल कर लेने से ख़ुश होता और फ़ख़्र महसूस करता है उसी तरह अंबिया और शुहदा जो सब से ज़्यादा ऊँचा मक़ाम रखते हैं उन लोगों की कामियाबी पर ख़ुश होंगे। यह लोग जिन का मर्तबा बयान हुआ है उन की मुहब्बत की बुनियाद सिर्फ़ दीन पर थी। ख़ूनी रिश्ता और माली लेन देन ने उन को आपस में नहीं जोड़ा था, बल्कि इस्लाम और इस्लामी ज़िन्दगी पैदा करने के जज़्बे ने उन को एक दूसरे का दोस्त और साथी बनाया था। ऐसे लोगों के लिये दुनिया में फ़त्ह व कामियाबी की ख़ुशख़बरी दी गई है और आख़िरत में हमेशा रहने वाले इनआम की।

सूरह यूनुस की वह आयत जो ऊपर लिखी गई है वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वालों और दीन की राह में सताये जाने वालों और ईमानी ज़िन्दगी के लिये कोशिश करने वालों और जाहिलियत के निज़ाम से कशमकश करने वालों के बारे में है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया *"लहुमुल बुशरा फ़िलहयातिद्दुनिया व फ़िल-आख़िरति"* उन के लिये ख़ुशख़बरी है इस ज़िन्दगी में भी और इस के बाद आने वाली ज़िन्दगी में भी।

(٢١٦) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَحِلُّ لِلرَّجُلِ اَنْ يَّهْجُرَ اَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ يَّلْتَقِيَانِ فَيُعْرِضُ هٰذَا وَيُعْرِضُ هٰذَا وَخَيْرُهُمَا الَّذِىْ يَبْدَأُ بِالسَّلَامِ.

(بخاری، مسلم۔ ابوایوب انصاریؓ)

216. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला यहिल्लु लिर्रजुलि अय्यँहजुरा अख़ाहु फ़ौक़ा सलासि लयालिन यलतक़ियानि फ़युअरिज़ु हाज़ा व ख़ैरुहुमल्लज़ी यबदउ बिस्सलामि।*

(बुख़ारी, मुस्लिम, अबू अय्यूब अंसारी)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, आदमी के लिये जाइज़ नहीं है कि वह अपने भाई से तीन रातों से ज़्यादा संबंध तोड़ रखे कि दोनों रास्ता में एक दूसरे से मिलें तो मुंह फेर लें और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम में पहल करे।

यह बात मुम्किन है कि दो मुसलमान किसी वक़्त किसी बात पर एक दूसरे से नाराज़ हो जाएँ और बात चीत बन्द कर दें लेकिन तीन दिन से ज़्यादा उन को इस हालत पर न रहना चाहिये, और आमतौर पर ऐसा ही होता है कि दो आदमियों के बीच अगर तलख़ी पैदा हो जाये और वह दोनों ख़ुदा का कुछ डर रखते हों तो दो तीन दिन गुज़रने के बाद उन के अन्दर एक दूसरे से मिलने की तड़प पैदा होने लगती है और आख़िर में उन में से एक सलाम में पहल कर के उस शैतानी तलख़ी को ख़त्म कर देता है इसी लिये पहल करने वाले की फ़ज़ीलत इस हदीस में भी बयान हुई है और इस के अलावा दूसरी हदीसों में भी।

(۲۱۷) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ فَاِنَّ الظَّنَّ اَكْذَبُ الْحَدِيْثِ، وَلَا تَحَسَّسُوْا، وَلَا تَجَسَّسُوْا، وَلَا تَنَاجَشُوْا، وَلَا تَبَاغَضُوْا، وَلَا تَدَابَرُوْا، وَكُوْنُوْا عِبَادَ اللّٰهِ اِخْوَانًا. (بخاری، مسلم۔ ابوہریرہؓ)

217. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इय्याकुम वज़्ज़न्ना फइन्नज़्ज़न्ना अकज़बुल हदीसि, वला तहस्ससू, वला तजस्ससू, वला तनाजशू, वला तबाग़ज़ू, वला तदाबरू, व कूनू इबादल्लाहि इख़्वानन।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपने आप को बुरे गुमान से बचाओ इस लिये कि बुरे गुमान के साथ जो बात की जाएगी वह सब से ज़्यादा झूटी बात होगी, और दूसरे के बारे में जानकारी हासिल करते मत फिरो और न टोह में लगो और न आपस में दलाली करो, और न एक दूसरे से दुश्मनी रखो और न एक दूसरे की काट में लगो और अल्लाह के बन्दे बनो, आपस में भाई भाई बन कर ज़िन्दगी गुज़ारो।

इस हदीस में कुछ शब्द हैं जिन की तफ़सील नीचे दी जाती है।

(1) तहस्सुस' के मअने है कान लगाना और मिगाह लगाना, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान का मतलब है कि किसी की बातें सुनने के लिये चुपके से छुप कर खड़ा हो जाना और फिर उस की बात को उस के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करना और उसे लोगों की निगाह में गिराना ईमान और इस्लाम के ख़िलाफ़ बात है।

(2) तजस्सुस' के मअने है किसी के ऐब की टोह में लगे रहना कि कब उस से कोई ग़लती होती है और कब उस की किसी कमज़ोरी का उस को पता चलता है ताकि जल्द ही उस की इज़्ज़त को घटाने के लिये इधर उधर फैलाने में लग जाए।

(3) तीसरा शब्द जो इस हदीस में आया है वह "तनाजुश" है जो ख़रीदने और बेचने से तअल्लुक़ रखता है जिस के लिये उर्दू का मुनासिब शब्द दल्लाली है। दल्लाल और व्यापारी में यह बात तैय होती है कि दल्लाल बढ़ बढ़ के बोली बोलेगा और उस का इरादा उस माल को ख़रीदने का नहीं होता बल्कि सिर्फ़ गाहकों को फंसाने के लिये वह ऐसा करता है।

(4) चौथा शब्द "तदाबुर" है जिस के मअने आपस में दुश्मनी करने के भी हैं और संबंध तोड़ लेने को भी कहते हैं।

(٢١٨) صَعِدَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمِنْبَرَ فَنَادٰى بِصَوْتٍ رَفِيْعٍ فَقَالَ يَامَعْشَرَ مَنْ اَسْلَمَ بِلِسَانِهٖ وَلَمْ يُفْضِ الْاِيْمَانُ اِلٰى قَلْبِهٖ لَا تُؤْذُوا الْمُسْلِمِيْنَ وَلَا تُعَيِّرُوْهُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا عَوْرَاتِهِمْ فَاِنَّهٗ مَنْ يَّتَّبِعْ عَوْرَةَ اَخِيْهِ الْمُسْلِمِ يَتَّبِعِ اللّٰهُ عَوْرَتَهٗ وَمَنْ يَّتَّبِعِ اللّٰهُ عَوْرَتَهٗ يَفْضَحْهُ وَلَوْ فِيْ جَوْفِ رَحْلِهٖ. (ترمذی۔ابن عمرؓ)

218. *सईदा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल-मिम्बरा फनादा बिसौतिन रफ़ीइन फ़काला या मअशरा मन अस्लम बिलिसानिही वलम युफ़जिल ईमानु इला क़ल्बिही ला तूअज़ुल मुस्लिमीना वला तुअय्यिरुहुम वला तत्तबिऊ औरातिहिम फ़इन्नहू मय्यत्तबिअ औरता अख़ीहिल मुस्लिमि यत्तबिइल्लाहु औरतहू व मय्यत्तबिइल्लाहु औरतहू यफ़ज़हहू वलौ फ़ी जौफ़ि रहलिही।*

(तिर्मिज़ी, इब्ने उमर रज़ि०)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ लाये और बहुत ही ऊँची आवाज़ से फ़रमाया, ऐ वह लोगो जो सिर्फ़ अपनी जुबान से इस्लाम लाये हो, और ईमान तुम्हारे दिलों में नहीं उतरा है, तुम लोग मुसलमानों को तकलीफ़ न पहुंचाओ और न उन को लज्जा दिलाओ और न उन के ऐबों के पीछे पड़ो, जो लोग अपने मुसलमान भाई के ऐबों के पीछे पड़ेंगे तो

> अल्लाह तआला उन के ऐब के पीछे पड़ जाएगा, और जिस शख़्स के ऐब के पीछे अल्लाह पड़ जाएगा उसे रुसवा कर डालेगा, अगरचे वह अपने घर के अन्दर हो।

मुनाफ़िक़ीन सच्चे और पाकीज़ा मुसलमानों को तरह तरह की तकलीफ़ें पहुंचाते और उन के ख़ानदानी शर्मनाक ऐब जो जाहिलियत के ज़माने में हुये थे उन लोगों के सामने बयान करते, उन्हीं लोगों को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में डांटा है, कुछ दूसरी हदीसों में बयान हुआ है कि यह तक़रीर करते वक़्त नबी (सल्ल॰) की आवाज़ इतनी ऊँची हो गई थी कि आस पास के घरों तक यह आवाज़ पहुंच गई और औरतों ने सुना।

(٢١٩) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا عَرَجَ بِیْ رَبِّیْ مَرَرْتُ بِقَوْمٍ لَّهُمْ اَظْفَارٌ مِنْ نُحَاسٍ يَخْمِشُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَصُدُوْرَهُمْ، فَقُلْتُ مَنْ هٰؤُلَاءِ يَا جِبْرِيْلُ؟ قَالَ هٰؤُلَاءِ الَّذِيْنَ يَاكُلُوْنَ لُحُوْمَ النَّاسِ وَيَقَعُوْنَ فِیْ اَعْرَاضِهِمْ. (ابوداؤد۔انسؓ)

219. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लम्मा अरजा बी रब्बी मररतु बिक़ौमिन लहुम अज़फ़ारुम मिन नुहासियं यख़्मिशूना वुजूहहुम व सुदूरहुम, फ़-क़ुल्तु मन हाउलाई या जिबरीलु? काला हाउलाइल्लज़ीना याकुलूना लुहूमन्नासि व यक़ऊना फ़ी अअ़राज़िहिम।* (अबू दाऊद, अनस रज़ि॰)

> **अनुवादः-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब मेरा रब मुझ को आसमान पर ले गया तो मैं वहाँ कुछ लोगों के पास से गुज़रा जिन के नाखुन पीतल के थे और वह अपने चेहरे और सीने को नोच रहे थे, मैं ने जिबरील से पूछा कि यह कौन लोग हैं? जिबरील ने कहा कि यह वह लोग हैं जो दुनिया में दूसरे लोगों का गोश्त खाया करते थे, और उन की इज़्ज़त से खेलते थे।

लोगों का गोश्त खाते थे यानी उन की चुग़ली करते थे और उन की इज़्ज़त को बरबाद करने में लगे रहते थे।

(٢٢٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ سِتٌّ، قِيْلَ مَا هُنَّ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ إِذَا لَقِيْتَهُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، وَإِذَا دَعَاکَ فَأَجِبْهُ، وَإِذَا اسْتَنْصَحَکَ فَانْصَحْ لَهُ، وَإِذَا عَطَسَ فَحَمِدَ اللّٰهَ فَشَمِّتْهُ، وَإِذَا مَرِضَ فَعُدْهُ، وَإِذَا مَاتَ فَاتَّبِعْهُ.

(مسلم۔ابوہریرہؓ)

220. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा हक़्कुल मुस्लिमि अलल-मुस्लिमि सित्तुन, क़ीला मा हुन्ना या रसूलल्लाहि? क़ाला इज़ा लक़ीतहू फसल्लिम अलैहि, व इज़ा दआका फअजिबहु, वइज़स्तनसहका फन्सह लहू, व इज़ा अतसा फहमिदल्लाहा फशम्मितहु, व इज़ा मरिज़ा फउदहु, वइज़ा माता फत्तबिअहु।*

(मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर 6 हक़ हैं, पूछा गया कि वह क्या हैं ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने फ़रमाया जब तू मुसलमान भाई से मिले तो उस को सलाम कर और जब वह तुझे दावत दे तो उस की दावत कुबूल कर और जब वह तुझ से ख़ैरख़्वाही चाहे तो तू उस की ख़ैरख़्वाही कर और जब उसे छींक आये और वह अलहमदुलिल्लाह कहे तो तू उस का जवाब दे और जब वह बीमार हो तो उस की अयादत कर और जब वह मर जाये तो उस के जनाज़े के साथ जा।

(1) सलाम करने का मतलब सिर्फ़ अस्सलामु अलैकुम का शब्द बोल देना ही नहीं है बल्कि यह एक एलान और इक़रार है इस बात का कि मेरी तरफ़ से तेरी जान, माल और इज़्ज़त सुरक्षित है मैं किसी तरीक़े पर तुझे कोई तकलीफ़ नहीं पहुंचाऊँगा, और इस बात की दुआ है कि अल्लाह तेरे दीन व ईमान को सुरक्षित रखे और तुझ पर अपनी रहमत उतारे।

तशमीत का मतलब छींकने वाले के लिये भलाई के शब्द कहने के हैं जैसे *यरहमुकल्लाह* कहना यानी अल्लाह तुझ पर अपनी रहमत उतारे और तू अल्लाह क़ी उपासना करता रहे और तुझ से कोई ऐसी ग़लती न हो जाये जिस पर दूसरों को हंसने का मौक़ा मिले।

(۲۲۱) عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ الْمُسْلِمُ اَخُوْ الْمُسْلِمِ، لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ بَاعَ مِنْ اَخِيْهِ بَيْعًا وَفِيْهِ عَيْبٌ اِلَّا بَيَّنَهُ لَهُ. (ابن ماجہ)

221. *अन उक़बतब्नि आमिरिन काला समिअतुन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यक़ूलुल मुस्लिमु अख़ुल मुस्लिमि, ला यहिल्लु लिमुस्लिमिन बाआ मिन अख़ीहि बैअवं व फ़ीहि ऐबुन इल्ला बय्यनहू लहू।* (इब्ने माजा)

अनुवादः- उक़बा बिन आमिर (रज़ि०) कहते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुये सुना कि मुसलमान मुसलमान का भाई है, जो मुसलमान अपने भाई के हाथ कोई चीज़ बेचे और उस में ऐब हो तो उस को चाहिये कि उस ऐब को उस से साफ़ साफ़ बयान कर दे, ऐब को छुपाना किसी मुसलमान व्यापारी के लिये जाइज़ नहीं है।

(۲۲۲) اِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَقِيْلُوْا ذَوِى الْهَيَاتِ عَثَرَاتِهِمْ اِلَّا الْحُدُوْدَ.

(ابوداؤد۔ عائشہؓ)

222. *इन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला अक़ीलू ज़विलहयाति असरातिहिम इल्ललहुदूदा।* (अबू दाऊद, आयशा रज़ि०)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अच्छी सीरत व ख़सलत के मुसलमान से अगर कभी कोई ग़लती हो जाये तो उस को माफ़ कर दो हुदूद के अलावा।

मतलब यह कि एक आदमी नेक और परहेज़गार है, ख़ुदा की नाफ़रमानी नहीं करता, ऐसा आदमी कभी फिसल कर गुनाह में गिर पड़े तो उस की वजह से उसे नज़रों से न गिरा दो, उस की बेइज़्ज़ती न करो, उस की उस ग़लती को फैलाते मत फिरो, बल्कि माफ़ कर दो, हाँ अगर वह ऐसा गुनाह करे जिस की सज़ा शरीअत में मुक़र्रर है, जैसे ज़िना, चोरी वग़ैरा तो ऐसे गुनाह माफ़ नहीं किये जाएँगे।

ग़ैर मुस्लिम शहरियों के हुक़ूक़

(۲۲۳) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلَا مَنْ ظَلَمَ مُعَاهَدًا اَوِ انْتَقَصَهُ اَوْ كَلَّفَهُ فَوْقَ طَاقَتِهِ اَوْ اَخَذَ مِنْهُ شَيْئًا بِغَيْرِ طِيْبِ نَفْسٍ فَاَنَا حَجِيْجُهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ. (ابوداؤد)

223. *क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अला मन ज़लमा मुआहदन अविनतक़सहू औ कल्लफ़हू फ़ौक़ा ताक़तिही औ अख़ज़ा मिनहु शैअन बिग़ैरि तीबि नफ़्सिन फ़अना हजीजुहू यौमल क़ियामति।* (अबू दाऊद)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमान किसी मुआहिद (ग़ैर मुस्लिम शहरी) पर अत्याचार करेगा या उस की हक़ मारी करेगा, या उस पर उस की ताक़त से ज़्यादा बोझ (यानी जिज़्या जो मख़सूस क़िस्म का हिफ़ाज़ती टैक्स होता है) डालेगा या उस की कोई चीज़ ज़बरदस्ती ले लेगा तो मैं ख़ुदा की अदालत में मुसलमान के ख़िलाफ़ दायर होने वाले मुक़द्दमा में उस ग़ैर मुस्लिम शहरी का वकील बन कर खड़ा हूंगा।

यहाँ इतनी बात और समझ लीजिये कि इस से पहले पड़ोसी, मेहमान, बीमार और सफ़र के साथियों के जो हक़ बयान हुये हैं उन में मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम बराबर हैं।

हैवानों के हुक़ूक़

(٢٢٤) مَرَّ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِبَعِيْرٍ قَدْ لَحِقَ ظَهْرُهٗ بِبَطْنِهٖ فَقَالَ اتَّقُوْا اللّٰهَ فِيْ هٰذِهِ الْبَهَائِمِ الْمُعْجَمَةِ فَارْكَبُوْهَا صَالِحَةً وَّاتْرُكُوْهَا صَالِحَةً.

(ابوداؤد۔ سہیل ابن الحنظلیہ)

224. *मर्रा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बि-बईरिन क़द लहिक़ा ज़हरुहू बि-बतनिही फ़क़ाला इत्तक़ुल्लाहा फ़ी हाज़िहिल बहाईमिल मुअजमति फ़रकबूहा सालिहतवं वतरुकूहा सालिहतन।*

(अबू दाऊद, सहल इब्नि अल-ख़ज़लिय्या)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र एक ऊँट के पास से हुआ जिस की पीठ उस के पेट से मिल गई थी, तो आप ने कहा कि इन बेजुबान जानवरों के बारे में अल्लाह से डरो, इन पर अच्छी हालत में सवार हो और अच्छी हालत में इन को छोड़ो।

मतलब यह कि जानवर को भूखा रखना ख़ुदा के ग़ज़ब का सबब है जब आदमी काम लेना चाहे तो उसे खुब अच्छी तरह खिला पिला ले, और इतना काम न ले कि वह थक कर बेहाल हो जाए।

(٢٢٥) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ جَعْفَرٍ فَدَخَلَ حَائِطًا لِّرَجُلٍ مِّنَ الْاَنْصَارِ فَاِذَا فِيْهِ جَمَلٌ. فَلَمَّا رَاَى الْجَمَلُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَرْجَرَ وَذَرَفَتْ عَيْنَاهُ، فَاَتَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَسَحَ سَرَاتَهُ اَىْ سَنَامَهُ وَذِفْرَاهُ فَسَكَنَ، فَقَالَ مَنْ رَّبُّ هٰذَا الْجَمَلِ؟ لِمَنْ هٰذَا الْجَمَلُ؟ فَجَاءَ فَتًى مِّنَ الْاَنْصَارِ فَقَالَ هٰذَا لِىْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، فَقَالَ اَفَلَا تَتَّقِى اللّٰهَ فِىْ هٰذِهِ الْبَهِيْمَةِ الَّتِىْ مَلَّكَكَ اللّٰهُ اِيَّاهَا فَاِنَّهُ يَشْكُوْ اِلَىَّ اَنَّكَ تُجِيْعُهُ وَتُدْئِبُهُ.

(رياض الصالحين)

225. अन अब्दिल्लाहिब्नि जअफ़रिन फ़दख़ाला हाईतल लिरजुलिन मिनल अंसारि फ़इजा फ़ीहि जमलुन, फ़लम्मा रअलजमलुन नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा जरजरा व ज़रफ़त ऐनाहु, फ़अताहुन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़मसहा सरातहू ऐ सनामहू व ज़िफ़राहु फ़सकना, फ़काला मर्रब्बु हाज़ल जमलि? लिमन हाज़ल जमलु? फ़जाआ फ़तम्मिनल अंसारि फ़काला हाज़ा ली या रसूलल्लाहि फ़काला अ-फ़ला तत्तकिल्लाहा फ़ी हाज़िहिल बहीमतिल्लती मल्लककल्लाहु इय्याहा फ़इन्नहू यशकू इलय्या अन्नका तुजीउहू व तुज़ईबुहू। (रियाजुस्सालिहीन)

अनुवादः- अब्दुल्लाह बिन जअफ़र से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक अंसारी के बाग़ में दाख़िल हुये जहाँ एक ऊँट बंधा हुआ था, जब ऊँट ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा तो ग़मनाक आवाज़ निकाली और दोनों आँखों से आँसू बहने लगे, हुज़ूर (सल्ल०) उस के पास गये और शफ़क़त से अपना हाथ उस की कोहान और कनपटी पर फेरा तो उस को सुकून हो गया, आप ने पूछा कि इस ऊँट का मालिक कौन है? यह ऊँट किस शख़्स का है? तो एक अंसारी नवजवान आया और उस ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! यह ऊँट मेरा है, आप ने फ़रमाया क्या तू अल्लाह से नहीं डरता? इस बेजुबान जानवर के बारे में जिसे

अल्लाह ने तेरे क़ब्ज़े में दे रखा है? यह ऊँट (अपने आँसुओं और अपनी आवाज़ के ज़रिए) मुझ से शिकायत कर रहा था कि तू इस को भूखा रखता है और बराबर काम लेता है।

(۲۲۶) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَافَرْتُمْ فِى الْخِصْبِ فَاَعْطُوْا الْاِبِلَ حَقَّهَا مِنَ الْاَرْضِ، وَإِذَا سَافَرْتُمْ فِى السَّنَةِ فَاَسْرِعُوْا عَلَيْهَا السَّيْرَ. (مسلم۔ابوہریرہؓ)

226. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा साफ़रतुम फ़िलख़िस्बि फ़-अअतुल इबिला हक़्क़हा मिनलअर्ज़ि, व इज़ा साफ़रतुम फ़िस्सनति फ़-असरिऊ अलैहस्सैरा।*

(मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि०)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम हरयाली के ज़माने में सफ़र करो तो ऊँटों को उन का हिस्सा ज़मीन से दो, और जब तुम क़हत (आकाल) के ज़माने में सफ़र करो तो उन को तेज़ चलाओ।

यानी जब हरयाली का ज़माना हो और ज़मीन पर हर तरफ़ घास उगी हुई हो तो सफ़र में ऊँटों को चरने का मौक़ा दो, और जब आकाल का ज़माना हो और ज़मीन पर घास न हो तो सवारियों को तेज़ चलाओ ताकि जल्द मंज़िल पर पहुंच जाएँ, और रास्ते में भूक प्यास की मुसीबत से बच जाएँ।

(۲۲۷) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ اللّٰهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى كَتَبَ الْاِحْسَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ، فَإِذَا قَتَلْتُمْ فَاَحْسِنُوْا الْقِتْلَةَ، وَإِذَا ذَبَحْتُمْ فَاَحْسِنُوا الذَّبْحَ وَلْيُحِدَّ اَحَدُكُمْ شَفْرَتَهٗ وَلْيُرِحْ ذَبِيْحَتَهٗ. (مسلم۔شداد بن اوسؓ)

227. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नल्लाहा तबारका व तआला कतबल एहसाना अला कुल्लि शैइन, फ़इज़ा क़तलतुम फ़अहसिनुल क़ितलता, व इज़ा ज़बहतुम फ़-अहसिनुज़्ज़ब्हा वल युहिद्दा अहदुकुम शफ़रतहू वल युरिह ज़बीहतहू।*

(मुस्लिम, शद्दाद बिन औस रज़ि०)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हर काम बेहतर तरीक़े से करना फ़र्ज़ क़रार

दिया है तो जब तुम किसी को क़त्ल करो तो उसे अच्छी तरह से क़त्ल करो, और जब तुम ज़िब्ह करो तो अच्छे तरीक़े से ज़िब्ह करो, और तुम में से हर एक को चाहिये कि अपनी छुरी तेज़ कर ले और ज़िब्ह होने वाले जानवर को आराम पहुंचाये (देर तक तड़पने के लिये न छोड़ दे, इस तरह ज़िब्ह करे कि जल्दी से उस की जान निकल जाये)।

(۲۲۸) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَنْھٰی اَنْ تُصَبَّرَ بَھِیْمَۃٌ اَوْ غَیْرُھَا لِلْقَتْلِ. (بخاری، مسلم)

228. *अनिब्नि उमरा काला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यनहा अन तुसब्बरा बहीमतुन औ ग़ैरुहा लिलकत्लि।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मना करते सुना है कि किसी चौपाये को या उस के अलावा किसी चिड़िया या इन्सान को बाँध कर खड़ा किया जाये और उस पर तीर बरसाये जाएँ।

(۲۲۹) نَھٰی رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ عَنِ الضَّرْبِ فِی الْوَجْہِ وَعَنِ الْوَسْمِ فِی الْوَجْہِ. (مسلم۔جابرؓ)

229. *नहा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अनिज़्ज़रबि फ़िलवज्हि व अनिलवस्मि फ़िलवज्हि।* (मुस्लिम, जाबिर रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जानवर के चेहरे पर मारने और उस के चेहरे को दाग़ने से मना फ़रमाया है।

(۲۳۰) اِنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ قَتَلَ عُصْفُوْرًا فَمَا فَوْقَھَا بِغَیْرِ حَقِّھَا سَاَلَہُ اللّٰہُ عَنْ قَتْلِہٖ قِیْلَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ وَمَا حَقُّھَا؟ قَالَ اَنْ یَّذْبَحَھَا فَیَاْکُلَھَا وَلَا یَقْطَعَ رَاْسَھَا فَیَرْمِیَ بِھَا. (مشکوۃ۔عبداللہ بن عمروؓ بن العاص)

230. *इन्ननबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला मन कतला उसफ़ूरन फ़मा फ़ौकहा बिग़ैरि हक़्क़िहा सअलहूल्लाहु अन क़त्लिही क़ीला या रसूलल्लाहि वमा हक़्क़ुहा? काला अंय्यज़्बहहा*

फयाकुलहा वला यक्तआ रासहा फयरमिया बिहा।

(मिश्कात, अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अल–आस)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है जिस ने किसी गौरय्या या उस से भी छोटी चिड़िया को नाहक़ क़त्ल किया तो उसके बारे में अल्लाह तआला पूछ ताछ करेगा। पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल! चिड़ियों का हक़ क्या है? तो आप ने फ़रमाया उन का हक़ यह है कि उन को ज़िब्ह कर के खा लिया जाये और सिर काटने के बाद उन्हें यूँही फेंक न दिया जाये।

इस हदीस से मालूम हुआ कि जानवर का शिकार गोश्त खाने के लिये तो जाइज़ है लेकिन तफ़रीह के लिये शिकार खेलना इस्लाम में मना है। तफ़रीही शिकार का मतलब यह है कि आदमी शिकार तो करे लेकिन उन का गोश्त न खाये, यूंही मार कर फेंक दे।

(٢٣١) عَنْ عَبْدِالرَّحْمٰنِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ عَنْ اَبِيْهِ قَالَ كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ سَفَرٍ فَانْطَلَقَ لِحَاجَتِهٖ فَرَاَيْنَا حُمَرَّةً مَّعَهَا فَرْخَانِ، فَاَخَذْنَا فَرْخَيْهَا، فَجَاءَ تِ الْحُمَرَّةُ فَجَعَلَتْ تُفَرِّشُ، فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ مَنْ فَجَعَ هٰذِهٖ بِوَلَدِهَا؟ رُدُّوْا وَلَدَهَا اِلَيْهَا، وَرَاٰى قَرْيَةَ نَمْلٍ قَدْحَرَقْنَاهَا قَالَ مَنْ حَرَقَ هٰذِهٖ؟ فَقُلْنَا نَحْنُ، قَالَ اِنَّهٗ لَايَنْبَغِيْ اَنْ يُّعَذِّبَ بِالنَّارِ اِلَّا رَبُّ النَّارِ. (ابوداؤد)

231. *अन अब्दिर्रहमानिब्नि अब्दिल्लाहि अन अबीहि काला कुन्ना मआ रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फी सफ़रिन फनतलका लि हाजतिही फरऐना हुमुर्रत॰मअहा फरखानि, फअखज़ना फरखैहा, फजाअतिल हुमुर्रतु फ-जअलत तुफर्रिशु, फजाअन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फक़ाला मन फ़ज्जआ हाज़िही बिवलदिहा? रुद्दू वलदहा इलैहा, व रआ क़रयता नमलिन क़द हरक़्नाहा काला मन हरक़ा हाज़िही? फकुलना नहनु, काला इन्नहू ला यम्बग़ी अय्युअज़्ज़िबा बिन्नारि इल्ला रब्बुन्नारि।* (अबू दाऊद)

अुनवादः– अब्दुर्रहमान अपने बाप अब्दुल्लाह से रिवायत करते हैं अब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि हम एक सफ़र में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे, तो आप (सल्ल॰) अपनी किसी

ज़रूरत के लिये चले गये, इस बीच हम ने एक छोटी चिड़िया देखी, जिस के साथ दो बच्चे थे, हम ने उस के दोनों बच्चों को पकड़ लिया तो चिड़िया अपने परों को खोल कर उन बच्चों के ऊपर मंडलाने लगी। इतने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाये (और उस की बेचैनी देखी) तो फ़रमाया कि इस को बच्चे की वजह से किस ने दुख पहुंचाया है? इस के बच्चे इसे वापस करो, और आप ने उन चियूंटियों के घर देखे जिन को हम ने जला दिया था, तो आप ने पूछा, इन को किस ने जलाया? तो हम ने बताया कि हम लोगों ने जलाया है, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि आग की सज़ा देना आग के मालिक (अल्लाह) का हक़ है।

(۲۳۲) نَهٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ التَّحْرِيْشِ بَيْنَ الْبَهَائِمِ.

232. *नहा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अनित्तहरीशि बैनल बहाईमि।* (तिर्मिज़ी, इब्ने अब्बास रज़ि०)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जानवरों को आपस में लड़ाने से मना फ़रमाया है।

(۲۳۳) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَمَا رَجُلٌ يَمْشِىْ بِطَرِيْقٍ اِشْتَدَّ عَلَيْهِ الْعَطَشُ، فَوَجَدَ بِئْرًا فَنَزَلَ فِيْهَا فَشَرِبَ، ثُمَّ خَرَجَ فَاِذَا كَلْبٌ يَلْهَثُ يَاكُلُ الثَّرٰى مِنَ الْعَطَشِ، فَقَالَ الرَّجُلُ لَقَدْ بَلَغَ هٰذَا الْكَلْبَ مِنَ الْعَطَشِ مِثْلُ الَّذِىْ كَانَ بَلَغَ بِىْ فَنَزَلَ الْبِئْرَ فَمَلَأَ خُفَّهٗ ثُمَّ اَمْسَكَهٗ بِفِيْهِ فَسَقَى الْكَلْبَ فَشَكَرَ اللّٰهُ لَهٗ فَغَفَرَ لَهٗ، فَقَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَاِنَّ لَنَا فِى الْبَهَائِمِ اَجْرًا؟ فَقَالَ نَعَمْ فِىْ كُلِّ ذَاتِ كَبِدٍ رَطْبَةٍ اَجْرٌ.

(بخاری، مسلم۔ ابوہریرہؓ)

233. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बैनमा रजुलुंय्यमशी बितरीकिन इश्तद्दा अलैहिल अतशु, फवजदा बिअरन फनज़ला फीहा फशरिबा, सुम्मा खरजा फइज़ा कल्बुंय्यलहसु याकुलुत्तुरा मिनल अतशि, फकालर्रजुलु लकद बलग़ा हाज़ल कल्बा मिनल अतशि मिसलुल्लज़ी काना बलग़ा बी फनज़ललबिअरा फमलआ ख़ुफ्फहू सुम्मा अमसकहू बिफीहि फसकल कल्बा फशकरल्लाहु लहू फग़फरा लहू, फकालू या रसूलल्लाहि व इन्ना*

लना फिलबहाईमि अजरन? फ़काला नअम फी कुल्लि ज़ाति कैदिन रतबतिन अजरुन। (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक आदमी रास्ता में जा रहा था उस को बहुत ज़्यादा प्यास लगी, इधर उधर देखा एक कुआँ मिला वह उस में उतर गया और पानी पिया, (डोल, रस्सी नहीं थी) जब कुएँ से बाहर आया तो देखा कि एक कुत्ता प्यास की वजह से ज़ुबान निकाले भीगी मिट्टी खा रहा है, उस आदमी ने दिल में सोचा कि इस कुत्ते को उतनी ही प्यास लगी है जितनी कि मुझे लगी थी, वह तुरन्त कुएँ में उतर पड़ा, अपने चमड़े के मोज़े में पानी भर कर मुंह में थामे बाहर आया और कुत्ते को पिलाया तो अल्लाह ने उस के इस अमल की क़द्र की और उस की माफ़ी फ़रमा दी, लोगों ने पूछा क्या चौपायों पर भी रहम करने पर सवाब मिलता है? आप ने फ़रमाया हर जानदार के साथ रहम करने पर सवाब मिलता है।

अख़्लाक़ी बुराईयाँ

तकब्बुर

(۲۳۴) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ كِبْرٍ، فَقَالَ رَجُلٌ اِنَّ الرَّجُلَ يُحِبُّ اَنْ يَّكُوْنَ ثَوْبُهٗ حَسَنًا وَّنَعْلُهٗ حَسَنًا، قَالَ اِنَّ اللّٰهَ جَمِيْلٌ وَّ يُحِبُّ الْجَمَالَ، اَلْكِبْرُ بَطَرُ الْحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ.

(مسلم۔ابن مسعود)

234. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला यदख़ुलुल-जन्नता मन काना फी क़ल्बिही मिस्क़ाला ज़र्रतिन मिन किबरिन, फक़ाला रजुलुन इन्नर्रजुला युहिब्बु अय्यंकूना सौबुहू हसनवं वनअलुहू हसनन, काला इन्नल्लाहा जमीलुवं व युहिब्बुल जमाला, अल किब्रु बतरुल-हक़्क़ि व ग़मतुन्नासि।*

(मुस्लिम, इब्ने मसऊद)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह शख़्स जिस के दिल में ज़र्रा बराबर घमंड होगा जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा। उस पर एक आदमी ने पूछा, आदमी चाहता है कि उस के कपड़े और जूते अच्छे हों (तो क्या यह भी घमंड में दाख़िल है? और क्या ऐसा शौक़ रखने वाला जन्नत में नहीं जाएगा?)आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया (नहीं यह तकब्बुर नहीं है) अल्लाह पाकीज़ा है और सफ़ाई सुथराई को पसन्द करता है। घमंड के मअने हैं अल्लाह के हक़ बन्दगी को अदा न करना और उस के बन्दों को नीचा जानना।

(۲۳۵) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ الْجَوَّاظُ وَلَا الْجَعْظَرِيُّ.

(ابوداؤد۔حارثہ بن وہب)

235. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला यदख़ुलुल जन्नतल जवाज़ु वलल-जअज़रिय्यु।* (अबू दाऊद, हारसा बिन वहब)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया घमंडी आदमी जन्नत में दाख़िल न होगा और न वह जो झोटी शेखी बघारता है।

असल हदीस में "जव्वाज़" और "जअज़रिय्य" के शब्द आये हैं। जव्वाज़ का मतलब है घमंडी, घमंड के साथ चलने वाला, बदमाश, बदकार, माल को जमा करने वाला बख़ीली करने वाला। और "जअज़री" उस को कहते हैं जिस के पास है तो कुछ नहीं, मगर लोगों के सामने अपने पास क़ारून का ख़ज़ाना होने का एलान करता फिरता है, यह दौलत के साथ मख़सूस नहीं, ज़ुहद व तक़्वा और इल्म की दुनिया में भी घमंडी और झूटी शेख़ी बघारने वाले पाये जाते हैं।

(٢٣٦) عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ نِ الْخُدْرِیِّ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ اَزْرَۃُ الْمُؤْمِنِ اِلٰی اَنْصَافِ سَاقَیْہِ، وَلَا جُنَاحَ عَلَیْہِ فِیْمَا بَیْنَہٗ وَبَیْنَ الْکَعْبَیْنِ وَمَا اَسْفَلَ مِنْ ذٰلِکَ فَفِی النَّارِ، قَالَ ذٰلِکَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، وَلَا یَنْظُرُ اللّٰہُ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ مَنْ جَرَّ اِزَارَہٗ بَطَرًا۔ (ابوداؤد)

236. *अन अबी सईदिनिल ख़ुदरिय्यि काला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यक़ूलु अज़्रतुल मोमिनि इला अनसाफ़ा साक़ैहि, वला जुनाहा अलैहि फ़ीमा बैनहू व बैनल कअबैनि, वमा असफ़ला मिन ज़ालिका फ़-फ़िन्नारि, काला ज़ालिका सलासा मर्रातिन, वला यनज़ुरुल्लाहु योमल क़ियामति मन जर्रा इज़ारहू बतरन।* (अबू दाऊद)

अनुवादः- अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) कहते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना कि मोमिन का तहबन्द तो उस की आधी पिंडली तक रहता है, और अगर उस से नीचे टख़नों से ऊपर रहे तो कोई गुनाह नहीं, और जो टख़नों से नीचे हो तो वह जहन्नम में है (यानी गुनाह की बात है) यह बात आप (सल्ल०) ने तीन बार फ़रमाई (ताकि लोगों पर उस की अहमियत वाज़ेह हो जाये) और फिर फ़रमाया, और

अल्लाह उस शख़्स की तरफ़ क़यामत के दिन नहीं देखेगा जो शेख़ी के जज़्बे से अपना तहबन्द ज़मीन पर घसीटेगा।

(۲۳۷) عَنِ ابْنِ عُمَرَ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ جَرَّ ثَوْبَہٗ خُیَلَاءَ لَمْ یَنْظُرِ اللّٰہُ اِلَیْہِ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ، فَقَالَ اَبُوْ بَکْرٍ اِزَارِیْ یَسْتَرْخِیْ اِلَّا اَنْ اَتَعَاھَدَہٗ، فَقَالَ لَہٗ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّکَ لَسْتَ مِمَّنْ یَّفْعَلُہٗ خُیَلَاءَ. (بخاری۔ابن عمرؓ)

237. अन इब्ने उमरा अन्ननबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला मन जर्रा सौबहू ख़ुयलाआ लम यनज़ुरिल्लाहु इलैहि यौमल क़ियामति, फ़-काला अबू बक्रिन इज़ारी यसतरख़ी इल्ला अन अतआहदा, फ़काला लहू रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नका लस्ता मिम्मय्यफ़अलुहू ख़ुयलाआ।

(बुख़ारी, इब्ने उमर रज़ि०)

अनुवादः– इब्ने उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो अपना कपड़ा (तहबन्द, पाजामा घमंड से ज़मीन पर घसीटेगा अल्लाह क़यामत के दिन उस की तरफ़ नहीं देखेगा (रहमत की नज़र न डालेगा) अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने कहा मेरा तहबन्द ढीला हो कर टख़ने के नीचे चला जाया करता है अगर मैं संभालता न रहूँ (तो क्या मैं भी अपने रब की रहमत की नज़र से महरूम रह जाऊँगा?) आप ने फ़रमाया नहीं तुम घमंड से तहबन्द घसीटने वालों में से नहीं हो (फिर तुम ख़ुदा की निगाहे करम से क्यों महरूम रहोगे)।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के तहबन्द के ढीला होने की वजह यह न थी कि उन के तोंद निकल आई थी, बल्कि बदन की कमज़ोरी थी, हज़रत बहुत कमज़ोर जिस्म के थे। हुज़ूर (सल्ल०) ने यह फ़रमाया था कि घमंड और शेख़ी के जज़्बा से जो एड़ीतोड़ तहबन्द बांधेगा वह ख़ुदा की निगाहे करम से महरूम रहेगा और अबू बक्र (रज़ि०) ने यह पूरी बात सुनी थी और जानते थे कि वह घमंड के तौर पर जान बूझ कर ऐसा नहीं करते थे। लेकिन जब आदमी पर आख़िरत की फ़िक्र सवार हो जाती है तो गुनाह की परछाईं से भी दूर भागता है।

(٢٣٨) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ كُلْ مَاشِئْتَ وَالْبَسْ مَا شِئْتَ مَا اَخْطَأَتْكَ اثْنَتَانِ سَرَفٌ وَّ مَخِيْلَةٌ. (بخاری)

238. *अनिब्नि अब्बासिन काला कुल मा शिअता वलबस मा शिअता मा अख़तअतकसनतानि सरफ्फुवं व मख़ीलतुन।* (बुख़ारी)

अनुवादः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि॰) फ़रमाते हैं, जो चाहो खाओ और जो चाहो पहनो मगर इस शर्त पर कि तुम्हारे अन्दर घमंड और फ़ुज़ूलख़र्ची न हो।

जुल्म

(٢٣٩) اِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الظُّلْمُ ظُلُمٰتٌ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ. (متفق علیہ۔ابن عمرؓ)

239. *इन्ननननबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कालज़्ज़ुल्मु ज़ुलुमातुन योमल कियामति।* (मुत्तफ़क़ अलैहि, इब्ने उमर रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ज़ुल्म क़यामत के दिन ज़ालिम के लिसे सख़्त अंधेरा बनेगा।

(٢٤٠) عَنْ اَوْسِ بْنِ شُرَحْبِيْلٍ اَنَّهٗ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ مَّشٰى مَعَ ظَالِمٍ لِيُقَوِّيَهٗ وَهُوَ يَعْلَمُ اَنَّهٗ ظَالِمٌ فَقَدْ خَرَجَ مِنَ الْاِسْلَامِ. (مشکوٰۃ)

240. *अन औसिब्नि शुरहबीलिन अन्नहू समिआ रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मम्मशा मआ ज़ालिमिल लियुक़व्वियहू वहुवा यअलमु अन्नहू ज़ालिमुन फक़द ख़रजा मिनल इस्लामि।*

(मिश्कात)

अनुवादः- औस बिन शुरहबील (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुये सुना कि जो शख़्स किसी ज़ालिम का साथ दे कर उस को ताक़त पहुंचाएगा और वह जानता है कि ज़ालिम है, तो वह इस्लाम से निकल गया। मतलब यह कि जानते बूझते किसी ज़ालिम की तरफ़दारी करना और उस का साथ देना ईमान व इस्लाम के ख़िलाफ़ बात है।

(۲۴۱) إِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَتَدْرُوْنَ مَا الْمُفْلِسُ؟ قَالُوْا الْمُفْلِسُ
فِيْنَا مَنْ لَّا دِرْهَمَ لَهٗ وَلَا مَتَاعَ، فَقَالَ إِنَّ الْمُفْلِسَ مِنْ اُمَّتِيْ مَنْ يَّاتِيْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ بِصَلٰوةٍ
وَّصِيَامٍ وَّزَكٰوةٍ، وَّيَاتِيْ قَدْ شَتَمَ هٰذَا. وَقَذَفَ هٰذَا. وَاَكَلَ مَالَ هٰذَا، وَسَفَكَ دَمَ هٰذَا،
وَضَرَبَ هٰذَا، فَيُعْطٰى هٰذَا مِنْ حَسَنَاتِهٖ، فَاِنْ فَنِيَتْ حَسَنَاتُهٗ قَبْلَ اَنْ يُّقْضٰى مَا عَلَيْهِ اُخِذَ
مِنْ خَطٰيٰهُمْ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ ثُمَّ طُرِحَ فِى النَّارِ. (مسلم، ابو هريرةؓ)

241. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला अ-तदरुना मलमुफ़्लिसु? कालूल-मुफ़्लिसु फ़ीना मल्ला दिर्हमा लहू वला मताआ, फ़काला इन्नल मुफ़्लिसा मिन उम्मती मय्याती यौमल क़ियामति बिसलातिवं व सियामिवं वज़्कातिन, व याती क़द शतमा हाज़ा, व क़ज़फ़ा हाज़ा, व अकला माला हाज़ा, व सफ़का दमा हाज़ा व ज़रबा हाज़ा, फ़युअता हाज़ा मिन हसनातिही, फ़इन फ़नियत हसनातुहू क़ब्ला अय्युक़ज़ा मा अलैहि उख़िज़ा मिन ख़तायाहुम फ़तुरिहत अलैहि सुम्मा तुरिहा फ़िन्नारि।*

(मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम जानते हो कि दीवालिया और मुफ़्लिस कौन है लोगों ने कहा कि मुफ़्लिस हमारे यहाँ वह शख़्स कहलाता है जिस के पास न तो दिर्हम हो और न कोई और सामान, आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत का मुफ़्लिस और दीवालिया वह है जो क़यामत के दिन अपनी नमाज़, रोज़ा और ज़कात के साथ अल्लाह के पास हाज़िर होगा और उसी के साथ उस ने दुनिया में किसी को गाली दी होगी, और किसी पर तुहमत लगाई होगी, किसी का माल मार खाया होगा, किसी को उस ने क़त्ल कर दिया होगा और किसी को नाहक़ उस ने मारा होगा तो उन तमाम मज़्लूमो में उस की नेकियाँ बाँट दी जाएँगी, फिर अगर उस की नेकियाँ ख़त्म हो गईं और मज़्लूमों के हुक़ूक़ 'अभी बाक़ी हैं तो उन की ग़लतियाँ उस के हिसाब में डाल दी जाएँगी और फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।

इस हदीस के ज़रिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बन्दों के हुकूक की अहमियत बताना चाहते हैं इस लिये ख़ुदा के हुकूक़ अदा करने

वालों को चाहिये कि वह बन्दों की हक़मारी न करें, वर्ना यह नमाज़, रोज़ा और दूसरे नेक काम सब ख़तरे में पड़ जाएँगे।

(۲۴۲) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِيَّاكَ وَدَعْوَةَ الْمَظْلُوْمِ، فَاِنَّمَا يَسْأَلُ اللّٰهَ تَعَالٰى حَقَّهٗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَمْنَعُ ذَاحَقٍّ حَقَّهٗ. (مشکوۃ۔علیؓ)

242. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इय्याका व दअवतल मज़लूमि फइन्नमा यसअलुल्लाहा तआला हक़्क़हू व इन्नल्लाहा ला यमनउ ज़ा हक़्क़िन हक़्क़हू।* (मिश्कात, अली रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मज़लूम की पुकार से बचो, इस लिये कि वह अल्लाह तआला से अपना हक़ माँगता है, और अल्लाह किसी हक़ वाले को उस के हक़ से महरूम नहीं करता।

इस हदीस में मज़लूम की आह लेने से रोका गया है। वह अल्लाह तआला के सामने तुम्हारे ज़ुल्म की दास्तान बयान करेगा और अल्लाह न्यायवान है वह कसी हक़ वाले को उस के हक़ से महरूम नहीं करता, और इस वजह से वह ज़ालिम को बहुत तरह की आफ़तों और बेचैनियों में मुबतला करेगा।

गुस्सा

(۲۴۳) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ الشَّدِيْدُ بِالصُّرَعَةِ اِنَّمَا الشَّدِيْدُ الَّذِیْ يَمْلِكُ نَفْسَهٗ، عِنْدَ الْغَضَبِ. (بخاری۔ابوہریرہؓ)

243. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लैसश्शदीदु बिस्सुरअति इन्नमश्शदीदुल्लज़ी यमलिकु नफ़सहु इन्दल ग़ज़बि।*

(बुख़ारी, अबू हुरैरा रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ताक़तवर वह शख़्स नहीं है जो कुश्ती में दूसरों को पिछाड़ देता है, बल्कि ताक़तवर तो हक़ीक़त में वह है जो गुस्से के मौक़े पर अपने ऊपर क़ाबू रखता है (यानी गुस्से में आकर कोई ऐसी हरकत नहीं करता जो अल्लाह और रसूल को नापसन्द है)।

(٢٤٤) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ الْغَضَبَ مِنَ الشَّيْطٰنِ وَاِنَّ الشَّيْطٰنَ
خُلِقَ مِنَ النَّارِ، وَاِنَّمَا تُطْفَأُ النَّارُ بِالْمَاءِ، فَاِذَا غَضِبَ اَحَدُكُمْ فَلْيَتَوَضَّأْ.

(ابوداؤد۔ عطیہ سعدیؓ)

244. *क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नल ग़ज़बा मिनश्शैतानि व इन्नश्शैताना ख़ुलिक़ा मिनन्नारि, व इन्नमा तुतफ़उन्नारु बिलमाई, फ़इज़ा ग़ज़िबा अहदुकुम फ़लयतवज़्ज़अ।*

(अबू दाऊद, अतिय्या सअदी)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं गुस्सा शैतानी असर का नतीजा है, और शैतान आग से बनाया गया है, और आग सिर्फ़ पानी से बुझती है, तो जिस किसी को गुस्सा आये उसे चाहिये कि वुज़ू करे।

इस हदीस में और दूसरी हदीसों में जिस गुस्से को शैतानी असर कहा गया है वह गुस्सा है जो अपनी ज़ात के लिये आये, रहा वह गुस्सा जो मोमिन को दीन के दुश्मनों पर आता है वह गुस्सा बहुत ही अच्छी सिफ़त है, अगर कोई दीन को तबाह करने आ रहा है तो उस वक़्त गुस्सा न आना ईमान की कमी की निशानी है।

(٢٤٥) اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا غَضِبَ اَحَدُكُمْ وَهُوَ قَائِمٌ
فَلْيَجْلِسْ، فَاِنْ ذَهَبَ عَنْهُ الْغَضَبُ وَاِلَّا فَلْيَضْطَجِعْ. (مشکوٰۃ۔ ابوذرؓ)

245. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा क़ाला इज़ा ग़ज़िबा अहदुकुम वहुवा क़ाईमुन फ़लयजलिस, फ़इन ज़हबा अनहुल ग़ज़बु व इल्ला फ़लयज़्तजिअ।* (मिश्कात, अबूज़र रज़ि॰)

अनवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम में से किसी को खड़े होने की हालत में गुस्सा आये तो बैठ जाये, इस तरकीब से गुस्सा चला जाये तो ठीक है, वर्ना लेट जाये।

इस हदीस में और इस से पहली वाली हदीस में गुस्से को ख़त्म करने की जो तरकीबें हुज़ूर (सल्ल॰) ने बताई हैं तजर्बे से मालूम हुआ है कि वह सही है।

(۲۴۶) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ مُوْسَی بْنُ عِمْرَانَ عَلَیْہِ السَّلَامُ یَارَبِّ مَنْ اَعَزُّ عِبَادِکَ عِنْدَکَ؟ قَالَ مَنْ اِذَا قَدَرَ غَفَرَ۔ (مشکوۃ۔ابوہریرہؓ)

246. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला मूसब्नु इमराना अलैहिस्सलामु या रब्बि मन अअज़्ज़ु इबादिका इनदका? काला मन इज़ा क़दरा ग़फ़रा।* (मिश्कात, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से पूछा, ऐ मेरे रब! आप के बन्दों में से कौन सब से ज़्यादा प्यारा है? अल्लाह तआला ने कहा, वह जो बदला लेने की ताक़त रखने के बावजूद माफ़ कर दे।

(۲۴۷) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَنْ خَزَنَ لِسَانَہٗ سَتَرَ اللّٰہُ عَوْرَتَہٗ وَمَنْ کَفَّ غَضَبَہٗ کَفَّ اللّٰہُ عَنْہُ عَذَابَہٗ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ، وَمَنِ اعْتَذَرَ اِلَی اللّٰہِ قَبِلَ اللّٰہُ عُذْرَہٗ۔

(مشکوۃ۔انسؓ)

247. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन ख़ज़ना लिसानहू सतरल्लाहु औरतहू व मन कफ़्फ़ा ग़ज़बहू कफ़्फ़ल्लाहु अनहु अज़ाबहू यौमल क़ियामति, व मनिअतज़रा इलल्लाहि क़बिलल्लाहु उज़्रहू।* (मिश्कात,अनस रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जो (हक़ के ख़िलाफ़ बोलने से) अपनी ज़ुबान की हिफ़ाज़त करेगा, अल्लाह उस के ऐब पर पर्दा डालेगा और जो अपने गुस्से को रोकेगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन अज़ाब को उस से हटाएगा, और जो ख़ुदा से माफ़ी मांगेगा ख़ुदा उस को माफ़ कर देगा।

(۲۴۸) اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ ثَلَاثٌ مِّنْ اَخْلَاقِ الْاِیْمَانِ مَنْ اِذَا غَضِبَ لَمْ یُدْخِلْہُ غَضَبُہٗ فِیْ بَاطِلٍ، وَمَنْ اِذَا رَضِیَ لَمْ یُخْرِجْہُ رِضَاہُ مِنْ حَقٍّ، وَمَنْ اِذَا قَدَرَ لَمْ یَتَعَاطَ مَا لَیْسَ لَہٗ۔ (مشکوۃ۔انسؓ)

248. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला सलासुम मिन अख़लाक़िल ईमानि मन इज़ा ग़ज़िबा लम युदख़िलहु*

ग़ज़बुहू फ़ी बातिलिन, वमन इज़ा रज़िया लम युख़्रिजहु रिज़ाहु मिन हक़्क़िन, व मन इज़ा क़दरा लम यतआज़ा मा लैसा लहू।

(मिश्कात, अनस रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीन चीज़ें मोमिनाना अख़लाक़ में से हैं, एक यह कि जब किसी को गुस्सा आये तो उस का गुस्सा उस से नाजाइज़ काम न कराये, दूसरी यह कि जब वह ख़ुश हो तो उस की ख़ुशी उसे हक़ के दायरे से बाहर न निकाले, और तीसरी बात यह कि क़ुदरत रखने के बावजूद दूसरे की चीज़ न हथिया ले जिस के लेने का उसे हक़ नहीं है।

(۲۴۹) اِنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَوْصِنِيْ قَالَ لَا تَغْضَبْ فَرَدَّدَ ذٰلِكَ مِرَارًا قَالَ لَا تَغْضَبْ. (بخاری۔ابوہریرہؓ)

249. *इन्ना रजुलन क़ाला लिन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा औसीनी क़ाला ला तग़ज़ब फ़रद्ददा ज़ालिका मिरारन क़ाला ला तग़ज़ब।* (बुख़ारी, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- एक आदमी ने (जो शायद मिज़ाज का तेज़ था) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा मुझे कोई वसिय्यत फ़रमाईये, आप ने फ़रमाया गुस्सा न किया करो, उस आदमी ने बार बार कहा मुझे वसिय्यत फ़रमाईये आप ने हर बार यही फ़रमाया, "गुस्सा न किया करो"।

किसी की नक़ल उतारना

(۲۵۰) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا اُحِبُّ اِنِّيْ حَكَيْتُ اَحَدًا وَّاَنَّ لِيْ كَذَا وَ كَذَا. (ترمذی۔عائشہؓ)

250. *क़ालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा उहिब्बु इन्नी हकैतु अहदवं वअन्ना ली कज़ा व कज़ा।* (तिर्मिज़ी, आयशा रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मैं किसी की नक़ल उतारना पसन्द नहीं करता, चाहे उस के बदले मुझे बहुत सी दौलत मिले।

दूसरों की मुसीबत पर खुश होना

(٢٥١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَاتُظْهِرِ الشَّمَاتَةَ لِاَخِيْكَ فَيَرْحَمَهُ اللّٰهُ وَيَبْتَلِيْكَ. (ترمذی۔ واثلہؓ)

251. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला तुज़हिरिश्शमातता लिअख़ीका फ़यरहमहुल्लाहु व यबतलियका।*
(तिर्मिज़ी, वासिला रज़ि॰)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू अपने भाई की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़्हार न कर वर्ना अल्लाह उस पर रहम फ़रमाएगा (और मुसीबत हटा देगा) और तुझे मुसीबत में मुबतला कर देगा।

जिन दो आदमियों के बीच दुश्मनी होती है, उन में से किसी एक पर उस बीच कोई मुसीबत आ पड़ती है तो दूसरा बहुत ख़ुशी मनाता है, यह इस्लामी ज़ेहनियत के ख़िलाफ़ बात है, मोमिन अपने भाई की मुसीबत पर ख़ुशी नहीं मनाता, अगरचे दोनों के बीच दुश्मनी हो।

झूट

(٢٥٢) اِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَرْبَعٌ مَّنْ كُنَّ فِيْهِ كَانَ مُنَافِقًا خَالِصًا، وَمَنْ كَانَتْ فِيْهِ خَصْلَةٌ مِّنْهُنَّ كَانَتْ فِيْهِ خَصْلَةٌ مِّنَ النِّفَاقِ حَتّٰى يَدَعَهَا، اِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ، وَاِذَا حَدَّثَ كَذَبَ وَاِذَا وَعَدَ اَخْلَفَ، وَاِذَا خَاصَمَ فَجَرَ. (بخاری، مسلم۔ عبداللہ بن عمروؓ)

252. *इन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला अरबउम मन कुन्ना फ़ीहि काना मुनाफ़िक़न ख़ालिसन, व मन कानत फ़ीहि ख़सलतुम मिनहुन्ना कानत फ़ीहि ख़सलतुम मिनन्निफ़ाक़ि हत्ता यदअहा, इज़अतुमिना ख़ाना, वइज़ा हद्दसा कज़बा वइज़ा वअदा अख़लफ़ा, वइज़ा ख़ासमा फ़जरा।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अब्दुल्लाह बिन अमर रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि चार ख़सलतें जिस शख़्स में होंगी वह पक्का मुनाफ़िक़ होगा और जिस शख़्स के अन्दर उन में से कोई एक ख़सलत होगी तो उस के अन्दर निफ़ाक़ की एक ख़सलत होगी, यहाँ तक कि उस को छोड़ दे, वह चार ख़सलतें यह हैं, जब उस के पास

कोई अमानत रखी जाये तो वह ख़यानत करे। और जब बात करे तो झूट बोले और जब वादा करे तो उसे पूरा न करे, और जब किसी से उस का झगड़ा हो जाये तो गाली पर उतर आये।

(۲۵۳) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفْرَى الْفِرٰى اَنْ يُّرِىَ الرَّجُلُ عَيْنَيْهِ مَالَمْ تَرَيَا. (بخاری۔ابن عمرؓ)

253. *कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अफरलफिरा अय्युरियर्रजुलु ऐनैहि मालम तरया।* (बुख़ारी, इब्ने उमर रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सब से बड़ा झूट यह है कि आदमी अपनी दोनों आँखों को वह चीज़ दिखाये जो उन दोनों आँखों ने नहीं देखी।

यानी उस ने ख़्वाब तो कुछ भी न देखा लेकिन जागने के बाद ख़ूब अच्छी और दिलचस्प बातें बताता है, कहता है कि यह मैं ने ख़्वाब में देखा है, ऐसा करना गोया अपनी आँखों से झूट बुलवाना है।

(۲۵۴) عَنْ اَسْمَاءَ بِنْتِ عُمَيْسٍ قَالَتْ زَفَفْنَا اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْضَ نِسَائِهٖ، فَلَمَّا دَخَلْنَا عَلَيْهِ اَخْرَجَ عُسًّا مِّنْ لَّبَنٍ فَشَرِبَ مِنْهُ ثُمَّ نَاوَلَهٗ امْرَاَتَهٗ، فَقَالَتْ لَا اَشْتَهِيْهِ، فَقَالَ لَا تَجْمَعِيْ جُوْعًا وَّكَذِبًا. (معجم صغیر طبرانی)

254. *अन असमाआ बिन्ते उमैसिन कालत ज़फफना इला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बअज़ा निसाईही, फलम्मा दख़लना अलैहि अख़रजा उस्सम मिन लबनिन फशरिबा मिनहु सुम्मा नावलहू इमरअतहू, फकालत ला अशतहीहि, फकाला ला तजमई जूअन वकज़बन।* (मुअजम सग़ीर तिबरानी)

अनुवादः- असमा बिन्ते उमैस (रज़ि॰) कहती हैं कि हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक दुल्हन को लेकर हुज़ूर (सल्ल॰) के घर गये जब हम आप के घर पहुंचे तो आप दूध का एक प्याला निकाल कर लाये, फिर आप ने अपनी चाहत के मुताबिक़ पिया और उस के बाद अपनी बीवी को दिया, उन्हों ने कहा मुझे ख़्वाहिश नहीं है, तो आप ने फ़रमाया तुम भूक और झूट को जमा न करो, हुज़ूर ने महसूस किया कि भूक

तो उन्हें लगी है लेकिन तकल्लुफ़ फ़रमा रही हैं, इस लिये आप ने झूटे तकल्लुफ़ से मना फ़रमाया।

(٢٥٥) عَنْ سُفْيَانَ بْنِ اَسِيْدِ نِ الْحَضْرَمِيِّ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ كَبُرَتْ خِيَانَةً اَنْ تُحَدِّثَ اَخَاكَ حَدِيْثًا وَّهُوَلَكَ بِهٖ مُصَدِّقٌ وَّاَنْتَ بِهٖ كَاذِبٌ. (ابوداؤد)

255. *अन सुफ़ियानब्नि असीदिनिल हज़रमी काला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यकूलु कबुरत ख़ियानतन अन तुहद्दिसा अख़ाका हदीसवं वहुवा लका बिही मुसद्दिकुवं वअनता बिही काज़िबुन।* (अबू दाऊद)

अनुवादः- सुफ़ियान बिन असीद हज़रमी ने कहा मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुये सुना कि यह बहुत ही बड़ी ख़यानत है कि तुम अपने भाई से कोई बात कहो और वह तुम्हारी बात को सच समझे हालाँकि तुम ने जो बात उस से कही वह झूटी थी।

(٢٥٦) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَامِرٍ قَالَ دَعَتْنِىْ اُمِّىْ يَوْمًا وَّرَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَاعِدٌ فِىْ بَيْتِنَا، فَقَالَتْ هَا تَعَالَ اُعْطِيْكَ فَقَالَ لَهَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَااَرَدْتُّ اَنْ تُعْطِيْهِ؟ قَالَتْ اَرَدْتُّ اَنْ اُعْطِيَهُ تَمْرًا، فَقَالَ لَهَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَمَا اِنَّكَ لَوْ لَمْ تُعْطِيْهِ شَيْئًا كُتِبَتْ عَلَيْكِ كَذْبَةٌ. (ابوداؤد)

256. *अन अब्दिल्लाहिब्नि आमिरिन काला दअतनी उम्मी यौमवं व रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काइदुन फ़ी बैतिना फ़-कालतहा तआला उअतीका फ़-काला लहा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा अरत्तु अन तुअतीहि? कालत अरत्तु अन उअतियहू तमरन, फ़-काला लहा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अमा इन्नका लौ लम तुअतीहि शैअन कुतिबत अलैकि कज़्बतुन।* (अबूदाऊद रज़ि॰)

अनुवादः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि एक दिन जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे घर तशरीफ़ रखते थे, मेरी माँ ने मुझे बुलाया "यहाँ आ!

मैं तुझे एक चीज़ दूंगी"। तो हुज़ूर (सल्ल॰) ने पूछा कि तुम उसे क्या देना चाहती हो? माँ ने कहा, मैं उसे खुजूर देना चाहती हूँ आप (सल्ल॰) ने माँ से फ़रमाया कि अगर तू देने के लिये बुलाती और न देती, तो तेरे आमालनामे में यह झूट लिख दिया जाता।

मालूम हुआ कि यह जो माँ बाप आमतौर से अपने बच्चों के साथ करते हैं कि जो कुछ देने के बहाने बुलाते हैं, हालांकि देने का इरादा नहीं होता, तो यह खुदा के यहाँ झूट माना जाएगा आमालनामे में यह झूट की फ़ेहरिस्त में लिखा जाएगा।

(۲۵۷) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ لَا یَصْلُحُ الْکَذِبُ فِیْ جِدٍّ وَّلَاهَزْلٍ وَّلَا اَنْ یَّعِدَ اَحَدُکُمْ وَلَدَهٗ شَیْئًا ثُمَّ لَا یُنْجِزَ لَهٗ. (الادب المفرد صفحہ ۵۸)

257. *अन अब्दिल्लाहि काला ला यसलुहुल कज़िबु फ़ी जिद्दिवं वला हज़्लिवं वला अय्यँईदा अहदुकुम वलदहू शैअन सुम्मा ला युनजिज़ा लहू।* (अलअदबुल मुफ़रद पृष्ठ 58)

अनुवाद:- अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि झूट बोलना किसी हाल में जाइज़ नहीं न तो संजीदगी के साथ और न मज़ाक़ के तौर पर। और यह भी जाइज़ नहीं कि तुम में से कोई अपने बच्चे से किसी चीज़ के देने का वादा करे और फिर पूरा न करे।

(۲۵۸) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَیْلٌ لِّمَنْ یُّحَدِّثُ فَیَکْذِبُ لِیُضْحِکَ بِهِ الْقَوْمَ وَیْلٌ لَّهٗ وَیْلٌ لَّهٗ. (ترمذی۔ بہز بن حکیمؓ)

258. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा वैलुल लिमय्युहद्दिसू फ़यकज़िबु लियज़्हिका बिहिल क़ौमा वैलुल्लहू वैलुल्लहू।* (तिर्मिज़ी, बहज़ बिन हकीम रज़ि॰)

अनुवाद:- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़राबी और नामुरादी है उस शख़्स के लिये जो झूटी बातें इस लिये कहता है कि लोगों को हंसाए, ख़राबी है उस के लिये, ख़राबी है उस के लिये।

इस हदीस में उन लोगों को ख़बरदार किया गया है जो बातें करते हुये कुछ झूट मिला कर के बात चीत को चटपटी और मज़ेदार बनाते हैं और उस से मज़ा हासिल करते हैं।

(٢٥٩) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَا زَعِيْمٌ بِبَيْتٍ فِيْ رَبَضِ الْجَنَّةِ لِمَنْ تَرَكَ الْمِرَاءَ وَاِنْ كَانَ مُحِقًّا، وَبِبَيْتٍ فِيْ وَسَطِ الْجَنَّةِ لِمَنْ تَرَكَ الْكَذِبَ وَاِنْ كَانَ مَازِحًا، وَبِبَيْتٍ فِيْ اَعْلَى الْجَنَّةِ لِمَنْ حَسَّنَ خُلُقَهُ. (ابوداؤد۔ ابوامامہؓ)

259. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अना ज़ईमुन बिबैतिन फी रबज़िल जन्नति लिमन तरकल मिराआ व इन काना मुहिक़्क़न व बिबैतिन फी वसतिल जन्नति लिमन तरकल कज़िबा व इन काना माज़िहन, व बिबैतिन फी अअ़लल-जन्नति लिमन हस्सना ख़ुलुक़हू।* (अबूदाऊद, अबू उमामा रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स मुनाज़रह (मज़हबी बहस) न करे अगरचे वह हक़ पर हो, तो मैं उस के लिये जन्नत के गोशों में से एक घर का ज़िम्मा लेता हूँ, और जो झूट न बोले अगरचे हंसी के तौर पर ही क्यों न हो तो मैं उस के लिये जन्नत के बीच में एक घर का ज़िम्मा लेता हूँ और जो अपने अख़लाक़ को बेहतर बना ले तो मैं उस के लिए जन्नत के सब से ऊँचे हिस्से में घर का ज़िम्मा लेता हूँ

फ़हशगोई और बदज़ुबानी

(٢٦٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اَثْقَلَ شَيْءٍ يُوْضَعُ فِيْ مِيْزَانِ الْمُؤْمِنِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ خُلُقٌ حَسَنٌ، وَاِنَّ اللّٰهَ يُبْغِضُ الْفَاحِشَ الْبَذِيَّ. (ترمذی۔ ابوالدرداءؓ)

260. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्ना असक़ला शैइंय्यूज़उ फी मीज़ानिल मोमिनि यौमल क़ियामति ख़ुलक़ुन हसनुन, व इन्नल्लाहा युबग़िज़ुल फाहिशल बज़िय्या।*

(तिर्मिज़ी, अबुद्दरदा रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सब से वज़नी चीज़ जो क़यामत के दिन मोमिन की मीज़ान

(तराज़ू) में रखी जाएगी वह उस का हुस्न-ए-अख़लाक़ होगा। और अल्लाह उस शख़्स को बहुत ही नापसन्द करता है जो ज़ुबान से बेहयाई की बात निकालता और बदज़ुबानी करता है।

"ख़लकुन हसनुन" की तशरीह करते हुये अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने कहा है "*हुवा तलाक़तुल वज्हि व बज़्लुल मअरूफ़ि व कफ़्फ़ल अज़ा*" (अच्छा अख़लाक़ यह है कि आदमी जब किसी से मिले तो हंसते हुये चेहरे से मिले, और अल्लाह के मुहताज बन्दों पर माल ख़र्च करे, और किसी को तकलीफ़ न दे।

(٢٦١) عَنْ عَلِيِّ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ قَالَ الْقَائِلُ الْفَاحِشَةَ وَالَّذِيْ يَشِيْعُ بِهَا فِي الْاِثْمِ سَوَاءٌ.

(مشکوٰۃ)

261. *अन अलिय्यिब्नि अबी तालिबिन क़ालल क़ाईलुल फ़ाहिशता वल्लज़ी यशीउ बिहा फ़िल इस्मि सवाउन।* (मिश्कात)

अनुवादः- हज़रत अली (रज़ि॰) ने फ़रमाया कि गंदी बात करने वाला और गंदी बातों को फैलाने वाला यह दोनों गुनाह बराबर हैं।

दोरुख़ापन

(٢٦٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَجِدُوْنَ شَرَّالنَّاسِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ذَاالْوَجْهَيْنِ الَّذِيْ يَاتِيْ هٰؤُلَاءِ بِوَجْهٍ وَّهٰؤُلَاءِ بِوَجْهٍ. (متفق علیہ۔ابوہریرۃؓ)

262. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा तजिदूना शर्रन्नासि यौमल कियामति ज़लवजहैनिल्लज़ी यअती हाउलाई बिवजहिन व हाउलाई बिवजहिन।* (मुत्तफ़क़ अलैहि, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम क़यामत के दिन सब से बुरा आदमी उस शख़्स को पाओगे जो दुनिया में दो चेहरे रखता था, कुछ लोगों से एक चेहरे के साथ मिलता था, और दूसरे लोगों से दूसरे चेहरे के साथ।

दो आदमियों या दो गिरोहों में जब दुश्मनी उभरती है तो हर जगह कुछ लोग ऐसे भी पाये जाते हैं जो दोनों के पास पहुंचते हैं और दोनों की हाँ में हाँ मिलाते और उन की आपस की दुश्मनी को बातें बना कर और

हवा देते हैं, यह बहुत बड़ा ऐब है।

इसी तरह कुछ लोग सामने तो बड़े गहरे संबंध का इज़हार करते हैं मगर जब वह चला जाता है तो उस की बुराई करनी शुरू कर देते हैं यह भी दोरुख़ापन है।

(٢٦٣) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ كَانَ ذَا وَجْهَيْنِ فِى الدُّنْيَا كَانَ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ لِسَانَانِ مِنْ نَارٍ. (ابوداؤد۔عمارؓ)

263. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन काना ज़ा वजहैनि फ़िद्दुनिया काना लहू यौमल कियामति लिसानानि मिन नारिन।* (अबू दाऊद, अम्मार रज़ि०)

अनुवाद:– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स दुनिया में दोरुख़ापन करेगा तो क़यामत के दिन उस के मुंह में आग की दो जुबानें होंगी।

क़यामत के दिन उस के मुंह में आग की दो जुबानें इस लिये होंगी कि दुनिया में उस के मुंह से आग निकलती थी जो दो आदमियों के आपसी संबंध को जलाती थी।

ग़ीबत

(٢٦٤) اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَتَدْرُوْنَ مَالْغِيْبَةُ قَالُوْا اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ، قَالَ ذِكْرُكَ اَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ قِيْلَ اَفَرَاَيْتَ اِنْ كَانَ فِىْ اَخِىْ مَااَقُوْلُ؟ قَالَ اِنْ كَانَ فِيْهِ مَاتَقُوْلُ فَقَدِ اغْتَبْتَهٗ، وَاِنْ لَّمْ يَكُنْ فِيْهِ مَاتَقُوْلُ فَقَدْ بَهَتَّهٗ. (مشكوة۔ابوہریرہؓ)

264. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला अ-तदरूना मलग़ीबतु कालू अल्लाहु व रसूलुहू अअ़लमु, काला ज़िक्रुका अख़ाका बिमा यकरहु कीला अफ़रऐता इन काना फ़ी अख़ी मा अकूलु? काला इन काना फ़ीहि मा तकूलु फ़कदिग़तबतहू, व इल्लम यकुन फ़ीहि मा तकूलु फ़कद बहत्तहू।* (मिश्कात, अबू हुरैरा रज़ि०)

अनुवाद:– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम्हें मालूम है कि ग़ीबत क्या है? लोगों ने कहा अल्लाह और उस के रसूल ज़्यादा जानते हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया ग़ीबत यह है कि तू अपने भाई का ज़िक्र करे ऐसे ढंग से जिसे वह

नापसन्द करता है। फिर आप से पूछा गया, कि बताईये अगर वह बात जो मैं कह रहा हूँ मेरे भाई के अन्दर पाई जाती हो जब भी यह ग़ीबत होगी, आप ने फ़रमाया अगर वह बात जिस को तू कहता है उस के अन्दर मौजूद हो तो यह ग़ीबत हुई और अगर उस के बारे में वह बात कही जो उस के अन्दर नहीं है तो तूने उस पर बुहतान (इल्ज़ाम) लगाया।

मोमिन को उस की ग़लतियों पर अच्छे अन्दाज़ में टोका जाये तो ज़ाहिर है वह बुरा न मानेगा, इसी तरह उस की ग़लती की ख़बर उस के ज़िम्मेदारों को दी जाये तो उसे भी वह नापसन्द नहीं करेगा क्योंकि यह भी उस की इसलाह (सुधार) का एक तरीक़ा हैं हाँ उसे तकलीफ़ होगी और होनी चाहिये जबकि आप अपने मोमिन भाई को सोसाईटी की निगाह से गिराने के लिये उस की ग़ैर हाज़िरी में उस की ख़ामियाँ बयान करें रहा वह शख़्स जो खुल्लम खुल्ला ख़ुदा की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करता है और किसी तरह नहीं मानता तो उस की बुराई बयान करना ग़ीबत नहीं है बल्कि उस को नंगा करना बहुत बड़ी नेकी है, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस की हिदायत की है।

(٢٦٥) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْغِيْبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا، قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَكَيْفَ الْغِيْبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا؟ قَالَ اِنَّ الرَّجُلَ لَيَزْنِیْ فَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِ، وَاِنَّ صَاحِبَ الْغِيْبَةِ لَا يُغْفَرُلَهٗ حَتّٰى يَغْفِرَهَا لَهٗ صَاحِبُهٗ. (مشکوۃ۔ ابوسعیدؓ وجابرؓ)

265. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल-ग़ीबतु अशद्दु मिनज़्ज़िना, कालू या रसूलल्लाहि व कैफलग़ीबतु अशद्दु मिनज़्ज़िना? काला इन्नर्रजुला ल-यज़्नी फयतूबुल्लाहु अलैहि, व इन्ना साहिबल ग़ीबति ला युग़फरु लहू हत्ता यग़फिरहा लहू साहिबहू।* (मिश्कात, अबू सईद व जाबिर रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ग़ीबत ज़िना से बड़ा गुनाह है लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! ग़ीबत ज़िना से बड़ा गुनाह कैसे है? आप ने फ़रमाया कि आदमी ज़िना करता है फिर तोबा करता है तो अल्लाह उस की तौबा कुबूल फ़रमा लेता है, लेकिन ग़ीबत करने वाले को

माफ़ नहीं करेगा जब तक वह शख़्स उस को माफ़ी न दे दे जिस की उस ने ग़ीबत की है।

(٢٦٦) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ مِنْ كَفَّارَةِ الْغِيْبَةِ اَنْ تَسْتَغْفِرَ لِمَنِ اغْتَبْتَهٗ تَقُوْلُ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَهٗ. (مشکوٰۃ۔انسؓ)

266. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्ना मिन कफ़्फ़ारतिल ग़ीबति अन तसतग़फ़िरा लिमनिग़तबतहू तकूलु अल्लाहुम्मग़फ़िर लना व लहू।* (मिश्कात, अनस रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ग़ीबत का एक कफ़्फ़ारा यह है कि तू माफ़ी की दुआ करे उस शख़्स के लिये जिस की तूने ग़ीबत की है तो इस तरह कहे कि ऐ अल्लाह! तू मेरी और उस की मग़फ़िरत फ़रमा।

अगर वह शख़्स मौजूद है और उस से अपना जुर्म माफ़ कराया जा सकता है तो माफ़ कराये और अगर माफ़ी की कोई सूरत बाक़ी नहीं रही उस के मर जाने की वजह से या कहीं दूर जा बसने की वजह से तो फिर उस के लिये माफ़ी की दुआ के अलावा कोई राह नहीं।

(٢٦٧) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَسُبُّوا الْاَمْوَاتَ فَاِنَّهُمْ قَدْ اَفْضَوْا اِلٰى مَا قَدَّمُوْا. (بخاری)

267. *अन आयशता कालत, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला तसुब्बुल अमवाता फइन्नहुम कद अफ़ज़ौ इला मा कद्दमू।* (बुख़ारी)

अनुवादः- हज़रत आयशा का बयान है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मुर्दों को बुरा भला न कहो इस लिये कि वह अपने आमाल (कर्मों) तक पहुंच चुके हैं।

नाजाइज़ हिमायत और तरफ़दारी

(٢٦٨) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ شَرِّ النَّاسِ مَنْزِلَةً يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَبْدٌ اَذْهَبَ اٰخِرَتَهٗ بِدُنْيَا غَيْرِهٖ. (مشکوٰۃ۔ابوامامہؓ)

268. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मिन*

शर्रिन्नासि मंज़िलतन यौमल क़ियामति अब्दुन अज़हबा आख़िरतहू बिदुनिया ग़ैरिही। (मिश्कात, अबू उमामा रज़ि॰)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, क़यामत के दिन सब से बुरे हाल में वह शख़्स होगा जिस ने दुसरों की दुनिया बनाने के लिये अपनी आख़िरत बरबाद कर ली।

(٢٦٩) سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَمِنَ الْعَصَبِيَّةِ اَنْ يُّحِبَّ الرَّجُلُ قَوْمَهٗ؟ قَالَ لَا، وَلٰكِنْ مِّنَ الْعَصَبِيَّةِ اَنْ يَّنْصُرَ الرَّجُلُ قَوْمَهٗ عَلَى الظُّلْمِ.

(مشکوۃ۔ ابوفسیلہؓ)

269. *सअलतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फकुल्तु या रसूलल्लाहि अ-मिनल असबिय्यति अय्युहिब्बुर्रजुलु कौमहू? काला ला, वलाकिन मिनल असबिय्यति अय्यनसुर्रजुलु क़ौमहू अलज़्ज़ुल्मि।* (मिश्कात, अबू फ़सीला रज़ि॰)

अनुवादः- रावी अबू फ़सीला (रज़ि॰) कहते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि अपने लोगों से मुहब्बत करना क्या असंबिय्यत है? आप ने फ़रमाया नहीं, बल्कि असबिय्यत यह है कि आदमी जुल्म के मुआमले में अपनी क़ौम का साथ दे।

(٢٧٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ نَّصَرَ قَوْمَهٗ عَلٰى غَيْرِ الْحَقِّ فَهُوَ كَالْبَعِيْرِ الَّذِىْ رَدٰى فَهُوَ يُنْزَعُ بِذَنَبِهٖ. (ابوداؤد۔ ابن مسعودؓ)

270. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन नसरा कौमहू अला ग़ैरिल हक़्क़ि फहुवा कल- बईरिल्लज़ी रदया फहुवा युनज़उ बिज़नबिही।* (अबू दाऊद, इब्ने मसऊद रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स किसी नाजाइज़ मुआमले में अपनी क़ौम की मदद करता है तो उस की मिसाल ऐसी है जैसे कि कोई ऊँट कुएँ में गिर रहा हो और यह उस की दुम पकड़ कर लटक गया हो तो यह भी उस के साथ जा गिरा।

(٢٧١) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ مِنَّا مَنْ دَعَا اِلٰى عَصَبِيَّةٍ، وَلَيْسَ مِنَّا مَنْ قَاتَلَ عَصَبِيَّةً، وَلَيْسَ مِنَّا مَنْ مَاتَ عَلٰى عَصَبِيَّةٍ. (ابوداؤد۔ جبیر بن معطمؓ)

271. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लैसा मिन्ना मन दआ इला असबिय्यतिन, व लैसा मिन्ना मन कातला असबिय्यतन, व लैसा मिन्ना मम्माता अला असबिय्यतिन।*

(अबू दाऊद, जबीर बिन मुअतम रज़ि०)

> **अनुवादः**– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह शख़्स हम में से नहीं है जो असबिय्यत की दावत दे, और वह शख़्स भी हम में से नहीं है जो असबिय्यत की बुनियाद पर जंग करे, और हम में से वह भी नहीं है जो असबिय्यत की हालत में मरे।

असबिय्यत का मतलब है "मेरी अपनी क़ौम, चाहे वह हक़ पर हो या बातिल पर" तो इस नज़रिए की दावत देना और इस नज़रिए की बुनियाद पर जंग करना और इसी ज़ेहनियत पर मरना मुसलमान का काम नहीं है।

बेजा तारीफ़

(٢٧٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا رَاَيْتُمُ الْمَدَّاحِيْنَ فَاحْثُوْا فِىْ وُجُوْهِهِمُ التُّرَابَ. (مسلم۔ مقدادؓ)

272. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा रऐतुमुल मद्दाहीना फहसू फी वुजूहिहिमुत्तुराबा।* (मुस्लिम, मिक़दाद रज़ि०)

> **अनुवादः**– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम तारीफ़ करने वालों को देखो तो उन के मुंह पर मिट्टी फेंको।

तारीफ़ करने वाले से मुराद वह लोग हैं जिन का पेशा ही क़सीदा ख़्वानी होता है यह लोग आते हैं और उस शख़्स की तारीफ़ में ज़मीन व आसमान एक कर देते हैं ताकि कुछ और बख़शिश मिल जाये, यह क़सीदाख़्वानी शेअर में भी हो सकती है और नसर में भी, और ऐसे लोग जिहालत के ज़माने में भी थे, और हर ज़माने में पाये जाते हैं ऐसे लोगों

के बारे में हिदायत दी गई है कि जब वह इनआम और बख़्शिश की ग़र्ज़ से झूटी सच्ची क़सीदाख़्वानी करने के लिये आएँ तो उन के मुँह पर मिट्टी डाल दो यानी उनको अपने मक़सद में नाकाम लौटा दो।

(٢٧٣) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِذَا مُدِحَ الْفَاسِقُ غَضِبَ الرَّبُّ تَعَالٰی وَاهْتَزَّ لَهُ الْعَرْشُ. (مشکوٰۃ انسؓ)

273. क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा मुदिहल फ़ासिक़ु ग़ज़िबर्रब्बु तआला वहतज़्ज़ा लहुल अरशु।

(मिश्कात, अनस रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब फ़ासिक़ की तारीफ़ की जाती है तो अल्लाह तआला गुस्सा होता है और उस की वजह से अर्श हिलने लगता है।

यह इस लिये कि जो शख़्स ख़ुदा के आदेशों की इज़्ज़त नहीं करता बल्कि उस के आदेशों को खुल्लम खुल्ला तोड़ता है तो वह इज़्ज़त व एहतराम (प्रतिष्ठा) के लायक़ नहीं रहा उस का हक़ तो यह है कि उसे ज़िल्लत की निगाह से देखा जाये, अब अगर मुसलमान समाज में उस की इज़्ज़त की जाती है तो उस का मतलब यह है कि लोगों में अपने दीन और ख़ुदा व रसूल से मुहब्बत बाक़ी नहीं है, या अगर है तो बहुत ही कमज़ोर हालत में है ऐसी हालत में ज़ाहिर है कि अल्लाह का गुस्सा ही भड़केगा, उस की रहमत उस बस्ती पर क्यों नाज़िल होगी।

(٢٧٤) عَنْ اَبِیْ بَکْرَۃَ قَالَ اَثْنٰی رَجُلٌ عَلٰی رَجُلٍ عِنْدَ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ وَیْلَکَ قَطَعْتَ عُنُقَ اَخِیْکَ ثَلَاثًا، مَنْ کَانَ مِنْکُمْ مَادِحًا لَامَحَالَةَ، فَلْیَقُلْ اَحْسَبُ فُلَانًا وَاللّٰهُ حَسِیْبُهٗ، اِنْ کَانَ یَرٰی اَنَّهٗ کَذٰلِکَ وَلَا یُزَکِّی عَلَی اللّٰهِ اَحَدًا.

(بخاری۔مسلم)

274. अन अबी बकरता क़ाला असना रजुलुन अला रजुलिन इन्दन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़क़ाला वैलका क़तअता उनुक़ा अख़ीका सलासन, मन काना मिनकुम मादिहल्ला महालता, फ़लयक़ुल अहसबु फ़ुलानवं वल्लाहु हसीबुहू, इन काना यरा अन्नहू कज़ालिका वला युज़क्की अलल्लाहि अहदन। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- अबू बकरा (रज़ि॰) से रिवायत है उन्हों ने कहा एक आदमी ने एक आदमी की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौजूदगी में तारीफ़ की, तो आप ने फ़रमाया अफ़सोस तूने अपने भाई की गर्दन काट डाली (यह बात आप ने तीन बार फ़रमाई) तुम में से जो शख़्स किसी की तारीफ़ करे और ऐसा करना ज़रूरी हो तो इस तरह कहे कि मैं फुलाँ शख़्स को ऐसा ख़याल करता हूँ, और अल्लाह बाख़बर है। इस शर्त पर कि वह वास्तव में समझता हो कि वह शख़्स इस तरह का है, और किसी शख़्स की तारीफ़ ख़ुदा के मुक़ाबले में न करे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस में एक शख़्स के तक़्वा और उस की अच्छी हालत की तारीफ़ की गई थी, ज़ाहिर बात है कि इस सूरत में आदमी के रिया (नुमाइश) में पड़ जाने का डर था इस लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया और कहा कि तूने अपने भाई को हलाक कर दिया। फिर आप ने यह हिदायत फ़रमाई कि अगर किसी शख़्स के बारे में कुछ कहना ही पड़ जाये तो इस तरह कहो कि मैं फुलाँ शख़्स को नेक समझता हूँ और इस तरह न कहे कि फुलाँ अल्लाह का वली (दोस्त) है या फुलाँ यक़ीनन जन्नती है, इस तरह कहने का किसी बन्दे को हक़ नहीं है, क्योंकि क्या मालूम कि जिस को वह जन्नती कह रहा है वह ख़ुदा की निगाह में भी जन्नती है या नहीं? जब तक आदमी ज़िन्दा है ईमान की आज़माइशगाह में है क्या मालूम कि कब आदमी का दिल पलट जाये और सीधा रास्ता खो दे, इस लिये किसी ज़िन्दा नेक आदमी के बारे में यक़ीन के साथ कोई हुक्म न लगाना चाहिये और मरने के बाद भी किसी के बारे में यूँ नहीं कहना चाहिये कि वह जन्नती है।

उलमा का कहना है कि अगर किसी शख़्स के फ़ितने में पड़ने का डर न हो और मौक़ा आ पड़े तो उस के मुंह पर उस के इल्म और तक़्वा वग़ैरा की तारीफ़ की जा सकती है लेकिन आजिज़ के नज़दीक इस से बचना बेहतर है, क्योंकि फ़ितने में पड़ने या न पड़ने का फ़ैसला अल्लाह ही कर सकता है, किसी की अनदरूनी कैफ़ियत के बारे में आमतौर पर सही अन्दाज़ा नहीं हो सकता।

झूटी गवाही

(٢٧٥) عَنْ خُرَيْمِ بْنِ فَاتِكٍ قَالَ صَلَّى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلٰوةَ الصُّبْحِ، فَلَمَّا انْصَرَفَ قَامَ قَائِمًا، فَقَالَ عُدِلَتْ شَهَادَةُ الزُّوْرِ بِالْإِشْرَاكِ بِاللّٰهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ قَرَأَ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ حُنَفَاءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ. (ابوداؤد)

275. *अन ख़ुरैमिब्नि फ़ातिकिन क़ाला सल्ला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा सलातस्सुब्हि, फ़लम्मानसरफ़ा क़ामा क़ाईमन, फ़क़ाला उदिलत शहादतुज़्ज़ूरि बिलइशराकि बिल्लाहि सलासा मर्रातिन, सुम्मा क़रआ फ़ज्तनिबुर्रिज्सा मिनल औसानि वज्तनिबू क़ौलज़्ज़ूरि हुनफ़ाआ लिल्लाहि ग़ैरा मुश्रिकीना बिही।*

(अबू दाऊद)

अनुवादः– ख़रीम बिन फ़ातिक का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुब्ह की नमाज़ पढ़ाई, और जब लोगों की तरफ़ रुख़ फेरा तो बैठे रहने की बजाए आप सीधे खड़े हो गये और तीन बार फ़रमाया, झूटी गवाही देना और शिर्क करना दोनों बराबर के गुनाह हैं, फिर आप ने पढ़ा *फ़ज्तनिबुर्रिजसा* आख़िर तक, (तो तुम नापाकी यानी बुतों से दूर रहो और झूटी बात कहने से दूर रहो, और ख़ुदा की तरफ़ ध्यान लगा लो, शिर्क छोड़ कर तौहीद अपनाओ)।

आप (सल्ल०) ने सूरह हज की जो आयत पढ़ी, उस में "क़ौलज़्ज़ूर" का लफ़्ज़ आया है जिस का मतलब है झूट कहना, और झूट बोलना हर जगह बुरा है, चाहे अदालत के अन्दर हाकिम के सामने बोला जाये या किसी दूसरी जगह।

देखिये झूटी गवाही कितना बड़ा गुनाह है लेकिन मुसलमानों की निगाह में यह गुनाह अब गुनाह नहीं रहा बल्कि "फ़न" बन गया है, उन के बीच वह लोग बेवक़ूफ़ समझे जाते हैं जो अदालत में अपने ईमान के दबाव से सच्ची गवाही देने की हिम्मत कर बैठते हैं।

बुरा मज़ाक़, वादा ख़िलाफ़ी, झगड़ा और मुनाज़रा

(٢٧٦) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَاتُمَارِ اَخَاكَ وَلَا تُمَازِحْهُ وَلَا تَعِدْهُ مَوْعِدًا فَتُخْلِفَهٗ. (ترمذی۔ ابن عباسؓ)

276. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला तुमारि अख़ाका वला तुमाज़िहहू वला तइदहु मौइदन फतुख़लिफहू।*
(तिर्मिज़ी, इब्ने अब्बास रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू अपने भाई से मुनाज़रा (बहस) न क़र और न उस से मज़ाक़ कर और न ही वादा कर के उस की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर।

मुनाज़रा की असल रूह यह होती है कि किसी तरह अपने हरीफ़ को चित किया जाये, मुनाज़िरे के अन्दर यह जज़्बा कम होता है कि नर्मी के साथ अपनी बात कहे। यहाँ जिस हंसी और दिललगी से रोका गया है उस से ऐसी दिललगी मुराद है जिस से आदमी का दिल दुखे और मज़ाक़ करने वाले का मक़सद उस की शख़्सियत को गिराना है ख़ुशतबई और ज़िराफ़त से नहीं रोका गया है लेकिन यह याद रहे कि ख़ुशतबई और नाजाइज़ मज़ाक़ व दिललगी में बाल बराबर फ़र्क़ है इस लिये बड़े एहतियात की ज़रूरत है।

(٢٧٧) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا وَعَدَ الرَّجُلُ اَخَاهُ وَمِنْ نِيَّتِهٖ اَنْ يَّفِيَ لَهٗ فَلَمْ يَفِ وَلَمْ يَجِئْ لِلْمِيْعَادِ فَلَا اِثْمَ عَلَيْهِ. (ابوداؤد۔ زید بن ارقمؓ)

277. *कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा वअदर्रजुलु अख़ाहु व मिन निय्यतिही अय्यफिया लहू फलम यफि वलम यजिअ लिलमीआदि फला इस्मा अलैहि।* (अबू दाऊद, ज़ैद बिन अरक़म)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर आदमी अपने भाई से वादा करे और उस की नियत उस वादे को पूरा करने की हो, फिर वह पूरा न कर सका और मुक़र्रह वक़्त पर न आया तो वह गुनहगार न होगा।

ऐबचीनी

(٢٧٨) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ قُلْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَسْبُكَ مِنْ صَفِيَّةَ كَذَا وَكَذَا، تَعْنِي قَصِيْرَةً فَقَالَ لَقَدْ قُلْتِ كَلِمَةً لَوْ مُزِجَ بِهَا الْبَحْرُ لَمَزَجَتْهُ. (مشكوٰة)

278. अन आयशता कालत कुल्तु लिन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा हस्बुका मिन सफिय्यता कज़ा व कज़ा, तअनी कसीरतन फकाला लकद कुल्ति कलिमतन लौ मुज़िजा बिहलबहरु ल-मज़जतहु।
(मिश्कात)

अनुवादः- हज़रत आयशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से (एक मौक़े पर) कहा कि सफ़िय्या (रज़ि०) का यह ऐब कि वह ऐसी है और ऐसी है काफ़ी है (यानी कि वह छोटे क़द की औरत है और यह बहुत बड़ा ऐब है) आप (सल्ल०) ने फ़रमाया आयशा! तुम ने इतना गन्दा लफ़्ज़ मुंह से निकाला है कि अगर उसे समुद्र में घोल दिया जाये तो पूरे समुद्र को गन्दा कर दे।

आम हालात में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियाँ आपस में सौकन होने के बावजूद बड़ी मुहब्बत से रहती थीं लेकिन कभी ग़फ़लत में किसी से कोई ग़लती हो ही जाती, ऐसी ही ग़लती हज़रत आयशा (रज़ि०) से हुई कि उन्हों ने हज़रत सफ़िय्या (रज़ि०) को आप (सल्ल०) की नज़र में गिराने के लिये उन के छोटे क़द होने का ज़िक्र किया (सफ़िय्या छोटे क़द की थीं) आप (सल्ल०) ने सुनते ही नाराज़ी का इज़हार किया, उन्हें बताया कि तुम ने बहुत ही गन्दी बात कह दी, चुनाचे फिर कभी हज़रत आयशा (रज़ि०) से ऐसी ग़लती नहीं हुई। सहाबा (रज़ि०) का भी यही हाल था, जिस ग़लती पर हुज़ूर ने उन्हें एक बार टोक दिया, फिर वह ग़लती दोबारा उन से नहीं हुई। इस हदीस का यह पहलू भी सोच विचार के लायक़ है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी महबूब बीवी की गन्दी बात पर चुप नहीं रहे बल्कि मुनासिब अन्दाज़ में उन्हें बता दिया, इस में शौहरों के लिये बहुत बड़ा सबक़ है।

बग़ैर तहक़ीक़ के बात को फैलाना

(٢٧٩) عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ إِنَّ الشَّيْطٰنَ لَيَتَمَثَّلُ فِيْ صُوْرَةِ الرَّجُلِ فَيَاتِي الْقَوْمَ فَيُحَدِّثُهُمْ بِالْحَدِيْثِ مِنَ الْكَذِبِ فَيَتَفَرَّقُوْنَ، فَيَقُوْلُ مِنْهُمْ سَمِعْتُ رَجُلًا اَعْرِفُ وَجْهَهٗ وَلَا اَدْرِيْ مَا اسْمُهٗ يُحَدِّثُ. (مسلم)

279. *अनिब्नि मसऊदिन काला इन्नश्शैताना ल-यतअम्मलु फी सूरतिर्रजुलि फ-यातिल कौमा फ-युहद्दिसुहुम बिल-हदीसि मिनल कज़िबि फ-यतफर्रकूना फ-यकूलु मिनहुम समिअतु रजुलन अअ़रिफ़ु वजहहू वला अदरी मस्मुहू युहद्दिसु।* (मुस्लिम)

अनुवादः- अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि शैतान आदमी के भेस में काम करता है वह लोगों के पास आ कर झूटी बातें बयान करता है, फिर लोग जुदा हो जाते हैं (यानी मजलिस ख़त्म हो जाती है और यह लोग फैल जाते हैं) तो उन में से एक आदमी कहता है कि मैं ने यह बात एक आदमी से सुनी है जिस का चेहरा तो मैं पहचानता हूँ लेकिन नाम नहीं जानता।

इस हदीस में मुसलमानों को इस बात से रोका गया है कि कोई बात बग़ैर तहक़ीक़ के कही जाये। हो सकता है जिस ने वह बात कही है झूटा और शैतान हो। अगर बग़ैर तहक़ीक़ के जमाअत में बातें बयान करने का रिवाज चल पड़े तो उस से बहुत से तबाह करने वाले नुक़सान हो सकते हैं इस लिये ख़बर देने वाले के बारे में तहक़ीक़ करो यह शख़्स कैसा है। अगर साबित हो जाये कि वह झूटा है तो उस की बात को ठुकरा दो।

चुग़ली खाना

(٢٨٠) عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ نَمَّامٌ.

(بخاری، مسلم)

280. *अन हुज़ैफता काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला यदख़ुलुल जन्नता नम्मामुन।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- हुज़ैफ़ा (रज़ि॰) ने फ़रमाया कि, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि चुग़ली खाने वाला

जन्नत में नहीं जाएगा।

(٢٨١) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِقَبْرَيْنِ فَقَالَ اِنَّهُمَا يُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِيْ كَبِيْرٍ، بَلٰى اِنَّهُ كَبِيْرٌ، اَمَّا اَحَدُهُمَا فَكَانَ يَمْشِيْ بِالنَّمِيْمَةِ، وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَكَانَ لَا يَسْتَبْرِئُ مِنْ بَوْلِهٖ. (بخاری)

281.*अनिब्नि अब्बासिन अन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मर्रा बिकबरैनि फ-काला इन्नहुमा युअज़्ज़बानि फी कबूरिन बला इन्नहू कबीरुन, अम्मा अहदुहुमा फ-काना यमशी बिन्नमीमति, व अम्मल आख़रु फकाना ला यसतबरिउ मिम बौलिही।* (बुख़ारी)

अनुवादः– हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो क़ब्रों के पास से गुज़रे तो आप ने बाताया कि इन दोनों पर अज़ाब हो रहा है, और यह अज़ाब किसी ऐसी चीज़ पर नहीं जिसे वह छोड़ नहीं सकते थे अगर चाहते हो आसानी के साथ उस से बच सकते थे, बेशक उन का जुर्म बड़ा है, उन में से एक चुग़ली खाया करता था और दूसरा अपने पेशाब की छींटों से बचता नहीं था।

(٢٨٢) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ، نَهٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ النَّمِيْمَةِ وَنَهٰى عَنِ الْغِيْبَةِ وَالْاِسْتِمَاعِ اِلَى الْغِيْبَةِ. (رياض الصالحين)

282. *अनिब्नि उमरा काला, नहा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अनिन्नमीमति व नहा अनिल ग़ीबति वल इस्तिमाई इलल ग़ीबति।* (रियाजुस्सालिहीन)

अनुवादः– इब्ने उमर (रज़ि॰) ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चुग़ली खाने और ग़ीबत करने और ग़ीबत सुनने से मना फ़रमाया है।

हसद

(٢٨٣) عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِيَّاكُمْ وَالْحَسَدَ، فَاِنَّ الْحَسَدَ يَاْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَاْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ. (ابوداؤد)

283. *अन अबी हुरैरता अन्ननन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला इय्याकुम वल हसदा, फइन्नल हसदा याकुलुल*

हसनाति कमा ताकुलुन्नारुल हतबा। (अबू दाऊद)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अपने को हसद से बचाओ, इस लिये कि हसद नेकियों को इस तरह भसम करता है जिस तरह आग लकड़ी को भसम कर डालती है।

बदनिगाही

(٢٨٤) عَنْ جَرِيْرِبْنِ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ نَظَرِ الْفُجَاءَةِ فَقَالَ اَصْرِفْ بَصَرَكَ. (مسلم)

284. *अन जरीरिब्नि अब्दिल्लाहि काला सअल्तु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अन नज़रिल फुजाअति फ-काला असरिफ़ बसरका।* (मुस्लिम)

अनुवादः- जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अजनबी औरत पर अचानक निगाह पड़ जाने के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमाया तुम अपनी निगाह फेर लो।

(٢٨٥) عَنْ بُرِيْدَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعَلِيٍّ يَا عَلِيُّ لَاتُتْبِعِ النَّظْرَةَ النَّظْرَةَ، فَإِنَّمَا لَكَ الْاُوْلٰى وَلَيْسَتْ لَكَ الْاٰخِرَةُ.

285. *अन बुरीदता, काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लिअलिय्यिन या अलिय्यु ला तुतबिइन्नज़्रतन नज़्रता, फइन्नमा लकल ऊला व लैसत लकलआख़िरतु।*

अनुवादः- बुरीदा (रज़ि०) कहते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली (रज़ि०) से फ़रमाया ऐ अली! किसी अजनबी औरत पर अचानक निगाह पड़ जाये तो निगाह फेर लो दूसरी निगाह उस पर न डालो पहली निगाह तो तुम्हारी है और दूसरी निगाह तुम्हारी नहीं है (बल्कि शैतान की है)

अख़लाक़ी ख़ूबियाँ

हुस्ने अख़लाक़ की अहमियत

(٢٨٦) إِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ بُعِثْتُ لِأُتَمِّمَ حُسْنَ الْأَخْلَاقِ.

(موطا امام مالک)

286. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला बुइस्तु लिउतम्मिा हुस्नल अख़लाक़ि।* (मुअत्ता इमाम मालिक)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे अल्लाह की तरफ़ से भेजा गया है ताकि अख़्लाक़ी अच्छाईयों को इन्तिहा तक पहुंचाऊँ।

यानी आपकी नुबुव्वत का मक़सद यह है कि लोगों के अख़लाक़ व मुआमलात को ठीक करें उन के अन्दर से बुरे अख़लाक़ की जड़ें उखाड़ें और उन की जगह बेहतर अख़लाक़ पैदा करें, यही तज़किया आप के भेजे जाने का मक़सद है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने क़ौल व अमल से तमाम अच्छे अख़लाक़ की फ़ेहरिस्त तयार की, और पूरी ज़िन्दगी पर ज़िन्दगी के तमाम शोबों पर लागू किया और हर तरह के हालात में उन से चिमटे रहने की हिदायत की।

"हुस्ने अख़लाक़" क्या है? इस की तशरीह अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने इन अलफ़ाज़ में की है هُوَ طَلَاقَةُ الْوَجْهِ وَبَذْلُ الْمَعْرُوْفِ وَكَفُّ الْأَذٰى "हुवा तलाक़तुल वज्हि व बज़्लुल मअरूफ़ि व कफ़्फ़ुल अज़ा" यानी हुस्ने अख़लाक़ नाम है ख़ुशरूई का, माल ख़र्च करने का और किसी को तकलीफ़ न देने का।

देखिये हुस्ने अख़लाक़ का दायरा कितना लम्बा चौड़ा है।

(٢٨٧) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ لَمْ يَكُنْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاحِشًا وَّلَا مُتَفَحِّشًا، وَكَانَ يَقُوْلُ إِنَّ مِنْ خِيَارِكُمْ أَحْسَنَكُمْ أَخْلَاقًا. (بخاری، مسلم)

287. अन अब्दिल्लाहिब्नि अमरिब्नि अल-आस काला लम यकुन रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फाहिशवं वला मुतफह्हिशन, व काना यकूलु इन्ना मिन ख़ियारिकुम अहसनकुम अख़लाकन (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अल-आस फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न तो बेहयाई की बात ज़ुबान से निकालते और न बेहयाई का काम करते और न दूसरों को बुरा भला कहते और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि तुम में बेहतर लोग वह हैं जो अख़लाक़ के अच्छे हैं।

(٢٨٨) عَنْ مُعَاذٍ قَالَ كَانَ اٰخِرَ مَا وَصَّانِيْ بِهٖ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِيْنَ وَضَعْتُ رِجْلِيْ فِي الْغَرْزِ أَنْ قَالَ يَا مُعَاذُ أَحْسِنْ خُلُقَكَ لِلنَّاسِ. (موطا امام مالکؒ)

288. अन मुआज़िन काला काना आख़िरा मा वस्सानी बिही रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा हीना वज़अतु रिज्ली फिल-ग़र्ज़ि अन काला या मुआज़ु अहसिन ख़ुलुकका लिन्नासि। (मुअत्ता इमाम मालिक)

अनुवादः- हज़रत मुआज़ (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे यमन भेजते वक़्त जो आख़िरी वसिय्यत रकाब पर पाँव रखते वक़्त फ़रमाई वह यह थी कि लोगों के साथ अच्छे अख़लाक़ से पेश आना।

वक़ार व संजीदगी

(٢٨٩) إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِأَشَجِّ عَبْدِ الْقَيْسِ إِنَّ فِيْكَ لَخَصْلَتَيْنِ يُحِبُّهُمَا اللّٰهُ الْحِلْمُ وَالْأَنَاةُ. (مسلم۔ ابن عباسؓ)

289. इन्ननबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला लिअशज्जि अब्दिल कैसि इन्ना फीका ल-ख़सलतैनि युहिब्बुहुमल्लाहु अल-हिल्मु वलअनातु। (मुस्लिम, इब्ने अब्बास)

अनुवाद:- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़बील-ए-अब्दुल क़ैस के वफ़्द के लीडर को (जिन का लक़ब अशज था) फ़रमाया तुम्हारे अन्दर दो ऐसी ख़ूबियाँ पाई जाती हैं जो अल्लाह को पसन्द हैं, और वह हैं बुर्दबारी और वक़ार व संजीदगी।

अब्दुल क़ैस का जो वफ़्द हुज़ूर (सल्ल॰) के पास आया था उस के और आदमी तो मदीना पहुंचते ही आप (सल्ल॰) से मुलाक़ात के लिये दौड़ पड़े, न नहाए न हाथ मुँह धोया और न अपने सामान को ठीक से कहीं जमाया, हालाँकि दूर से आये थे, गर्द व गुबार में अटे थे, उन के बरख़िलाफ़ (विपरीत) उन के लीडर ने जल्दबाज़ी का कोई काम न किया, इतमीनान से उतरे, सामान को ढंग से रखा, सवारियों को दाना पानी दिया फिर नहा धो कर वक़ार के साथ हुज़ूर (सल्ल॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुये।

सादगी व सफ़ाई

(۲۹۰) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ الْبَذَاذَةَ مِنَ الْإِيْمَانِ. (ابوداؤد-ابوامامہؓ)

290. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नल बज़ाज़ता मिनल-ईमानि।* (अबू दाऊद, अबू उमामा रज़ि॰)

अनुवाद:- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सादा ज़िन्दगी गुज़ारना ईमान में से है।

यानी सादा हालत में ज़िन्दगी गुज़ारना मोमिनाना ख़ूबियों में से है, उसे तो अपनी आख़िरत बनाने और संवारने की फ़िक्र होती है, उस को दुनियावी सजावटों से कोई दिलचस्पी नहीं होती है।

(۲۹۱) عَنْ جَابِرٍ قَالَ اَتَانَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَائِرًا، فَرَاٰى رَجُلًا شَعِثًا قَدْ تَفَرَّقَ شَعْرُهٗ، فَقَالَ مَا كَانَ يَجِدُ هٰذَا مَا يُسَكِّنُ رَاْسَهٗ؟ وَرَاٰى رَجُلًا عَلَيْهِ ثِيَابٌ وَسِخَةٌ. فَقَالَ مَا كَانَ يَجِدُ هٰذَا مَا يَغْسِلُ بِهٖ ثَوْبَهٗ. (مشکوٰۃ)

291. *अन जाबिरिन काला अताना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ज़ाईरन, फ-रआ रजुलन शइसन कद तफर्रका शअरहू, फ-काला मा काना यजिदु हाज़ा मा युसक्किनु रासहू?*

व-रआ रजुलन अलैहि सियाबुवं व सिख़तुन, फ़-काला मा काना यजिदु हाज़ा मा यग़सिलु बिही सौबहू। (मिश्कात)

अनुवादः- हज़रत जाबिर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हमारे यहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुलाक़ात की ग़र्ज़ से तशरीफ़ लाये तो आप (सल्ल०) ने एक आदमी को देखा जो गर्द व गुबार से अटा हुआ था और बाल बिखरे हुये थे, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया क्या इस आदमी के पास कोई कंघा नहीं है जिस से यह अपने बालों को ठीक कर लेता? और आप (सल्ल०) ने एक दूसरे आदमी को देखा जिस ने मैले कपड़े पहन रखे थे, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, क्या इस आदमी के पास वह चीज़ (साबुन वग़ैरा) नहीं है जिस से यह अपने कपड़े धो लेता।

(۲۹۲) كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ، فَدَخَلَ رَجُلٌ ثَائِرُ الرَّاسِ وَاللِّحْيَةِ، فَاَشَارَ اِلَيْهِ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهٖ كَاَنَّهٗ يَاْمُرُهٗ بِاِصْلَاحِ شَعْرِهٖ وَلِحْيَتِهٖ فَفَعَلَ ثُمَّ رَجَعَ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلَيْسَ هٰذَا خَيْرًا مِّنْ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدُكُمْ وَهُوَ ثَائِرُ الرَّاسِ كَاَنَّهٗ شَيْطٰنٌ. (مشكوٰة ـ عطاء بن يسارؓ)

292. *काना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़िल मस्जिदि, फ़-दख़ला रजुलुन साईरुर्रासि वल्लिहयति, फ़-अशारा इलैहि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बियदिही कअन्नहू यामुरुहू बिइस्लाहि शअरिही व लिहयतिही फ़-फ़अला सुम्मा रजआ, फ़-काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अ-लैसा हाज़ा ख़ैरम मिन अय्यातिया अहदुकुम व हुवा साईरुर्रासि कअन्नहू शैतानुन।*

(मिश्कात, अता बिन यसार)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में थे कि इतने में मस्जिद में एक आदमी दाख़िल हुआ जिस के सर और दाढ़ी के बाल बिखरे हुये थे तो हुज़ूर (सल्ल०) ने हाथ से उस की तरफ़ इशारा किया, जिस का मतलब यह था कि जाकर अपने सर के बाल और दाढ़ी को ठीक करो, चुनाचे वह गया और बालों को ठीक करने के बाद आया तो आप ने फ़रमाया क्या यह बेहतर नहीं है इस बात से कि आदमी के बाल उलझे हुये हों एकसा मालूम होता हो कि गोया वह शैतान है।

(٢٩٣) عَنْ أَبِي الْأَحْوَصِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ أَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيَّ ثَوْبٌ دُونٌ فَقَالَ لِيْ أَلَكَ مَالٌ؟ قُلْتُ نَعَمْ، قَالَ مِنْ أَيِّ الْمَالِ؟ قُلْتُ مِنْ كُلِّ الْمَالِ، قَدْ أَعْطَانِيَ اللهُ مِنَ الْإِبِلِ وَالْبَقَرِ وَالْغَنَمِ وَالْخَيْلِ وَالرَّقِيقِ قَالَ فَإِذَا آتَاكَ مَالًا فَلْيُرَ أَثَرُ نِعْمَةِ اللهِ عَلَيْكَ. (مشکوۃ)

293. *अन अबिलअहवसि अन अबीहि काला अतैतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा व अलय्या सौबुन दूनुन फ-काला ली अ-लका मालुन? फ-कुल्तु नअम, काला मिन अय्यिलमालि? कुल्तु मिन कुल्लिलमालि, कद अअ्तानियल्लाहु मिनल इबिलि वल-बकरि वल-ग़नमि वल-ख़ैलि वर्रक़ीक़ि काला फ-इज़ा अताका मालन फलयुरा असरु निअमतिल्लाहि अलैका।* (मिश्कात)

अनुवादः- अबुल अहवस अपने वालिद (पिता) से रिवायत करते हैं उन के वालिद ने कहा कि मैं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उस वक़्त मेरे बदन के कपड़े मामूली और घटिया थे, आप ने पूछा क्या तुम्हारे पास माल है? मैं ने कहा हाँ, आप (सल्ल०) ने पूछा किस तरह का माल है? मैं ने कहा हर तरह का माल अल्लाह ने मुझे दे रखा है, ऊँट भी हैं, गायें भी हैं, बकरियाँ भी हैं, घोड़े भी हैं, और गुलाम भी हैं, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया जब अल्लाह ने माल दे रखा है तो उस के फ़ज़्ल व एहसान का असर तुम्हारे जिस्म पर ज़ाहिर होना चाहिये था।

मतलब यह कि जब अल्लाह ने सब कुछ दे रखा है तो अपनी हैसियत के मुताबिक़ खाओ, पहनो, ये क्या कि आदमी के पास घर में तो सब कुछ हो, लेकिन हालत ऐसी बनाये कि वह ग़रीब लगे, यह बुरी आदत है यह खुदा की नाशुक्री है।

सलाम

(٢٩٤) إِنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّ الْإِسْلَامِ خَيْرٌ؟ قَالَ تُطْعِمُ الطَّعَامَ وَتَقْرَأُ السَّلَامَ عَلَى مَنْ عَرَفْتَ وَمَنْ لَمْ تَعْرِفْ. (بخاری، مسلم۔ عبد اللہ بن عمرؓ)

294. *इन्ना रजुलन सअला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अय्युल इस्लामि ख़ैरुन? काला तुतइमुत्तआमा व*

तुकरिउस्सलामा अला मन अरफ़्ता व मल्लम तअरिफ़।

(बुख़ारी, मुस्लिम, अब्दुल्लाह बिन उमर)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक आदमी ने पूछा इस्लाम का कौन सा काम बेहतर है? आप ने फ़रमाया ग़रीबों मिस्कीनों को खाना खिलाना, और हर मुसलमान को सलाम करना, चाहे तू उसे पहचानता हो या ना पहचानता हो (यानी पहले से दोस्ती और बेतकल्लुफ़ी हो या न हो)।

(٢٩٥) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى تُؤْمِنُوْا، وَلَا تُؤْمِنُوْا حَتّٰى تَحَابُّوْا، اَوَلَا اَدُلُّكُمْ عَلٰى شَيْءٍ اِذَا فَعَلْتُمُوْهُ تَحَابَبْتُمْ؟ اَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ (مسلم۔ابوہریرۃؓ)

295. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला तदख़ुलूनल जन्नता हत्ता तूमिनू, वला तूमिनू हत्ता तहाब्बू, अ-व-ला अदुल्लुकुम अला शैइन इज़ा फ़अलतुमूहु तहाबबतुम? अफ़शुस्सलामा बैनकुम।* (मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि०)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम लोग जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि मोमिन नहीं बनते, और तुम मोमिन नहीं बन सकते जब तक आपस में मुहब्बत न करो, क्या मैं तुम्हें वह तरकीब न बताऊँ जिस को अगर करो तो आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करने लगो? "आपस में सलाम को फैलाओ"।

इस हदीस से मालूम हुआ कि मुसलमान आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करें और मुहब्बत से पेश आएँ, यह उन के ईमान व इस्लाम की चाहत है और उस का उपाय यह है कि उन के बीच आपस में सलाम करने का आम रिवाज हो जाये, यह नुस्ख़ा बहुत बेहतर नुस्ख़ा है शर्त यह है कि लोगों को सलाम का मतलब मालूम हो और अस्सलामुअलैकुम की रूह को जानते हों।

ज़ुबान की हिफ़ाज़त

(٢٩٦) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ يَّضْمَنُ لِيْ مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ وَمَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ اَضْمَنُ لَهُ الْجَنَّةَ. (بخاری۔سہل بن سعدؓ)

296. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन यज़्मनु ली मा बैना लहयेहि वमा बैना रिजलैहि अज़्मनु लहुल जन्नता।* (बुख़ारी, सहल बिन सअद रज़ि॰)

> **अनुवादः–** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर कोई शख़्स मुझे अपनी जुबान और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की ज़मानत दे दे तो मैं उस के लिये जन्नत की ज़मानत ले लूँगा।

इन्सान के बदन में यह दो ख़तरनाक और कमज़ोर जगहें हैं जहाँ से शैतान को हमला करने में बड़ी आसानी है, ज़्यादा तर गुनाह इन्हीं दोनों से होते हैं अगर कोई शैतान के हमलों से उन को बचा लेगा तो ज़ाहिर है कि उस के ठहरने की जगह जन्नत ही होगी।

(قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ رِّضْوَانِ اللّٰهِ لَا يُلْقِىْ لَهَا بَالًا يَّرْفَعُ اللّٰهُ بِهَا دَرَجٰتٍ وَّاِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ سَخَطِ اللّٰهِ لَا يُلْقِىْ لَهَا بَالًا يَّهْوِىْ بِهَا فِىْ جَهَنَّمَ. (بخاری۔ابوہریرۃ)

297. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नल अब्दा ल-यतकल्लमु बिल कलिमति मिर्रिज़वानिल्लाहि ला युल्की लहा बालय्यंरफ़उल्लाहु बिहा दरजातिवं वइन्नल अब्दा ल-यतकल्लमु बिलकलिमति मिन सख़्तिल्लाहि ला युल्की लहा बालयं यहवी बिहा फ़ी जहन्नमा।* (बुख़ारी, अबूहुरैरा रज़ि॰)

> **अनुवादः–** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बन्दा एक बात जुबान से निकालता है जो अल्लाह को खुश करने वाली होती है बन्दा उस का ख़याल नहीं करता (यानी उस को अहमियत नहीं देता) लेकिन अल्लाह उस बात की वजह से उस के दर्जे बुलंद करता है। इसी तरह आदमी खुदा को नाराज़ करने वाली बात जुबान से लापरवाही में निकालता है जो उसे जहन्नम में गिरा देती है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस फ़रमान का मतलब यह है कि आदमी अपनी जुबान को बेलगाम न छोड़े, जो कुछ बोले सोच कर बोले, ऐसी बात जुबान से न निकाले जो जहन्नम में ले जाने वाली हो।

दावत व तबलीग़

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत क्या थी?

(٢٩٨) قَالَ مَاذَا يَأْمُرُكُمْ؟ قُلْتُ يَقُوْلُ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّاتْرُكُوْا مَايَقُوْلُ اٰبَاءُكُمْ، وَيَاْمُرُنَا بِالصَّلٰوةِ وَالصِّدْقِ وَالْعَفَافِ وَالصِّلَةِ. (بخاری۔ابن عباسؓ)

298. *काला माज़ा यामुरुकुम? कुल्तु यकूलु उअ़बुदुल्लाहा वला तुशरिकू बिही शैअवं वतरुकू मा यकूलु आबाउकुम, व यामुरुना बिस्सलाति वस्सिदकि वल अफाफि वस्सिलति।* (बुख़ारी, इब्ने अब्बास रज़ि॰)

> **अनुवादः–** हरक़ल ने अबू सुफ़ियान से पूछा, कि यह आदमी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम से क्या कहता है? अबू सुफ़ियान ने जवाब दिया कि यह आदमी हम से कहता है कि अल्लाह की बन्दगी करो और इक़्तिदार व फ़रमारवाई में किसी को शरीक न ठहराओ और तुम्हारे बाप दादा का जो अक़ीदा था और जो कुछ करते थे उसे छोड़ दो, और यह शख़्स हम से कहता है कि नमाज़ पढ़ो, सच्चाई अपनाओ, पाकी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारो और सिला रहमी करो (यानी रिश्तेदारों का ख़याल रखो)।

यह एक लम्बी हदीस का टुकड़ा है जो हदीस हरक़ल के नाम से मशहूर है, उस का ख़ुलासा यह है कि रूम का बादशाह हरक़ल बैतुल-मक़दिस में था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दावती ख़त उस को मिला, तब उस को तलाश हुई कि कोई शख़्स मिले और उस से जानकारी हासिल करे, इत्तिफ़ाक़ से अबू सुफ़ियान और उन के कुछ साथी मिल गये हरक़ल ने उन से बहुत से सवालात किये जिन में एक सवाल यह था कि इस नबी की दावत की बुनियादी बातें बताओ,

अबू सुफ़ियान ने बताया कि वह तौहीद की शिक्षा देता है कहता है कि सिर्फ़ एक ख़ुदा को मानो, सिर्फ़ वही है जिस की हुकूमत आसमानों और ज़मीन पर है, ऊपर की दुनिया का भी वही इन्तिज़ाम करता है और इस ज़मीन का इन्तिज़ाम भी उसी के हाथ में है, हुकूमत और इन्तिज़ाम (प्रबन्ध) में न तो किसी को उस ने साझी बनाया है और न ही कोई अपने ज़ोर व असर से साझी बन सकता है, और जब ऐसा है तो सज्दा सिर्फ़ उसी के लिये होना चाहिये हर तरह की मुश्किलों में सिर्फ़ उसी से मदद माँगनी चाहिये, उसी से मुहब्बत होनी चाहिये, और उसी की उपासना होनी चाहिये। बाप दादा ने शिर्क की बुनियाद पर ज़िन्दगी गुज़ारने का जो निज़ाम बनाया है उसे छोड़ देना चाहिये। इसी तरह वह हम से कहता है कि नमाज़ बढ़ो और सच्चाई अपनाओ, कहने में भी और करने में भी। और इज़्ज़त व पवित्रता को हाथ से न जाने दो, ऐसे काम न करो जो इन्सानियत के ख़िलाफ़ हैं, और भाईयों के साथ अच्छा सुलूक करो सब एक माँ बाप की औलाद हैं और सब एक दूसरे के हक़ीक़ी भाई हैं।

(٢٩٩) عَنْ عَمْرِوبْنِ عَبَسَةَ قَالَ دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَكَّةَ يَعْنِىْ فِىْ اَوَّلِ النُّبُوَّةِ، فَقُلْتُ مَااَنْتَ؟ قَالَ نَبِيٌّ، فَقُلْتُ وَمَا نَبِيٌّ؟ قَالَ اَرْسَلَنِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى، فَقُلْتُ بِاَىِّ شَيْءٍ اَرْسَلَكَ؟ قَالَ اَرْسَلَنِىْ بِصِلَةِ الْاَرْحَامِ وَكَسْرِ الْاَوْثَانِ وَاَنْ يُّوَحَّدَ اللّٰهُ لَا يُشْرَكُ بِهٖ شَيْءٌ. (مسلم۔ رياض الصالحين)

299. अन अमरिब्नि अबसता काला दख़लतु अलन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बिमक्कता यानी फी अव्वलिन्नुबुव्वति, फ-कुल्तु मा अन्ता? काला नबिय्युन, फ-कुल्तु वमा नबिय्युन? काला अरसलनीयल्लाहु तआला, फ-कुल्तु बिअय्यि शैइन अरसलका? काला अरसलनी बिसिलतिल अरहामि व कसरिल औसानि व अय्युअह्हदल्लाहु ला युश्रकु बिही शैउन। (मुस्लिम, रियाजुस्सालिहीन)

अनुवाद:- अमर बिन अबसा (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मक्का में आप की नुबुव्वत के शुरूआती ज़माने में गया, मैं ने पूछा कि आप (सल्ल॰) क्या हैं? हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि मैं नबी हूँ, मैं ने कहा कि नबी क्या होता है? हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया मुझे अल्लाह

तआला ने अपना रसूल (सफ़ीर) बना कर भेजा है। मैंने पूछा क्या संदेश देकर उस ने आप को भेजा है? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया मुझे अल्लाह तआला ने इस गर्ज़ से भेजा है कि मैं लोगों को सिला रहमी की शिक्षा दूँ और मुर्तियों की पूजा करनी बन्द कर दी जाये, और अल्लाह की तौहीद को अपनाया जाये और उस के साथ किसी को शरीक न किया जाये।

यह हदीस भी नबी की दावत की बुनियादी बातें बताती है, आप (सल्ल॰) ने अपनी दावत को थोड़े से शब्दों में समेट कर बयान फ़रमा दिया कि मेरी दावत यह है कि ख़ुदा और बन्दों के संबंध को सही बुनियादों पर क़ायम किया जाये, बन्दे और ख़ुदा के तअल्लुक़ की सही बुनियाद तौहीद है यानी ख़ुदा की हुकूमत में किसी को शरीक न किया जाये और सिर्फ़ उसी की इबादत की जाये, सिर्फ़ उसी की उपासना की जाये और इन्सानों के बीच सही तअल्लुक़ (संबंध) की बुनियाद बराबरी और एक दूसरे के साथ हमदर्दी की है यानी यह कि तमाम इन्सान एक माँ बाप की औलाद हैं और वास्तव में यह सब आपस में भाई-भाई हैं, तो उन को एक दूसरे से मुहब्बत होनी चाहिये और उन के दुख दर्द में उन का हाथ बटाना चाहिये बेसहारा और लाचार भाईयों की मदद करनी चाहिये। किसी पर ज़ुल्म हो रहा हो तो सब को ज़ालिम के ख़िलाफ़ उठ खड़ा होना चाहिये कोई अचानक किसी आफ़त के चक्कर में आ जाये तो हर एक के दिल में टेस उठनी चाहिये, और उस को आफ़त से निकालने के लिये दौड़ पड़ना चाहिये।

यह दो बुनियादें हैं अंबियाई दावत की, एक वहदत-ए-इलाह यानी तौहीद, दूसरी वहदत-ए-बनी आदम, यानी रहमत-ए-आम्मा, यहाँ यह बात सामने रखनी है कि असल चीज़ तो तौहीद है, और दूसरी बुनियाद तो तौहीद का लाज़िमी तक़ाज़ा है। जो ख़ुदा से मुहब्बत करेगा वह उस के बन्दों से भी मुहब्बत करेगा क्योंकि ख़ुदा ने बन्दों से मुहब्बत करने का हुक्म दिया है।

बन्दों की मुहब्बत व ख़ैरख़्वाही के जहाँ और बहुत से तक़ाज़े हैं वहाँ एक तक़ाज़ा वह भी है जिसे ईरानी सिपहसालार के सामने हज़रत मुग़ीरा

बिन शुअबा (रज़ि०) ने इस्लामी दावत का मतलब और नबियों के भेजे जाने का मक़सद बताते हुये बयान किया था, उन्हों ने ईरानी सिपहसालार की ग़लतफ़हमी दूर करते हुये कहा कि "हम ताजिर लोग नहीं हैं, हमारा मक़सद अपने लिये नई मंडियाँ तलाश करना नहीं है, हमारा मक़सद दुनिया हासिल करना नहीं है, हमारा मक़सद आख़िरत को हासिल करना है हम सच्चे धर्म के मानने वाले हैं और उसी की दावत देना हमारा मक़सद है" इस पर उस ने कहा कि वह सच्चा धर्म क्या है उस का परिचय कराओ तो हज़रत मुग़ीरा (रज़ि०) ने फ़रमाया-

أَمَّا عَمُوْدُهُ الَّذِىْ لَا يَصْلُحُ شَىْءٌ مِّنْهُ إِلَّا بِهٖ، فَشَهَادَةُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا
رَسُوْلُ اللّٰهِ وَالْإِقْرَارُ بِمَا جَاءَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ.

अम्मा अमूदुहल्लज़ी ला यसलुहु शैउन मिनहु इल्ला बिही, फ़-शहादतु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि वल इक़रारु बिमा जाआ मिन इनदिल्लाहि।

> **अनुवादः**- यानी हमारे दीन की बुनियाद और मरकज़ी नुक़ता जिस के बग़ैर इस दीन का कोई जुज़ अच्छी हालत में नहीं रह सकता, यह है कि आदमी गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है (यानी तौहीद) और यह कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं (यानी रिसालत) और यह कि अल्लाह की तरफ़ से आये हुये क़ानून (क़ुरआन) को अपनाये।

ईरानी सिपहसालार ने कहा, यह तो बहुत अच्छी शिक्षा है क्या इस धर्म की और भी शिक्षा है? हज़रत मुग़ीरा ने कहा-

وَإِخْرَاجُ الْعِبَادِ مِنْ عِبَادَةِ الْعِبَادِ إِلٰى عِبَادَةِ اللّٰهِ.

व इख़राजुल ईबादि मिन इबादतिल ईबादि इला इबादतिल्लाहि।

हाँ इस दीन की तालीम यह भी है कि इन्सान को इन्सान की बन्दगी से निकाल कर खुदा की बन्दगी में दाख़िल किया जाये।

ईरानी सिपहसालार ने कहा यह भी अच्छी शिक्षा है, क्या और भी कुछ यह धर्म कहता है? मुग़ीरा (रज़ि०) ने फ़रमाया-

وَالنَّاسُ بَنُوْ اٰدَمَ، فَهُمْ اِخْوَةٌ لِّاَبٍ وَّاُمٍّ

वन्नासु बनू आदमा, फहुम इख़्वतुल लिअबिवं वउम्मिन।

अनुवादः- इस धर्म की शिक्षा यह भी है कि तमाम इन्सान आदम की औलाद हैं और सब आपस में हक़ीक़ी भाई हैं।

यह है सच्चे धर्म की बुनियादी दावत जिस को सिपहसालार रुसतम के सामने हज़रत मुग़ीरा (रज़ि०) ने पेश किया और उसी सिपहसालार के सामने इसी मजलिस में हज़रत रिबई बिन आमिर ने इस्लाम का मतलब इन शब्दों में बयान किया-

اَللّٰهُ ابْتَعَثَنَا، لِنُخْرِجَ مَنْ شَاءَ مِنْ عِبَادَةِ الْعِبَادِ اِلٰی عِبَادَةِ اللّٰهِ وَمِنْ ضِيْقِ الدُّنْيَا اِلٰی سَعَتِهَا، وَمِنْ جَوْرِ الْاَدْيَانِ اِلٰی عَادِلِ الْاِسْلَامِ فَاَرْسَلَنَا بِدِيْنِهٖ اِلٰی خَلْقِهٖ لِنَدْعُوَهُمْ اِلَيْهِ.

(البدایہ والنہایہ ج ۷ ص ۳۹)

अल्लाहु इबतअसना, लिनुख़रिजा मन शाआ मिन ईबादतिल ईबादि इला इबादतिल्लाहि व मिन ज़ीक़िद्दुनिया इला सअतिहा, व मिन जौरिल अदयानि इला आदिलिल इस्लामि फ-अरसलना बिदीनिही इला ख़लक़िही लिनदउवहुम इलैहि।

(अल-बिदाया वन्निहाया, जिल्द 7 पृष्ठ 39)

अनुवादः- अल्लाह ने हम को यह काम सौंप दिया है कि जो लोग चाहें हम उन को इन्सानों की बन्दगी से निकालें और अल्लाह की बन्दगी में दाख़िल करें और तंग दुनिया से निकाल कर वसीअ दुनिया में लाएँ और ज़िन्दगी के ज़ालिमाना निज़ाम से निकाल कर इस्लाम के अदल व इन्साफ़ के साया में लाएँ। अल्लाह ने हमें अपना दीन दे कर इन्सानों के पास भेजा है ताकि उन्हें ख़ुदा के दीन की तरफ़ बुलाएँ।

दीन सियासी निज़ाम की हैसियत में

(۳۰۰) عَنْ خَبَّابِ ابْنِ الْاَرَتِّ قَالَ، شَكَوْنَا اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مُتَوَسِّدٌ بُرْدَةً لَّهٗ فِيْ ظِلِّ الْكَعْبَةِ، فَقُلْنَا اَلَا تَسْتَنْصِرُ لَنَا اَلَا تَدْعُوْا اللّٰهَ لَنَا؟ قَالَ كَانَ الرَّجُلُ فِيْمَنْ قَبْلَكُمْ يُحْفَرُ لَهٗ فِي الْاَرْضِ فَيُجْعَلُ فِيْهَا، فَيُجَاءُ بِالْمِنْشَارِ فَيُوْضَعُ عَلٰى

رَأْسِهِ فَيُشَقُّ بِاثْنَيْنِ وَمَا يَصُدُّهُ ذٰلِكَ عَنْ دِيْنِهِ، وَيُمْشَطُ بِأَمْشَاطِ الْحَدِيْدِ مَا دُوْنَ لَحْمِهِ مِنْ عَظْمٍ وَّعَصَبٍ وَّمَا يَصُدُّهُ ذٰلِكَ عَنْ دِيْنِهِ، وَاللّٰهِ لَيَتِمَّنَّ هٰذَا الْاَمْرُ حَتّٰى يَسِيْرَ الرَّاكِبُ مِنْ صَنْعَاءَ اِلٰى حَضْرَمَوْتَ لَايَخَافُ اِلَّا اللّٰهَ اَوِ الذِّئْبَ عَلٰى غَنَمِهٖ وَلٰكِنَّكُمْ تَسْتَعْجِلُوْنَ. (بخاری)

300. *अन ख़ब्बाबिबनिलअरत्ति काला शकौना इलन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा व हुवा मुतवस्सिदुन बुरदतन लहू फ़ी ज़िल्लिल-कअ़बति फ-कुलना अला तसतंसिरु लना अला तदउल्लाहा लना? काला कानर्रजुलु फ़ीमन क़ब्लकुम युहफरु लहू फ़िलअर्ज़ि फ-युजअलु फ़ीहा, फ-युजाउ बिलमिनशारि फ-यूज़उ अला रासिही फ-युशक़्कु बिइसनैनि वमा यसुद्दुहू ज़ालिका अन दीनिही, व युमशतु बिइमशातिल हदीदि मा दूना लहमिही मिन अज़्मिवं व असबिवं वमा यसुद्दुहू ज़ालिका अन दीनिही, वल्लाहि ल-यतिम्मन्ना हाज़ल अमरु हत्ता यसीरर्राकिबु मिन सनआ़आ इला हज़्रा मौता ला यख़ाफ़ु इल्लल्लाहा अविज़्ज़िअबा अला ग़नमिही वलाकिन्नकुम तसतअ़जिलूना।* (बुख़ारी)

अनुवाद:- हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल॰) काबा के साए में चादर सर के नीचे रख कर लेटे हुये थे (उस ज़माने में मक्का वाले बहुत ज़्यादा जुल्म व सितम मुसलमानों पर तोड़ रहे थे) हम ने आप (सल्ल॰) से कहा कि आप हमारे लिये अल्लाह की मदद नहीं माँगते? (आख़िर यह सिलसिला कब तक चलता रहेगा? आप इस जुल्म के ख़त्म होने की दुआ नहीं करते। कब यह मुसीबतें ख़त्म होंगी?) हुज़ूर (सल्ल॰) ने यह सुन कर फ़रमाया, तुम से पहले ऐसे लोग गुज़रे हैं कि उन में से किसी के लिये गढ़ा खोदा जाता, फिर उसे उस गढ़े में खड़ा किया जाता, फिर आरा लाया जाता और उससे उस के बदन को चीरा जाता, यहाँ तककि उस के दो टुकड़े हो जाते, फिर भी वह दीन से न फिरता, और उस के बदन में लोहे के कंघे चुभोये जाते जो गोश्त से गुज़र कर हड्डियों और पट्ठों तक पहुंच जाते मगर वह अल्लाह का बन्दा हक़ से न फिरता, क़सम है ख़ुदा की यह दीन ग़ालिब होकर

रहेगा, यहाँ तक कि सवार सनआ (यमन) से हज़्र-ए-मौत तक सफ़र करेगा और रास्ते में अल्लाह के सिवा उसे किसी का डर न होगा, हाँ चरवाहे को सिर्फ़ भेड़ियों का डर रहेगा कि कहीं बकरी उठा न ले जाए लेकिन अफ़सोस तुम लोग जल्दी करते हो।

यानी यमन से लेकर बहरैन व हज़्र-ए-मौत तक के वसीअ इलाक़ा में हक़ के दुश्मनों का ज़ोर टूट जाएगा और ख़ुदा के बन्दे आज़ादी से ख़ुदा की बन्दगी की राह पर चलेंगे।

हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि॰) ने मक्का की तेरह साल की ज़िनदगी की तारीख़ बड़ी जामिईय्यत के साथ इस हदीस में पेश फ़रमाई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने साफ़ शब्दों में उन्हें बताया कि सब्र से काम लो, वह वक़्त आने वाला है जब सियासी ताक़त इस्लाम के हाथ में आ जाएगी, और ख़ुदा की बन्दगी करने वाले हर तरह के डर और ख़तरे से महफ़ूज़ हो जाएँगे।

(٣٠١) عَنْ عَطَاءِ بْنِ اَبِىْ رَبَاحٍ قَالَ زُرْتُ عَائِشَةَ مَعَ عُبَيْدِبْنِ عُمَيْرِ نِ اللَّيْثِيِّ فَسَأَلْنَاهَا عَنِ الْهِجْرَةِ، فَقَالَتْ لَا هِجْرَةَ الْيَوْمَ، كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ يَفِرُّ اَحَدُهُمْ بِدِيْنِهٖ اِلَى اللّٰهِ وَاِلٰى رَسُوْلِهٖ مَخَافَةَ اَنْ يُّفْتَنَ عَلَيْهِ، فَاَمَّا الْيَوْمَ فَقَدْ اَظْهَرَ اللّٰهُ الْاِسْلَامَ وَالْيَوْمَ يَعْبُدُ رَبَّهٗ حَيْثُ شَاءَ وَلٰكِنْ جِهَادٌ وَّنِيَّةٌ. (بخاری)

301. *अन अताइब्नि रबाहिन काला ज़ुरतु आयशता मआ उबैदिब्नि उमैरिनिल्लैसिय्यि फ़-सअलनाहा अनिल हिजरति, फ़-कालत ला हिजरतल यौमा, कानलमोमिनूना यफ़िर्रु अहदुहुम बिदीनिही इलल्लाहि व इला रसूलिही मख़ाफ़ता अय्युफ़तना अलैहि, फ़-अम्मल यौमा फ़क़द अज़्हरल्लाहुल इस्लामा वलयौमा यअ़बुदु रब्बहू हैसु शाआ वलाकिन जिहादुवं वनिय्यतुन।* (बुख़ारी)

अनुवादः- अता बिन रबाह (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि मैं उबैद लैसी के साथ हज़रत आयशा (रज़ि॰) की मुलाक़ात को गया, हम ने उन से हिजरत के बारे में पूछा कि हिजरत अब भी फ़र्ज़ है? (क्या लोग अपने अपने इलाक़े को छोड़ कर आज भी मदीना आएँ?) हज़रत आयशा (रज़ि॰) ने जवाब दिया कि नहीं

अब हिजरत नहीं होगी, हुक्म मंसूख़ (ख़त्म) हो गया, हिजरत तो इस वजह से होती थी कि मोमिन की ज़िन्दगी ईमान लाने के जुर्म में दूभर कर दी जाती थी, तब वह अपना दीन व ईमान लेकर अल्लाह और रसूल के पास चला आता, अब तो अल्लाह ने दीन को ग़ालिब कर दिया आज मोमिन जहाँ चाहे आज़ादी से अल्लाह की बन्दगी कर सकता है, फिर वह हिजरत क्यों करे? हाँ जिहाद और जिहाद की निय्यत बाक़ी हैं।

बाइक़तिदार और ग़ालिब दीन जिस के बारे में हज़रत आयशा (रज़ि॰) ऊपर की हदीस में बात चीत कर रही हैं हुज़ूर (सल्ल॰) की मृत्यु के बाद उस की इजतिमाईयत और इक़तिदार को ख़तरा पहुंचने वाला था लेकिन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) ने बचा लिया, हुज़ूर की मृत्यू से लोगों को बड़ा दुख हुआ और लोग मायूस होने लगे ऐसा लगता था कि इस्लाम का यह इजतिमाई निज़ाम टूट फूट न जाये इस ख़तरा को हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने भांप लिया और एक लम्बी तक़रीर की जिस में फ़रमाया-

اَيُّهَا النَّاسُ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَاِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ، وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ حَيٌّ لَايَمُوْتُ، وَاِنَّ اللّٰهَ قَدْ تَقَدَّمَ اِلَيْكُمْ فِىْ اَمْرِهٖ فَلَا تَدْعُوْهُ جَزَعًا، وَاِنَّ اللّٰهَ قَدِ اخْتَارَ لِنَبِيِّهٖ مَا عِنْدَهٗ عَلٰى مَا عِنْدَكُمْ وَقَبَضَهٗ اِلٰى ثَوَابِهٖ وَخَلَّفَ فِيْكُمْ كِتٰبَهٗ وَسُنَّةَ نَبِيِّهٖ فَمَنْ اَخَذَ بِهِمَا عَرَفَ وَمَنْ فَرَّقَ بَيْنَهُمَا اَنْكَرَ، "يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰامِيْنَ بِالْقِسْطِ" وَلَا يَشْغَلَنَّكُمَ الشَّيْطٰنُ بِمَوْتِ نَبِيِّكُمْ وَلَايَفْتِنَنَّكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ، فَعَاجِلُوْهُ بِالَّذِىْ تُعْجِزُوْنَهٗ وَلَا تَسْتَنْظِرُوْهُ فَيَلْحَقَ بِكُمْ.

या अय्युहन्नासू मन काना यअबुदू मुहम्मदन फ़-इन्ना मुहम्मदन क़द माता, व मन काना यअबुदुल्लाहा फ़-इन्नल्लाहा हय्युन ला यमूतु, व इन्नल्लाहा क़द तक़द्दमा इलैकुम फ़ी अमरिही फ़ला तदऊहु जज़अन, व इन्नल्लाहा क़दिख़तारा लिनबिय्यिही मा इन्दहू अला मा इन्दकुम व क़बज़हू इला सवाबिही व ख़ल्लफ़ा फ़ीकुम किताबहू व सुन्नता नबिय्यिही फ़मन अख़ज़ा बिहिमा अरफ़ा व मन फ़र्रक़ा बैनहुमा अनकरा, या अय्युहल्लज़ीना आमनू कूनू क़व्वामीना बिलक़िस्ति वला यश्ग़लन्नकुमुश्शैतानु बिमौति नबिय्यिकुम वला यफ़तिनन्नकुम अन दीनिकुम, फ़-आजिलूहु

बिल्लज़ी तुअ़जिज़ूनहू वला तसतनज़िरुहु फ-यलहक़ा बिकुम।

अनुवादः- ऐ लोगो जो शख़्स मुहम्मद को माबूद बनाए हुए था, उस को मालूम होना चाहिये कि मुहम्मद (सल्ल०) की मौत हो गई और जो लोग खुदा की इबादत करते थे उन्हें समझ लेना चाहिये कि वह ज़िन्दा है, नहीं मरेगा। और अल्लाह तआला अपने दीन की हिफ़ाज़त का हुक्म तुम्हें दे चुका है, तो बेसब्री और घबराहट की वजह से उस दीन की हिफ़ाज़त करना न भूल बैठो और अल्लाह ने नबी (सल्ल०) को तुम्हारे बीच से उठा कर अपने पास बुलाना पसन्द किया जहाँ उन्हें उन के कामों का बदला देगा। और तुम्हारे बीच अल्लाह ने अपनी किताब और अपने रसूल की सुन्नत छोड़ी तो जो शख़्स उन दोनों पर अमल करेगा वह भलाई की राह पाएगा और जो उन दोनों के बीच फ़र्क़ करेगा वह बुरी राह अपनाएगा अल्लाह तआला ने तुम को ख़िताब कर के फ़रमाया था "ऐ ईमान वालो! हमारे उतारे हुये निज़ाम-ए-क़िस्त के मुहाफ़िज़ रहना" और ऐसा हर्गिज़ न हो कि शैतान तुम्हारे नबी की मौत में तुम को फंसाए रखे। तो शैतान के मुक़ाबले में जल्द से जल्द कोई ऐसा उपाय करो के उसे शकिस्त (पराजित) दे दो, उसे अपना काम करने की मुहलत न दो, वर्ना तुम पर टूट पड़ेगा और तुम्हारे दीनी निज़ाम को बरबाद कर के रख देगा।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) की इस तक़रीर से अच्छी तरह वाज़ेह होता है कि दीन का जो निज़ाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में क़ायम हुआ था, उस की क्या अहमियत है, हुज़ूर की मौत के दुख से लोग तौहीद और नमाज़ वग़ैरा छोड़ने का इरादा नहीं कर रहे थे कि उन्हें समझाने की ज़रूरत पड़ी थी, बल्कि यह ख़तरा पैदा हो गया था कि इस्लाम का निज़ाम-ए-हुकूमत जो इतनी मेहनत के बाद क़ायम हुआ था टूट फूट जाएगा। इस लिए हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि०) आगे बढ़े, सहाबा के मजमअ (सभा) में तक़रीर फ़रमाई जिस में सूरह निसा की आयत "या अय्युहल्लज़ीना आमनू कूनू क़व्वामीना बिलक़िस्ति" का हवाला देकर बताया अल्लाह तआला ने तुम्हें निज़ाम-ए-क़िस्त का मुहाफ़िज़ बनाया है

उस की हिफ़ाज़त का तुम से अहद लिया है तो मृतयु के ग़म को हद से न बढ़ने दो, उठो और शैतान को हराओ, अपने दीनी निज़ाम (पर्तिनिधि) को क़ायम रखने की बातें सोचो!

हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) ने सूरह निसा की जिस आयत का हवाला दिया उस से पहले अल्लाह तआला ने बताया है कि तुम से पहले बनी इस्राईल को हम ने अपनी अमानत सौंपी थी, लेकिन उन्हों ने ख़यानत और ग़द्दारी के नतीजे में अल्लाह का ग़ज़ब उन पर भड़का, क़ोमों की इमामत का हक़ उन से छीन लिया गया और उस वक़्त के शिर्क करने वालों की महकूमी उन के हिस्से में आई, अब तुम को उन की जगह दी जा रही है, तुम्हें किताब-ए-हिकमत और बड़ी हुकूमत से नवाज़ा जा रहा है, ख़बरदार बनी इस्राईल की तरह ख़यानत और बेवफ़ाई न करना, हम ने जिन्हें तौरात दी थी, उन्हें वसिय्यत की थी कि नाफ़रमानी न करना, वादे पर क़ायम रहना किताब से बेवफ़ाई न करना, लेकिन उन्हों ने नाशुक्री, ग़द्दारी और बेवफ़ाई की राह इख़्तियार की जिस की वजह से उन्हें बुरे नतीजे भुगतने पड़े, और अब तुम्हें (ऐ उम्मत-ए-मुहमदिय्या) वसिय्यत करते हैं कि तक़वा की राह पर चलना, वादा न तोड़ना, कुरआन की राह छोड़ कर हमारे ग़ज़ब को दावत न देना और उस के बाद यह हिदायत दी कि ऐ ईमान वालो! न्याय व इन्साफ़ के इस इलाही निज़ाम की हर क़ीमत पर हिफ़ाज़त करना।

यही विषय शब्दों के थोड़े से फ़र्क़ के साथ सूरह मायदा में भी दुहराया गया है सूरह मायदा आख़िरी अहकामी सूरह है जिस में क़ानून को पूरा कर दिया गया है, इस के बाद कोई अहकामी सूरह नहीं उतरी। यह सूरह अरफ़ात में उतरी इस का अन्दाज़े बयान ऐसा है जैसे कि आख़िरी बार उम्मत से इस मैदान में अहद (वादा) लिया जा रहा है कि देखो नेअ्मत को पूरा कर दिया गया है, एक बड़ी हुकूमत तुम्हारे हवाले की जा चुकी है अब तुम्हारा फ़र्ज़ है कि हमारे अहद पर क़ायम रहना, वर्ना याद रखो बनी इस्राईल की तारीख़ तुम्हारे सामने है, उन्हों ने अहद को तोड़ा तो कैसे ज़लील व अपमानित हुये।

यह है दीनी निज़ाम और उस की क़द्र व क़ीमत और अहमियत, पर

अफ़सोस कि उम्मत-ए-मुस्लिमा ने इस निज़ाम को खो दिया और रोना इस बात का कि यह उम्मत आराम की नींद सो रही है-

वाए नाकामी मता-ए-कारवाँ जाता रहा
कारवाँ के दिल से एहसास-ए-ज़ियाँ जाता रहा

जमाअत बनाना

(٣٠٢) اِنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا کَانَ ثَلٰثَۃٌ فِیْ سَفَرٍ فَلْیُؤَمِّرُوْا اَحَدَھُمْ۔
(ابوداؤد۔ابوسعید خدریؓ)

302. *इन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला इज़ा काना सलासतुन फ़ी सफ़रिन फलयुअम्मिरू अहदहुम।*

(अबू दाऊद, अबू सईद खुदरी)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तीन आदमी सफ़र को निकलें तो उन को चाहिये कि वह अपने में से किसी को अमीर बना लें।

शैख़ुलइस्लाम इब्ने तैमिया (रह०) फ़रमाते हैं कि जब सफ़र की हालत में लोगों पर जमाअत बनाना फ़र्ज़ किया गया तो यह बात और ज़्यादा ज़रूरी होगी कि ईमान वाले एक जमाअत की शक्ल अपनाएँ जबकि उन का जमाअती निज़ाम बिगड़ गया हो, मुसलमानों के लिये जाइज़ नहीं है कि अकेले ज़िन्दगी गुज़ारें।

(٣٠٣) عَنْ عَبْدِ اللّٰہِ بْنِ عَمْرٍو اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا یَحِلُّ لِثَلَاثَۃٍ یَکُوْنُوْنَ بِفَلَاۃٍ مِّنَ الْاَرْضِ اِلَّا اَمَّرُوْا عَلَیْہِمْ اَحَدَھُمْ۔ (منتقیٰ)

303. *अन अब्दिल्लाहिब्नि अमरिन अन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला ला यहिल्लु लिसलासतिन यकूनूना बिफ़लातिम मिनलअर्ज़ि इल्ला अम्मरू अलैहिम अहदहुम।* (मुन्तक़ा)

अनुवादः- अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अल-आस से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन आदमी जो किसी जंगल में रहते हों उन के लिये जाइज़ नहीं है मगर यह कि वह अपने में से किसी को अपने ऊपर अमीर बना लें।

(٣٠٤) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ الشَّيْطٰنَ ذِئْبُ الْإِنْسَانِ الْغَنَمِ يَأْخُذُ الشَّاذَّةَ وَالْقَاصِيَةَ وَالنَّاحِيَةَ وَإِيَّاكُمْ وَالشِّعَابَ، وَعَلَيْكُمْ بِالْجَمَاعَةِ وَالْعَامَّةِ.

(مسند احمد، مشکوۃ۔ معاذ بن جبلؓ)

304. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नश्शैताना ज़िअबुल इन्सानिल ग़नमि याख़ुज़ुश्शाज़्ज़ता वल क़ासियति वन्नाहियता व इय्याकुम वश्शिआबा, व अलैकुम बिलजमाअति वलआम्मति।* (मुस्नद अहमद, मिश्कात, मुआज़ बिन जबल)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस तरह बकरियों का दुश्मन भेड़िया है और अपने रेवड़ से अलग हो जाने वाली बकरियों का आसानी के साथ शिकार कर लेता है, उसी तरह शैतान इन्सान का भेड़िया है अगर लोग जमाअत बना कर न रहें तो यह उन को अलग अलग बहुत ही आसानी के साथ शिकार कर लेता है।

तो ऐ लोगो पकडंडियों पर मत चलना, बल्कि तुम्हारे लिये ज़रूरी है कि जमाअत और आम मुसलमानों के साथ रहो"

"जमाअत के साथ रहो" यह उस वक़्त का हुक्म है जब मुसलमानों की "अल-जमाअत" मौजूद हो, और अगर मौजूद न हो तो क्या हो? यह बड़ा अहम सवाल है और उसका सीधा साधा जवाब यह है कि जमाअत बनाओ ताकि "अल-जमाअत" वुजूद में आये।

(٣٠٥) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَسْكُنَ بِحُبُوْحَةِ الْجَنَّةِ فَلْيَلْزَمِ الْجَمَاعَةَ فَإِنَّ الشَّيْطٰنَ مَعَ الْوَاحِدِ وَهُوَ مِنَ الْاِثْنَيْنِ أَبْعَدُ.

305. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन सर्रहू अंय्यसकुना बुजूहतल जन्नति फ़लयलज़िमिल जमाअता फ-इन्नश्शैताना मअल वाहिदि वहुवा मिनल इस्नैनि अबअदु।*

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स जन्नत के बीच में अपना घर बनाना चाहता है, उसे "जमाअत से" चिमटे रहना चाहिये, इस लिये कि शैतान एक आदमी के साथ होता है, और जब वह दो जाएँ तो वह दूर हो जाता है।

अगर मुसलमानों की "अल-जमाअत" मौजूद हो तो उस से चिमटे रहना ज़रूरी है उस वक़्त उस से अलग रहना जाइज़ नहीं है। "अल-जमाअत" से मुराद वह हालत है जब इस्लाम ग़ालिब हो, हुकूमत उस के हाथ में हो, और ईमान वाले एक अमीर की सरदारी और रहनुमाई पर एक साथ हों, ऐसे वक़्त में किसी के लिये जमाअत से अलग ज़िन्दगी गुज़ारना जाइज़ नहीं है और जब "अल-जमाअत" मौजूद न हो, तो जमाअत बन कर ऐसे ढंग से दीन का काम करना होगा कि "अल-जमाअत" वुजूद में आ जाये।

अमीर व मामूर के तअल्लुक़ की नौईयत

(٣٠٦) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلَا كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ، فَالْاِمَامُ الَّذِىْ عَلَى النَّاسِ رَاعٍ وَّهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلٰى اَهْلِ بَيْتِهٖ وَهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلٰى بَيْتِ زَوْجِهَا وَوَلَدِهٖ وَهِىَ مَسْئُوْلَةٌ عَنْهُمْ. (بخاری، مسلم، ابن ماجہ)

306. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अला कुल्लुकुम राईन व कुल्लुकुम मसऊलुन अन रईय्यतिही फल-इमामुल्लज़ी अलन्नासि राइवं वहुवा मसऊलुन अन रइय्यतिही वर्रजुलु राईन अला अहलि बैतिही वहुवा मसऊलुन अन रइय्यतिही, वलमरअतु राईयतुन अला बैति ज़ौजिहा व वलदिही व हिया मसऊलतुन अनहुम।* (बुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने उमर)

> **अनुवादः-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से हर शख़्स मुहाफ़िज़ (रक्षक) और निगराँ है और उस से उन लोगों के बारे में पूछ गछ होगी जो उस की निगरानी में दिए गये हैं, तो अमीर जो लोगों का निगराँ है उस से उस की रिआया के बारे में पूछ गछ होगी, और मर्द अपने घर वालों (बीवी बच्चों) का निगराँ है तो उस से उस की पर्जा के बारे में पूछ गछ होगी और बीवी अपने शौहर की औलाद की निगराँ है और उस से औलाद के बारे में पूछ गछ होगी।

"निगराँ है" यानी उन की तर्बियत व सुधार का ज़िम्मेदार है यह उस की ज़िम्मेदारी है कि उन को ठीक हालत में रखे और बिगड़ने से बचाये,

अगर उन की तर्बियत और सुधार की तरफ़ ध्यान नहीं देता है उन को बिगड़ने के लिये छोड़ देता है तो उस से अल्लाह तआला हिसाब के दिन पूछ गछ करेगा।

(٣٠٧) عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَا مِنْ وَّالٍ يَّلِى رَعِيَّةً مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ وَهُوَ غَاشٌّ لَّهُمْ اِلَّا حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ. (متفق علیہ)

307. *अन मअक़िलिब्नि यसारिन क़ाला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यक़ूलु मा मिंव्वालिन यली रईय्यतम मिनलमुस्लिमीना व हुवा ग़ाशुल्लहुम इल्ला हर्रमल्लाहु अलैहिल जन्नता।* (मुत्तफ़क़ अलैहि)

अनुवादः- मअक़िल बिन यसार (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुये सुना कि जो शख़्स मुसलमानों की जमाअत का ज़िम्मेदार हो और वह उन के साथ ख़यानत करे तो अल्लाह उस पर जन्नत हराम कर देगा।

(٣٠٨) عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اَيُّمَا وَالٍ وَّلِيَ مِنْ اَمْرِ الْمُسْلِمِيْنَ شَيْئًا فَلَمْ يَنْصَحْ لَهُمْ وَلَمْ يَجْهَدْ لَهُمْ كَنُصْحِهٖ وَجُهْدِهٖ لِنَفْسِهٖ كَبَّهُ اللّٰهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فِى النَّارِ. وَفِىْ رِوَايَةٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ لَّمْ يَحْفَظْهُمْ بِمَا يَحْفَظُ بِهٖ نَفْسَهٗ وَاَهْلَهٗ. (طبرانی۔ کتاب الخراج)

308. *अन मअक़िलिब्नि यसारिन क़ाला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यक़ूलु अय्युमा वालिवं वलिया मिन अमरिलमुस्लिमीना शैअन फ़लम यनसह लहुम वलम यजहद लहुम क-नुसहिही व जुहदिही लिनफ़्सिही कब्बहुल्लाहु अला वज्हिही फ़िन्नारि व फ़ी रिवायतिन अनिब्नि अब्बासिन लम यहफ़ज़्हुम बिमा यहफ़ज़ु बिही नफ़्सहू व अहलहू।* (तिबरानी, किताबुल ख़िराज)

अनुवादः- हज़रत मअक़ल बिन यसार (रज़ि०) कहते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुये सुना कि जिस किसी शख़्स ने मुसलमानों की जमाअत की ज़िम्मेदारी क़ुबूल की, फिर उस ने उन के साथ भलाई नहीं की

और उन के काम को करने के लिये अपने आप को उस तरह नहीं थकाया जिस तरह वह अपनी ज़ात के लिये अपने आपको थकाता है, तो अल्लाह तआला उस शख़्स को मुंह के बल जहन्नम में गिरा देगा। और इब्ने अब्बास की रिवायत में है, फिर उन की हिफ़ाज़त ऐसे तरीक़े से नहीं की जिस तरीक़े से अपनी और अपने घर वालों की हिफ़ाज़त करता था।

(۳۰۹) عَنْ يَزِيْدَبْنِ اَبِیْ سُفْيَانَ قَالَ قَالَ اَبُوْبَكْرٍ حِيْنَ بَعَثَنِیْ اِلَى الشَّامِ، يَايَزِيْدُ اِنَّ لَکَ قَرَابَةً عَسَيْتَ اَنْ تُؤْثِرَهُمْ بِالْاِمَارَةِ وَ ذٰلِکَ اَكْبَرُ مَا اَخَافُ عَلَيْکَ فَاِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ وَّلِیَ مِنْ اَمْرِ الْمُسْلِمِيْنَ شَيْئًا فَاَمَّرَ عَلَيْهِمْ اَحَدًا مُّحَابَةً، فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ صَرْفًا وَّلَا عَدْلًا حَتّٰى يُدْخِلَهٗ جَهَنَّمَ.

(کتاب الخراج، امام ابو یوسفؒ)

309. *अन यज़ीदब्नि अबी सुफियाना काला काला अबू बक्रिन हीना बअसनी इलश्शामि, या यज़ीदु इन्ना लका कराबतन असैता अन तूसिरहुम बिल इमारति वज़ालिका अकबरु मा अख़ाफु अलैका, फइन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला मव्वलिया मिन अमरिल मुस्लिमीना शैअन फ-अम्मरा अलैहिम अहदन महाबतन, फ-अलैहि लअनतुल्लाहि ला यकबलुल्लाहु मिनहु सरफवं वला अदलन हत्ता युदख़िलहू जहन्नमा।* (किताबुल ख़िराज, इमाम अबू यूसुफ़)

अनुवाद:- यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान कहते हैं कि जब हज़रत अबू बक्र ने मुझे सिपहसालार बना कर शाम की तरफ़ रवाना किया तो उस वक़्त यह नसीहत फ़रमाई, ऐ यज़ीद तुम्हारे कुछ रिश्तेदार हैं, हो सकता है कि तुम उन को ज़िम्मेदारियाँ सौंपने में तर्जीह (महानता) दो, यह सब से बड़ा डर है जो मुझे तुम्हारी तरफ़ से है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मुसलमानों के इजतिमाई मुआमलात का ज़िम्मेदार हो और वह मुसलमानों पर किसी को हुकूमत करने वाला बनाए सिर्फ़ रिश्तेदारी या दोस्ती की वजह से तो उस के ऊपर अल्लाह की लानत होगी, अल्लाह उस की तरफ़ से कोई फ़िदिया कुबूल नहीं करेगा। यहाँ तक कि जहन्नम मे डाल देगा।

(٣١٠) قَالَتْ اَسْمَاءُ بِنْتُ عُمَيْسٍ اِنَّ اَبَابَكْرٍ قَالَ لِعُمَرَ يَاابْنَ الْخَطَّابِ اِنِّی اِنَّمَا اسْتَخْلَفْتُکَ نَظَرًا لِمَا خَلَفْتُ وَرَائِیْ، وَقَدْ صَحِبْتَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَاَيْتَ مِنْ اَثَرَتِهٖ اَنْفُسَنَا عَلٰى نَفْسِهٖ وَاَهْلَنَا عَلٰى اَهْلِهٖ حَتّٰى اِنْ كُنَّا لَنَظَلُّ لَنُهْدِیْ اِلٰى اَهْلِهٖ مِنْ فُضُوْلِ مَا يَاتِيْنَا عَنْهُ. (کتاب الخراج، امام ابو یوسفؒ)

310. *कालत असमाउ बिन्तु उमैसिन इन्ना अबा बकरिन काला लिउमरा यब्नलख़त्ताबि इन्नी इन्नमस्तख़लफतुका नज़रल्लिमा ख़ल्लफतु वराई, वक़द सहिब्ता रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ-रऐता मिन असरतिही अनफुसना अला नफ़्सिही व अहलना अला अहलिही हत्ता इन कुन्ना लनज़ुल्लु लनुहदी इला अहलिही मिन फ़ुज़ूलि मा यातीना अनहु।* (किताबुल ख़िराज, इमाम अबू यूसुफ़)

अनुवादः– असमा बिन्ते उमैस (रज़ि॰) का बयान है कि हज़रत अबू बक्र ने हज़रत उमर (रज़ि॰) से फ़रमाया कि ऐ ख़त्ताब के बेटे! मैंने मुसलमानों पर मुहब्बत की वजह से तुम्हें ख़लीफ़ा चुना है, और तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रह चुके हो तुम ने देखा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस तरह हम को अपने ऊपर और हमारे घर वालों को अपने घर वालों के ऊपर महानता देते थे, यहाँ तक कि हम को जो कुछ भी आप की तरफ़ से मिलता उस में से जो कुछ बच जाता वह हम नबी के घर वालों को हदिया (भेंट) भेजा करते थे।

(٣١١) خَطَبَ عُمَرُبْنُ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ فَقَالَ اَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ لَنَا عَلَيْكُمْ حَقَّ النَّصِيْحَةِ بِالْغَيْبِ وَالْمَعُوْنَةِ عَلَى الْخَيْرِ، اَيُّهَا الرِّعَاءُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ حِلْمٍ اَحَبَّ اِلَى اللّٰهِ وَلَا اَعَمَّ نَفْعًا مِّنْ حِلْمِ اِمَامٍ وَّرِفْقِهٖ، وَلَيْسَ مِنْ جَهْلٍ اَبْغَضَ اِلَى اللّٰهِ وَاَعَمَّ ضَرَرًا مِّنْ جَهْلِ اِمَامٍ وَّخَرَقِهٖ. (کتاب الخراج۔امام ابو یوسفؒ)

311. *ख़तबा उमरुब्नुल ख़त्ताबि रज़िअल्लाहु अन्हु फकाला अय्युहन्नासु इन्ना लना अलैकुम हक्कन्नसीहति बिलग़ैबि वलमऊनति अललख़ैरि, अय्युहर्रिआउ इन्नहू लैसा मिन हिल्मिन अहब्बा इलल्लाहि वला अअम्मा नफ़अम मिन हिल्मि इमामिवं व*

रिफ़्किही, व लैसा मिन जहलिन अबग़ज़ा इलल्लाहि व अअम्मा ज़ररम्मिन जहलि इमामिवं वख़रक़िही। (किताबुल ख़िराज, इमाम अबू यूसुफ़)

अनुवादः- अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि॰) ने (एक सभा में जिस में पर्जा और हुकूमत के ज़िम्मेदार लोग मौजूद थे) तक़रीर करते हुये फ़रमाया, ऐ लोगो! हमारा तुम पर हक़ है कि हमारे पीछे हमारा भला चाहने वाला बन कर रहो और नेकी के कामों में हमारी मदद करो (फिर फ़रमाया) ऐ हुकूमत के ज़िम्मेदारो! अमीर की बुर्दबारी और उस की नर्मी से ज़्यादा नफ़ा देने वाली और अल्लाह को महबूब कोई और बुर्दबारी नहीं है। इसी तरह अमीर की जज़्बातियत और बेसलीक़ा काम करने से ज़्यादा नुक़सानदेह और मबग़ूज़ कोई और जज़्बातियत और बदसलीक़गी नहीं है।

(۳۱۲) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ عَلَى الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ فِيْمَا اَحَبَّ وَكَرِهَ مَالَمْ يُؤْمَرْ بِمَعْصِيَةٍ، فَاِذَا اُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ فَلَا سَمْعَ وَلَا طَاعَةَ.

(متفق علیہ ابن عمرؓ)

312. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अस्समउ वत्ताअतु अललमरईल मुस्लिमि फ़ीमा अहब्बा व करिहा मालम यूमर बिमअसियतिन, फ़इज़ा उमिरा बिमअसियतिन फ़ला समअ़ा वला ताअता।* (मुत्तफ़क़ अलैहि, इब्नि उमर)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमानों को इजतिमाई मुआमलात के ज़िम्मेदार की बात सुननी और माननी ज़रूरी है, चाहे वह हुक्म आप को पसन्द हो या न हो मगर जबकि वह अल्लाह की नाफ़रमानी करने का हुक्म न हो, और जब उसे अल्लाह की नाफ़रमानी का हुक्म दिया जाए तो वह बात न सुननी चाहिये न माननी चाहिये।

(۳۱۳) عَنْ تَمِيْمِ ِ الدَّارِيِّ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الدِّيْنُ النَّصِيْحَةُ ثَلَاثًا قُلْنَا لِمَنْ؟ قَالَ لِلّٰهِ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِكِتٰبِهٖ وَلِاَئِمَّةِ الْمُسْلِمِيْنَ وَعَامَّتِهِمْ. (مسلم)

313. *अन तमीमिनिद्दारिरिय्यि अन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कालद्दीनुन नसीहतु सलासन कुलना लिमन? काला*

लिल्लाहि व लिरसूलिही व लिकिताबिही व लिअइम्मतिल मुस्लिमीना व आम्मतिहिम। (मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत तमीम दारी से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, दीन ख़ुलूस और ख़ैरख़्वाही का नाम है। यह बात आप ने तीन बार फ़रमाई हम ने पूछा किस के लिये ख़ुलूस और ख़ैरख़्वाही? आप ने फ़रमाया अल्लाह के लिये, उस के रसूल के लिये, उस की किताब के लिये, मुसलमानों के इज्तिमाई निज़ाम के ज़िम्मेदारों के लिये और आम मुसलमानों के लिये।

नसीहत का लफ़्ज़ अरबी ज़ुबान में ख़यानत और बेईमानी, खोट और मिलावट की ज़िद के तौर पर इस्तेमाल होता है जिसका तर्जुमा मुख़्लिसाना वफ़ादारी और मुख़्लिसाना ख़ैरख़्वाही से किया जाता है अल्लाह के लिये मुख़्लिसाना वफ़ादारी का तो मतलब बिल्कुल साफ़ है, और हम उसे ईमान बिल्लाह के मज़मून में बयान कर आये हैं, इसी तरह किताब और रसूल के साथ ख़ुलूस और वफ़ादारी का मतलब भी कुरआन और रसूल के विषय में बयान हो चुका है। ईमानियात के बाब में देख लिया जाये और आम मुसलमानों के साथ ख़ैरख़्वाही और ख़ूलूस की तफ़सील मुआशिरत के बाब में मुसलमानों के हुकूक के बयान में दी जा चुकी है। रही मुसलमानों के इज्तिमाई निज़ाम के ज़िम्मेदारों के साथ ख़ैरख़्वाही और मुख़्लिसाना वफ़ादारी, तो उस का मतलब यह है कि उन से मुहब्बत का तअल्लुक़ हो अगर वह हुक्म दें तो वफ़ादाराना इताअत (उपासना) होनी चाहिये। और दावत व तंज़ीम के कामों में ख़ुशदिली के साथ उन का हाथ बटाना चाहिये। और वह किसी ग़लत रुख़ पर जा रहे हों, तो मुहब्बत भरे लेहजे में उन्हें टोकना चाहिये। अगर कोई ग़लत क़िस्म की रवादारी बरतता है, ग़लती को देखता है मगर टोकता नहीं, तो ऐसा शख़्स अपने ज़िम्मेदार का ख़ैरख़्वाह नहीं है, बुरा चाहने वाला है, ऐसा करना जमाअती ख़यानत के हममाना है। लेकिन यह उस वक़्त हो सकता है जब ज़िम्मेदार लोग मुख़्लिसाना तनक़ीद बरदाश्त करें, ना सिर्फ़ बरदाश्त करें बल्कि लोगों के अन्दर यह तअस्सुर (असर) पैदा कर दें कि उन का सरबराह ग़लती पर टोकने को पसन्द करता है और ऐसे लोगों से मुहब्बत करता और उन की

इस ख़ैरख़्वाही के जवाब में उन के लिये भलाई की दुआ करता है और कोई अगर बेढंगे तरीक़े से टोके तो उसे नर्मी से बताए कि इस अंदाज़ से बात न कहो जो तहज़ीब के ख़िलाफ़ हो। हज़रत उमर (रज़ि०) को किसी ने किसी बात पर टोका तो सभा में से एक शख़्स ने अमीरुलमोमिनीन की शान व हैसियत का ख़याल कर के टोकने वाले को दबाना और ख़ामोश करना चाहा, तो हज़रत उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया–

دَعْهُ لَا خَيْرَ فِيهِمْ إِنْ لَّمْ يَقُوْلُوْهَا لَنَا وَلَا خَيْرِ فِيْنَا إِنْ لَّمْ نَقْبَلْ. (كتاب الخراج، امام ابو يوسفؒ)

दअहु ला ख़ैरा फ़ीहिम इल्लम यक़ूलूहा लना वला ख़ैरि फ़ीना इल्लम नक़बल। (किताबुल ख़िराज, इमाम अबू यूसुफ़)

अनुवादः– इसको कहने दो, अगर लोग हम से इस तरह की बातें न कहें तो उन के अन्दर कोई भलाई नहीं हम इस तरह की ख़ैरख़्वाही को कुबूल न करें तो हमारे अन्दर कोई भलाई नहीं।

इसी तरह के बहुत से नमूने हमारे असलाफ़ ने छोड़े हैं जिन में दोनों के लिये हिदायत और रौशनी है, उमरा के लिये भी और मामूरीन के लिये भी, यहाँ हम सिर्फ़ एक नमूना पेश करेंगे, जब हज़रत उमर (रज़ि०) पर ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी आई तो अबू उबैदा (रज़ि०) और मुआज़ बिन जबल (रज़ि०) ने मिल कर एक ख़त लिखा जिस के लफ़्ज़-लफ़्ज़ से भलाई टपकती है ख़त यह है–

مِنْ أَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ الْجَرَّاحِ وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ إِلَى عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ سَلَامٌ عَلَيْكَ. أَمَّا بَعْدُ:

فَإِنَّا عَهِدْنَاكَ وَأَمْرُ نَفْسِكَ لَكَ مُهِمٌّ، فَأَصْبَحْتَ قَدْ وُلِّيتَ أَمْرَ هٰذِهِ الْأُمَّةِ أَحْمَرِهَا وَأَسْوَدِهَا، يَجْلِسُ بَيْنَ يَدَيْكَ الشَّرِيفُ وَالْوَضِيعُ وَالْعَدُوُّ وَالصَّدِيقُ، وَلِكُلٍّ حِصَّةٌ مِنَ الْعَدْلِ، فَانْظُرْ كَيْفَ أَنْتَ عِنْدَ ذٰلِكَ يَا عُمَرُ وَإِنَّا نُحَذِّرُكَ يَوْمًا تَعْنُوْ فِيهِ الْوُجُوْهُ، وَتَجِفُ فِيهِ الْقُلُوْبُ، وَتَنْقَطِعُ فِيهِ الْحُجَجُ لِحُجَّةِ مَلِكٍ قَهَرَهُمْ بِجَبَرُوْتِهِ، فَالْخَلْقُ دَاخِرُوْنَ لَهُ، يَرْجُوْنَ رَحْمَتَهُ، وَيَخَافُوْنَ عِقَابَهُ وَإِنَّا كُنَّا نُحَدَّثُ أَنَّ أَمْرَ هٰذِهِ الْأُمَّةِ سَيَرْجِعُ فِي آخِرِ زَمَانِهَا إِلَى أَنْ يَكُوْنُوْا إِخْوَانَ الْعَلَانِيَةِ أَعْدَاءَ السَّرِيْرَةِ وَإِنَّا نَعُوْذُ بِاللّٰهِ أَنْ يَنْزِلَ كِتَابُنَا إِلَيْكَ سِوَى الْمَنْزِلِ الَّذِي نَزَلَ مِنْ قُلُوْبِنَا، فَإِنَّمَا كَتَبْنَا بِهِ نَصِيحَةً لَكَ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ.

मिन अबी उबैदतब्निल जर्राहि व मुआज़िब्नि जबलिन इला उमरब्निल ख़त्ताबि सलामुन अलैका अम्मा बअदः

फ-इन्ना अहिदनाका व अमरु नफ़्सिका लका मुहिम्मुन, फ-असबहता कद वुल्लीता अमरा हाज़िहिल उम्मति अहमरिहा व असवदिहा, यजलिसु बैना यदैकश्शरीफु वल वज़ीउ वल अदुव्वु वस्सदीकु, व लिकुल्लिन हिस्सतुम मिनल अद्लि, फन्ज़ुर कैफा अन्ता इन्दा ज़ालिका या उमरु! व इन्ना नुहज़्ज़िरुका यौमन तअनू फ़ीहिल वुजूहि, व तजिफु फ़ीहिल कुलूबु, व तनकतिउ फ़ीहिल हिजजु लिहुज्जति मलिकिन कहरहुम बिजबरूतिही, फलख़ल्कु दाख़िरूना लहू, यरजूना रहमतहू, व यख़ाफ़ूना इक़ाबहू व इन्ना कुन्ना नुहद्दसु अन्ना अमरा हाज़िहिल उम्मति सयरजिउ फ़ी आख़िरि ज़मानिहा इला अंय्यकूनू इख़वानल अलानियति अअ़दाअस्सरीरति व इन्ना नऊज़ु बिल्लाहि अंय्यन्ज़िला किताबुना इलैका सवलमंज़िलिल्लज़ी नज़ला मिन कुलूबिना, फइन्नमा कतबना बिही नसीहतल्लका वस्सलामु अलैका।

अनुवादः– यह ख़त अबू उबैदा बिन जर्राह और मुआज़ बिन जबल (रज़ि॰) की तरफ़ से हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि॰) के नाम, आप पर सलामती हो।

हम ने आप को इस हाल में देखा है कि आप अपने ज़ाती सुधार व तर्बियत व निगरानी के लिये फ़िक्रमंद रहते थे, और अब तो आप पर इस पूरी उम्मत की तर्बियत व निगरानी की ज़िम्मेदारी आ पड़ी है। अमीरुलमोमिनीन आप की मजलिस में ऊँचे दर्जा के लोग भी बैठेंगे और निचले दर्जा के लोग भी, दुश्मन भी आप के पास आएँगे, दोस्त भी, और इन्साफ़ में हर एक का हिस्सा है तो आप को सोचना है कि ऐसी हालत में आप क्या करेंगे? हम आप को उस दिन से डराते हैं जिस दिन ख़ुदा के सामने लोग सर झुकाए होंगे, दिल डर की वजह से काँप रहे होंगे और ज़बरदस्त और क़ाहिर ख़ुदा की दलीलों के सामने सब की दलीलें बेकार हो कर रह जाएँगी, उस दिन तमाम लोग उस के सामने आजिज़ व बेबस होंगे, लोग उस की

रहमत की उम्मीद करते होंगे और उस के अज़ाब से डर रहे होंगे। और हम से यह हदीस बयान की गई कि इस उम्मत के लोग आख़िर ज़माने में ज़ाहिरी तौर पर एक दूसरे के दोस्त होंगे और बातिनी तौर पर एक दूसरे के दुश्मन होंगे।

और हम इस बात से अल्लाह की पनाह मांगते हैं कि हमारे इस ख़त को आप वह हैसियत न दें जो उस की वाक़ई और हक़ीक़ी हैसियत है हम ने यह ख़त ख़ैरख़्वाही व इख़लास के जज़्बा से आप को लिखा है। वस्सलामु अलैहा"

यह ख़त अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि०) के पास पहुंचा और उन्हों ने उस का यह जवाब दिया।

مِنْ عُمَرَبْنِ الْخَطَّابِ إِلٰى أَبِيْ عُبَيْدَةَ وَمُعَاذٍ، سَلَامٌ عَلَيْكُمَا، أَمَّا بَعْدُ: فَقَدْ أَتَانِيْ كِتَابُكُمَا تَذْكُرَانِ أَنَّكُمَا عَهِدْتُمَانِيْ وَأَمْرُ نَفْسِيْ لِيْ مُهِمٌّ، فَأَصْبَحْتُ قَدْ وَلِيْتُ أَمْرَ هٰذِهِ الْأُمَّةِ أَحْمَرِهَا وَأَسْوَدِهَا يَجْلِسُ بَيْنَ يَدَيَّ الشَّرِيْفُ وَالْوَضِيْعُ وَالْعَدُوُّ وَالصَّدِيْقُ. وَلِكُلٍّ حِصَّةٌ مِّنَ الْعَدْلِ كَتَبْتُمَا فَانْظُرْ كَيْفَ أَنْتَ عِنْدَ ذٰلِكَ يَا عُمَرُ وَإِنَّهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ عِنْدَ عُمَرَ عِنْدَ ذٰلِكَ إِلَّا بِاللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ، وَكَتَبْتُمَا تُحَذِّرَانِنِيْ مَا حُذِّرَتْ عَنْهُ الْأُمَمُ قَبْلَنَا، وَقَدِيْمًا كَانَ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ بِآجَالِ النَّاسِ يُقَرِّبَانِ كُلَّ بَعِيْدٍ، وَيُبْلِيَانِ كُلَّ جَدِيْدٍ، وَيَأْتِيَانِ بِكُلِّ مَوْعُوْدٍ، حَتّٰى يَصِيْرَ النَّاسُ إِلٰى مَنَازِلِهِمْ مِّنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، كَتَبْتُمَا تُحَذِّرَانِنِيْ أَنَّ أَمْرَ هٰذِهِ الْأُمَّةِ سَيَرْجِعُ فِيْ اٰخِرِ زَمَانِهَا إِلٰى أَنْ يَّكُوْنُوْا إِخْوَانَ الْعَلَانِيَةِ أَعْدَاءَ السَّرِيْرَةِ وَلَسْتُمْ بِأُوْلٰئِكَ، وَلَيْسَ هٰذَا بِزَمَانِ ذَاكَ، وَذٰلِكَ زَمَانٌ تَظْهَرُ فِيْهِ الرَّغْبَةُ وَالرَّهْبَةُ، تَكُوْنُ رَغْبَةُ النَّاسِ بَعْضِهِمْ إِلٰى بَعْضٍ لِصَلَاحِ دُنْيَاهُمْ، كَتَبْتُمَا تُعَوِّذَانِنِيْ بِاللّٰهِ أَنْ أُنْزِلَ كِتٰبَكُمَا سِوَى الْمَنْزِلِ الَّذِيْ نَزَلَ مِنْ قُلُوْبِكُمَا، وَأَنَّكُمَا كَتَبْتُمَا بِهٖ نَصِيْحَةً لِّيْ، وَقَدْ صَدَقْتُمَا، فَلَا تَدَعَا الْكِتَابَةَ إِلَيَّ، فَإِنَّهُ لَا غِنٰى لِيْ عَنْكُمَا، وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمَا. (المسلمون، فروری ۱۹۵۳ء)

मिन उमरब्निल ख़त्ताबि इला अबी उबैदता व मुआज़िन, सलामुन अलैकुमा, अम्मा बअद: फ़क़द अतानी किताबुकुमा तज़कुरानि अन्नकुमा अहित्तुमानी व अमरु नफ़्सी ली मुहिम्मुन, फ़-असबहतु क़द वल्लैतु अमरा हाज़िहिल उम्मति अहमरिहा व असवदिहा यजलिसु बैना यदय्यश्शरीफ़ु वलवज़ीउ वलअदुव्वु वस्सदीक़ु

व लिकुल्लिन हिस्सतुम मनिल अद्लि कतबतुमा फन्ज़ुर कैफा अन्ता इन्दा ज़ालिका या उमरु व इन्नहू ला हौला वला कुव्वता इन्दा उमरा इन्दा ज़ालिका इल्ला बिल्लाहि अज़्ज़ा व जल्ला व कतबतुमा तुहज़्ज़िरानिनी मा हुज़्ज़िरत उनहुल उममु क़ब्लना, व क़दीमन कानख़्तिलाफुल्लैलि वन्नहारि बिआजालिन्नासि यकर्रिबानि कुल्ला बईदिन, व युबलियानि कुल्ला जदीदिन, व यातियानि बिकुल्लि मौऊदिन, हत्ता यसीरन्नासु इला मनाज़िलिहिम मिनल जन्नति वन्नारि, कतबतुमा तुहज़्ज़िरानिनी अन्ना अमरा हाज़िहिल उम्मति स-यरजिउ फी आख़िरि ज़मानिहा इला अय्यकूनू इख़वानल अलानियति अअ्दाअस्सरीरति व लस्तुम बि-ऊलाईका, व लैसा हाज़ा बिज़मानि ज़ाका, व ज़ालिका ज़मानुन तज़हरु फीहिर्रग़बतु वर्रहबतु, तकूनु रग़बतुन्नासि बअज़िहिम इला बअज़िन लिसलाहि दुनियाहुम, कतबतुमा तुअव्विज़ानिनी बिल्लाहि अन उन्ज़िला किताबकुमा सिवल मंज़िलिल्लज़ी नज़ला मिन कुलूबिकुमा, व अन्नकुमा कतबतुमा बिही नसीहतल्लली, वक़द सदक़तुमा, फला तदअलकिताबता इलय्या, फइन्नहू ला ग़िना ली अनकुमा, वस्सलामु अलैकुमा। (अल मुस्लिमून, फ़रवरी 1954)

अनुवादः– उमर बिन ख़त्ताब की तरफ़ से अबू उबैदा और मुआज़ (रज़ि॰) के नाम सलामती हो तुम दोनों पर।

तुम दोनों का ख़त मिला जिस में लिखा है कि अब से पहले तो मैं अपनी ज़ात की इसलाह (सुधार) व तर्बियत और हिफ़ाज़त व निगरानी के लिये सोचा करता था, लेकिन अब तो इस पूरी उम्मत की ज़िम्मेदारी मेरे सर आ पड़ी है मेरे सामने ऊँचे दर्जे के लोग भी बैठेंगे और निचले दर्जे के लोग भी, दोस्त भी मेरे पास आएँगे दुश्मन भी, और हर एक का हक़ है कि उस के साथ न्याय किया जाये तो तुम ने लिखा है कि ऐ उमर (रज़ि॰)! सोचो कि तुम्हें ऐसी हालत में क्या करना चाहिये? मैं इस के जवाब में और क्या कहूँ कि उमर (रज़ि॰) के पास न उपाय है न कुव्वत। अगर उसे कुव्वत मिल सकती है तो सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ से मिल सकती है फिर तुम ने मुझे उस अंजाम से डराया है जिस अंजाम से हम से पहले के लोग डराए गए थे।

यह दिन रात की गर्दिश जो इन्सानों की ज़िन्दगियों से जुड़ी हुई है यह बराबर क़रीब ला रही है उस चीज़ को जो दूर है, और पुराना बना रही है हर नई चीज़ को, और ला रही है हर पेशीनगोई को (ख़बर दे रही है हर होने वाले वाक़िये की) यहाँ तककि दुनिया की उम्र ख़त्म हो जाएगी और आख़िरत ज़ाहिर होगी जिस में हर शख़्स जन्नत या जहन्नम में पहुंच जाएगा। और तुम ने अपने ख़त में इस बात से डराया है कि इस उम्मत के लोग आख़िरी ज़माने में ज़ाहिर में एक दूसरे के दोस्त होंगे और छुपे तौर पर एक दूसरे के दुश्मन होंगे। तो याद रखो तुम वह लोग नहीं हो जिन के बारे में यह ख़बर दी गई है, और न यह ज़माना वह ज़माना है जब यह मुनाफ़िक़त ज़ाहिर होगी वह तो वह वक़्त होगा जब लोग अपने दुनियावी फ़ायदे के लिये एक दूसरे से मुहब्बत करेंगे और दुनियावी फ़ायदे को बचाने के लिये एक दूसरे से डरेंगे फिर तुम ने लिखा है कि अल्लाह की पनाह कि मैं तुम्हारे ख़त से कोई ग़लत नतीजा निकालूँ, बेशक तुम सच कहते हो, तुम ने ख़ैरख़्वाही ही के जज़्बे से लिखा है, आगे ख़त लिखना बन्द न करना मैं तुम दोनों की नसीहत से बेनियाज़ नहीं हो सकता। *वस्सलाम*

हक़ की मुहब्बत, बातिल से नफ़रत, अम्र बिल मअरूफ़ और नहि अनिल-मुन्कर

(٣١٤) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ وَقَّرَ صَاحِبَ بِدْعَةٍ فَقَدْ اَعَانَ عَلٰى هَدْمِ الْاِسْلَامِ. (مشکوٰۃ۔ ابراہیم بن میسرہؓ)

314. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मंव्वक़्क़र साहिबा बिदअतिन फ़क़द अआ़ना अला हदमिल इस्लामि।*

(मिश्कात, इब्राहीम बिन मैसरा रज़ि०)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी बिदअती की इज़्ज़त करेगा तो उस ने इस्लाम को ढाने में मदद की।

बिदअती से मुराद वह शख़्स है जिस ने इस्लाम के अन्दर कोई ऐस

नज़रिया या अमल दाख़िल किया जो इस्लाम से टकराता है या उस से मेल नहीं खाता, ऐसा शख़्स इस्लाम की इमारत को ढाने की कोशिश करता है और जो शख़्स उस का आदर व सम्मान करता है वह शख़्स इस्लाम के ढाने में मददगार बनता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चाहत यह है कि ऐसे लोग मुसलमानों की सोसाईटी में इज़्ज़त और सम्मान की निगाह से न देखे जाएँ और उन के काम को बरदाश्त न किया जाए। ज़रा इस हदीस पर सोच विचार कीजिये और फिर अपनी सोसाईटी को देखिये कि इस लिहाज़ से उस का क्या हाल है?।

(٣١٥) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَقُوْلُنَّ لِلْمُنَافِقِ سَيِّدٌ فَإِنَّهُ إِنْ يَّكُنْ فَقَدْ اَسْخَطْتُمْ رَبَّكُمْ. (مشکوٰۃ)

315. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला तकूलुन्ना लिलमुनाफ़िक़ि सय्यिदुन फ़-इन्नहू इंय्यकुन फ़क़द असख़त्तुम रब्बकुम।* (मिश्कात)

अनुवाद:– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ को सरदार मत कहो, इस लिये कि अगर ऐसा हुआ तो तुम ने अपने रब को नाराज़ किया।

"सरदार न कहो" का मतलब यह है कि ऐसा आदमी जो कहता कुछ हो और करता कुछ और हो, जिस को इस्लाम की हक़्क़ानियत पर यक़ीन नहीं है जिस को इस्लामी शिक्षाओं के बारे में शक है, ऐसे आदमी को अपना सरदार न बनाओ अगर ऐसा करोगे तो ख़ुदा की नाराज़ी मोल लोगे, और जिस से ख़ुदा नाराज़ हो जाये उस का कहीं ठिकाना नहीं, दुनिया में भी ज़िल्लत और आख़िरत में भी तबाही।

(٣١٦) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِو ابْنِ الْعَاصِ قَالَ لَا تَعُوْدُوْا شُرَّابَ الْخَمْرِ إِذَا مَرِضُوْا (الادب المفرد)

316. *अन अब्दिल्लाहिब्नि अमरिब्निलआसि काला ला तऊदू शुर्राबल ख़मरि इज़ा मरिज़ू।* (अल-अदबुल मुफ़रद)

अनुवाद:– अब्दुल्लाह इब्ने अमर इब्ने अल-आस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि शराब पीने वाले जब बीमार पड़ें तो उन की

अयादत को न जाओ।

(٣١٧) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا وَقَعَتْ بَنُوْ اِسْرَائِيْلَ فِي الْمَعَاصِيْ نَهَتْهُمْ عُلَمَاءُ هُمْ فَلَمْ يَنْتَهُوْا فَجَالَسُوْهُمْ فِيْ مَجَالِسِهِمْ وَاٰكَلُوْهُمْ وَشَارَبُوْهُمْ فَضَرَبَ اللّٰهُ قُلُوْبَ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ فَلَعَنَهُمْ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى بْنِ مَرْيَمَ، ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ. قَالَ فَجَلَسَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ مُتَّكِئًا فَقَالَ لَا، وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ لَتَاْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ وَلَتَاْخُذُنَّ عَلٰى يَدَيِ الظَّالِمِ وَلَتَاْطِرُنَّهٗ عَلَى الْحَقِّ اَطْرًا اَوْلَيَضْرِبَنَّ اللّٰهُ بِقُلُوْبِ بَعْضِكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ثُمَّ لَيَلْعَنَنَّكُمْ كَمَا لَعَنَهُمْ. (بیہقی، مشکوٰۃ۔ابن مسعودؓ)

317. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लम्मा वक़अत बनू इसाईला फ़िलमआसी नहतहुम उलमाअहुम फलम यन्तहू फजालसूहुम फ़ी मजालिसिहिम व आकलूहुम व शारबूहुम फज़रबल्लाहु कुलूबा बअज़िहिम बिबअज़िन फलअनहुम अला लिसानि दाऊदा व ईसब्नि मरयमा ज़ालिका बिमा असव्वा कानू यअतदूना। काला फ-जलसा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा व काना मुत्तकिअन फकाला ला, वल्लज़ी नफ़्सी बियदिही लतामुरुन्ना बिलमअरूफ़ि व-ल-तनहवुन्ना अनिल मुनकरि व-ल-ताख़ुज़ुन्ना अला यदयिज़्ज़ालिमि व-ल-तातिरुन्नहू अललहक़्क़ि अतरन औ ल-यज़रिबन्नल्लाहु बिकुलूबि बअज़िकुम अला बअज़िन सुम्मा ल-यलअनन्नकुम कमा लअनहुम।* (बैहक़ी, मिश्कात, इब्ने मसऊद)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब बनी इस्राईल ख़ुदा की नाफ़रमानियों के काम करने लगे तो उन के विद्वानों ने उन्हें रोका लेकिन वह नहीं रुके तो (उन के आलिम उन का बाईकाट करने के बजाये) उन की मजलिसों में बैठने लगे और उन के साथ खाने पीने लगे, जब ऐसा हुआ तो अल्लाह तआला ने उन सब के दिल एक जैसे कर दिये और फिर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम और ईसा बिन मरयम की ज़ुबान से अल्लाह ने उन पर लानत की यह इस लिये कि उन्हों ने नाफ़रमानी (अवज्ञा) की राह अपना ली और इसी में बढ़े चले गये। अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद (रज़ि॰) जो इस हदीस के रावी हैं फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम टेक

लगाये बैठे थे, फिर सीधे बैठ गये और फ़रमाया नहीं, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है तुम ज़रूर लोगों को नेकी का हुक्म देते रहोगे और बुराईयों से रोकते रहोगे और ज़ालिम का हाथ पकड़ोगे और ज़ालिम को हक़ पर झुकाओगे। अगर तुम लोग ऐसा नहीं करोगे तो तुम सब के दिल भी एक ही तरह के हो जाएँगे और फिर अल्लाह तुम को अपनी रहमत और हिदायत से दूर फेंक देगा, जिस तरह बनी इस्राईल के साथ उस ने मुआमला किया।

(۳۱۸) عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الْمُدْهِنِ فِيْ حُدُوْدِ اللّٰهِ وَالْوَاقِعِ مَثَلُ قَوْمٍ اِسْتَهَمُوْا سَفِيْنَةً، فَصَارَ بَعْضُهُمْ فِيْ اَسْفَلِهَا وَصَارَ بَعْضُهُمْ فِيْ اَعْلَاهَا، فَكَانَ الَّذِيْ فِيْ اَسْفَلِهَا يَمُرُّ بِالْمَاءِ عَلَى الَّذِيْنَ فِيْ اَعْلَاهَا، فَتَاَذَّوْا بِهٖ فَاَخَذَ فَاْسًا، فَجَعَلَ يَنْقُرُ اَسْفَلَ السَّفِيْنَةِ فَاَتَوْهُ فَقَالُوْا مَالَكَ؟ قَالَ تَاَذَّيْتُمْ بِيْ وَلَا بُدَّ لِيْ مِنَ الْمَاءِ، فَاِنْ اَخَذُوْا عَلٰى يَدَيْهِ اَنْجَوْهُ وَنَجَّوْا اَنْفُسَهُمْ وَاِنْ تَرَكُوْهُ اَهْلَكُوْهُ وَاَهْلَكُوْا اَنْفُسَهُمْ. (بخاری)

318. *अनिन्नुअमानिब्नि बशीरिन क़ाला, क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मसलुल मुदहिनि फ़ी हुदूदिल्लाहि वल वाक़िई मसलु क़ौमि निस्तहमू सफ़ीनतन, फ़-सारा बअ़ज़ुहुम फ़ी असफ़लिहा वसारा बअ़ज़ुहुम फ़ी अअ़लाहा, फ़-कानल्लज़ी फ़ी असफ़लिहा यमुर्रु बिलमाई अलल्लज़ीना फ़ी अअ़लाहा फ़-तअज़्ज़व बिही फ़-अख़ज़ा फ़ासन, फ़-जअला यनक़ुरु असफ़लस्सफ़ीनति फ़-अतौहु फ़-क़ालू मालका? क़ाला तअज़्ज़ैतुम बी वला बुद्दा ली मिनल माई, फ़-इन अख़ज़ू अला यदैहि अनजौहु व नज्जौ अनफ़ुसहुम व इन तरकूहु अहलकूहु व अहलकू अनफ़ुसहुम।*

(बुख़ारी)

अनुवादः– नुअमान बिन बशीर (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, वह शख़्स जो अल्लाह के आदेशों को तोड़ता है और जो अल्लाह के आदेशों को तोड़ते हुये देखता है मगर उसे टोकता नहीं, उस के साथ रवादारी बरतता है उन दोनों की मिसाल ऐसी है जैसे कि कुछ लोगों ने

एक कश्ती ली और कुरआ डाला, उस कश्ती में बहुत से दर्जे हैं, ऊपर नीचे, कुछ आदमी ऊपरी हिस्से में बैठे और कुछ निचले हिस्से में, तो जो लोग निचले हिस्से में बैठे थे, वह पानी के लिये ऊपर वालों के पास से गुज़रते ताकि समुद्र से पानी भरें तो ऊपर वालों को उस से तकलीफ़ होती आख़िर में नीचे के लोगों ने कुल्हाड़ी ली और कश्ती के पेंदे को फाड़ने लगे, ऊपर के लोग उन के पास आये और कहा तुम यह क्या करते हो? उन्हों ने कहा हमें पानी की ज़रूरत है और समुद्र से पानी ऊपर ही जा कर भरा जा सकता है, और तुम हमारे आने जाने से तकलीफ़ महसूस करते हो, तो अब कश्ती के तख़्तों को तोड़ कर दरिया से पानी हासिल करेंगे। हुज़ूर (सल्ल०) ने यह मिसाल बयान कर के फ़रमाया, अगर ऊपर वाले नीचे वालों का हाथ पकड़ लेते और सुराख़ करने से रोक देते हैं तो उन्हें भी डूबने से बचा लेंगे और अपने को भी बचा लेंगे, और अगर उन्हें उन की हरकत से नहीं रोकते और नज़रअंदाज़ कर जाते हैं तो उन्हें भी डुबोएँगे और ख़ुद भी डूबेंगे।

(٣١٩) خَطَبَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ فَاَثْنٰى عَلٰى طَوَائِفَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ خَيْرًا ثُمَّ قَالَ مَابَالُ اَقْوَامٍ لَايُفَقِّهُوْنَ جِيْرَانَهُمْ وَلَا يُعَلِّمُوْنَهُمْ وَلَا يَعِظُوْنَهُمْ؟ وَمَابَالُ اَقْوَامٍ لَا يَتَعَلَّمُوْنَ مِنْ جِيْرَانِهِمْ وَلَا يَتَفَقَّهُوْنَ وَلَا يَتَّعِظُوْنَ؟ وَاللّٰهِ لَيُعَلِّمَنَّ قَوْمٌ جِيْرَانَهُمْ وَيُفَقِّهُوْنَهُمْ وَيَاْمُرُوْنَهُمْ وَيَنْهَوْنَهُمْ وَلَيَتَعَلَّمَنَّ قَوْمٌ مِّنْ جِيْرَانِهِمْ وَيَتَفَقَّهُوْنَ وَيَتَّعِظُوْنَ اَوْ لَاُعَاجِلَنَّهُمُ الْعُقُوْبَةَ ثُمَّ نَزَلَ، فَقَالَ قَوْمٌ مَّنْ تَرَوْنَهُ عَنٰى بِهٰؤُلَاءِ؟ قَالُوْا اَلْاَشْعَرِيِّيْنَ، هُمْ قَوْمٌ فُقَهَاءُ وَلَهُمْ جِيْرَانٌ جُفَاةٌ مِّنْ اَهْلِ الْمِيَاهِ وَالْاَعْرَابِ، فَبَلَغَ ذٰلِكَ الْاَشْعَرِيِّيْنَ فَاَتَوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوْا يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ذَكَرْتَ قَوْمًا بِخَيْرٍ وَّذَكَرْتَنَا بِشَرٍّ فَمَابَالُنَا فَقَالَ لَيُعَلِّمَنَّ قَوْمٌ جِيْرَانَهُمْ وَلَيَعِظُنَّهُمْ وَلَيَاْمُرُنَّهُمْ وَلَيَنْهَوُنَّهُمْ وَلَيَتَعَلَّمَنَّ قَوْمٌ مِنْ جِيْرَانِهِمْ وَيَتَّعِظُوْنَ وَيَتَفَقَّهُوْنَ اَوْلَاُعَاجِلَنَّهُمُ الْعُقُوْبَةَ فِى الدُّنْيَا فَقَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَنُفَطِّنُ غَيْرَنَا؟ فَاَعَادَ قَوْلَهُ عَلَيْهِمْ فَاَعَادُوْا قَوْلَهُمْ "اَنُفَطِّنُ غَيْرَنَا؟ فَقَالَ ذَاكَ اَيْضًا، فَقَالُوْا اَمْهِلْنَا سَنَةً، فَاَمْهَلَهُمْ سَنَةً، لِيُفَقِّهُوْهُمْ وَيَعِظُوْهُمْ ثُمَّ قَرَءَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هٰذِهِ الْاٰيَةَ "لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِىْ اِسْرَائِيْلَ." (طبرانى)

319. ख़ुतबा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ज़ाता यौमिन फ-असना अला तवाईफा मिनलमुस्लिमीना ख़ैरन सुम्मा काला मा बालु अक़वामिन ला युफ़क़्क़हूना जीरानहुम वला युअल्लिमूनहुम वला यईज़ूनहुम? वमा बालु अक़वामिन ला यतअल्लमूना मिन जीरानिहिम वला यतफ़क़्क़हूना वला यत्तईज़ूना? वल्लाहि ल-युअल्लिमन्ना क़ौमुन जीरानहुम व युफ़क़्क़िहूनहुम व यामुरूनहुम व यनहौनहुम व ल-यतअल्लमन्ना क़ौमुम्मिन जीरानिहिम व यतफ़क़्क़हूना व यत्तईज़ूना औ ल-उआजिलन्नहुमुल उक़ूबता सुम्मा नज़ला, फ-काला क़ौमुम मन तरौनहू अना बिहाउलाई? कालू अलअशअरिय्यीना, हुम क़ौमुन फ़ुक़हाउ वलहुम जीरानुन जुफ़ातुम मिन अहलिल मियाहि वलअअराबि फ़बलग़ा ज़ालिकल अशअरिय्यीना फ-अतव रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कालू या रसूलल्लाहि ज़करता क़ौमन बिख़ैरिन व ज़करतना बिशर्रिन फ़मा बालुना फ-काला ल-युअल्लिमन्ना क़ौमुन जीरानिहिम वलायईज़ुन्नहुम वला यामुरुन्नहुम वला यनहवुन्नहुम वला यतअल्लामन्ना क़ौमुन मिन जीरानिहिम व यत्ताईज़ूना व यतफ़क़्क़हूना औ ल-उआजिलन्नहुमुल उक़ूबता फ़िद्दुनिया फ-कालू या रसूलल्लाहि अ-नुफ़त्तिनु ग़ैरना? फ-अआदा क़ौलहू अलैहिम फ-अआदू क़ौलहुम अ-नुफ़त्तिनु ग़ैरना? फ-काला ज़ाका ऐज़न फ-कालू अमहिलना सनतन फ-अमहलहुम सनतन, लियुफ़क़्क़िहूहुम व यईज़ूहुम सुम्मा करआ रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा हाज़िहिल आयता "लुईनल्लज़ीना कफ़रू मिम बनी इस्राईला"

(तिबरानी)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दिन खुतबा दिया और उस में कुछ मुसलमानों की तारीफ़ फ़रमाई, फिर फ़रमाया क्यों ऐसा है कि कुछ लोग अपने पड़ोसियों में दीनी समझ नहीं पैदा करते और उन्हें शिक्षा नहीं देते, और दीन न जानने के इबरतनाक नताइज उन्हें नहीं बताते और उन्हें बुरे कामों से नहीं रोकते? और क्यों ऐसा है कुछ लोग अपने पड़ोसियों से दीन नही सीखते और दीनी समझ नहीं पैदा करते और दीन न जानने के इबरतनाक नताइज नही मालूम करते?

खुदा की क़सम! लोग अपने पड़ोसियों को ज़रूरी शिक्षा दें उन के अन्दर दीनी समझ पैदा करें, उन्हें नसीहत करें, उन को अच्छी बातें बताएँ और उन को बुरी बातों से रोकें, और लोगों को अपने पड़ोसियों से दीन सीखना होगा, दीन की समझ पैदा करनी होगी, और उन के वअज़ व नसीहत को कुबूल करना होगा वर्ना मैं बहुत जल्द उन्हें सज़ा दूँगा। फिर आप मिम्बर से उतर आये और तक़रीर ख़त्म कर दी। सुनने वालो में से कुछ लोगों ने कहा यह कौन लोग थे जिन के ख़िलाफ़ आप (सल्ल०) ने तक़रीर फ़रमाई? दूसरे लोगों ने बताया कि आप (सल्ल०) का इशारा क़बील-ए-अशअर के लोगों की तरफ़ था यह लोग दीन की समझ रखते हैं और उन के पड़ोस में चश्मों पर रहने वाले दीहाती उजड्ड लोग हैं, जब इस तक़रीर की ख़बर अशअरी लोगों को पहुंची तो वह हुज़ूर (सल्ल०) के पास आये उन्हों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) आप ने अपनी तक़रीर में कुछ लोगों की तारीफ़ फ़रमाई और हमारे ऊपर गुस्सा फ़रमाया तो हम से क्या कुसूर हुआ? आप ने फ़रमाया लोग अपने पड़ोसियों को ज़रूर शिक्षा दें, उन्हें नसीहत करें, अच्छी बातों की तलक़ीन करें और बुरी बातों से रोकें। इसी तरह लोगों को अपने पड़ोसियों से दीन सीखना होगा, वअज़ व नसीहत को कुबूल करना होगा, और अपने अन्दर दीनी समझ पैदा करनी होगी, वर्ना मैं उन लोगों को बहुत जल्द दुनिया में सज़ा दूँग, तो अशअरीन ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम दूसरों में समझ पैदा करें (क्या तालीम व तबलीग़ भी हमारी ज़िम्मेदारी है?) तो आप ने फ़रमाया हाँ यह भी तुम्हारी ज़िम्मेदारी है तो उन लोगों ने कहा कि हम को एक साल की मुहलत दीजिये, चुनाचे हुज़ूर (सल्ल०) ने उन को एक साल की मुहलत दी, जिस में वह अपने पड़ोसियों के अन्दर दीनी समझ पैदा करें और अहकाम बताएँगे इस के बाद नबी (सल्ल०) ने यह आयत पढ़ी لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْ إِسْرَائِيْلَ "लुईनल्लज़ीना कफ़रू मिम बनी इस्राईला"।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूरह मायदा की जिस आयत की तिलावत फ़रमाई उस का तर्जुमा यह है–

"बनी इस्राईल के कुफ़्र इख़्तियार करने वालों पर लानत की गई दाऊद अलैहिस्सलाम की जुबान से और ईसा बिन मरयम (अलै०) की जुबान से और यह लानत इस लिये की गई कि उन्हों ने नाफ़रमानी की राह अपनाई और बराबर अल्लाह के आदेशों को तोड़ते चले गये यह आपस में एक दूसरे को बुरी बातों के करने से नहीं रोकते थे, बेशक उन की यह हरकत बहुत ही बुरी थी"।

दावत बिला अमल

(٣٢٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُجَاءُ بِالرَّجُلِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَيُلْقٰى فِى النَّارِ فَتَنْدَلِقُ اَقْتَابُهٗ فِى النَّارِ فَيَطْحَنُ فِيْهَا كَطَحْنِ الْحِمَارِ بِرَحَاهُ فَيَجْتَمِعُ اَهْلُ النَّارِ عَلَيْهِ فَيَقُوْلُوْنَ اَىْ فُلَانُ مَاشَانُكَ؟ اَلَيْسَ كُنْتَ تَامُرُنَا بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَانَا عَنِ الْمُنْكَرِ؟ قَالَ كُنْتُ اٰمُرُكُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَلَا اٰتِيْهِ وَاَنْهٰكُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاٰتِيْهِ.

(بخاری، مسلم۔ اسامہ بن زیدؓ)

320. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा युजाउ बिर्रजुलि यौमल क़ियामति फ-युलक़ा फ़िन्नारि फ-तनदलिक़ु अक़ताबुहू फ़िन्नारि फयतहनु फ़ीहा क-तहनिल हिमारि बिरहाहु फ-यजतमिउ अहलुन्नारि अलैहि फ-यक़ूलूना ऐ फ़ुलानु मा शानुका? अलैसा कुन्ता तामुरुना बिलमअरूफ़ि व तनहाना अनिल मुनकरि? काला कुन्तु आमुरुकुम बिलमअरूफ़ि वला आतीहि व अनहाकुम अनिल मुन्करि व आतीहि।* (बुख़ारी, मुस्लिम, उसामा बिन ज़ैद)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक आदमी क़यामत के दिन लाया जाएगा और आग में फेंक दिया जाएगा तो उस की अंतड़ियाँ आग में निकल पड़ेंगी फिर उसे आग में इस तरह लिये फिरेगा जैसे गधा अपनी चक्की में फिरता है, तो दूसरे जहन्नमी लोग उस के पास इकट्ठा होंगे और पूछेंगे ऐ फुलाँ यह तेरा क्या हाल है? क्या तुम हम को दुनिया में नेकियाँ करने के लिये नहीं कहा करते थे? और बुराईयों से नहीं रोकते थे? (ऐसे नेकी के काम करने के

बावजूद तुम यहाँ कैसे आ गये) वह शख़्स कहेगा कि मैं तुम्हें तो नेकियाँ करने के लिये कहता था और ख़ुद उस के क़रीब नहीं जाता था और बुराईयों से तुम को तो रोकता था पर ख़ुद करता था।

(٣٢١) اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ رَاَیْتُ لَیْلَۃَ اُسْرِیَ بِیْ رِجَالًا تُقْرَضُ شِفَاھُھُمْ بِمَقَارِیْضَ مِنْ نَّارٍ، قُلْتُ مَنْ ھٰؤُلَاءِ یَا جِبْرِیْلُ؟ قَالَ ھٰؤُلَاءِ خُطَبَاءُ اُمَّتِکَ یَامُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَیَنْسَوْنَ اَنْفُسَھُمْ. (مشکوۃ۔ انسؓ)

321. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला रऐतु लैलता उसरिया बी रिजालन तुक़रज़ु शिफ़ाहुहुम बिमक़ारीज़ा मिन नारिन, कुल्तु मन हाउलाई या जिब्रीलु? काला हाउलाई ख़ुतबाउ उम्मतिका यामुरूनन्नासा बिलबिर्रि व यनसौना अनफ़ुसहुम।* (मिश्कात, अनस रज़ि)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने मेराज की रात कुछ लोगों को देखा कि उन के होंट आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे हैं, मैंने जिब्रील से पूछा कि यह कौन लोग हैं? जिब्रील ने कहा यह आप (सल्ल०) की उम्मत के मुक़र्रिरीन (तक़रीर करने वाले) लोग हैं यह लोगों को नेकी का काम और तक़वा का हुक्म देते थे और अपने आप को भूल जाते थे।

(٣٢٢) عَنْ حَرْمَلَۃَ قَالَ، قُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ مَاتَاْمُرُنِیْ بِہٖ اَعْمَلُ؟ فَقَالَ اِئْتِ الْمَعْرُوْفَ وَاجْتَنِبِ الْمُنْکَرَ، وَانْظُرْ مَا یُعْجِبُ اُذُنَکَ اَنْ یَّقُوْلَ لَکَ الْقَوْمُ اِذَا قُمْتَ مِنْ عِنْدِھِمْ فَاْتِہٖ، وَانْظُرِ الَّذِیْ تَکْرَہُ اَنْ یَّقُوْلَ لَکَ الْقَوْمُ اِذَا قُمْتَ مِنْ عِنْدِھِمْ فَاجْتَنِبْہُ. (بخاری)

322. *अन हरमलता काला, कुल्तु या रसूलल्लाहि मा तामुरुनी बिही अअमलु? फ-काला इअतिलमअरूफ़ा वजतनिबिल मुनकरा, वन्ज़ुर मा युअजिबु उज़ुनका अय्यंकूला लकलकौमु इज़ा कुम्ता मिन इन्दिहिम फ़ातिही, वन्ज़ुरिल्लज़ी तकरहा अय्यंकूला लकलकौमु इज़ा कुम्ता मिन इन्दिहिम फजतनिबहु।* (बुख़ारी)

अनुवादः- हज़रत हरमला (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि आप मुझे

किन बातों के करने का हुक्म देते हैं? आप ने फ़रमाया कि नेकी पर अमल कर, और बुराई से बच, और देख अगर तू यह पसन्द करता है कि लोग मजलिस से उठ कर तेरे चले जाने के बाद अच्छे औसाफ़ से याद करें तो तू अपने अन्दर अच्छे औसाफ़ पैदा कर और जिन बातों को तू नापसन्द करता है कि तेरी ग़ैर मौजूदगी में लोग तेरे बारे में कहें तो तू उस से बच।

मतलब यह कि आदमी चाहता है कि लोग अच्छे शब्दों से उसे याद करें तो उसे वैसे ही काम करने चाहिये, और आदमी नापसन्द करता है कि लोग बुरे औसाफ़ से उसे याद करें, तो ऐसे औसाफ़ से उसे बचना चाहिये।

(٣٢٣) إِنَّ رَجُلًا قَالَ لِابْنِ عَبَّاسٍ أُرِيْدُ اَنْ اٰمُرَ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهٰى عَنِ الْمُنْكَرِ، فَقَالَ لَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ اَبَلَغْتَ تِلْكَ الْمَنْزِلَةَ؟ قَالَ اَرْجُوْ، فَقَالَ لَهُ اِنْ لَّمْ تَخْشَ اَنْ تُفْتَضَحَ بِثَلٰثِ اٰيٰتٍ مِّنْ كِتٰبِ اللّٰهِ فَافْعَلْ، قَالَ الرَّجُلُ وَمَاهُنَّ؟ قَالَ قَوْلُهٗ "اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ" اَلْاٰيَةَ، فَهَلْ اَحْكَمْتَ هٰذِهٖ قَالَ لَا، فَقَالَ وَالثَّانِيَةُ قَوْلُهٗ "لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَالَا تَفْعَلُوْنَ" فَهَلْ اَحْكَمْتَهَا؟ قَالَ لَا، فَقَالَ وَالثَّالِثَةُ مَقَالَةُ شُعَيْبٍ "مَا اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَا اَنْهٰكُمْ عَنْهُ" فَهَلْ اَحْكَمْتَهَا؟ قَالَ لَا، قَالَ فَابْدَأْ بِنَفْسِكَ. (الدعوة)

323. *इन्ना रजुलन काला लिब्नि अब्बासिन उरीदु अन आमुरा बिलमअरूफि व अनहा अनिल मुनकरि, फ-काला लहुब्नु अब्बासिन अ-बलग़ता तिलकल मंज़िलता? काला अरजू, फ-काला लहू इल्लम तख़्शा अन तुफ्तज़हा बिसलासि आयातिन मिन किताबिल्लाहि फफअल, कालर्रजुलु वमा हुन्ना? काला कौलुहू "अतामुरूनन्नासा" अलआयह, फ-हल अहकम्ता हाज़िही काला ला, फ-काला वस्सानियतु कौलुहू "लिमा तक़ूलूना माला तफअलून" फ-हल अहकमतहा? काला ला, फ-काला वस्सालिसतु मकालतु शुऐबिन "माउरीदु अन उख़ालिफकुम इला मा अनहाकुम अनहु" फ-हल अहकमतहा? काला ला, काला फबदअ बिनफ़्सिका।*

अनुवाद:- एक आदमी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि॰) से कहा कि मैं दीन का काम करना चाहता हूँ, अमर बिलमअरूफ़ और नहि अनिलमुनकर का काम करना चाहता हूँ,

उन्हों ने कहा कि क्या तुम इस दर्जे पर पहुंच चुके हो? उस ने कहा हाँ उम्मीद तो है। इब्ने अब्बास ने कहा कि अगर तुम्हें यह डर न हो कि कुरआन की तीन आयतें तुम्हें रुसवा (ज़लील) कर देंगी तो ज़रूर दीन का काम करो, उस ने कहा वह कौन सी तीन आयतें हैं? इब्ने अब्बास ने फ़रमाया पहली आयत यह है:

اَتَامُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ (البقره)

अतामुरूनन्नासा बिलबिर्रि व तनसौना अनफुसकुम

(अल-बक़रा) "क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो?" इब्ने अब्बास ने कहा, क्या इस आयत पर अच्छी तरह अमल कर लिया है? उस ने कहा, नहीं। और दूसरी आयत: लिमा तकूलूना माला तफ़अलून "तुम वह बात क्यों कहते हो जिस को करते नहीं" है तो इस पर अच्छी तरह अमल कर लिया है? उस ने कहा नहीं। और तीसरी आयत- माउरीदु अन उख़ालिफकुम इला मा अनहाकुम अनहु (सूरह हूद) शुऐब अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से कहा "जिन बुरी बातों से मैं तुम्हें रोकता हूँ उन को बढ़कर खुद करने लगो मेरी नियत यह नहीं (बल्कि मैं तो उन से बहुत दूर रहूँगा तुम मेरे कहने और करने में फ़र्क़ न देखोगे, इब्ने अब्बास ने पूछा इस आयत पर अच्छी तरह से अमल कर लिया है? उस ने कहा नहीं। तो फ़रमाया, जाओ पहले अपने को नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको यह दीन का प्रचार करने वाले की पहली मंज़िल है।

यह शख़्स अपने आप को भूला हुआ था और दूसरों को दीन की बातें बताने का शौक़ रखता था। हज़रत इब्ने अब्बास ने सही सूरतेहाल का अन्दाज़ा कर के ठीक मशवरा दिया।

(۳۲۴) عَنِ الْحَسَنِ قَالَ الْعِلْمُ عِلْمَانِ، فَعِلْمٌ فِی الْقَلْبِ فَذَاکَ الْعِلْمُ النَّافِعُ، وَعِلْمٌ عَلَی اللِّسَانِ فَذَاکَ حُجَّةُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ عَلَی ابْنِ اٰدَمَ. (دارمی)

324. *अनिल हसनि कालल इल्मु इल्मानि, फ-इल्मुन फ़िलक़ल्बि फ-ज़ाकल इल्मुन्नाफ़िउ, व इल्मुन अललिलसानि फ-ज़ाका*

हुज्जतुल्लाहि अज़्ज़ा व जल्ला अलब्नि आदमा। (दारमी)

अनुवादः– हज़रत असन (रज़ि०) ने फ़रमाया, इल्म दो तरह का होता है एक इल्म तो वह है जो ज़ुबान से गुज़र कर दिल में जगह पकड़ लेता है यही इल्म क़यामत में काम आएगा, और एक वह है जो सिर्फ़ ज़ुबान पर रहता है, दिल तक नहीं पहुंचता यह इल्म अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की अदालत में आदमी के ख़िलाफ़ हुज्जत और दलील बनेगा।

यानी ऐसे आदमी को अल्लाह यह कह कर सज़ा देगा कि तू तो सब कुछ जानता बूझता था फिर अमल की गठरी अपने साथ क्यों नहीं लाया जो तेरे काम आता।

दीन का इल्म हासिल करना

(٣٢٥) عَنْ مُعَاوِيَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ بِهٖ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِى الدِّيْنِ. (بخاری، مسلم)

325. *अन मुआवियता काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मय्युरिदिल्लाहु बिही ख़ैरन युफ़क़्क़िहहू फ़िद्दीन।*

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को अल्लाह तआला भलाई देना चाहता है उसे अपने दीन का इल्म व समझ देता है।

ज़ाहिर है कि दीन का इल्म व समझ तमाम भलाईयों का सरचश्मा है, जिस को यह चीज़ मिली, उसे दीन व दुनिया की सआदत मिली, वह उस से अपनी ज़िन्दगी संवारेगा और ख़ुदा के दूसरे बन्दों की ज़िन्दगियों को भी संवारने की कोशिश करेगा।

(٣٢٦) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَلَكَ طَرِيْقًا يَّلْتَمِسُ فِيْهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللّٰهُ لَهٗ بِهٖ طَرِيْقًا اِلَى الْجَنَّةِ وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِىْ بَيْتٍ مِّنْ بُيُوْتِ اللّٰهِ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَيَتَدَارَسُوْنَهٗ بَيْنَهُمْ اِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلٰئِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللّٰهُ فِيْمَنْ عِنْدَهٗ وَمَنْ بَطَّأَ بِهٖ عَمَلُهٗ لَمْ يُسْرِعْ بِهٖ نَسَبُهٗ. (مسلم)

326. अन अबी हुरैरता काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन सलका तरीकन यलतमिसु फीहि इल्मन सह्हलल्लाहु लहू बिही तरीकन इललजन्नति वमजतमआ कौमुन फी बैतिम मिमबुयूतिल्लाहि यतलूना किताबल्लाहि व यतदारसूनहू बैनहुम इल्ला नज़लत अलैहिमस्सकीनतु व ग़शियतहुमुर्रहमतु व हफ़्फ़तहुमुल मलाईकतु व ज़करहुमुल्लाहु फीमन इन्दहू व मम बत्तआ बिही अमलुहू लम युसरअ बिही नसबुहू। (मुस्लिम)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स दीन का इल्म हासिल करने के लिये सफ़र करे तो अल्लाह उस के लिये जन्नत की राह आसान करेगा और जो लोग अल्लाह के घरों में से किसी घर (मस्जिद) में इकट्ठे होकर अल्लाह की किताब पढ़ते और उस पर बहस व बात चीत करते हैं उन पर अल्लाह तआला की तरफ़ से ईमानी सुकून उतरता है, रहमत उन को ढाँक लेती है, फ़रिश्ते उन को घेर लेते हैं, और अल्लाह तआला उन का ज़िक्र अपने फ़रिश्तों की मजलिस में फ़रमाते हैं, और जिस को उस के अमल ने पीछे डाल दिया उस का नसब उसे आगे नहीं बढ़ा सकता।

इस हदीस में हुज़ूर (सल्ल०) ने एक तरफ़ दीन का इल्म हासिल करने वालों को ख़ुशख़बरी दी है और दूसरी तरफ़ उन को इस ख़तरे से सावधान किया है कि दीन का इल्म सीखने का मक़सद उस पर अमल करना है, अगर किसी ने अमल न किया तो अपने सारे इल्मी ख़ज़ाने के बावजूद पीछे रह जाएगा, न यह इल्म उसे आगे बढ़ाएगा और न उस की ख़ानदानी शराफ़त कुछ काम देगी। ऊँचा उठाने वाली चीज़ सिर्फ़ अमल है।

(٣٢٧) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ ابْنِ عَمْرٍو اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِمَجْلِسَيْنِ فِىْ مَسْجِدِهٖ، فَقَالَ كِلَاهُمَا عَلٰى خَيْرٍ وَاَحَدُهُمَا اَفْضَلُ مِنْ صَاحِبِهٖ، اَمَّا هٰؤُلَاءِ فَيَدْعُوْنَ اللّٰهَ وَيَرْغَبُوْنَ اِلَيْهِ، فَاِنْ شَاءَ اَعْطَاهُمْ وَاِنْ شَاءَ مَنَعَهُمْ، وَاَمَّا هٰؤُلَاءِ فَيَتَعَلَّمُوْنَ الْعِلْمَ وَ يُعَلِّمُوْنَ الْجَاهِلَ فَهُمْ اَفْضَلُ، وَاِنَّمَا بُعِثْتُ مُعَلِّمًا، فَجَلَسَ فِيْهِمْ. (مشكوٰة)

327. अन अब्दिल्लाहिब्ने अमरिन अन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मर्रा बिमजलिसैनि फी मस्जिदिही, फ-काला

किलाहुमा अला ख़ैरिवं वअहदुहुमा अफ़ज़लु मिन साहिबिही, अम्मा हाउलाई फ-यदऊनल्लाहा व यरग़बूना इलैहि, फ-इन शाआ अअताहुम वइन शाआ म-न-अहुम व अम्मा हाउलाई फ-यतअल्लमूनल इल्मा व युअल्लिमूनल जाहिला फ-हुम अफ़ज़लु, व इन्नमा बुइस्तु मुअल्लिमन, फ-जलसा फ़ीहिम। (मिश्कात)

अनुवादः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (रज़ि॰) कहते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी मस्जिद, मस्जिदे नबवी में आये, दो जमाअतें वहाँ बैठी थीं (एक जमाअत ज़िक्र व तसबीह में मशग़ूल थी और दूसरी जमाअत के लोग दीन सीखने और सिखाने में लगे हुये थे) आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया दोनों जमाअतें नेक काम में लगी हुई हैं लेकिन उन में से एक जमाअत दूसरी जमाअत से अफ़ज़ल है। यह लोग तो ज़िक्रे इलाही और दुआ व इस्तिग़फ़ार में लगे हुये हैं अल्लाह चाहेगा तो इन्हें देगा, न चाहेगा तो नहीं देगा, रही यह दूसरी जमाअत तो यह लोग दीन सीखने और सिखाने में लगे हुये हैं और मुझे मुअल्लिम (सिखाने वाला) ही बना कर भेजा गया है। यह कह कर आप (सल्ल॰) उसी जमाअत के साथ बैठ गये।

दावत व तबलीग़ के अहम उसूल

(٣٢٨) كَانَ عَبْدُ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ يُذَكِّرُ النَّاسَ فِيْ كُلِّ خَمِيْسٍ فَقَالَ لَهٗ رَجُلٌ يَا اَبَا عَبْدِ الرَّحْمٰنِ لَوَدِدْتُ اَنَّكَ ذَكَّرْتَنَا فِيْ كُلِّ يَوْمٍ، فَقَالَ، اَمَا اِنَّهٗ يَمْنَعُنِيْ مِنْ ذٰلِكَ اَنِّيْ اَكْرَهُ اَنْ اُمِلَّكُمْ وَاِنِّيْ اَتَخَوَّلُكُمْ بِالْمَوْعِظَةِ كَمَا كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَخَوَّلُنَا بِهَا مَخَافَةَ السَّاٰمَةِ عَلَيْنَا. (بخاری، مسلم)

328. *काना अब्दुल्लाहिब्नु मसऊदिन युज़क्किरुन्नासा फ़ी कुल्लि ख़मीसिन फ-काला लहू रजुलुन या अबा अब्दिर्रहमानि ल-वदित्तु अन्नका ज़क्करतना फ़ी कुल्लि यौमिन, फ-काला अमा इन्नहू यमनउनी मिन ज़ालिका अन्नी अकरहु अन उमिल्लकुम व इन्नी अतख़व्वलुकुम बिल मौइज़ति कमा काना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यतख़व्वलुना बिहा मख़ाफतस्सआमति अलैना।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि॰) जुमेरात के दिन लोगों को नसीहत किया करते थे, तो उन से एक आदमी ने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! मेरी चाहत है के आप हम लोगों को हर दिन वअज़ व नसीहत किया करें। उन्हों ने कहा हर दिन तक़रीर करने से जो चीज़ मुझे रोकती है वह यह है कि तुम उकता जाओगे और मैं तुम्हें उकता देना पसन्द नहीं करता मैं नाग़े देकर वअज़ व नसीहत करता हूँ जैसे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम को नाग़ा देकर नसीहत फ़रमाते थे और आप (सल्ल॰) ऐसा इस लिये करते थे कि कहीं हम लोग उकता न जाएँ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अब्दुल्लाह बिन मसऊद के अमल से जो बात साबित होती है वह यह है कि दीन की तबलीग़ करने वाले लोगों को किसी के सिर पर सवार होकर वअज़ व नसीहत न करनी चाहिये बल्कि हालत को देखना चाहिये, मौक़ा व महल देखना चाहिये, और उस किसान की तरह रहना चाहिये जो हर वक़्त बारिश का इन्तिज़ार करता है, और जैसे ही बारिश होती है तुरन्त ज़मीन को तैयार करने में लग जाता है। तो न तो बेमौक़ा तबलीग़ करना सही है और न यह बात सही है कि आदमी मौक़ा की तलाश से ग़ाफ़िल रहे मौक़े आते रहें और यह अपने वक़ार की नाप तौल में उन्हें बरबाद करता रहे।

(٣٢٩) عَنْ عِكْرَمَةَ اَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ حَدِّثِ النَّاسَ كُلَّ جُمُعَةٍ مَرَّةً، فَاِنْ اَبَيْتَ فَمَرَّتَيْنِ، فَاِنْ اَكْثَرْتَ لَثَلاثَ مَرَّاتٍ، وَلَا تُمِلَّنَّ النَّاسَ لِذَاالْقُرْآنَ، وَلَا اُلْفِيَنَّكَ تَاتِى الْقَوْمَ وَهُمْ فِىْ حَدِيْثٍ مِّنْ حَدِيْثِهِمْ فَتَقُصَّ عَلَيْهِمْ فَتَقْطَعَ عَلَيْهِمْ حَدِيْثُهِمْ فَتُمِلَّهُمْ، وَلٰكِنْ اَنْصِتْ فَاِذَا اَمَرُوْكَ فَحَدِّثْهُمْ وَهُمْ يَشْتَهُوْنَهُ، وَانْظُرِ السَّجْعَ مِنَ الدُّعَاءِ فَاجْتَنِبْهُ فَاِنِّى عَهِدْتُّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَصْحٰبَهٗ لَا يَفْعَلُوْنَ ذَالِكَ.

(بخاری)

329. अन इकरमता अन्नब्ना अब्बासिन काला हद्दिसिन्नासा कुल्ला जुमुअतिन मर्रतन फ-इन अबैता फ-मर्रतैनि, फ-इन अकसरता ल-सलासा मर्रातिन वला तुमिल्लन्नन्नासा लिज़ल-कुरआना, वला उलफियन्नका तातिलकौमा वहुम फी हदीसिन मिन हदीसिहिम

फ-तकुस्सा अलैहिम फ-तकतआ अलैहिम हदीसिहिम फ-तुमिल्लहुम, वलामिन अनसित फ-इज़ा अमरूका फ-हद्दिसहुम वहुम यशतहूनहू वनज़ुरिस्सजआ मिनद्दुआई फजतनिबहु फ-इन्नी अहित्तु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा व असहाबहू ला यफअलूना ज़ालिका।

(बुख़ारी)

अनुवादः- इकराम (रज़ि०) कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि हर हफ़्ता एक बार वअज़ किया करो और दो बार कर सकते हो, और तीन बार से ज़्यादा वअज़ मत कहना और इस कुरआन से लोगों को न फेरना और ऐसा कभी न हो कि तुम लोगों के पास पहुंचो और वह अपनी किसी बात में मशग़ूल हों और तुम अपना वअज़ शुरू कर दो और उन की बात काट दो, अगर तुम ऐसा करोगे तो उन को वअज़ व नसीहत से फेर दोगे, बल्कि ऐसे मौक़े पर ख़ामोशी अपनाओ, और जब उन के अन्दर चाहत देखो और वह तुम से वअज़ करने के लिये कहें तो तुम वअज़ करो। और देखो! मुसज्जअ मुक़फ़्फ़अ इबारतें बोलने से बचो (यानी मुश्किल शब्द न बोलो जो समझ में न आएँ) क्योंकि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उन के साथियों को देखा है कि वह तकल्लुफ़ के साथ शब्द नहीं बोला करते थे।

एक हदीस इमाम सरख़सी (रह०) ने मबसूत में नक़ल किया है जिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

لَا تُبَغِّضُوْا عِبَادَ اللّٰهِ عِبَادَةَ اللّٰهِ

ला तुबग़्ग़िज़ू इबादल्लाहि इबादतल्लाहि।

अनुवादः- ऐसा ढंग न अपनाओ कि उस की वजह से लोग अल्लाह की बन्दगी से नफ़रत करने लगें।

“जब वह मुतालबा करें” का मतलब यह है कि वह ज़ुबान से अपनी ख़्वाहिश का इज़हार करें, उन के चेहरे से अन्दाज़ा हो जाए कि अब दीन की बात सुनने के मूड में हैं तब अपनी बात कहनी चाहिये।

(٣٣٠) إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ رَجُلًا يُصَدِّقُ النَّاسَ حِيْنَ اَمَرَهُ اللّٰهُ اَنْ يَّاخُذَ الصَّدَقَةَ، فَقَالَ لَهُ لَا تَاخُذْ مِنْ حَزَرَاتِ اَنْفُسِ النَّاسِ شَيْئًا، خُذِ الشَّارِفَ وَالْبِكْرَ وَذَاتَ الْعَيْبِ فَذَهَبَ فَاَخَذَ ذَالِكَ عَلٰى مَا اَمَرَهُ النَّبِيُّ اَنْ يَّاخُذَ حَتّٰى جَاءَ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْ اَهْلِ الْبَادِيَةِ فَذَكَرَ لَهُ اَنَّ اللّٰهَ اَمَرَ رَسُوْلَهُ اَنْ يَّاخُذَ الصَّدَقَةَ مِنَ النَّاسِ يُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَيُطَهِّرُهُمْ بِهَا، فَقَالَ لَهُ الرَّجُلُ قُمْ فَخُذْ، فَذَهَبَ فَاَخَذَ الشَّارِفَ وَالْبِكْرَ وَذَاتَ الْعَيْبِ، فَقَالَ لَهُ الرَّجُلُ وَاللّٰهِ مَا قَامَ فِيْ اِبِلِيْ اَحَدٌ قَطُّ يَاخُذُ شَيْئًا لِلّٰهِ قَبْلَكَ، وَاللّٰهِ لَتَخْتَارَنَّ. (كتاب الخراج۔ ابو يوسف)

330. *इन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बअसा रजुलन युसद्दिकुन्नासा हीना अमरहुल्लाहु अय्यंाखुज़स्सदकता, फ़-काला लहू लाताखुज़ु मिन हज़राति अनफुसिन्नासि शैअन, ख़ुज़िश्शारिफा वलबिक्रा व ज़ातल ऐबि फ़-ज़हबा फ़-अख़ज़ा ज़ालिका अला मा अमरहुन्नबिय्यु अय्याखुज़ा हत्ता जाआ इला रजुलिम्मिन अहलिलबादियति फ़-ज़करा लहू इन्नल्लाहा अमरा रसूलहू अय्याखुज़स्सदकता मिनन्नासि युज़क्कीहिम बिहा व युतह्हिरुहुम बिहा, फ़-काला लहुर्रजुलु कुम फ़-ख़ुज़, फ़-ज़हबा फ़-अख़ज़श्शारिफा वलबिक्रा व ज़ातल ऐबि, फ़-काला लहुर्रजुलु वल्लाहि मा कामा फी इबिली अहदुन कत्तु याख़ुज़ु शैअन लिल्लाहि कब्लका, वल्लाहि ल-तख़तारन्ना।* (किताबुल ख़िराज, अबू यूसुफ़)

अनुवादः- जब ज़कात फ़र्ज़ हुई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म हुआ कि वह लोगों से ज़कात वुसूल करें, तो आप (सल्ल०) ने ज़कात वुसूल करने के लिये एक आदमी को मुक़र्रर फ़रमाया और उसे यह वसिय्यत की कि देखो! लोगों के बेहतरीन माल जिस से उन के दिलों का संबंध है मत लेना, तुम बूढ़ी ऊँटनियाँ लेना और ऐसी ऊँटनियाँ लेना जिन के बच्चे न हुये हों, और ऐबदार ऊँटनियाँ लेना। चुनाचे यह ज़कात वसूल करने वाला गया और नबी (सल्ल०) की हिदायत के मुताबिक़ लोगों के जानवरों में से ज़कात वसूल की, यहाँ तककि वह एक अरब दीहाती के पास पहुंचा और उसे बताया कि अल्लाह ने अपने रसूल (सल्ल०) को हुक्म दिया है कि वह लोगों से

> ज़कात वसूल करें, यह ज़कात उन की गंदगी को दूर करेगी और ईमान को बढ़ाएगी, उस आदमी ने ज़कात वसूल करने वाले से कहा यह हमारे जानवर हैं तुम जाओ और उन में से ले लो उस ने बूढ़ी ऐबदार और बेबच्चा ऊँटनियाँ लेलीं, तो उस आदमी ने कहा कि तुम से पहले हमारे ऊँटों में से ख़ुदा का हक़ वसूल करने वाला कोई नहीं आया। ख़ुदा की क़सम! तुम्हें तो बेहतरीन ऊँट लेने होंगे। (भला ख़ुदा के हुज़ूर में ख़राब चीज़ पेश की जाएगी?।

अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले ही दिन से लोगों के बेहतरीन माल ज़कात में वुसूल करते तो हो सकता था कि लोग इस हुक्म के ख़िलाफ़ बग़ावत कर देते, लेकिन आहिस्ता आहिस्ता जब लोगों के अन्दर दीन ने अपनी जड़ें जमा लीं और उन की तर्बियत हो गई, तब मदीना से बहुत दूर दीहात में बसने वाले लोगों का यह हाल हुआ कि वह ज़कात में बेहतरीन माल लेने के लिये कहते।

(٣٣١) كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ أَعَادَهَا ثَلٰثًا حَتّٰى تُفْهَمَ عَنْهُ.

(بخاری، انسؓ)

331. *कानन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा तकल्लमा बिकलिमतिन अआदहा सलासन हत्ता तुफ़हमा अनहु।*

(बुख़ारी, अनस रज़ि०)

> **अनुवादः**- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब कोई बात फ़रमाते तो उस को तीन बार दुहराते (जब ज़रूरत महसूस करते) ताकि वह बात लोगों की समझ में अच्छी तरह आ जाये।

हर ज़ुबान में बोलने और तक़रीर करने के ढंग होते हैं, उन्हें जानना ज़रूरी है उस का मक़सद तो लागों के दिलों में अपनी बात उतारनी होती है। सुनने वाले जिस क़िस्म के हों उसी लिहाज़ से ज़ुबान व बयान अपनाना होगा। कम पढ़े लिखे लोगों के सामने फ़लसफ़ियाना अन्दाज़ में बोलना और मुश्किल शब्द और तर्कीबें इस्तेमाल करना दावत को बेनतीजा बनाना है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में हज़रत आयशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं-

كَانَ كَلَامُهٗ كَلَامًا فَصْلًا يَفْهَمُهٗ كُلُّ مَنْ يَسْمَعُهٗ. (ابوداؤد)

काना कलामुहू कलामन फसलय्यंफहमुहू कुल्लु मय्यंसमउहू।

(अबू दाऊद)

अनुवादः- यानी आप की तक़रीर साफ़ और वाज़ेह (स्पष्ट) होती थी, जो सुनता समझ जाता।

(٣٣٢) قَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اِنَّ لِلْقُلُوْبِ شَهَوَاتٍ وَّ اِقْبَالًا وَّ اِدْبَارًا فَاْتُوْهَا مِنْ قِبَلِ شَهَوَاتِهَا وَاِقْبَالِهَا، فَاِنَّ الْقَلْبَ اِذَا اُكْرِهَ عَمِيَ. (کتاب الخراج، امام ابویوسف)

332. *काला अलिय्युन रज़िअल्लाहु अनहु इन्ना लिलकुलूबि शहवातिवं वइक्बालवं व इदबारन फातूहा मिन क़िबलि शहवातिहा व इक्बालिहा, फ-इन्नलक़लबा इज़ा उकरिहा अमिया।*

(किताबुल ख़िराज, इमाम अबू यूसुफ़)

अनुवादः- हज़रत अली (रज़ि॰) ने फ़रमाया कि दिलों की कुछ ख़्वाहिशें और मैलानात होते हैं और किसी वक़्त वह बात सुनने के लिये तैयार रहते हैं और किसी वक़्त उस के लिये तैयार नहीं रहते तो लोगों के दिलों में उन मैलानात के अन्दर से दाख़िल हो और उस वक़्त अपनी बात कहो जब कि वह सुनने के लिये तैयार हों, इस लिये कि दिल का हाल यह है कि जब उस को किसी बात पर मजबूर किया जाता है तो वह अंधा हो जाता है (और बात को क़ुबूल करने से इन्कार कर देता है)

(٣٣٣) قَالَ عَلِيُّ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ، اَلْفَقِيْهُ كُلُّ الْفَقِيْهِ مَنْ لَّمْ يُقَنِّطِ النَّاسَ مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ وَلَمْ يُرَخِّصْ لَهُمْ فِيْ مَعَاصِي اللّٰهِ وَلَمْ يُؤْمِنْهُمْ مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ.

(کتاب الخراج)

333. *काला अलिय्युब्नु अबी तालिबिन रज़िअल्लाहु अनहु, अल-फ़क़ीहु कुल्लुलफ़क़ीहि मल्लम युक़नितिन्नासा मिर्रहमतिल्लाहि वलम युरख़्ख़िस लहुम फी मआसिल्लाहि वलम युअम्मिनहुम मिन अज़ाबिल्लाहि।* (किताबुल ख़िराज)

अनुवादः- बेहतरीन आलिम वह है जो लोगों को (अपनी तक़रीर व वअज़ से) अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं करता

और न अल्लाह की नाफ़रमानी (अवज्ञा) के लिये उन्हें छूट देता है और न अल्लाह के अज़ाब से उन्हें बेख़ौफ़ बनाता है।

मतलब यह है कि ऐसे अन्दाज़ में तक़रीर करनी कि जिस के नतीजे में लोग अपनी मुक्ति और अल्लाह की रहमत से मायूस हो जाएँ सही नहीं है और न यह ठीक है कि लोगों को अल्लाह की ग़फूरुर्रहीमी और हुज़ूर (सल्ल॰) की शिफ़ाअत का ग़लत मतलब बता बता कर उन्हें अल्लाह की नाफ़रमानी के लिये बहादुर और बेबाक बना दिया जाए। सही तरीक़ा यह है कि दोनों पहलू सामने लाएँ ताकि न मायूसी पैदा हो और न बेख़ौफ़ी।

दीन की ख़िदमत करने वालों के लिये खुशख़बरी

(۳۳۴) قَالَ مُعَاوِيَةُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ لَايَزَالُ مِنْ اُمَّتِیْ اُمَّةٌ قَائِمَةٌ بِاَمْرِ اللّٰهِ لَا يَضُرُّهُمْ مَنْ خَذَلَهُمْ وَلَا مَنْ خَالَفَهُمْ حَتّٰى يَاتِیَ اَمْرُاللّٰهِ وَهُمْ عَلٰى ذٰلِکَ. (بخاری، مسلم)

334. *काला मुआवियतु समिअतुन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यक़ूलु लायज़ालु मिन उम्मती उम्मतुन क़ायमतुन बिअमरिल्लाहि ला यज़ुर्रुहुम मन ख़ज़लहुम वला मन ख़ालफ़हुम हत्ता यातिया अमरुल्लाहि वहुम अला ज़ालिका।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत मुआविया (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुये सुना कि मेरी उम्मत में बराबर एक ऐसा गिरोह मौजूद रहेगा जो अल्लाह के दीन का मुहाफ़िज़ (रक्षा करने वाला) रहेगा, जो लोग उन की मुख़ालिफ़त करेंगे वह उन को तबाह नहीं कर सकेंगे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला का फ़ैसला आ जाये और यह दीन के मुहाफ़िज़ लोग अपनी इसी हालत पर क़ायम रहेंगे।

(۳۳۵) اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِنَّ مِنْ اَشَدِّ اُمَّتِیْ لِیْ حُبًّا، نَاسٌ يَّكُوْنُوْنَ بَعْدِیْ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ رَاٰنِیْ بِاَهْلِهٖ وَمَالِهٖ. (مسلم، ابوہریرہؓ)

335. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला इन्ना मिन अशद्दि उम्मती ली हुब्बन, नासुय्यकूनूना बअदी यवद्दु*

अहदुहुम लौ रआनी बिअहलिही वमालिही। (मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवाद:- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में सब से ज़्यादा मुझ से मुहब्बत करने वाले कुछ ऐसे हैं जो बाद में आएँगे, उन में से हर एक तमन्ना करेगा कि काश मुझे देखता अपने घर वालों और अपने माल के साथ।

(٣٣٦) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ الدِّيْنَ بَدَا غَرِيْبًا، وَسَيَعُوْدُ كَمَا بَدَا فَطُوْبٰى لِلْغُرَبَاءِ وَهُمُ الَّذِيْنَ يُصْلِحُوْنَ مَا أَفْسَدَ النَّاسُ مِنْ بَعْدِىْ مِنْ سُنَّتِىْ.

(مشكوة ـ عمرو بن عوف)

336. *काला रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नदीना बदआ ग़रीबन, व स-यऊदु कमा बदआ फ़-तूबा लिलग़ुरबाई व हुमुल्लज़ीना युसलिहूना मा अफसदन्नासु मिमबअदी मिन सुन्नती।*

(मिश्कात, अमर बिन औफ़)

अनुवाद:- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस्लाम मज़हब शुरू में लोगों के लिये अजनबी था और यह पहले की तरह अजनबी हो जाएगा तो अजनबियों के लिये ख़ुशख़बरी हो और यह वह लोग हैं जो मेरे बाद मेरे तरीक़ों को जिसे लोगों ने बिगाड़ डाला होगा ज़िन्दा करने के लिये उठेंगे।

इस्लाम जब फैलना शुरू हुआ तो उस वक़्त अजनबी था जिसे लोग नहीं पहचानते थे। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उन के साथियों की लगातार कोशिश से उस को ग़लबा व इक़तिदार हासिल हुआ और उसे लोगों ने क़ुबूल किया, फिर धीरे-धीरे वह दुनिया के लिये अजनबी बन जाएगा और उस ज़माने में जो लोग दीन को ज़िन्दा करने के लिये उठेंगे वह अजनबी बन जाएँगे। ऐसे लोगों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुशख़बरी दी है।

☆☆☆

दाईयाना सिफ़ात

शुक्र

यूँ तो हर मुसलमान के अन्दर इस सिफ़त का होना ज़रूरी है लेकिन जो लोग इस बिगड़े हुये माहौल में दीन को ज़िन्दा करने के लिये उठें उन के लिये तो यह तोशा हर वक़्त अपने पास रखना ज़रूरी है। शुक्र की हक़ीक़त यह है कि आदमी सोचता है कि अल्लाह ने मेरे साथ यह मुआमला किया कि दुनिया में आने से पहले पेट की अंधेरियों में हवा और ग़िज़ा पहुंचाई। फिर जब दुनिया में आया तो उस ने मेरी परवरिश के क्या क्या इन्तिज़ामात किये, मैं बिल्कुल लाचार और बेबस था, ज़ुबान थी न हाथ पैर थे फिर मेरे रब ने मुझे पाला पोसा, मेरे जिस्म को ताक़त दी, सोचने समझने और बोलने की कुव्वत दी, फिर आसमान व ज़मीन की पूरी मशीन मेरे लिये हर वक़्त चला रहा है ताकि मुझे ख़ुराक और हवा मिले। एक तरफ़ अपनी लाचारियाँ और कमज़ोरियाँ देखता है और दूसरी तरफ़ ख़ुदा की रहमत की यह बारिश देखता है तो उस के दिल में अपने मुहसिन की मुहब्बत जाग उठती है, तब उस की ज़ुबान पर उस की तारीफ़ का कलमा जारी होता है और जिस्म की सारी ताक़तें मालिक को ख़ुश करने और उस की ख़ुशी की राह में दौड़ने के लिये वक़्फ़ हो जाती हैं।

इसी कैफ़ियत और जज़्बे का नाम शुक्र व हम्द है। और यह तमाम भलाईयों की जान है। इसी जज़्बे को ज़िन्दा करने और उभारने के लिये किताबें और रसूल आते रहे हैं और इसी जज़्बे को ख़त्म करना शैतान की असली मुहिम (जंग) है। (देखिये सूरह अअराफ़ रुकू 2) सवाल यह है कि आदम (अलै०) जानते थे कि उन के रब ने फ़ुलाँ पेड़ के पास जाने से रोका है तो क्यों उस मनाही के हुक्म को तोड़ बैठे? इस का जवाब

यह है कि शैतान ने उन्हें एक लम्बी मुद्दत तक परचाया, पूरी कोशिश की कि रब की रुबूबियत (परवरदिगारी) और उस के इनआम का एहसास जो उन के अन्दर ज़िन्दा है कमज़ोर होकर दब जाए, चुनाचे जब यह शुऊर दब गया तभी पेड़ की तरफ़ लपके। ग़र्ज़ यह शुऊर जितना ज़िन्दा होगा उतना ही आदमी ख़ुदा की उपासना में आगे होगा, और जब यह शुऊर दब जाएगा तभी आदमी के लिये गुनाह की तरफ़ जाना मुम्किन होगा। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम मिस्र में औरत के बहाये हुये तूफ़ान से ख़ैरियत के साथ बच निकले सिर्फ़ इस वजह से कि उन्हें अपने रब की रुबूबियत याद आई। उन्हें याद आया कि मेरे रब का तो मेरे साथ यह मुआमला है और मैं उस की नाफ़रमानी करूँ।

शुक्र का जज़्बा जब आदमी के दिल में जाग उठता है तो उस की ज़िन्दगी बन्दगी की राह पर लग जाती है।

(۳۳۷) عَنْ مُعَاذِبْنِ اَنَسٍ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اَكَلَ طَعَامًا فَقَالَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَطْعَمَنِىْ هٰذَا مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّىْ وَلَا قُوَّةٍ غُفِرَلَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ. (ابوداؤد)

337. *अन मुआज़िब्ने अनसिन काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन अकला तआमन फ़काला अलहमदुलिल्लाहिल्लज़ी अतअमनी हाज़ा मिन ग़ैरि हौलिम्मिन्नी वला कुव्वता ग़ुफ़िरा लहू मा तक़द्दमा मिन ज़म्बिही।* (अबूदाऊद)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स खाना खाये और फिर यह कहे "शुक्र है अल्लाह का, जिस ने मुझे यह खाना दिया बग़ैर मेरी अपनी तदबीर और ताक़त के" तो उस से जो गुनाह पहले हो चुके हैं माफ़ हो जाएँगे।

एक शख़्स खाना खाकर यह कहता है कि अल्लाह मेरे मुनइम व मुहसिन ने मुझे खाना बख़्शा, इस में मेरी अपनी तदबीर और जिस्मानी व ज़ेहनी कुव्वत का क्या दख़ल? अपनी "तदबीर" कैसी अपनी कुव्वत क्या। मैं बहुत ही लाचार और मजबूर मख़लूक़ हूँ और जो कुछ मेरे पास है वह सब परवरदिगार ही की बख़्शिश है, और यह खाना भी उस की बख़्शिश

है अगर वह न देता तो मुझे कहाँ से मिलता। जिस आदमी का यह हाल हो कि मेहनत कर के कमाता है और कमाई सामने आती है तो यह कहता है कि यह मेरे रब की बख़्शिश है तो सोचने की बात है कि वह जान बूझ कर गुनाह करेगा? और अगर गुनाह हो जाएँ तो तुरन्त माफ़ी के लिये अपने रब से दरख़्वास्त न करेगा? उस के गुनाह माफ़ न होंगे तो और किस के होंगे।

(٣٣٨) عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ ﹰالْخُدْرِیِّ قَالَ، کَانَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِذَا سْتَجَدَّ ثَوْبًا سَمَّاہُ بِاِسْمِہٖ عَمَامَۃً اَوْ قَمِیْصًا اَوْ رِدَاءً، یَقُوْلُ اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ کَسَوْتَنِیْہِ، اَسْئَلُکَ خَیْرَہٗ وَخَیْرَ مَا صُنِعَ لَہٗ وَ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّہٖ وَشَرِّ مَّا صُنِعَ لَہٗ.

(ابوداؤد)

338. *अन अबी सईदिनिल ख़ुदरिय्यि काला काना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़सतजद्दा सौबन सम्माहु बिइस्मिही अमामतन अव कमीसन अव रिदाअन यकूलु अल्लाहुम्मा लकल हम्दु अन्ता कसौतनीही, असअलुका ख़ैरहू व ख़ैरा मा सुनिआ लहू व अऊज़ुबिका मिन शर्रिही व शर्रि मा सुनिआ लहू।* (अबू दाऊद)

अनुवादः- हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब कोई नया कपड़ा पहनते, अमामा, कुर्ता या चादर तो उसका नाम लेकर फ़रमाते ऐ अल्लाह! तेरा शुक्र है तूने मुझे यह पहनाया मैं तुझ से इस के ख़ैर का तलबगार हूँ और जिस ग़र्ज़ से यह बनाया गया है उस के बेहतर पहलू का तलबगार हूँ और मैं तेरी पनाह में अपने आप को देता हूँ इस कपड़े की बुराई से, और उस मक़सद के बुरे पहलू से जिस के लिये यह बनाया गया है।

कपड़ा हो या कोई दूसरी चीज़, उस का इस्तेमाल बुराई में भी हो सकता है और भलाई में भी, मोमिन कपड़े को ख़ुदा का इनआम जानता है और उस के मिलने पर ख़ुदा का शुक्र अदा करता है और अल्लाह से दुआ करता है कि मैं यह नेमत इस्तेमाल करते हुये बुरा काम न करूँगा, किसी बुरे मक़सद के लिये इसे इस्तेमाल न करूँ, बल्कि मुझे इस की तौफ़ीक़ मिले कि इस का इस्तेमाल अच्छे मक़सद के लिये हो। उस का

यह सोचने का ढंग सिर्फ़ कपड़े के साथ ख़ास नहीं होता, बल्कि हर नेमत पाकर वह यूँ ही सोचता है, और इसी तरह की दुआ माँगता है।

(٣٣٩) عَنْ عَلِيِّ بْنِ رَبِيْعَةَ، قَالَ شَهِدْتُّ عَلِيَّ ابْنَ اَبِيْ طَالِبٍ اُتِيَ بِدَابَّةٍ لِيَرْكَبَهَا، فَلَمَّا وَضَعَ رِجْلَهُ فِي الرِّكَابِ قَالَ بِسْمِ اللّٰهِ، فَلَمَّا اسْتَوٰى عَلٰى ظَهْرِهَا قَالَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا، وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ. (ابوداؤد)

339.अन अलिय्यिब्ने रबीअता काला शहिद्तु अलिय्यब्ना अबी तालिबिन उतिया बिदाब्बतिन लियरकबहा, फ़-लम्मा वज़आ रिजलहू फ़िर्रिकाबि काला बिस्मिल्लाहि, फ़-लम्मस्तवा अला ज़हरिहा कालल हमदु लिल्लाहिल्लज़ी सख़्ख़ारा लना हाज़ा, वमा कुन्ना लहू मुक़रिनीन, वइन्ना इला रब्बिना ल-मुनक़लिबूना। (अबू दाऊद)

अनुवादः– अली बिन रबीआ (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने अली बिन अबी तालिब (रज़ि०) को देखा कि उन के पास सवारी का जानवर लाया गया तो रकाब में पाँव रखते वक़्त फ़रमाया "अल्लाह के नाम से" फिर जब उस की पीठ पर जम कर बैठ गये तो फ़रमाया कि अल्लाह का शुक्र है जिस ने हमारे क़ाबू में इस को दिया, हम अपनी ताक़त के बल पर इसे क़ाबू में नहीं ला सकते थे। और हम अपने रब के पास पलट कर जाने वाले हैं।

अल्लाह तआला ने ऊँटों, घोड़ों और दूसरे जानवरों को इन्सानों के क़ाबू में न किया होता तो इन्सान जो इन से ताक़त में कम और जिस्म में छोटा है, कैसे क़ाबू में ला सकता? लेकिन अल्लाह ने उन के लिये ऐसा क़ानून बनाया है कि बहुत ही आसानी से क़ाबू में आ जाते हैं मोमिन उस पर शुक्र करता है और उस का ज़ेहन तुरन्त आख़िरत की तरफ़ पलट जाता है कि ख़ुदा ने मुझे यह सब नेमतें बख़्शीं, उन का वह मुझ से हिसाब लेगा। ग़ौर कीजिये जिस के सोचने का ढंग यह हो वह अमल के मैदान में कितना आगे होगा?।

(٣٤٠) عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا اَخَذَ مَضْجَعَهُ مِنَ اللَّيْلِ وَضَعَ يَدَهُ تَحْتَ خَدِّهِ ثُمَّ يَقُوْلُ اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيَا، وَاِذَا اسْتَيْقَظَ قَالَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ. (بخاری)

340. *अन हुजैफता काला कानन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा अखज़ा मजजअहू मिनल्लैलि वज़आ यदहू तहता खाद्दिही सुम्मा यकूलु अल्लाहुम्मा बिइस्मिका अमूतु वअहया, वइज़सतैकज़ा कालल्हमदुलिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बअदा मा अमातना व इलैहिन्नुशूर।* (बुख़ारी)

> **अनुवादः**- हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब रात को सोने के लिये लेटते तो अपना हाथ रुख़सार (गाल) के नीचे रखते और फ़रमाते "ऐ अल्लाह! मैं तेरे नाम के साथ मरता हूँ और ज़िन्दा होता हूँ" और जब जागते तो यह फ़रमाते थे कि "शुक्र है अल्लाह का कि उस ने हमें ज़िन्दा किया मौत देने के बाद और हम को फिर जी कर उस के पास जाना है।

जब आदमी के दिल में आख़िरत की "फ़िक्र" घर कर लेती है तो सोते वक़्त उस का हाल यह होता है कि अल्लाह का नाम लेता है और कहता है कि ख़ुदा का नाम मेरे साथ हर वक़्त रहे, मरते वक़्त भी और ज़िन्दगी में भी, सोते वक़्त भी और सो कर उठने के बाद भी, और जब वह सो कर उठता है तो अल्लाह का शुक्र करता है कि उस ने अमल के लिये और मोहलत दी, अगर कल मैंने कोताही की थी तो आज मुझे कोताही न करनी चाहिये, और यह एक दिन का जो वक़्त मिला है उस से फ़ायदा उठाना चाहिये।

यही हाल उस का हर दिन होता है, जब वह सोकर उठता है तो उसे आख़िरत और उस का हिसाब किताब याद आ जाता है कि मुझे एक दिन मौत आएगी और फिर ज़िन्दा होकर हिसाब किताब के लिये रब के पास जाना है, अगर यह ज़िन्दगी की मुहलत खो दी तो उसे कैसे मुंह दिखाऊँगा और क्या जवाब दूँगा।

(۳۴۱) عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ قَالَ مُعَاوِیَۃُ اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ خَرَجَ عَلٰی
حَلْقَۃٍ مِّنْ اَصْحَابِہٖ، فَقَالَ مَا اَجْلَسَکُمْ ھٰھُنَا؟ فَقَالُوْا جَلَسْنَا نَذْکُرُ اللّٰہَ وَنَحْمَدُہٗ عَلٰی مَا
ھَدَانَا لِلْاِسْلَامِ وَمَنَّ بِہٖ عَلَیْنَا۔ (مسلم)

341. *अन अबी सईदिन काला मुआवियतु इन्ना रसूलल्लाहि*

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ख़रजा अला हलकतिम्मिन असहाबिही, फ-काला मा अजलसकुम हाहुना? फ-कालू जलसना तज़कुरुल्लाहा व नहमदुहू अला मा हदाना लिलइस्लामि व मन्ना बिही अलैना।

(मुस्लिम)

अनुवादः- अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) से रिवायत है कि हज़रत मुआविया (रज़ि॰) ने बताया कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से निकल कर आये तो देखा कि कुछ लोग हल्क़ा बनाये हुये बैठे हैं आप (सल्ल॰) ने पूछा कि साथियो! तुम यहाँ क्यों बैठे हो और क्या कर रहे हो? उन्हों ने कहा कि हम यहाँ बैठ कर अल्लाह को याद कर रहे हैं, उस के एहसानात जो उस ने हम पर किये हम उसे याद कर रहे हैं, हम उस एहसान को याद कर रहे हैं कि अल्लाह ने हमारे पास अपना दीन भेजा और हमें ईमान लाने की तौफ़ीक़ दी और हम को सीधा रास्ता दिखाया।

(٣٤٢) عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی الْاَشْعَرِیِّ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ اِذَا مَاتَ وَلَدُ الْعَبْدِ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی لِمَلٰئِکَتِهٖ قَبَضْتُمْ وَلَدَ عَبْدِیْ؟ فَیَقُوْلُوْنَ نَعَمْ، فَیَقُوْلُ قَبَضْتُمْ ثَمَرَةَ فُؤَادِهٖ؟ فَیَقُوْلُوْنَ نَعَمْ، فَیَقُوْلُ فَمَاذَا قَالَ عَبْدِیْ؟ فَیَقُوْلُوْنَ حَمِدَکَ وَاسْتَرْجَعَ. فَیَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰی اِبْنُوْا لِعَبْدِیْ بَیْتًا فِی الْجَنَّةِ وَسَمُّوْهُ بَیْتَ الْحَمْدِ. (ترمذی)

342. *अन अबी मूसल अशअरिय्य अन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा, काला इज़ा माता वलदुल अब्दि कालल्लाहु तआला लिमलाईकतिही कबज़्तुम वलदा अब्दी? फ-यकूलूना नअम, फ-यकूलु कबज़तुम समरता फुआदिही? फ-यकूलूना नअम, फ-यकूलु फ़माज़ा काला अब्दी? फ़-यकूलूना हमिदका वस्तरजआ, फ-यकूलुल्लाहु तआला इब्नू लिअब्दी बैतन फिलजन्नति व सम्मूहु बैतल हम्दि।* (तिर्मिज़ी)

अनुवादः- हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब किसी बन्दे की कोई औलाद मरती है तो अल्लाह तआला अपने फ़रिश्तों से पूछता है "क्या तुम ने मेरे बन्दे की औलाद की जान क़ब्ज़ कर ली? वह कहते हैं हाँ, फिर वह उन से पूछता है

"तुम ने उस के जिगर के टुकड़े की जान क़ब्ज़ कर ली? वह कहते हैं हाँ, फिर वह उन से पूछता है "कि मेरे बन्दे ने क्या कहा?" वह कहते हैं इस मुसीबत पर उस ने तेरी तारीफ़ की और إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन कहा,* तब अल्लाह कहता है मेरे इस बन्दे के लिये जन्नत में एक घर बनाओ और उस का नाम बैतुल-हम्द (शुक्र का घर) रखो।

इस बन्द-ए-मोमिन ने तेरी तारीफ़ की यानी यह कहा ऐ अल्लाह! तेरा शुक्र है, मैं औलाद के छिन जाने पर तुझ से बदगुमान नहीं हूँ, तू जो कुछ करता है वह जुल्म व नाइन्साफ़ी नहीं होती। अपनी चीज़ अगर कोई लेले तो उस पर नाराज़ी क्यों?

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन,* यह सब्र का कलमा है और इन्सान को सब्र की तालीम (शिक्षा) देता है क्योंकि उस का मतलब यह है कि हम अल्लाह के गुलाम और बन्दे हैं हमारा काम उस की चाहत के मुताबिक़ दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारना है और हम उसी के पास लौट कर जाएँगे। अगर हम ने मुसीबत पर सब्र किया तो अच्छा बदला मिलेगा, वर्ना बुरा बदला मिलेगा। दुनिया की हर चीज़ मिटने वाली है इस तरह का सोचना मुसीबत को आसान कर देता है।

(۳۴۳) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَجَبًا لِّاَمْرِ الْمُؤْمِنِ، اِنَّ اَمْرَهٗ كُلَّهٗ لَهٗ خَيْرٌ، وَلَيْسَ ذٰلِكَ اِلَّا لِلْمُؤْمِنِ، اِنْ اَصَابَتْهُ ضَرَّاءُ صَبَرَ فَكَانَ خَيْرًا لَّهٗ، وَاِنْ اَصَابَتْهُ سَرَّاءُ شَكَرَ فَكَانَ خَيْرًا لَّهٗ. (مسلم۔صہیبؓ)

343. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अजबल लिअमरिल मोमिनि, इन्ना अमरहू कुल्लहू लहू ख़ैरुन, व लैसा ज़ालिका इल्ला लिलमोमिनि, इन आसाबतहु ज़र्राउ सबरा फ-काना ख़ैरल्लहू, वइन असाबतहु सर्राउ शकरा फकाना ख़ैरल्लहू।*

(मुस्लिम, सुहैब रज़ि०)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन की हालत भी अजब होती है, वह जिस हाल में भी होता है उस से ख़ैर और भलाई ही समेटता है, और यह

खुशनसीबी मोमिन के सिवा किसी को नहीं हासिल है, अगर वह तंगदस्ती, बीमारी और दुःख की हालत में होता है तो सब्र करता है, और जब वह कुशदगी की हालत में होता है तो शुक्र करता है और यह दोनों हालतें उस के लिये भलाई का सबब बनती हैं।

(٣٤٤) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اُنْظُرُوْا اِلٰى مَنْ هُوَ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَا تَنْظُرُوْا اِلٰى مَنْ هُوَ فَوْقَكُمْ فَهُوَ اَجْدَرُ اَنْ لَّاتَزْدَرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ. (مسلم۔ابوہریرہؓ)

344. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा उनज़ुरू इला मन हुआ असफलु मिनकुम वला तनज़ुरू इला मन हुवा फौककुम फ-हुवा अजदरु अल्लातज़दरू निअमतल्लाहि अलैकुम।*

(मुस्लिम, अबूहुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह लोग कि वह लोग जो तुम से माल व दौलत और दुनियावी शान व शौकत में कम दर्जे के हैं उन की तरफ़ देखो (तो तुम्हारे अन्दर शुक्र का जज़्बा पैदा होगा) और उन लोगों की तरफ़ न देखो जो तुम से माल व दौलत में और दुनियावी साज़ व सामान में बढ़े हुये हैं ताकि जो नेमतें तुम्हें इस वक्त मिली हुई हैं वह तुम्हारी निगाह में हक़ीर (कमतर) न हों (वर्ना खुदा की नाशुक्री का जज़्बा उभर आएगा।

हया

(٣٤٥) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْحَيَاءُ لَا يَاتِيْ اِلَّا بِخَيْرٍ.

(بخاری،مسلم۔عمران بن حصینؓ)

345. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल-हयाउ ला-याती इल्ला बिख़ैरिन।* (बुख़ारी, मुस्लिम, इमरान बिन हुसैन)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हया की सिफ़त सिर्फ़ बेहतरी लाती है।

यानी हया की सिफ़त वह सिफ़त है जिस में तमाम भलाईयाँ जमा हैं यह सिफ़त जिस शख़्स के अन्दर होगी वह बुराई के पास नहीं फटकेगा

और भलाई करने की तरफ़ वह मायल होगा। इमाम नववी ने रियाज़ुस्सालिहीन में हया (लज्जा) की हक़ीक़त बताते हुये लिखा है:

حَقِيْقَةُ الْحَيَاءِ خُلُقٌ يَبْعَثُ عَلَى تَرْكِ الْقَبِيْحِ وَيَمْنَعُ مِنَ التَّقْصِيْرِ فِيْ حَقِّ ذِي الْحَقِّ، وَقَالَ الْجُنَيْدُ اَلْحَيَاءُ رُؤْيَةُ الْاٰلَاءِ اَيِ النِّعَمِ وَرُؤْيَةُ التَّقْصِيْرِ فَيَتَوَلَّدُ بَيْنَهُمَا حَالَةٌ تُسَمّٰى حَيَاءً.

हक़ीक़तुल हयाइ ख़ुलुक़ुन यबअसु अला तरकिल क़बीहि व यमनउ मिनत्तक़सीरि फ़ी हक़्क़ि ज़िलहक़्क़ि, वक़ालल जुनैदु अल-हयाउ रुअयतुल आलाई अईन्निअमि व रुअयतुत्तक़सीरि फ़-यतवल्लदु बैनहुमा हालतुन तुसम्मा हयाअन।

अनुवाद:- हया एक वस्फ़ (गुण) है जो इन्सान को बुरे काम न करने पर उभारता है और हक़ वालों के हक़ की अदायगी में कोताही से रोकता है। और हज़रत जुनैद बग़दादी ने फ़रमाया कि हया की हक़ीक़त यह है कि आदमी अल्लाह तआला की नेमतों को देखता है और फिर यह सोचता है कि उस मुनइम का शुक्र अदा करने में मुझ से कितनी कोताही होती है, तो उससे आदमी के दिल में एक कैफ़ियत पैदा होती है इसी का नाम "हया" है।

और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सिफ़त के तक़ाज़ों को एक हदीस में व्याख्या के साथ बयान फ़रमाया है जो फ़िक्रे आख़िरत के विषय में आ रही है। (देखिये हदीस नम्बर 382)

सब्र व इस्तिक़ामत

(٣٤٦) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ يَّتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ اللّٰهُ وَمَا اُعْطِيَ اَحَدٌ عَطَاءً خَيْرًا وَّ اَوْسَعَ مِنَ الصَّبْرِ. (بخاری، مسلم۔ ابوسعید خدری)

346. *क़ालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मय्यँतसब्बरु युसब्बिरहुल्लाहु वमा उअतिया अहदुन अताअनं ख़ैरवं वऔसआ मिनस्सब्रि।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू सईद खुदरी रज़ि॰)

अनुवाद:- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स सब्र करने की कोशिश करेगा अल्लाह उस को सब्र देगा। और सब्र से ज़्यादा बेहतर और बहुत सारी भलाईयों को

समेटने वाली बख़्शिश और कोई नहीं है।

जो शख़्स आज़माईश में पड़ने पर सब्र करता है तो उस वक़्त तक सब्र नहीं कर सकता जब तक कि ख़ुदा पर उस को भरोसा और यक़ीन न हो, फिर वह शख़्स हर्गिज़ सब्र नहीं कर सकता जिस के अन्दर शुक्र की सिफ़त न पाई जाती हो, इस तरह ग़ौर कीजिये तो मालूम होगा कि सब्र की सिफ़त अपने साथ कितनी ख़ूबियों को समेटती है।

(٣٤٧) عَنْ أُسَامَةَ قَالَ اَرْسَلَتْ بِنْتُ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَّ ابْنِيْ قَدِ احْتُضِرَ فَاشْهَدْنَا، فَاَرْسَلَ يُقْرِئُ السَّلَامَ وَيَقُوْلُ اِنَّ لِلّٰهِ مَا اَخَذَ وَلَهُ مَا اَعْطٰى وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِاَجَلٍ مُسَمًّى، فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ فَاَرْسَلَتْ اِلَيْهِ تُقْسِمُ عَلَيْهِ لَيَاْتِيَنَّهَا فَقَامَ وَمَعَهُ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ وَاُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ وَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ وَّ رِجَالٌ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ فَرُفِعَ اِلَى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّبِيُّ فَاَقْعَدَهُ فِيْ حِجْرِهٖ وَنَفْسُهُ تَقَعْقَعُ فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ، فَقَالَ سَعْدٌ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا هٰذَا؟ فَقَالَ هٰذِهٖ رَحْمَةٌ جَعَلَهَا اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِ عِبَادِهٖ. (بخاری، مسلم)

347. *अन उसामता काला अरसलतु बिन्तुन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अन्नब्नी कदिहतुज़िरा फशहदना, फ-अरसला युकरिउस्सलामा व यकूलु इन्ना लिल्लाहि मा अख़ज़ा वलहू मा अअ़ता व कुल्लु शैइन इन्दहू बिअजलिम्मुसम्मा, फलतसबिर वलतहसिब फ-अरसलत इलैहि तुकसिमु अलैहि ल-यातियन्नहा फ-कामा व मअहू सअदुब्नु उबादता व मुआज़ुब्नु जबलिन व उबय्यिब्नु कअ़बिन व ज़ैदुब्नु साबितिन व रिजालुन रज़िअल्लाहु अनहुम फ-रुफ़िआ इला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमस्सबिय्यु फक़अदहू फी हिज्रिही व नफ़्सुहू तक़अक़उ फ-फाज़त ऐनाहु, फ-काला सअदुं या-रसूलल्लाहि मा हाज़ा? फ-काला हाज़िही रहमतुन जअलहल्लाहु फी कुलूबि ईबादिही।*

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत उसामा (रज़ि॰) कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी ने कहला भेजा कि मेरा लड़का जाँकनी की हालत में है तशरीफ़ लाएँ, तो आप (सल्ल॰) ने सलाम कहला भेजा और यह कि जो कुछ अल्लाह लेता है उसी

का है और जो कुछ देता है वह उसी का है और हर चीज़ उस के यहाँ तैय होती है, और हर एक की मुद्दत मुक़र्रर होती है तो तुम आख़िरत में अज्र पाने की निय्यत से सब्र करो। फिर उन्हों ने कहला भेजा कि ज़रूरी तशरीफ़ लाएँ, तब आप (सल्ल०) और आप के साथ सअद बिन उबादा (रज़ि०), मुआज़ बिन जबल (रज़ि०), उबय्यिब्ने कअब (रज़ि०), ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) और कुछ दूसरे लोग गये। बच्चे को आप (सल्ल०) के पास लाया गया आप (सल्ल०) ने उसे गोद में बिठाया, उस वक़्त उस का दम निकल रहा था। उस मंज़र (दृश्य) को देख कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से आँसू गिरने लगे, तो सअद बिन उबादा ने कहा, यह क्या है? (यानी आप रोते हैं क्या यह सब्र के ख़िलाफ़ बात नहीं है)तो आप ने फ़रमाया (नहीं यह सब्र के ख़िलाफ़ बात नहीं है) यह रहम का जज़्बा है जिसे अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में रख दिया है।

(٣٤٨) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا يَزَالُ الْبَلَاءُ بِالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنَةِ فِي نَفْسِهٖ وَوَلَدِهٖ وَمَالِهٖ حَتّٰى يَلْقَى اللّٰهَ تَعَالٰى وَمَا عَلَيْهِ خَطِيْئَةٌ. (ترمذی۔ابوہریرہؓ)

348. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा यज़ालुल बलाउ बिलमोमिनि वलमोमिनति फी नफ़्सिही व वलदिही व मालिही हत्ता यलक़ल्लाहा तआला वमा अलैहि ख़तीअतुन।*

(तिर्मिज़ी, अबूहुरैरा रज़ि०)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मोमिन मर्दों और औरतों पर कभी-कभी आज़माइशें आती रहती हैं कभी खुद उस पर मुसीबत आती है कभी उस की औलाद पर आती है, कभी उस का माल तबाह हो जाता है (और वह उन तमाम मुसीबातों में सब्र से काम लेता है और इस तरह उस के दिल की सफ़ाई होती रहती है और बुराईयों से दूर होता रहता है) यहाँ तक कि जब अल्लाह से मिलता है तो इस हाल में मिलता है कि उस के नामा-ए-अअमाल में कोई गुनाह नहीं होता।

(٣٤٩) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ عِظَمَ الْجَزَاءِ مَعَ عِظَمِ الْبَلَاءِ، وَاِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى اِذَا اَحَبَّ قَوْمًا ابْتَلَاهُمْ، فَمَنْ رَضِيَ فَلَهُ الرِّضٰى وَمَنْ سَخِطَ فَلَهُ السُّخْطُ.

(ترمذی۔انسؓ)

349. *कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्ना इज़्मल जज़ाई मआ इज़्मिल बलाई, व इन्नल्लाहा तआला इज़ा अहब्बा क़ौमन इबतलाहुम, फमन रज़िया फ-लहुर्रिज़ा व मन सख़िता फ-लहुस्सख़तु* (तिर्मिज़ी-अनस रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आज़माईश जितनी सख़्त होगी उतना ही बड़ा इनआम मिलेगा (इस शर्त पर कि आदमी मुसीबत से घबरा कर राहे हक़ से भाग न खड़ा हो) और अल्लाह तआला जब किसी गिरोह से मुहब्बत करता है तो उन को (और ज़्यादा निखारने और साफ़ करने के लिए) आज़माईशों में डालता है तो जो लोग ख़ुदा के फ़ैसले पर राज़ी रहें और सब्र करें तो अल्लाह उन से ख़ुश होता है, और जो लोग इस आज़माईश में अल्लाह से नाराज़ हों, तो अल्लाह भी उन से नाराज़ हो जाता है।

(٣٥٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا يُصِيْبُ الْمُسْلِمُ مِنْ نَصَبٍ وَّلَا وَصَبٍ وَّلَا هَمٍّ وَّلَا حُزْنٍ وَّلَا اَذًى وَّلَا غَمٍّ حَتّٰى الشَّوْكَةِ يُشَاكُهَا اِلَّا كَفَّرَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ خَطَايَا. (متفق علیہ)

350. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा युसीबुल मुस्लिमु मिन नसबिवं वला वसबिवं वला हम्मिवं वला हुज़्निवं वला अज़वं वला ग़म्मा हत्तश्शौकति युशाकुहा इल्ला कफरल्लाहु बिहा मिन ख़ताया।* (मुत्तफ़क़ अलैहि)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस किसी मुसलमान को कोई दिली तकलीफ़, कोई जिस्मानी बीमारी, कोई दुख और ग़म पहुंचता है और वह उस पर सब्र करता है तो उस के नतीजा में अल्लाह तआला उस की ग़लतियों को माफ़ करता है यहाँ तक कि अगर उसे एक काँटा चुभ जाता है तो वह भी उस की गुनाहों की माफ़ी का सबब

बनता है।

(٣٥١) عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قُلْ لِيْ فِي الْاِسْلَامِ قَوْلًا لَا
اَسْئَلُ عَنْهُ اَحَدًا غَيْرَكَ، قَالَ قُلْ اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ ثُمَّ اسْتَقِمْ. (مسلم)

351. *अन सुफ़ियानब्ने अब्दिल्लाहि काला कुल्तु या रसूलल्लाहि कुल ली फ़िलइस्लामि कौलल ला-असअलु अनहु अहदन ग़ैरका, काला कुल आमन्तु बिल्लाहि सुम्मस्तक़िम।* (मुस्लिम)

अनुवादः- सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा इस्लाम के बारे में ऐसी जामेअ बात मुझे बता दीजिये कि फिर किसी और से मुझे कुछ पूछने की ज़रूरत न पड़े, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि आमनतु बिल्लाहि कहो और फिर उस पर जम जाओ।

यानी दीन तौहीद (इस्लाम) को आदमी अपनाये, उसे अपनी ज़िन्दगी का दीन बनाये और फिर कैसे ही नासाज़गार हालात से गुज़रना पड़े उस पर जमा रहे, यह है दुनिया और आख़िरत में कामियाबी की कुंजी।

(٣٥٢) عَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ الْاَسْوَدِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ
اِنَّ السَّعِيْدَ لَمَنْ جُنِّبَ الْفِتَنَ (ثَلٰثًا) وَلَمَنِ ابْتُلِيَ فَصَبَرَ فَوَاهًا. (ابوداؤد)

352. *अनिल मिक़दादिब्निल असवदि काला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यक़ूलु इन्नस्सईदा ल-मन जुन्निबल फ़ितना सलासन व ल-मनिब्तुलिया फ़-सबरा फ़वाहन।* (अबू दाऊद)

अनुवादः- हज़रत मिक़दाद (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना कि खुशनसीब है वह शख़्स जो फ़ितनों से सुरक्षित रहा, यह बात आप ने तीन बार फ़रमाई, लेकिन जो इम्तिहान और आज़माइश में डाला गया फिर भी हक़ पर जमा रहा तो उस के क्या कहने, ऐसे आदमी के लिये शाबाशी है।

फ़ितनों से मुराद वह आज़माईशें हैं जिन से मोमिन का इस ज़माने में साबक़ा पड़ता है जब बातिल, हाकिम और ग़ालिब हो, और हक़ मग़लूब और महकूम हो तो दीने हक़ अपनाने वालों को और उस पर चलने वालों

को कैसी-कैसी ज़हमतें पेश आती हैं उस को बयान करने की ज़रूरत नहीं है, ऐसे ज़माने में बातिल और अहले बातिल की पैदा की हुई रुकावटों और डाली हुई मुसीबतों के बावजूद एक शख़्स हक़ पर जमा रहता है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से वह शाबाशी और दुआ का हक़दार है।

तिबरानी ने हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि०) से एक रिवायत नक़ल की है जिस में यह मज़मून है कि जब दीन का सियासी निज़ाम बिगड़ जायेगा तो मुसलमानों पर ऐसे हुकमराँ होंगे जो ग़लत रुख़ पर सोसाईटी को ले जाएँगे। अगर उन की बात मानी जाये तो लोग गुमराह हो जाएँगे और अगर उन की बात कोई न माने तो वह उसे क़त्ल कर देंगे तो उस पर लोगों ने पूछा

كَيْفَ تَصْنَعُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟

कैफ़ा तसनउ या रसूलल्लाहि?

यानी ऐसे हालात में हमें आप क्या हिदायत देते हैं?

तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया:

كَمَا صَنَعَ اَصْحَابُ عِيْسَى بْنِ مَرْيَمَ نُشِرُوْا بِالْمِنْشَارِ وَحُمِلُوْا عَلَى الْخُشُبِ مَوْتٌ فِيْ طَاعَةِ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنْ حَيَاةٍ فِيْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ.

कमा सनआ असहाबु ईसब्नि मरयमा नुशिरू बिलमिनशारि व हुमिलू अललख़ुशुबि मौतुन फ़ी ताअतिल्लाहि ख़ैरुम्मिन हयातिन फ़ी मअसियतिल्लाहि।

यानी तुम्हें वही कुछ इस ज़माना में करना होगा जो ईसा बिन मरयम (अलै०) के साथियों ने किया, वह आरों से चीरे गये और सूलियों पर लटकाये गये लेकिन उन्हों ने बातिल के आगे हथियार नहीं डाला अल्लाह की उपासना में मरना उस ज़िन्दगी से बेहतर है जो अल्लाह की नाफ़रमानी में बसर हो।

(٣٥٣) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَاتِىْ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ الصَّابِرُ فِيْهِمْ عَلٰى دِيْنِهٖ كَالْقَابِضِ عَلَى الْجَمْرِ. (ترمذی، مشکوٰۃ۔ انسؓ)

353. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा याती अलन्नासि ज़मानुस्साबिरु फीहिम अला दीनिही कलक़ाबिज़ि अलल जमरि।* (तिर्मिज़ी, मिश्कात, अनस रज़ि०)

अनुवाद:- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक ऐसा वक़्त आ जाएगा जिस में दीन वालों के लिये दीन पर जमे रहना अंगारे को हाथ में लेने की तरह होगा।

मतलब यह कि हालात बहुत ही बिगड़ जाएँगे, बातिल का ग़ल्बा होगा हक़ मग़लूब होगा, अकसर लोग दुनिया को पूजने लगेंगे ऐसी हालत में दीन पर जमने वालों को ख़ुशख़बरी दी गई है। अंगारों से खेलना बहादुर ही का काम हो सकता है बुज़दिल लोग इस तरह का खेल नहीं खेला करते।

तवक्कुल (भरोसा)

(٣٥٤) عَنْ عُمَرَبْنِ الْخَطَّابِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ لَوْ اَنَّكُمْ تَتَوَكَّلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ حَقَّ تَوَكُّلِهٖ لَرَزَقَكُمْ كَمَا يَرْزُقُ الطَّيْرُ تَغْدُوْ خِمَاصًا وَّتَرُوْحُ بِطَانًا. (ترمذی)

354. *अन उमरब्निल ख़त्ताबि काला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यकूलु लौ अन्नकुम ततवक्कलूना अलल्लाहि हक़्क़ा तवक्कुलिही ल-रज़क़कुम कमा युरज़कुत्तैरु तग़दू ख़िमासवं वतरूहु बितानन।* (तिर्मिज़ी)

अनुवाद:- हज़रत उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कहते हुये सुना कि तुम लोग अगर अल्लाह पर ठीक से भरोसा करो तो वह तुम्हें रोज़ी देगा जैसे कि वह चिड़ियों को रोज़ी देता है कि वह सुब्ह को जब रोज़ी की तलाश में घोसलों से रवाना होती हैं तो उन के पेट पटख़े हुये होते हैं और शाम को जब अपने घोंसलों में आती हैं तो उन के पेट भरे होते हैं।

(٣٥٥) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ سَعَادَةِ ابْنِ اٰدَمَ رِضَاهُ بِمَا قَضَى اللّٰهُ لَهٗ، وَمِنْ شَقَاوَةِ ابْنِ اٰدَمَ تَرْكُهُ اسْتِخَارَةَ اللّٰهِ وَمَنْ شَقَاوَةِ ابْنِ اٰدَمَ سَخَطُهٗ بِمَا قَضَى اللّٰهُ. (ترمذی۔ سعدؓ)

355. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मिन सआदतिब्ने आदमा रिज़ाहु बिमा कज़ल्लाहु लहू, व मिन शकावतिब्नि आदमा तरकुहूस्तिख़ारतल्लाहि व मन शकावतिब्नि आदमा सख़तहु बिमा कज़ल्लाहु।* (तिर्मिज़ी, सअद रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आदमी की ख़ुशनसीबी यह है कि जो कुछ अल्लाह उस के लिये फ़ैसला करे, उस से राज़ी हो, उस पर क़नाअत करे, और आदमी की बदनसीबी यह है कि अल्लाह से ख़ैर और भलाई की दुआ न करे, और आदमी की बदनसीबी यह है कि अल्लाह के हुक्म और फ़ैसले पर नाराज़ हो।

तवक्कुल का मतलब है अल्लाह को अपना वकील बनाना और उस पर पूरा भरोसा करना, और वकील कहते हैं सरपरस्त को, और सरपरस्त उस को कहते हैं जो बेहतरी और भलाई की बात सोचे और ख़राबियों से बचाये।

मोमिन का वकील अल्लाह है, इस का मतलब यह है कि वह अक़ीदा रखता है कि अल्लाह की तरफ़ से जो कुछ आये वह भलाई है, उसी में मेरे लिये बेहतरी है, ख़ुदा जिस हाल में भी रखेगा मैं उस से ख़ुश हूँ मोमिन अपनी सी कोशिश करता है और फिर मुआमला ख़ुदा के हवाले कर देता है, कहता है कि ऐ रब! तेरे कमज़ोर बन्दे ने इस काम के करने में अपनी पूरी कोशिश कर ली, मैं कमज़ोर और लाचार हूँ इस काम में जो कमी रह गई है तू उसे पूरा कर दे तू ग़ालिब और ताक़तवर है।

(٣٥٦) قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَعْقِلُهَا وَاَتَوَكَّلُ اَوْ اُطْلِقُهَا وَاَتَوَكَّلُ؟ قَالَ اَعْقِلْهَا وَتَوَكَّلْ. (ترمذی۔انسؓ)

356. *काला रजुलुन या रसूलल्लाहि अअ़किलुहा व अतवक्कलु अव उतलिक़ुहा व अतवक्कलु? काला इअ़किलहा व तवक्कलु।*
(तिर्मिज़ी, अनस रज़ि॰)

अनुवादः– एक आदमी ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपनी ऊँटनी को बाँधूं और अल्लाह पर भरोसा करूँ या उसे छोड़ दूँ और भरोसा करूँ? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया पहले तुम

उसे बाँधो फिर भरोसा करो।

किसी चीज़ को हासिल करने के जो तरीक़े हो सकते हैं वह पूरी तरह करे और फिर ख़ुदा से दुआ करे कि मैंने तो उपाय कर लिया अब तू मदद फ़रमा, यह है तवक्कुल!

(٣٥٧) عَنْ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ قَلْبَ ابْنِ آدَمَ بِكُلِّ وَادٍ شُعْبَةٌ، فَمَنْ اَتْبَعَ قَلْبَهُ الشُّعَبَ كُلَّهَا لَمْ يُبَالِ اللّٰهُ بِاَيِّ وَادٍ اَهْلَكَهُ، وَمَنْ تَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ كَفَاهُ الشُّعَبَ. (ابن ماجہ)

357. *अन अमरिब्निल आसि क़ाला, क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्ना क़ल्बबने आदमा बिकुल्लि वादिन शुअबतुन, फ़-मन अतबआ क़ल्बहुश्शुअबा कुल्लहा लम युबालिल्लाहु बिअय्यि वादिन अहलहू, वमन तवक्कला अलल्लाहि कफ़ाहुश्शुअ़बा।*

(इब्ने माजा)

अनुवादः- अमर बिन अल-आस (रज़ि०) ने फ़रमाया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आदमी का दिल हर वादी में भटकता रहता है तो जो शख़्स अपने दिल को वादियों में भटकने के लिये छोड़ देगा तो अल्लाह को परवाह न होगी कि उस को कौन सी वादी तबाह करती है और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करेगा अल्लाह तआला उस को उन वादियों और रास्तों में भटकने और तबाह होने से बचाएगा।

अगर आदमी अल्लाह को अपना वकील और सरपरस्त नहीं बनाता तो उस का दिल हमेशा परेशान रहेगा और बहुत से जज़्बात का घर बना रहेगा, लेकिन जो शख़्स अपने दिल को अल्लाह की तरफ़ मोड़ देगा उस को यकसूई हासिल होगी।

तौबा व इस्तिग़फ़ार

(٣٥٨) عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفْرَحُ بِتَوْبَةِ عَبْدِهٖ مِنْ اَحَدِكُمْ سَقَطَ عَلٰى بَعِيْرِهٖ وَقَدْ اَضَلَّهُ فِيْ اَرْضٍ فَلَاةٍ. (بخاری، مسلم)

358. *अन अनसिब्ने मालिकिन क़ाला, क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अफ़रहु बितौबति अब्दिही मिन*

अहदिकुम सकता अला बईरिही वक़द अज़ल्लहू फ़ी अर्ज़िन फ़लातिन। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- अनस बिन मालिक कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बन्दा गुनाह करने के बाद माफ़ी माँगने के लिये जब अल्लाह की तरफ़ पलटता है तो अल्लाह को अपने बन्दे के पलटने पर उस शख़्स के मुक़ाबले में ज़्यादा ख़ुशी होती है जिस ने अपनी ऊँटनी जिस पर उस की ज़िन्दगी का दारोमदार था किसी बयाबान में खो दी हो, फिर उस ने अचानक पा लिया हो (तो वह उस ऊँटनी को पाकर जितना ख़ुश होगा उसका अंदाज़ा नहीं किया जा सकता) ऐसे ही आदमी के तौबा करने पर अल्लाह ख़ुश होता है, बल्कि ख़ुदा की ख़ुशी उस के मुक़ाबले में बढ़ी हुई होती है क्योंकि वह रह्‌म व करम का सरचश्मा है।

(٣٥٩) عَنْ اَبِيْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ يَدَهٗ بِاللَّيْلِ لِيَتُوْبَ مُسِيْءُ النَّهَارِ وَيَبْسُطُ يَدَهٗ بِالنَّهَارِ لِيَتُوْبَ مُسِيْءُ اللَّيْلِ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا. (مسلم)

359. अन अबी मुसलअशअरिय्यि अनिन्नबिय्य सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा क़ाला इन्नल्लाहा यबसुतु यदहू बिल्लैलि लियतूबा मुसीउन्नहारि व यबसुतु यदहू बिन्नहारि लियतूबा मुसीउल्लैलि हत्ता ततलुअश्शमसु मिन मग़्रिबिहा। (मुस्लिम)

अनुवादः- अबू मूसा अशअरी से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला रात को अपना हाथ फैलाता है ताकि जिस शख़्स ने दिन में कोई गुनाह किया है वह रात में अल्लाह की तरफ़ पलट आये, और दिन में वह अपना हाथ फैलाता है ताकि रात में अगर किसी ने गुनाह किया है तो वह दिन में अपने रब की तरफ़ पलटे और गुनाहों की माफ़ी माँगे। अल्लाह तआला ऐसा ही करता रहेगा, यहाँ तक कि सूरज मग़रिब (पच्छिम) से निकल आये (यानी क़यामत आ जाये)।

अल्लाह के हाथ फैलाने का मतलब यह है कि वह अपने गुनहगार बन्दों को बुलाता है कि मेरी तरफ़ आ, मेरी रहमत तुझे अपने दामन में लेने के लिये तैयार है, अगर तूने वक़्ती तौर पर जज़्बात से शकिस्त खा कर रात में गुनाह कर डाला है, तो दिन निकलते ही माफ़ी माँग, अगर देर लगाएगा तो शैतान तुझे और दूर कर देगा, और ख़ुदा से दूर होना और होते जाना आदमी की तबाही है।

(٣٦٠) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ
يَقْبَلُ تَوْبَةَ الْعَبْدِ مَالَمْ يُغَرْغِرْ. (ترمذی)

360. *अन अब्दिल्लाहिब्ने उमरा अनिन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला इन्नल्लाहा अज़्ज़ा व जल्ला यक़बलु तौबतल अब्दि मालम युग़रग़िर।* (तिर्मिज़ी)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह बन्दे की तौबा साँस उखड़ने से पहले तक क़ुबूल करता है।

यानी अगर किसी ने अपनी सारी ज़िन्दगी गुनाह में बसर की हो लेकिन मौत की बेहोशी से पहले उसने सच्ची तौबा कर ली तो सब गुनाह धुल जाएँगे, हाँ साँस उखड़ जाने के बाद जिसे सकरात की हालत कहते हैं, उस वक़्त अगर माफ़ी माँगेगा तो उस को माफ़ी नहीं मिलेगी। इस लिये ज़रूरी है कि मौत देखने से पहले आदमी तौबा कर ले।

(٣٦١) عَنِ الْاَغَرِّ بْنِ يَسَارٍ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يٰاَيُّهَا النَّاسُ
تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ، فَاِنِّيْ اَتُوْبُ فِى الْيَوْمِ مِاَةَ مَرَّةٍ. (مسلم)

361. *अनिलअग़र्रिब्नि यसारिन काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा या अय्युहन्नासु तूबू इलल्लाहि वस्तग़फ़िरूहु, फ-इन्नी अतूबु फ़िलयौमि मिअता मर्रतिन।* (मुस्लिम)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ लोगो! अल्लाह से अपने गुनाहों की माफ़ी चाहो, और उस की तरफ़ पल्टो, मुझे देखो, मैं दिन में सौ-सौ बार अल्लाह से मग़फ़िरत की दुआ करता हूँ।

(۳۶۲) عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فِیْمَا یَرْوِیْ عَنِ اللّٰهِ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی اَنَّهٗ قَالَ یَا عِبَادِیْ اِنِّیْ حَرَّمْتُ الظُّلْمَ عَلٰی نَفْسِیْ وَجَعَلْتُهٗ بَیْنَکُمْ مُحَرَّمًا فَلَا تَظَالَمُوْا، یَا عِبَادِیْ کُلُّکُمْ ضَالٌّ اِلَّا مَنْ هَدَیْتُهٗ فَاسْتَهْدُوْنِیْ اَهْدِکُمْ، یَا عِبَادِیْ کُلُّکُمْ جَائِعٌ اِلَّا مَنْ اَطْعَمْتُهٗ فَاسْتَطْعِمُوْنِیْ اُطْعِمْکُمْ، یَا عِبَادِیْ کُلُّکُمْ عَارٍ اِلَّا مَنْ کَسَوْتُهٗ فَاسْتَکْسُوْنِیْ اَکْسُکُمْ یَا عِبَادِیْ اِنَّکُمْ تُخْطِئُوْنَ بِاللَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَاَنَا اَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا فَاسْتَغْفِرُوْنِیْ اَغْفِرْ لَکُمْ. (مسلم)

362. *अन अबी ज़र्रिन अनिन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़ीमा यरवी अनिल्लाहि तबारका व तआला अन्नहू काला या ईबादी इन्नी हर्रमतुज़्ज़ुल्मा अला नफ़्सी व जअल्तुहू बैनकुम मुहर्रमन फला तज़ालमू या इबादी कुल्लुकुम ज़ाल्लुन इल्ला मन हदैतुहू फस्तहदूनी अहदिकुम, या ईबादी कुल्लकुम जाईउन इल्ला मन अतअमतुहू फस्ततईमूनी उतइमकुम या इबादी कुल्लकुम आरिन इल्ला मन कसौतुहू फस्तकसूनी अकसुकुम या ईबादी इन्नकुम तुख़्तिऊना बिल्लैलि वन्नहारि वअना अग़फ़िरुज़्ज़ुनूबा जमीअन फस्तग़फ़िरूनी अग़फ़िर लकुम।* (मुस्लिम)

अनुवादः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला कहता है कि ऐ मेरे बन्दो! मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म को हराम कर लिया है तो तुम भी एक दूसरे पर ज़ुल्म करने को हराम समझो ऐ मेरे बन्दो! तुम में से हर एक गुमराह है उस शख़्स के अलावा जिस को मैं हिदायत दूँ तो मुझ से हिदायत की दुआ माँगो तो मैं तुम्हें हिदायत दूँगा। ऐ मेरे बन्दो! तुम में से हर एक भूका है उस शख़्स के अलावा जिस को मैं खाना दूँ, तो मुझ से रोज़ी माँगो तो मैं तुम्हें खाना खिलाऊँगा। ऐ मेरे बन्दो! तुम में से हर एक नंगा है उस शख़्स के अलावा जिस को मैं पहनाता हूँ, तो मुझ से कपड़ा माँगो मैं तुम्हें पहनाऊँगा। ऐ मेरे बन्दो! तुम रात में और दिन में गुनाह करते हो और मैं सारे गुनाह माफ़ कर सकता हूँ, तो मुझ से माफ़ी माँगो मैं तुम्हें माफ़ कर दूँगा।

☆☆☆

इन्सानों से मुहब्बत

(۳۶۳) عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ قَالَ سَاَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَیُّ الْعَمَلِ اَفْضَلُ؟ قَالَ اِیْمَانٌ بِاللّٰهِ وَجِهَادٌ فِیْ سَبِیْلِهٖ قَالَ قُلْتُ فَاَیُّ الرِّقَابِ اَفْضَلُ؟ قَالَ اَغْلَاهَا ثَمَنًا وَّ اَنْفَسُهَا عِنْدَ اَهْلِهَا، قُلْتُ فَاِنْ لَّمْ اَفْعَلْ؟ قَالَ تُعِیْنُ صَانِعًا اَوْتَصْنَعُ لِاَخْرَقَ قُلْتُ فَاِنْ لَّمْ اَفْعَلْ؟ قَالَ تَدَعُ النَّاسَ مِنَ الشَّرِّ، فَاِنَّهَا صَدَقَةٌ تَصَدَّقُ بِهَا عَلٰی نَفْسِکَ.

(بخاری، مسلم)

363. अन अबी ज़र्रिन काला सअलतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अय्युल अमलि अफ्ज़लु? काला ईमानुम बिल्लाहि व जिहादुन फी सबीलिही काला कुल्तु फ-अय्युर्रिकाबि अफ्ज़लुन? काला अग़लाहा समनवं वअनफुसुहा इन्दा अह्लिहा, कुल्तु फ-इल्लम अफअल? काला तुईनु सानिअन औ तसनउ लिअख़रका कुल्तु फ-इल्लम अफअल? काला तदउन्नासा मिनश्शर्रि फ-इन्नहा सदकतुन तसद्दकु बिहा अला नफ़्सिका। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– अबूज़र गिफ़ारी (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि कौन सा काम बेहतर और मेअयारी है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया ख़ुदा पर ईमान लाना और अल्लाह की राह में जिहाद करना मैंने पूछा कि किस तरह के गुलामों को आज़ाद कराना ज़्यादा बेहतर है? आप ने फ़रमाया कि ऐसे गुलामों को आज़ाद कराना जिन की क़ीमत ज़्यादा हो और जो अपने मालिकों की निगाह में बेहतर हों मैंने कहा कि अगर यह मैं न कर सकूँ तो क्या करूँ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तो फिर तुम किसी काम को करने वाले की मदद करो। या उस शख़्स का काम करो जो अपने काम को बेहतर तरीक़ा पर नहीं कर सकता, मैंने कहा कि अगर यह मैं ना कर सकूँ? तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, लोगों को तकलीफ़ न दो, तो यह तुम्हारा सदक़ा होगा जिस का बदला तुम्हें मिलेगा।"

अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब दीने तौहीद यानी इस्लाम को कुबूल करना है, और जिहाद का मतलब यह है कि जो लोग दीने हक़

को मिटाने के लिये तैयार हों उन का मुक़ाबला किया जाये अगर वह दीन और दीन वालों को मिटाने के लिये तलवार उठाएँ तो मोमिन का फ़र्ज़ है कि वह भी तलवार उठाए और ऐलान कर दे कि दीन हमारी जानों और तुम्हारी जानों से ज़्यादा क़ीमती है, अगर तुम उस को ज़िब्ह करोगे तो हम तुम्हें ज़िब्ह कर देंगे या ख़ुद ज़िब्ह हो जाएँगे।

अरब में गुलामी का रिवाज था, और अरब ही में नहीं था बल्कि उस ज़माने की तमाम मुहज़्ज़ब दुनिया में यह लानत पाई जाती थी, इस्लाम जब आया तो उस ने इन्सानों को ऊँचा उठाने और इन्सानियत की बिरादरी में शामिल करने के लिये गुलामों की आज़ादी के मुआमले को अपने प्रोग्राम में शामिल किया और उसे बहुत बड़ी नेकी क़रार दिया।

सोसाईटी के ज़रूरतमंद लोगों की मदद करना और किसी शख़्स का काम कर देना जिसे वह नहीं कर सकता या बेढंगे तरीक़े से करता है, बहुत बड़ी नेकी है।

(٣٦٤) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اَعْتَقَ رَقَبَةً مُّسْلِمَةً اَعْتَقَ اللّٰهُ بِكُلِّ عُضْوٍ مِّنْهُ عُضْوًا مِنَ النَّارِ. (بخاری، مسلم)

364. *कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन अअतक़ा रक़बतम मुस्लिमतन अअतक़ल्लाहु बिकुल्लि उज़विम्मिनहु उज़वम्मिनन्नारि।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवाद:- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स किसी ऐसे गुलाम को आज़ाद करेगा जो इस्लाम ला चुका है तो अल्लाह तआला उस के एक-एक अंग के बदले उस के एक-एक अंग को जहन्नम की आग से बचाएगा।

(٣٦٥) عَنْ جَابِرٍ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَحْقِرَنَّ مِنَ الْمَعْرُوْفِ شَيْئًا، وَاِنَّ مِنَ الْمَعْرُوْفِ اَنْ تَلْقٰى اَخَاكَ بِوَجْهٍ طَلْقٍ وَّاَنْ تُفْرِغَ مِنْ دَلْوِكَ فِيْ اِنَاءِ اَخِيْكَ. (ترمذی)

365. *अन जाबिरिन, काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला तहक़िरन्ना मिनलमअरूफ़ि शैअन, व इन्ना मिनलमअरूफ़ि अन तलक़ा अख़ाका बिवजहिन तलक़िन व अन*

तुफरिग़ा मिन दलविका फी इनाई अख़ीका। (तिर्मिज़ी)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, तू नेकी के काम को कमतर न समझ, तू अपने भाई से हंस कर मिले यह भी नेकी है और अपने डोल का पानी अपने भाई के बरतन में उंडेल दे, यह भी नेकी है।

(٣٦٦) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ تَعْدِلُ بَیْنَ الْنَیْنِ صَدَقَةٌ، وَتُعِیْنُ الرَّجُلَ فِیْ دَابَّتِهٖ فَتَحْمِلُهٗ عَلَیْهَا اَوْ تَرْفَعُ لَهٗ عَلَیْهَا مَتَاعَهٗ صَدَقَةٌ، وَالْكَلِمَةُ الطَّیِّبَةُ صَدَقَةٌ، وَبِكُلِّ خَطْوَةٍ تَمْشِیْهَا اِلَی الصَّلٰوةِ صَدَقَةٌ، وَتُمِیْطُ الْاَذٰی عَنِ الطَّرِیْقِ صَدَقَةٌ. (بخاری)

366. *अन अबी हुरैरता काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा तअदिलु बैनसनैनि सदकुतुन व तुईनुर्रजुला फी दाब्बतिही फ-तहमिलुहू अलैहा अव तरफउ लहू अलैहा मताअहू सदकतुन, वलकलिमतुत तय्यिबतु सदकतुन, व बिकुल्लि ख़तवतिन तमशीहा इलस्सलाति सदकतुन, व तुमीतुल अज़ा अनित्तारीकि सदकतुन।* (बुख़ारी)

अनुवादः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, दो आदमियों के बीच सुलह करा दो, यह भी नेकी है तुम किसी को अपनी सवारी पर बिठा लो, या उस का बोझ अपनी सवारी पर रख लो यह भी नेकी है, अच्छी बात कहना भी नेकी है तुम्हारा हर क़दम जो नमाज़ के लिये उठता है नेकी है, रास्ता से काँटे पत्थर हटा देना भी नेकी है।

एक दूसरी हदीस में है कि तुम अपने माल व मर्तबा से किसी को फ़ायदा पहुंचाओ, यह नेकी है। एक आदमी अपने दावे को अच्छी तरह से नहीं बयान कर सकता और तुम्हें यह नेमत मिली है तो अपने भाई की वकालत करना और उस की तर्जुमानी करनी यह भी नेकी है। तुम्हें ताक़त दी गई है तो किसी कमज़ोर की मदद करो, यह भी नेकी है। तुम्हारे पास इल्म है तो दूसरों को सही बात बतानी यह भी नेकी है।

(٣٦٧) عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ عَلٰی كُلِّ مُسْلِمٍ صَدَقَةٌ، قَالَ اَرَاَیْتَ اِنْ لَّمْ یَجِدْ؟ قَالَ یَعْمَلُ بِیَدَیْهِ فَیَنْفَعُ نَفْسَهٗ وَ یَتَصَدَّقُ؟ قَالَ اَرَاَیْتَ اِنْ لَّمْ

يَسْتَطِعْ؟ قَالَ يُعِيْنُ ذَا الْحَاجَةِ الْمَلْهُوْفَ؟ قَالَ اَرَاَيْتَ اِنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ؟ قَالَ يَامُرُ
بِالْمَعْرُوْفِ اَوِالْخَيْرِ، قَالَ اَرَاَيْتَ اِنْ لَّمْ يَفْعَلْ؟ قَالَ يُمْسِكُ عَنِ الشَّرِّ فَاِنَّهَا صَدَقَةٌ.
(مسلم)

367. अन अबी मूसा अनिन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला अला कुल्लि मुस्लिमिन सदक़तुन, काला अ-रऐता इल्लम यजिद? काला यअमलु बियदैहि फ़-यनफ़उ नफ़्सहू व यतसद्दकु? काला अरऐता इल्लम यसततेअ? काला युईनु ज़लहाजतिल मलहूफ़ा? काला अ-रऐता इल्लम यसततेअ? काला यामुरु बिलमअरूफ़ि अविलख़ैरि, काला अ-रऐता इल्लम यफ़अल? काला युमसिकु अनिश्शिर्रि फ़-इन्नहा सदक़तुन। (मुस्लिम)

अनुवाद:- अबू मूसा अशअरी फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हर मुसलमान पर सदक़ा (दान) करना लाज़िम है तो मैंने कहा कि अगर किसी के पास माल न हो? आप ने फ़रमाया वह कमाए, खुद खाए और ग़रीबों को भी दे, मैंने कहा, अगर वह यह न कर सके तो? आप ने फ़रमाया किसी ज़रूरतमंद मुसीबत में फुंसे हुये आदमी की मदद करे, मैंने कहा अगर वह यह न कर सका तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया लोगों को नेकी करने पर उभारे मैंने कहा अगर उस ने यह न किया? आप ने फ़रमाया कि लोगों को तकलीफ़ न दे, यह भी नेकी है।

(٣٦٨) عَنِ ابْنِ عُمَرَ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ كَانَ فِيْ حَاجَةِ
اَخِيْهِ كَانَ اللّٰهُ فِيْ حَاجَتِهٖ. (بخاری،مسلم)

368. अनिब्नि उमरा अन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला मन काना फ़ी हाजति अख़ीहि कानल्लाहु फ़ी हाजतिही। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवाद:- इब्ने उमर (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अपने भाई की ज़रूरत के वक़्त उस के काम आएगा, अल्लाह उस की ज़रूरत के वक़्त मदद करेगा।

एक हदीस में है कि "अल्लाह ने अपने कुछ बन्दे लोगों की ज़रूरत पूरी करने के लिये पैदा किये हैं, लोग अपनी ज़रूरतें उन तक पहुंचाते हैं और वह पूरी कर देते हैं यह लोग क़यामत क़े दिन अल्लाह के गुस्सा और अज़ाब से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहेंगे।

अख़लासे अमल

(٣٦٩) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى اَنَا اَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ، مَنْ عَمِلَ عَمَلًا اَشْرَكَ فِيْهِ مَعِيْ غَيْرِيْ فَاَنَا مِنْهُ بَرِيْءٌ، هُوَ لِلَّذِيْ عَمِلَ لَهٗ.
(مسلم۔ابوہریرہؓ)

369. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कालल्लाहु तआला अना अग़नश्शुरकाई अनिश्शिरकि, मन अमिला अमलन अशरका फ़ीहि मई ग़ैरी फ-अना मिनहु बरिउन, हुवल्लज़ी अमिला लहू।* (मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया मैं दूसरे शरीकों के मुक़ाबले में शिर्क से ज़्यादा बेनियाज़ हूँ, जिस शख़्स ने कोई नेक काम किया और उस में मेरे साथ उस ने किसी और को शरीक किया तो मेरा उस के अमल से कोई संबंध नहीं, मैं उस के अमल से बेज़ार हूँ, वह अमल तो उस दूसरे का हिस्सा है जिस को मेरे साथ उस ने शरीक किया।

जिन लोगों को नेकी की तौफ़ीक़ मिली है उन को और दीन का काम करने वालों को ख़ासतौर से सोचना चाहिये कि इस हदीस में क्या बात कही गई है इस में आप (सल्ल॰) ने बताया है कि नेकी का जो काम भी हो चाहे उस का तअल्लुक़ इबादात से हो या मुआमलात से हो, चाहे वह नमाज़ हो या खुदा के बन्दों की ख़िदमत, अगर उस का मक़सद दिखावा और शुहरत हासिल करना हो, या किसी गिरोह या किसी शख़्स से शाबाशी लेनी हो तो अल्लाह के यहाँ उस की हैसियत सिर्फ़ सिफ़र की होगी और अगर उस की खुशनूदी भी इस का मक़सद है और लोगों की शाबाशी लेनी भी उस का मक़सद है तो भी वह अमल बेकार होकर

रह जाएगा, और अगर शुरू में तो ख़ुदा की ख़ुशनूदी ने अमल पर उभारा मगर बाद में दूसरों की ख़ुशनूदी ने उसकी जगह ले ली तो यह अमल भी बेकार जाएगा। इस लिये बहुत होशियार रहना होगा, शैतान के आने के हज़ारो दरवाज़े हैं, ऐसे दिखाई न देने वाले दुश्मन के हमलों से बचने की एक ही तर्कीब है अल्लाह के सामने गिरना, उससे अपनी मजबूरी बयान करना, ख़ुदा मदद न करे तो कमज़ोर इन्सान शैतानी हमलों से कैसे बच सकता है।?

सुधार व तर्बियत के ज़राये

ख़ुदा की सिफ़ात का ज़िक्र

(٣٧٠) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِلّٰهِ تِسْعَةٌ وَّ تِسْعُوْنَ
اِسْمًا مِائَةٌ اِلَّا وَاحِدًا، مَنْ اَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ. (بخاری)

370. *अन अबी हुरैरता अन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला लिल्लाहि तिसअतुवं वतिसऊना इस्मन मिअतुन इल्ला वाहिदन, मन अहसाहा दख़लल-जन्नता।* (बुख़ारी)

अनुवादः– हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के 99 नाम हैं सौ से एक कम, जो उन को याद रखेगा जन्नत में दाख़िल होगा।

"याद रखने" का मतलब यह है कि जो आदमी उन के मतलब व मफ़हूम को जाने और उन के जो तक़ाज़े और मुतालबे हैं उन्हें पूरा करे, दूसरे शब्दों में उस का मतलब यह है कि आदमी उन सिफ़ात को अपने अन्दर जज़्ब करे और अपनी पूरी ज़िन्दगी में उन के तक़ाज़ों (माँग) पर अमल करे।

इस हदीस में सारे नामों की तफ़सील नहीं दी गई है, उन को जानने का और उन के तक़ाज़े मालूम करने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि आदमी क़ुरआन मजीद पढ़े जिस में ख़ुदा ने अपनी तमाम सिफ़तें बयान कर दी हैं और उन के क्या तक़ाज़े हैं और आदमी को उन से किस तरह फ़ायदा उठाना चाहिये यह सब क़ुरआन में बयान हुये हैं, लेकिन उन से पूरे तौर पर वही फ़ायदा हासिल कर सकता है जो क़ुरआन पढ़ने और समझ कर पढ़ने की आदत डाले, फिर हुज़ूर (सल्ल॰) ने उन्हीं को अपने

शब्दों में तक़ाज़ों के साथ बयान किया है, उन दोनों का मुताला ही बताएगा कि ख़ुदा की सिफ़ात से ज़िक्र और याददहानी कैसे हासिल की जाए, हम यहाँ कुछ ज़रूरी सिफ़ात जिन को कुरआन ने बार बार दुहरया है और जिन से मोमिनीन की तर्बियत से बहुत ज़्यादा काम लिया गया है ज़िक्र करते हैं, और वह भी इख़्तिसार के साथ क्योंकि यह किताब उस विषय को फैलाकर बयान करने की इजाज़त नहीं देती।

1. अल्लाह, यह उस ज़ात का नाम है जिस ने सारे संसार को बनाया यह शब्द ग़ैर ख़ुदा के लिये कभी नहीं बोला गया, यह जिस माद्दा से बना है उस के दो मतलब हैं, मुहब्बत से किसी की तरफ़ लपकना, बढ़ना और ख़तरात से बचने के लिये किसी की तरफ़ भागना और उस की पनाह में अपने आप को देना, तो अल्लाह हमारा इलाह है, उस का तक़ाज़ा यह है कि हमारा दिल उस की मुहब्बत से भरा हुआ हो हमारे दिल में उस की मुहब्बत के सिवा और किसी की मुहब्बत न हो, हमारे जिस्म व जान की सारी कुव्वतें और सलाहियतें उस के लिये वक़्फ़ हों, सिर्फ़ उसी की इबादत और बन्दगी हो, सिर्फ़ उसी के सामने झुकें, और सिर्फ़ उसी के लिये भेंट व कुर्बानी पेश करें, सिर्फ़ उसी पर भरोसा हो, और सिर्फ़ उसी के काम के लिये अपने को वक़्फ़ कर दें, अल्लाह के सिवा और किसी से मुश्किलों और कठिनाईयों में मदद न माँगें। यह तक़ाज़ा है अल्लाह के माबूद होने का, और बिल्कुल उभरा हुआ तक़ाज़ा है।

2. **रब,** यह शब्द जिस माद्दे से बना है इस के मतलब हैं पालना पोसना, परवरिश करना, ठीक हालत में रखना, तमाम ख़तरों से बचाते हुये और बुलंदी के सारे असबाब का इन्तेज़ाम करते हुये कमाल तक पहुंचा देना, ख़ुदा की रुबूबियत एक साफ़ बात है माँ के पेट के अंधेरों में हवा और ग़िज़ा कौन पहुंचाता है? दुनिया में आने से पहले बच्चे की ग़िज़ा का कौन इन्तेज़ाम करता है? फिर वह कौन है जो माँ बाप और दूसरे लोगों के दिलों में मुहब्बत भर देता है? ऐसा न होता तो गोश्त के लोथड़े को कौन उठाता? उस की ज़रूरतें कौन पूरी करता? फिर आहिस्ता-आहिस्ता जिस्म और अक़्ल की कुव्वतों को कौन परवान चढ़ाता है? जवानी और सेहत किस की दी हुई है? फिर यह ज़मीन व आसमान का कारख़ाना किस के

लिये चलता रहता है? क्या यह सब उस की रुबूबियत का फ़ैज़ नहीं? और क्या उस के सिवा कोई और है, जो रुबूबियत में उसका शरीक हो? अगर सिर्फ़ वही हमारा मुहसिन और पालने वाला है तो उस का बिल्कुल वाज़ेह तक़ाज़ा यह है कि ज़ुबान, हाथ, पाँव, जिस्म व जान की सारी सलाहियतें सिर्फ़ उसकी होकर रहें। फिर उस ने सिर्फ़ इतना ही नहीं किया कि रोटी और पानी का इन्तेज़ाम कर दिया हो, नहीं, बल्कि यह उस की रुबूबियत का फ़ैज़ है कि हमारी ज़िन्दगी को सही हालत में रखने के लिये और हमारी रूह की परवरिश के लिये उस ने अपनी किताब भेजी जो तमाम एहसानों में सब से बड़ा एहसान है, इस एहसान का तक़ाज़ा यह है कि हम उस की किताब की क़द्र करें, उसे अपने दिल व रूह की गिज़ा बनाएँ, उस को अपनी ज़िन्दगी में समोएँ और शुक्रगुज़ार गुलाम की तरह दुनिया भर में उस का चर्चा करें और जो लोग उस की लज़्ज़त और मिठास को ना जानते हों उन्हें उस की जानकारी दें।

"अर्रहमानु अर्रहीमु" यह दोनों शब्द रहमत से बने है, पहला जोश व ख़रोश और कसरत का मफ़हूम अपने अन्दर लिये हुये है और दूसरे में हमेशगी और लगातारपन का मफ़हूम पाया जाता है। रहमान वह जिस की रहमत बहुत ही जोश वाली है, हवा, पानी, और दूसरी सारी ज़रूरियात की फ़राहमी उसी सिफ़त का अक्स है, फिर उसी सिफ़त का नतीजा है कि उस ने सब से बड़ी रहमत (कुरआन) भेजी। फ़रमाया-

اَلرَّحْمٰنُ. عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ. خَلَقَ الْاِنْسَانَ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ.

अर्रहमानु, अल्लमल कुरआना, ख़लक़ल इन्साना अल्लमहुल बयाना, रहमान ने कुरआन की तालीम (शिक्षा) दी, रहमान ने इन्सान को पैदा किया, रहमान ने इन्सान को बोलने की कुव्वत दी। और रहीम वह जिस की रहमत का सिलसिला कभी ख़त्म नहीं होता, जिस का रहम व करम हमेशा रहने वाला है। इन सिफ़तों के मानने से लाज़िम आता है कि आदमी ऐसे ढंग से ज़िन्दगी गुज़ारे जिस को रहमान पसन्द करता है, ताकि और ज़्यादा रहमत का हक़दार हो और उन उसूलों पर अपनी ज़िन्दगी की इमारत न उठाये जो उस को नापसन्द हैं, वर्ना वह अपनी नज़रेकरम फेर लेगा, फिर जो लोग दीन का काम कर रहे हों उन्हें

बुरी हालतों में मुसीबतों और कठिनाईयों में याद आना चाहिये कि जब वह रब्बेरहीम का काम कर रहे हैं तो वह उन्हें इस दुनिया में अपनी रहमतों से महरूम क्यों करेगा?

اَلْقَائِمُ بِالْقِسْطِ. "*अल-क़ाइमु बिल-क़िस्ति*" यानी आदिल व मुंसिफ़, तो जब अल्लाह आदिल व मुंसिफ़ है तो उस की नज़र में वफ़ादार और मुजरिम एक नहीं हो सकते दोनों के साथ वह एक ही तरह का मुआमला न इस दुनिया में करेगा और न उस दुनिया में करेगा।

"*अल-अज़ीज़*" हुकूमत वाला, जिसकी हुकूमत सब को घेरे हुये हो, जिस की हुकूमत को कोई चेलन्ज न कर सके, अगर वह अपने वफ़ादार ग़ुलामों को ग़लबा व हुकूमत देने का फ़ैसला करे तो कोई ताक़त उस के फ़ैसले को रोक न सके और जिसे वह सज़ा देना चाहे वह भाग न सके और न कोई उस के फ़ैसले को टाल सके।

"*अल-रक़ीब*" निगरानी करने वाला, और जब वह बन्दों के कर्मों की निगरानी कर रहा है तो उसी के मुताबिक़ बदला व सज़ा देगा।

"*अल-अलीम*" जानने वाला, पूरा इल्म रखने वाला कि कौन कहाँ है और क्या कर रहा है और किस की क्या ज़रूरतें हैं उस के वफ़ादार बन्दे कहाँ और किन मुश्किलों में फंसे हुये हैं, और यह कि वह इल्म रखता है इस लिये किसी को कोई चीज़ देने में नाइन्साफ़ी नहीं करता है हर एक को वही कुछ देगा जिस का वह हक़दार है उस की रहमत व नुसरत के मुस्तहिक़ नाकाम नहीं हो सकते और उस के ग़ुस्सा व अज़ाब के मुस्तहिक़ कामियाब नहीं हो सकते।

यह कुछ ज़रूरी सिफ़ात ज़िक्र की गई जिन में और सब सिफ़तें सिमट कर आ जाती हैं यहाँ इस से ज़्यादा का मौक़ा नहीं, इस बात को हम फिर दुहराते हैं कि ख़ुदा की तमाम सिफ़तों को तफ़सील के साथ जानने के लिये कुरआन व हदीस का मुताला ज़रूरी है, अरबी ज़ुबान जो लोग जानते हैं, और जो लोग नहीं जानते हैं, दोनों के सोचने की चीज़ है कि आयतों के आख़िर में ख़ुदा की सिफ़तें क्यों लाई गई हैं और उन से उन्हें क्या हिदायत मिलती है।

दुनिया से बेरग़बती और आख़िरत की फ़िक्र

(٣٧١) عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ تَلَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ
يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ" فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ النُّوْرَ اِذَا
دَخَلَ الصَّدْرَ انْفَسَحَ، فَقِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ هَلْ لِتِلْكَ مِنْ عِلْمٍ يُعْرَفُ بِهٖ؟ قَالَ نَعَمْ،
اَلتَّجَافِيْ عَنْ دَارِ الْغُرُوْرِ وَالْاِنَابَةُ اِلٰى دَارِ الْخُلُوْدِ وَالْاِسْتِعْدَادُ لِلْمَوْتِ قَبْلَ نُزُوْلِهٖ.

(مشکوٰة)

371. *अनिब्नि मसऊदिन क़ाला तला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा, "फ़-मय्युरिदिल्लाहु अय्यहदियहू यश्रह सदरहू लिलइस्लामि" "फ़-क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नन्नूरा इज़ा दख़लस्सदरा अनफ़सहा, फ़क़ीला या रसूलल्लाहि हल लितिलका मिन इलमिय्युअरफ़ु बिही? क़ाला नअम, अत्तजाफ़ी अन दारिलग़ुरूरि वल इनाबतु इला दारिल ख़ुलूदि वल इस्तिअदादु लिलमौति क़ब्ला नुज़ूलिही।* (मिश्कात)

अनुवादः- अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी *"फ़-मय्युरिदिल्लाहु अय्यहदियहू यश्रह सदरहू लिलइस्लामि"* (जिस को अल्लाह हिदायत देने का फ़ैसला करता है उस के सीने को इस्लाम के लिये खोल देता है) यह आयत पढ़ने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब नूर सीने में दाख़िल होता है तो सीना खुल जाता है। लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! क्या उसकी कोई महसूस निशानी है जिस के ज़रिये पहचान लिया जाये? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, हाँ उस की महसूस निशानी यह है कि आदमी का दिल इस दुनिया से उचाट हो जाता है और हमेशगी के घर का वह चाहने वाला बन जाता है और मौत आने से पहले मौत की तैयारी में लग जाता है।

यानी जिस शख़्स के दिल में इस्लाम की हक़ीक़त उतर जाती है तो उस का दिल इस ख़त्म होने वाली दुनिया से दूर भागने लगता है और आख़िरत का चाहने वाला बन जाता है, और मौत आने से पहले नेक काम

करने लग जाता है।

(٣٧٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ أَخْوَفَ مَا أَتَخَوَّفُ عَلٰى أُمَّتِيَ الْهَوٰى وَطُوْلُ الْأَمَلِ، فَأَمَّا الْهَوٰى فَيَصُدُّ عَنِ الْحَقِّ، وَأَمَّا طُوْلُ الْأَمَلِ فَيُنْسِي الْآخِرَةَ، هٰذِهِ الدُّنْيَا مُرْتَحِلَةٌ ذَاهِبَةٌ وَ هٰذِهِ الْآخِرَةُ مُرْتَحِلَةٌ قَادِمَةٌ، وَلِكُلٍّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُمَا بَنُوْنَ، فَإِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ لَّا تَكُوْنُوْا مِنْ بَنِي الدُّنْيَا فَافْعَلُوْا، فَإِنَّكُمُ الْيَوْمَ فِيْ دَارِ الْعَمَلِ وَلَا حِسَابَ، وَأَنْتُمْ غَدًا فِيْ دَارِ الْآخِرَةِ وَلَا عَمَلَ. (مشكوٰة۔جابرؓ)

372. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्ना अख़्वफ़ा मा अतख़व्वफ़ु अला उम्मतिल हवा व तूलुलअमलि, फ-अम्मल हवा फ-यसुद्दु अनिल हक़्क़ि, व अम्मा तूलुलअमलि फ-युनसिल आख़िरता हाज़िहिद्दुनिया मुरतहिलतुन ज़ाहिबतुवं व हाज़िहिल आख़िरतु मुरतहिलतुन क़ादिमतुन, व लिकुल्लि वाहिदतिम्मिनहा बनूना, फ-इनिस्ततअतुम अल्ला तकूनू मिम्बनीद्दुनिया फफ़अलू, फ-इन्नकुमुल यौमा फ़ी दारिल अमलि वला हिसाबा, व अनतुम ग़दन फ़ीदारिल आख़िरति वला अमला।*

(मिश्कात, जाबिर रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत के बारे में जिस चीज़ से सब से ज़्यादा डरता हूँ वह यह है कि मेरी उम्मत अपनी ख़्वाहिशों का कहा मानने लगेगी और दुनिया हासिल करने के लिये लम्बे-चौड़े मंसूबे बनाने में लग जाएगी तो उस के अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स का कहा मानने का नतीजा यह होगा कि वह हक़ से दूर हो जाएगी और दुनिया को बनाने के मंसूबे आख़िरत से ग़ाफ़िल कर देंगे। (ऐ लोगो! यह दुनिया कूच कर चुकी है, जा रही है और आख़िरत कूच कर चुकी है आ रही है, और उन में से हर एक के मानने वाले हैं जो उस से मुहब्बत करते हैं, तो यह अच्छा होगा कि तुम दुनिया के चाहने वाले न बनो, तुम इस वक़्त अमल के घर में हो और हिसाब का वक़्त नहीं आया है, और कल तुम हिसाब के घर (आख़िरत) में होगे जहाँ अमल का कोई मौक़ा न होगा।

(۳۷۳) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِرَجُلٍ وَّهُوَ يَعِظُهٗ، اِغْتَنِمْ خَمْسًا قَبْلَ خَمْسٍ، شَبَابَكَ قَبْلَ هَرَمِكَ، وَصِحَّتَكَ قَبْلَ سُقْمِكَ، وَغِنَاكَ قَبْلَ فَقْرِكَ، وَفَرَاغَكَ قَبْلَ شُغْلِكَ، وَحَيَاتَكَ قَبْلَ مَوْتِكَ. (مشکٰوۃ)

373. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लिरजुलिवं वहुवा यईज़ुहू, इग़तनिम ख़मसन कब्ला ख़मसिन, शबाबका कब्ला ह-र-मिका, व सिह्हतका कब्ला सुक़्मिका, व ग़िनाका कब्ला फ़क़्रिका व फ़राग़का कब्ला शुग़्लिका, व हयातका कब्ला मौतिका।* (मिश्कात)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को नसीहत करते हुये यह बात फ़रमाई तुम पाँच चीज़ों को पाँच चीज़ों से पहले ग़नीमत जानो, अपनी जवानी को बूढ़ापा आने से पहले, और अपनी सेहत को बीमारी से पहले और अपनी ख़ुशहाली को अपनी मुहताजी से पहले, और अपनी फ़राग़त को मशग़ूलियत से पहले, और अपनी ज़िन्दगी को मौत से पहले।

यानी जवानी में ख़ूब अमल करो, क्योंकि सख़्त बुढ़ापे की हालत में चाहने के बावजूद भी कुछ नहीं कर सकोगे, और अपनी तनदुरुस्ती को आख़िरत की तैयारी में लगाओ, हो सकता है कि बीमार पड़ जाओ और कुछ न कर सको, और जब अल्लाह ख़ुशहाली दे तो उस से आख़िरत का काम लो, हो सकता है कि तुम ग़रीब हो जाओ, और फिर ख़ुदा की राह में माल ख़र्च करने का मौक़ा ही न रहे, गर्ज़ यह कि इस पूरी ज़िन्दगी को ग़नीमत जानो और इस को ख़ुदा के काम में लगाओ वर्ना मौत आकर अमल के सारे मौक़ों को ख़त्म कर देगी।

(۳۷۴) عَنْ اَبِیْ سَعِيْدٍ قَالَ خَرَجَ النَّبِیُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِصَلٰوةٍ فَرَاَى النَّاسَ كَاَنَّهُمْ يَكْتَشِرُوْنَ، قَالَ اَمَا اِنَّكُمْ لَوْ اَكْثَرْتُمْ ذِكْرَهَا ذِمِ اللَّذَّاتِ لَشَغَلَكُمْ عَمَّا اَرٰى، اَلْمَوْتِ، فَاَكْثِرُوْا ذِكْرَهَا ذِمِ اللَّذَّاتِ الْمَوْتِ، فَاِنَّهٗ لَمْ يَاْتِ عَلَى الْقَبْرِ يَوْمٌ اِلَّا تَكَلَّمَ، فَيَقُوْلُ اَنَا بَيْتُ الْغُرْبَةِ، وَاَنَا بَيْتُ الْوَحْدَةِ وَاَنَا بَيْتُ التُّرَابِ، وَاَنَا بَيْتُ الدُّوْدِ، وَاِذَا دُفِنَ الْعَبْدُ الْمُؤْمِنُ قَالَ لَهُ الْقَبْرُ مَرْحَبًا وَّ اَهْلًا، اَمَا اِنْ كُنْتَ لَاَحَبَّ مَنْ يَّمْشِیْ عَلٰى ظَهْرِیْ اِلَیَّ فَاِذْ وُلِّيْتُكَ الْيَوْمَ وَصِرْتَ اِلَیَّ، فَسَتَرٰى صَنِيْعِیْ بِكَ، قَالَ فَيَتَّسِعُ لَهٗ مَدَّ

بَصَرِهٖ وَيُفْتَحُ لَهٗ بَابٌ اِلَى الْجَنَّةِ، وَاِذَا دُفِنَ الْعَبْدُ الْفَاجِرُ اَوِ الْكَافِرُ، قَالَ لَهُ الْقَبْرُ لَا مَرْحَبًا وَّلَا اَهْلًا، اَمَا اِنْ كُنْتَ لَاَ بْغَضَ مَنْ يَّمْشِيْ عَلٰى ظَهْرِيْ اِلَيَّ، فَاِذْ وُلِّيْتُكَ الْيَوْمَ وَصِرْتَ اِلَيَّ فَسَتَرٰى صَنِيْعِيْ بِكَ، قَالَ فَيَلْتَئِمُ عَلَيْهِ حَتّٰى تَخْتَلِفَ اَضْلَاعُهٗ، قَالَ وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاَصَابِعِهٖ فَاَدْخَلَ بَعْضَهَا فِيْ جَوْفِ بَعْضٍ، قَالَ وَيُقَيَّضُ لَهٗ سَبْعُوْنَ تِنِّيْنًا لَوْ اَنَّ وَاحِدًا مِّنْهَا نَفَخَ فِي الْاَرْضِ، مَا اَنْبَتَتْ شَيْئًا مَّا بَقِيَتِ الدُّنْيَا، فَيَنْهَسْنَهٗ وَيَخْدِشْنَهٗ حَتّٰى يُفْضٰى بِهٖ اِلَى الْحِسَابِ، قَالَ، وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّمَا الْقَبْرُ رَوْضَةٌ مِّنْ رِّيَاضِ الْجَنَّةِ اَوْ حُفْرَةٌ مِّنْ حُفَرِ النَّارِ.

(ترمذی)

374. अन अबी सईदिन काला ख़रजन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लिसलातिन फ-रअन्नासा कअन्नहुम यकतशिरुना, काला अमा इन्नकुम लौ अकसरतुम ज़िकरा हाज़िमिल्लज़्ज़ाति ल-शग़लकुम अ़म्मा अरा, अल-मौति, फ-अकसिरु ज़िकरा हाज़िमिल्लज़्ज़ातिल मौति, फ-इन्नहू लम याति अललकब्रि यौमुन इल्ला तकल्लमा, फ-यकूलु अना बैतुल ग़ुरबति व अना बैतुल वहदति, व अना बैतुत्तुराबि, व अना बैतुद्दूदि, वइज़ा दुफ़िनल अब्दुलमूमिनु काला लहुल कब्रु मरहबवं व अहलन, अमा इन कुन्ता ला हब्बा मय्यमशी अला ज़हरी इलय्या फइज़ वुल्लैतुकल यौमा व सिरता इलय्या, फ-स-तरा सनीई, बिका, काला फ-यत्तसिउ लहू मद्दा बसरिही व युफतहु लहू बाबुन इललजन्नति वइज़ा दुफ़िनल अब्दुल फाजिरु अविलकाफिरु, काला लहुलकब्रु ला मरहबवं वला अहलन, अमा इन कुन्ता ल-अबग़ज़ा मय्यमशी अला ज़हरी इलय्या, फ-इज़ वुल्लैतुकल यौमा व सिरता इलय्या फ-स-तरा सनीई बिका, काला फ-यलतईमु अलैहि हत्ता तख़्तलिफा अज़लाउहू, काला व काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बिअसाबिईही फ-अदख़ला बअज़हा फी जौफ़ि बअज़िन, काला व युकय्यज़ु लहू सबऊना तिन्नीनन लौ अन्ना वाहिदम मिनहा नफख़ा फ़िल अर्ज़ि, मा अम्बतत शैअन मा बकियतिद्दुनिया, फ-यनहसनहू व यख़दिशनहू हत्ता युफज़ा बिही इललहिसाबि, काला, व काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नमल कब्रु रौज़तुम मिन रियाज़िल जन्नति औ हुफरतुम मिन हुफरिन्नारि। (तिर्मिज़ी)

अनुवादः– हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिये मस्जिद में तशरीफ़ लाये, आप ने देखा कि कुछ लोग खिलखिला कर हंस रहे हैं, आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, अगर तुम लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली मौत को ज़्यादा याद करते तो वह तुम्हें हंसने से रोक देती, मौत को बहुत ज़्यादा याद करो जो तमाम लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली है और क़ब्र हर दिन यह कहती है कि मैं मुसाफ़िरत का घर हूँ, मैं तनहाई की कोठरी हूँ, मिट्टी का घर हूँ, और जब कोई मोमिन बन्दा क़ब्र में दफ़न किया जाता है तो क़ब्र उस का इस्तिक़बाल करती है कहती है कि तू मेरी पीठ पर चलने वालों में मुझे सब से ज़्यादा महबूब था, तो आज तू मेरी ज़िम्मेदारी में दे दिया गया है तो तू देखेगा कि तेरे साथ कितना अच्छा सुलूक करती हूँ, हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि उस मोमिन बन्दा के लिये वह क़ब्र इतनी कुशादा हो जाती है जहाँ तक उस की निगाह पहुंचे और उस के लिये जन्नत की तरफ़ एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है और जब कोई बदकार या काफ़िर बन्दा दफ़न किया जाता है तो क़ब्र उस का इस्तिक़बाल (स्वागत) नहीं करती कहती है तू मेरे नज़दीक मेरी पीठ पर चलने वालों में सब से ज़्यादा नापसन्दीदा आदमी था अब जबकि तुझे मेरे हवाले कर दिया गया है और मेरे पास आ गया है तो तू देखोगा कि मैं तेरे साथ कितना बुरा सुलूक करती हूँ, हुज़ूर ने फ़रमाया कि फिर क़ब्र उस के लिये भिंचेगी, और तंग होगी यहाँ तककि उस की पस्लियाँ एक दूसरे में घुस जाएँगी, यह फ़रमाते हुये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों में मिलाया, उस के बाद फ़रमाया, उस पर 70 अज़दहे सवार कर दिए जाएँगे जिन में से हर एक इतना ज़हरीला होगा कि ज़मीन पर अगर वह फूंक मारे तो उस के ज़हर के असर से हमेशा के लिये ज़मीन कुछ भी पैदा करने के क़ाबिल न रह जाएगी। फिर यह सब अज़दहे उस को डसेंगे और नोचेंगे, ऐसा ही उस के साथ होता रहेगा, यहाँ तककि हिसाब का दिन आ जाएगा और

वह ख़ुदा की अदालत में हिसाब देने के लिये पेश हो जाएगा, उस के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ब्र आदमी के लिये जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ बनती है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा।

जब कोई शख़्स अपनी हद तक दुनिया में बुराईयों से लड़ता और आख़िरत की तैयारी करता हुआ मरता है तो इस बीच वाली ज़िन्दगी में जिसे क़ब्र कहा जाता है उस के साथ अल्लाह मेहरबानी का सुलूक करता है और वह ख़ुशी महसूस करता है, और जो शख़्स ज़िन्दगी भर बुरे काम करता रहा और बग़ैर तौबा मर गया तो उस के साथ कुछ इस तरह का मुआमला होगा जैसा कि अदालत में पेश होने से पहले हवालात में होता है, हदीस के आख़िरी टुकड़े का मतलब यह है कि आदमी अगर चाहे तो अपने अमल से क़ब्र वाली ज़िन्दगी को आराम व सुकून की ज़िन्दगी बनाए या फिर बदकारी की हालत में यह ज़िन्दगी गुज़ारे और फिर क़ब्र के अज़ाब से दोचार हो।

(٣٧٥) عَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ فَزُوْرُوْهَا. (مسلم)

375. अन बुरैदता काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कुन्तु नहैतुकुम अन ज़ियारतिल कुबूरि फ़-ज़ूरूहा।

(मुस्लिम)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मैंने पहले तुम को क़ब्रस्तान आने से रोक दिया था (ताकि तौहीद का अक़ीदा पूरी तरह दिल में जम जाए) तो अब तुम जम जाओ। मुस्लिम की दूसरी हदीस में है कि "अब अगर तुम चाहो तो जाओ, क्योंकि क़ब्रें आख़िरत की यादें ताज़ा करती हैं।"

(٣٧٦) عَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَلِّمُهُمْ إِذَا خَرَجُوْا إِلَى الْمَقَابِرِ أَنْ يَّقُوْلَ قَائِلُهُمْ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ، وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ، أَسْأَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ. (مسلم)

376. अन बुरैदता काला कानन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लमा युअल्लिमुहुम इज़ा ख़रजू इललमक़ाबिरि अय्यकूला क़ाईलुहुम, अस्सलामुअलैकुम अहलद्दियारि मिनलमूनिनीना वल मुस्लिमीना, व इन्ना इनशाअल्लाहु बिकुम लाहिकूना, असअलुल्लाहा लना व लकुमुल आफ़ियता। (मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत बुरीदा (रज़ि०) कहते हैं कि जो लोग क़ब्रस्तान जाते हूज़ूर (सल्ल०) उन को बताते कि वहाँ पहुंचकर यह कहना, अस्सलामुअलैकुम........... आख़िर तक, जिस का अनुवाद यह है) सलामती हो तुम पर ऐ इस बस्ती के अताअतगुज़ार मोमिनो! हम भी इनशाअल्लाह तुम से आ मिलने वाले हैं, हम अपने और तुम्हारे लिये अल्लाह के अज़ाब और गुस्से से बचने की दुआ करते हैं।

(٣٧٧) عَنْ مُعَاذِبْنِ جَبَلٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا بَعَثَ بِهٖ اِلَى الْيَمِيْنِ، قَالَ اِيَّاكَ وَالتَّنَعُّمَ، فَاِنَّ عِبَادَ اللّٰهِ لَيْسُوْا بِالْمُتَنَعِّمِيْنَ. (مشكوة)

377. *अन मुआज़िब्ने जबलिन अन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लम्मा बअसा बिही इललयमीनि, काला इय्याका वत्तनअुमा, फ-इन्ना इबादल्लाहि लैसू बिलमुतनअि़मीना।*

(मिश्कात)

अनुवादः– हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि०) का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उन को यमन का क़ाज़ी या गवर्नर बना कर भेजा तो फ़रमाया ऐ मुआज़! अपने को ऐशपरस्ती से बचाना इस लिये कि अल्लाह के बन्दे ऐशपरस्त नहीं होते।

मतलब यह कि तुम एक बड़े उहदे पर जा रहे हो, वहाँ ज़िन्दगी की लज़्ज़तों से फ़ायदा उठाने और हाथ रंगने का ख़ूब मौक़ा मिल सकता है, लेकिन तुम दुनिया की मुहब्बत में न फंस जाना और दुनिया को चाहने वाले हाकिमों की तरह अपने अन्दर ज़ेहनियत न पालना क्योंकि यह ख़ुदा की बन्दगी से मेल नहीं खाती।

(٣٧٨) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُوْشِكُ الْاُمَمُ اَنْ تَدَاعٰى عَلَيْكُمْ كَمَا تَدَاعَى الْاَكَلَةُ اِلٰى قَصْعَتِهَا، فَقَالَ قَائِلٌ وَّمِنْ قِلَّةٍ نَّحْنُ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ بَلْ اَنْتُمْ يَوْمَئِذٍ كَثِيْرٌ

وَلٰكِنَّكُمْ غُثَاءٌ كَغُثَاءِ السَّيْلِ وَلَيَنْزِعَنَّ اللّٰهُ مِنْ صُدُوْرِ عَدُوِّكُمُ الْمَهَابَةَ مِنْكُمْ، وَلَيَقْذِفَنَّ فِيْ قُلُوْبِكُمُ الْوَهْنَ، قَالَ قَائِلٌ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا الْوَهْنُ؟ قَالَ حُبُّ الدُّنْيَا وَكَرَاهِيَةُ الْمَوْتِ. (ابوداؤد۔ثوبانؓ)

378. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यूशिकुल उममु अन तदाआ अलैकुम कमा तदाअल आकिलतु इला कसअतिहा, फ-काला कायलुवं वमिन किल्लतिन नहनु यौमईज़िन? काला बल अनतुम यौमईज़िन कसीरुवं वला किन्नकुम ग़ुसाउन क-ग़ुसाइस्सैलि, व-लयंज़िअन्नल्लाहु मिन सुदूरि अदुव्विकुमुल महाबता मिनकुम, व-ल-यकज़िफ़न्ना फ़ी कुलूबिकुमुल वहना, काला कायलुयं या-रसूलल्लाहि व मलवह्नु? काला हुब्बुद्दुनिया व कराहियतुल मौति।* (अबूदाऊद, सौबान रज़ि॰)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को मुख़ातिब कर के फ़रमाया कि मेरी उम्मत पर वह वक़्त आने वाला है जब दूसरी उम्मतें उस पर इस तरह टूट पड़ेंगी जिस तरह खाने वाले लोग दसतरख़्वान पर टूटते हैं। तो किसी कहने वाले ने कहा कि जिस ज़माने का हाल आप बयान कर रहे हैं उस ज़माने में क्या हम मुसलमान इतनी कम तादाद में होंगे कि हम को निगल लेने के लिये क़ौमें एक होकर टूट पड़ेंगी? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया नहीं, उस ज़माने में तुम्हारी तादाद (संख्या) कम न होगी, बल्कि तुम बहुत बड़ी तादाद में होंगे लेकिन तुम सैलाब के झाग की तरह हो जाओगे और तुम्हारे दुश्मनों के सीने से तुम्हारा डर निकल जाएगा और तुम्हारे दिलों में कमहिम्मती घर कर लेगी। तो एक आदमी ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! यह कमहिम्मती किस वजह से आ जाएगी? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि उस की वजह यह होगी कि तुम (आख़िरत से मुहब्बत करने के बजाये दुनिया से मुहब्बत करने लगोगे, और (ख़ुदा की राह में जान देने की आरज़ू के बजाये) मौत से भागने और नफ़रत करने लगोगे।

(٣٧٩) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اَحَبَّ دُنْيَاهُ اَضَرَّ بِاٰخِرَتِهٖ، وَمَنْ اَحَبَّ اٰخِرَتَهٗ اَضَرَّ بِدُنْيَاهُ فَاٰثِرُوْا مَا يَبْقٰى عَلٰى مَا يَفْنٰى. (مشکوٰۃ۔ابوموسیٰؓ)

379. क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन अहब्बा दुनियाहु अज़र्रा बिआख़िरतिही, व मन अहब्बा आख़िरतहू अज़र्रा बिदुनियाहु फ़-आसिरू मा यबक़ा अला मा यफ़्ना।

(मिश्कात, अबू मूसा रज़ि०)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स दुनिया से मुहब्बत करेगा वह अपनी आख़िरत को तबाह करेगा, और जिस शख़्स को अपनी आख़िरत महबूब होगी तो वह अपनी दुनिया को नुक़सान पहुंचाएगा। तो ऐ लोगो! तुम बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी को फ़ना हो जाने वाली ज़िन्दगी पर तरजीह दो।"

यानी दुनिया व आख़िरत में से एक को चुनना ज़रूरी है या तो दुनिया को अपना नसबुल-ऐन (मक़सद) बनाओ या आख़िरत को। अगर दुनिया को अपना नसबुल-ऐन बनाते हो तो आख़िरत की राहतें और खुशियाँ न पा सकोगे, और आख़िरत को अपना नसबुल-ऐन बनाते हो तो उस के नतीजा में हो सकता है कि तुम्हारी दुनिया तबाह हो जाये लेकिन उस के बदले में आख़िरत का इनआम मिलेगा जो हमेशा बाक़ी रहने वाला है, जो चीज़ आख़िरत की राह पर चलने से तबाह होगी वह ख़त्म होने वाली है और यह ज़िन्दगी भी ख़त्म होने वाली है इस ख़त्म होने वाली चीज़ की कुर्बानी देकर अगर हमेशा रहने वाला इनआम मिले तो घाटे का सौदा नहीं है, सरासर नफ़ा का सौदा है।

(٣٨٠) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهٗ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ
الْمَوْتِ وَالْعَاجِزُ مَنْ اَتْبَعَ نَفْسَهٗ هَوَاهَا وَتَمَنّٰى عَلَى اللّٰهِ. (ترمذی۔شداد بن اوسؓ)

380. क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल-कय्यिसु मन दाना नफ़्सहू व अमिला लिमा बअदल मौति वलआजिज़ु मन अतबआ नफ़्सहू हवाहा व तमन्ना अलल्लाहि।

(तिर्मिज़ी, शद्दाद बिन औस रज़ि०)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि होशियार हक़ीक़त में वह है जिस ने अपने नफ़्स को क़ाबू में किया और मौत के बाद आने वाली ज़िन्दगी संवारने में लग

गया, और बेवकूफ़ वह है जिसने अपने आप को नफ़्स की नाजाइज़ ख़्वाहिशों के पीछे लगाया और अल्लाह से ग़लत उम्मीद की।

यानी हक़ को छोड़ कर अपने दिल का कहा मानता है और उम्मीद यह रखता है कि अल्लाह उसे जन्नत दे देगा। ऐसी ही ग़लत आरज़ुओं में कुरआन के ज़माने के यहूदी और नसरानी पड़े हुये थे और आज हमारे बहुत से मुसलमान भाई भी ऐसी ही ग़लत तमन्नाओं पर ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं।

(۳۸۱) قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَعْذَرَ اللّٰهُ اِلَى امْرِیءٍ اَخَّرَ اَجَلَهٗ حَتّٰى بَلَغَ سِتِّيْنَ سَنَةً. (بخاری،ابوہریرہؓ)

381. *कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अअज़रल्लाहु इलमरिइन अख़्ख़रा अजलहू हत्ता बलग़ा सित्तीना सनतन।*

(बुख़ारी, अबू हुरैरा रज़ि०)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह आदमी जिस को अल्लाह ने लम्बी ज़िन्दगी दी यहाँ तककि वह 60 वर्ष की उम्र तक पहुंच गया (और फिर भी वह नेक न बन सका) तो अल्लाह के पास उस शख़्स के पास कुछ कहने को बाक़ी न रहेगा।

(۳۸۲) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِسْتَحْيُوْ مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَاءِ، قُلْنَا اِنَّا نَسْتَحْيِيْ مِنَ اللّٰهِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، قَالَ لَيْسَ ذٰلِكَ، وَلٰكِنَّ الْاِسْتِحْيَاءَ مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَاءِ اَنْ تَحْفَظَ الرَّاْسَ وَمَا وَعٰى، وَالْبَطْنَ وَمَا حَوٰى وَتَذْكُرَ الْمَوْتَ وَالْبِلٰى وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ تَرَكَ زِيْنَةَ الدُّنْيَا وَاٰثَرَ الْاٰخِرَةَ عَلَى الْاُوْلٰى، فَمَنْ فَعَلَ ذٰلِكَ فَقَدِ اسْتَحْيَا مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَاءِ. (ترمذی)

382. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इस्तहयू मिनल्लाहि हक़्क़लहयाई, कुलना इन्ना नस्तहयी मिनल्लाहि या रसूलल्लाहि वलहमदुलिल्लाहि, काला लैसा ज़ालिका, वलाकिन्नल इस्तिहयाआ मिनल्लाहि हक़्क़ल हयाई अन तहफ़ज़र्रासा वमा वआ, वलबत्ना वमा हवा, वतज़कुरल मौता वलबिला वमन अरादल आख़िरता तरका ज़ीनतद्दुनिया व आसरल आख़िरता अललऊला,*

फमन फअला ज़ालिका फ-कदिसतहया मिनल्लाहि हक़्क़लहयाई।

(तिर्मिज़ी)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को ख़िताब कर के फ़रमाया कि अल्लाह से पूरी तरह शर्माओ, हम ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! ख़ुदा का शुक्र है कि हम अल्लाह से शर्माते हैं। आप ने फ़रमाया कि अल्लाह से शर्माने का इतना ही मतलब नहीं है, बल्कि अल्लाह से पूरी तरह शर्माने का मतलब यह है कि तू अपने दिमाग़ और दिमाग़ में आने वाले ख़यालात की निगरानी करता रहे और पेट के अन्दर जाने वाली गिज़ा की देख भाल करता रहे और मौत के नतीजे में सड़ गल जाने और फ़ना हो जाने को याद रखे। (उस के बाद आप ने फ़रमाया) और जो शख़्स आख़िरत का चाहने वाला होता है वह दुनिया की ज़ीनत व सिंगार को छोड़ देता है और हर मौक़े पर आख़िरत को दुनिया पर तरजीह (महानता) देता है। तो जो शख़्स यह सब करता है वही हक़ीक़त में अल्लाह से शर्माता है।

(٣٨٣) عَنْ اَبِیْ اَیُّوْبَ الْاَنْصَارِیِّ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ اِلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَقَالَ عِظْنِیْ وَاَوْجِزْ، فَقَالَ اِذَا قُمْتَ فِیْ صَلٰوتِکَ فَصَلِّ صَلٰوۃَ مُوَدِّعٍ وَّلَا تَکَلَّمْ بِکَلَامٍ تُعْذِرُ مِنْهُ غَدًا، وَاَجْمِعِ الْیَاسَ مِمَّا فِیْ اَیْدِی النَّاسِ. (مشکوۃ)

383. *अन अबी अय्यूबल अंसारिय्यि काला जाआ रजुलुन इलन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ-काला इज़्नी व औजिज़, फ-काला इज़ा कुम्ता फी सलातिका फ-सल्लि सलाता मुवद्दिइनवं वला तकल्लमा बिकलामिन तुअज़िरु मिनहु ग़दन, व अजमिइल यासा मिम्मा फी ऐदीन्नासा।* (मिश्कात)

अनुवादः– हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और उसने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे बहुत ही थोड़ी और जामेअ (मुकम्मल) नसीहत फ़रमाईये, आप ने फ़रमाया कि जब तुम अपनी नमाज़ पढ़ने के लिये खड़े हो तो उस शख़्स की तरह नमाज़ पढ़ो जो दुनिया को छोड़ कर जाने वाला है, और अपनी ज़ुबान से ऐसी बात न निकालो कि अगर क़यामत में उस

का हिसाब हो तो तुम्हारे पास कुछ कहने के लिये न रह जाए और लोगों के पास जो कुछ माल व असबाब है उस से तुम बिल्कुल बेनियाज़ हो जाओ।

जो शख़्स इस दुनिया से जा रहा हो और उसे यक़ीन हो गया हो कि अब मैं ज़िन्दा नहीं रह सकता, ऐसा शख़्स बहुत ही ख़ुशूअ से नमाज़ पढ़ेगा, उस का ध्यान पूरी तरह से ख़ुदा की तरफ़ होगा और नमाज़ पढ़ते हुये दुनिया की वादियों में उस का दिल भटकता नहीं फिरेगा।

वह बात जो आदमी ज़ुबान से निकालता है अगर वह हक़ के ख़िलाफ़ है और आदमी ने अपनी इस दुनिया की ज़िन्दगी में उस से माफ़ी नहीं माँगी है तो ज़ाहिर है कि हिसाब के वक़्त उस के पास कुछ कहने और मजबूरी पेश करने के लिये क्या बाक़ी रह जाएगा। और आख़िरी शब्द का मतलब यह है कि लोगों के माल व असबाब और दौलत की ज़्यादती पर रश्क न करो क्योंकि यह ख़त्म होने वाली है। जब तक दुनिया से आदमी के अन्दर बेनियाज़ी नहीं पैदा होती आख़िरत की बुलंदियों तक उस की निगाह नहीं जा सकती।

(٣٨٤) عَنْ اَبِىْ بَرْزَةَ الْاَسْلَمِيِّ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَزُوْلُ قَدَمَا عَبْدٍ حَتّٰى يُسْئَلَ عَنْ عُمْرِهٖ فِيْمَا اَفْنَاهُ وَعَنْ عِلْمِهٖ فِيْمَا فَعَلَ، وَعَنْ مَّالِهٖ مِنْ اَيْنَ اكْتَسَبَهٗ وَفِيْمَا اَنْفَقَهٗ وَعَنْ جِسْمِهٖ فِيْمَا اَبْلَاهُ. (ترمذی)

384. *अन अबी बरज़तल असलमिय्यि क़ाला, क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ला तज़ूलु क़दमा अबदिन हत्ता युसअला अन उमरिही फ़ीमा अफ़नाहु व अन इल्मिही फ़ीमा फ़अला, व अन मालिही मिन ऐनकतसबहू व फ़ीमा अनफ़क़हू व अन जिस्मिही फ़ीमा अबलाहु।* (तिर्मिज़ी)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह की अदालत से आदमी नहीं हट सकता जब तक उस से पाँच बातों के बारे में हिसाब नहीं ले लिया जाता। उस से पूछा जाएगा कि उम्र किन चीज़ों में गुज़ारी? दीन का इल्म हासिल किया तो उस पर कहाँ तक अमल किया? माल कहाँ से कमाया? और कहाँ ख़र्च किया? जिस्म

को किस काम में घुलाया?

(٣٨٥) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ خَافَ اَدْلَجَ وَمَنْ اَدْلَجَ بَلَغَ الْمَنْزِلَ، اَلَا اِنَّ سِلْعَةَ اللّٰهِ غَالِيَةٌ، اَلَا اِنَّ سِلْعَةَ اللّٰهِ الْجَنَّةُ. (ترمذی، ابوہریرہؓ)

385. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन ख़ाफ़ा अदलजा व मन अदलजा बलग़ल मंज़िला अला इन्ना सिलअतल्लाहि ग़ालियतुन अला इन्ना सिलअतल्लाहिल जन्नता।*

(तिर्मिज़ी, अबू हुरैरा रज़ि)

अनुवादः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिस मुसाफ़िर को डर होता है कि वह रास्ता ही में रह जाएगा और वह वक़्त पर मंज़िल पर न पहुंच सकेगा, वह रात को सोता नहीं बल्कि अपना सफ़र रात के शुरू ही में शुरू कर देता है, और जो ऐसा करता है वह ख़ैरियत के साथ वक़्त पर मंज़िल तक पहुंच जाता है। सुन लो! अल्लाह का माल भारी क़ीमत में मिलेगा। सुन लो! अल्लाह का माल जन्नत है।"

अपनी असल हक़ीक़त के लिहाज़ से इन्सान मुसाफ़िर है और आख़िरत उस का असली वतन है, यहाँ वह कमाई करने के लिये आया है, अब जिन्हें अपना असली वतन याद है वह अगर चाहते हैं कि ख़ैरियत से अपने वतन पहुंचे और रास्ता के ख़तरों से बचकर पहुंचें तो उन्हें चाहिये कि ग़फ़लत से काम न लें, जल्द अपना सफ़र शुरू कर दें, वर्ना अगर सोते रहे तो पछताएँगे। फिर जिस ने यह तैय किया हो कि उसे अल्लाह की खुशनूदी और इनआम का घर जन्नत हासिल करना है तो उसे जान लेना चाहिये कि वह गिरा पड़ा माल नहीं है कि ताजिर (व्यापरी) औने पौने दे और कोई ले ले, खुदा का माल हासिल करने के लिये बड़ी क़ीमत देनी पड़ेगी, बड़ी आज़माईशें आएँगी। अपने वक़्त को माल को, जिस्म व जान को उस के हासिल करने के लिये क़ुर्बान करना होगा, तब वह चीज़ मिलेगी जिस को पाकर आदमी अपनी हर तकलीफ़ भूल जाएगा।

कुरआन की तिलावत

(٣٨٦) عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ
يُؤْتٰى يَوْمَ الْقِيٰمَةِ بِالْقُرْاٰنِ وَاَهْلِهِ الَّذِيْنَ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ بِهٖ فِى الدُّنْيَا تَقْدُمُهٗ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ
وَاٰلُ عِمْرَانَ تُحَاجَّانِ عَنْ صَاحِبِهِمَا. (مسلم)

386. *अनिन्नवासिब्ने समआना काला समिअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यकूलु यूता यौमल क़ियामति बिलकुरआनि व अहलिहिल्लज़ीना कानू यअमलूना बिही फिद्दुनिया तक़दुमुहू सूरतुल बक़रति व आलु इमराना तुहाज्जानि अन साहिबिहिमा।* (मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत नवास बिन समआन (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि क़यामत के दिन कुरआन और कुरआन के मानने वाले जो उस पर अमल करते थे ख़ुदा के पास लाए जाएँगे और सूरह बक़रह और सूरह आल इमरान पूरे कुरआन की नुमाइन्दगी करती हुई अपने अमल करने वाले के लिए अल्लाह से सिफ़ारिश करेंगी कि यह शख़्स आप की रहमत व मग़फ़िरत का हक़दार है इस लिये इस को रहमत से नवाज़ा जाये।

(٣٨٧) عَنْ عُبَيْدَةَ الْمُلَيْكِيِّ وَكَانَتْ لَهٗ صُحْبَةٌ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ يَا اَهْلَ الْقُرْاٰنِ لَا تَتَوَسَّدُوا الْقُرْاٰنَ، وَاتْلُوْهُ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ مِنْ اٰنَاءِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ،
وَاَفْشُوْهُ وَتَغَنَّوْهُ وَتَدَبَّرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ، وَلَا تَعْجَلُوْا ثَوَابَهٗ فَاِنَّ لَهٗ ثَوَابًا.
(مشكوٰة)

387. *अन उबैदतल मुलैकिय्यि व कानत लहू सुहबतुन, काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा या अहललकुरआनि ला ततवस्सदूल कुरआना, वतलूहु हक़्क़ा तिलावतिही मिन आनाइल्लैलि वन्नहारि, व अफशूहु व तग़न्नौहु व तदब्बरू मा फीहि लअल्लकुम तुफलिहूना, वला तअज्जलू सवाबहू फ-इन्ना लहू सवाबन।* (मिश्कात)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ

कुरआन के मानने वालो! कुरआन को तकिया न बनाना और रात दिन के वक़्तों में उस को ठीक तरीक़े से पढ़ना, और उस के पढ़ने पढ़ाने को रिवाज देना, और उस के शब्दों को सही तरीक़ा से पढ़ना और जो कुछ कुरआन में बयान हुआ है हिदायत हासिल करने की ग़र्ज़ से उस पर ग़ौर व फ़िक्र करना ताकि तुम कामयाब हो। और उस के ज़रिए दुनियावी नतीजे की ख़्वाहिश न करना, बल्कि खुदा को खुश करने के लिये उस को पढ़ना।

कुरआन को तकिया न बनाना, यानी उस से ग़ाफ़िल न होना, और आख़िरी लफ़्ज़ का मतलब यह है कि कुरआन का इल्म हासिल कर के उस को दुनियावी शान व शौकत और माल व दौलत हासिल करने का ज़रिया न बनाना, जैसा कि एक हदीस में ख़बर दी गई है कि कुछ लोग कुरआन का इल्म हासिल कर के उसे दुनिया की दौलत के हुसूल के लिए ज़ीना बनाएँगे।

(٣٨٨) عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ قَالَ دَخَلْتُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ ...... قُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَوْصِنِیْ، قَالَ اُوْصِیْکَ بِتَقْوَی اللّٰهِ فَاِنَّهٗ اَزْیَنُ لِاَمْرِکَ کُلِّهٖ، قُلْتُ زِدْنِیْ، قَالَ عَلَیْکَ بِتِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ وَذِکْرِ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ، فَاِنَّهٗ ذِکْرٌ لَّکَ فِی السَّمَاءِ وَنُوْرٌ لَّکَ فِی الْاَرْضِ. (مشکوۃ)

388. *अन अबी ज़र्रिन काला दख़ालतु अला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कुल्तु या रसूलल्लाहि औसीनी, काला ऊसीका बितक़वल्लाहि फ-इन्नहू अज़्यनु लिअमरिका कुल्लिही, कुल्तु ज़िदनी काला अलैका बितिलावतिल क़ुरआनि व ज़िक्रिल्लाहि अज़्ज़ा व जल्ला, फ-इन्नहू ज़िक्रुल्लका फिस्समाई व नुरुल्लका फिलअर्ज़ि।*

(मिश्कात)

अनुवादः- हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैंने कहा कुछ वसियत फ़रमाएँगे, आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि अल्लाह का तक़्वा अपनाओ, यह चीज़ तुम्हारे पूरे दीन और तमाम मुआमलात को ठीक हालत में रखने वाली है। मैंने कहा कुछ और फ़रमाएँ, आप (सल्ल॰) ने कहा अपने को कुरआन

की तिलावत और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के ज़िक्र का पाबन्द बनालो तो खुदा तुम्हें आसमान पर याद करेगा और ज़िन्दगी के अंधेरों में तुम्हारे लिये रौशनी का काम देगा।

"अल्लाह याद करेगा" इस का मतलब यह है कि खुदा तुम्हें नहीं भूलेगा तुम्हें अपनी हिफ़ाज़त में रखेगा। अल्लाह की याद और कुरआन की तिलावत से मोमिन को रौशनी मिलती है ज़िन्दगी के अंधेरों में मोमिन सही राह पा लेता है।

(۳۸۹) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ هٰذِهِ الْقُلُوْبَ تَصْدَءُ كَمَا يَصْدَءُ الْحَدِيْدُ اِذَا اَصَابَهُ الْمَاءُ، قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا جَلَاؤُهَا؟ قَالَ كَثْرَةُ ذِكْرِ الْمَوْتِ وَتِلَاوَةُ الْقُرْاٰنِ. (مشكوة ـ ابن عمرؓ)

389. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्ना हाज़िहिल कुलूबा तसदउ कमा यसदउल हदीदु इज़ा असाबहुल माउ, कीला या रसूलल्लाहि वमा जलउहा? काला कसरतु ज़िक्रिल-मौति व तिलावतुल कुरआनि।* (मिश्कात, इब्ने उमर)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दिल को भी ज़ंग लगता है जैसा कि लोहे को पानी से ज़ंग लगता है। पूछा गया कि दिलों के ज़ंग को दूर करने वाली क्या चीज़ है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि दिल का ज़ंग इस तरह दूर होता है कि आदमी मौत को बहुत याद करे, और दूसरे यह कि कुरआन की तिलावत करे।

"मौत को याद करने" का मतलब यह है कि आदमी यह सोचे कि ज़िन्दगी की मुहलत बस एक ही मुहलत है, दोबारा अमल करने के लिए मुहलत न मिलेगी। और तिलावत के मतलब हैं कुरआन के शब्दों को सही तरीक़े से पढ़ना और उस में जो कुछ बयान हुआ है उसे समझना और उस पर अमल करना। कुरआन मजीद और अहादीस में जहाँ भी इस शब्द का पूरा मफ़हूम बयान हुआ है यही बयान हुआ है बल्कि एक और मफ़हूम में आता है यानी यह कि कुरआन की तबलीग़ (प्रचार) करे उसे दूसरों तक पहुंचाये।

नवाफ़िल और तहज्जुद

(٣٩٠) عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ اللّٰہُ...... وَمَنْ تَقَرَّبَ مِنِّیْ شِبْرًا، تَقَرَّبْتُ مِنْہُ ذِرَاعًا، وَمَنْ تَقَرَّبَ مِنِّیْ ذِرَاعًا، تَقَرَّبْتُ مِنْہُ بَاعًا، وَمَنْ اَتَانِیْ یَمْشِیْ اَتَیْتُہٗ ھَرْوَلَۃً. (مسلم)

390. *अन अबी ज़र्रिन काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यक़ूलुल्लाहु व मन तक़र्रबा मिन्नी शिबरन, तक़र्रबतु मिन्हु ज़िराअन, व मन तक़र्रबा मिन्नी ज़िराअन, तक़र्रबतु मिनहु बाअन, व मन अतानी यमशी अतैतुहू हरवलतन।* (मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि॰ ने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है जो शख़्स मुझ से बालिश्त भर क़रीब होता है मैं उस से एक हाथ क़रीब होता हूँ और जो मेरी तरफ़ एक हाथ बढ़ता है मैं उस की तरफ़ दो हाथ बढ़ता हूँ, और जो मेरे पास पैदल चलकर आता है मैं उस की तरफ़ दौड़ कर आता हूँ।

मतलब यह है कि जो शख़्स अपने इरादा व इख़्तियार से ख़ुदा की राह पर चलने का इरादा कर लेता है तो ख़ुदा का उस के साथ मुआमला यह होता है कि उस के उस सफ़र को आसान कर देता है, बन्दा उस की तरफ़ लपकता है तो चूँकि उस के अन्दर कमज़ोरी है इस लिये अल्लाह तआला उस पर शफ़क़त करता है और बढ़कर उस को अपने से क़रीब कर लेता है, जैसे कि बच्चा अपने बाप की तरफ़ लपकता है लेकिन अपनी कमज़ोरी की वजह से नहीं पहुंच पाता तो बाप उस की तरफ़ दौड़ कर आता है और उसे गोद में उठा लेता है और अपने सीना में चिमटा लेता है।

(٣٩١) عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ...... وَمَا تَقَرَّبَ اِلَیَّ عَبْدِیْ بِشَیْءٍ اَحَبَّ اِلَیَّ مِمَّا افْتَرَضْتُ عَلَیْہِ، وَمَا یَزَالُ عَبْدِیْ یَتَقَرَّبُ اِلَیَّ بِالنَّوَافِلِ حَتّٰی اَحْبَبْتُہٗ فَاِذَا اَحْبَبْتُہٗ کُنْتُ سَمْعَہُ الَّذِیْ یَسْمَعُ بِہٖ وَبَصَرَہُ الَّذِیْ یُبْصِرُ بِہٖ، وَیَدَہُ الَّتِیْ یَبْطِشُ بِھَا، وَرِجْلَہُ الَّتِیْ یَمْشِیْ بِھَا. (بخاری)

391. *अन अबी हुरैरता काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा वमा तक़र्रबा इलय्या अब्दी बिशैइन अहब्बा इलय्या*

मिम्मफतरजतु अलैहि, वमा यज़ालु अब्दी यतक़र्रबु इलय्या बिन्नवाफ़िलि हत्ता अहबबतुहू फइज़ा अहबबतुहू कुन्तु समअहुल्लज़ी यसमउ बिही व बसरहुल्लज़ी युबसिरु बिही, वयदहुल्लती यबतिशु बिहा व रिजलहुल्लती यमशी बिहा। (बुख़ारी)

> **अनुवादः-** नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरा बन्दा अपने जिन कर्मों से मेरी नज़दीकी हासिल करता है उन में सब से ज़्यादा महबूब काम वह हैं जिन को मैंने उस के ऊपर फ़र्ज़ किया है और मेरा बन्दा नफ़्लों के ज़रिए बराबर मुझ से क़रीब होता रहता है, यहाँ तककि वह मेरा महबूब बन जाता है और जब मेरा महबूब बन जाता है तो मैं उस का कान बन जाता हूँ जिस से वह सुनता है और उस की आँख बन जाता हूँ जिस से वह देखता है, और मैं उस का हाथ बन जाता हूँ जिस से वह पकड़ता है, और उस का पैर बन जाता हूँ जिस से वह चलता है।

जो शख़्स अल्लाह से नज़दीकी हासिल करना चाहता है वह सब से पहले ख़ुदा के फ़र्ज़ किये हुये हुक्मों (आदेशों) पर अमल करने की फ़िक्र करता है, फिर इतने ही पर बस नहीं करता बल्कि वह ख़ुद बख़ुद अल्लाह की मुहब्बत की ज़्यादती की वजह से नफ़्ल नमाज़ों और नफ़्ली रोज़ों और नफ़्ल सदक़ा (दान) और दूसरे नेकी के काम करता रहता है, यहाँ तककि वह अल्लाह का महबूब बन जाता है जिस के मतलब यह हैं कि उस के जिस्म व जान की सारी कुव्वतों और सलाहियतों को अल्लाह अपनी हिफ़ाज़त व निगरानी में ले लेता है, अब उस की आँख, कान, हाथ पाँव और उस की सारी कुव्वतें अल्लाह को ख़ुश करने में लग जाती हैं और शैतान उस की कुव्वतों का कोई हिस्सा नहीं पाता।

(٣٩٢) عَنْ اُمِّ سَلَمَةَ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِسْتَيْقَظَ لَيْلَةً فَقَالَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ مَاذَا اُنْزِلَ اللَّيْلَةَ مِنَ الْفِتَنِ، مَاذَا اُنْزِلَ مِنَ الْخَزَائِنِ مَنْ يُّوْقِظُ صَوَاحِبَ الْحُجُرَاتِ، يَا رُبَّ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا عَارِيَةٌ فِي الْاٰخِرَةِ. (بخاری)

392. अन उम्मे सलमता अन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इसतैक़ज़ा लैलतन फ़-क़ाला सुबहानल्लाहि माज़ा

उन्ज़िलल लैलता मिनल फ़ितनि माज़ा उन्ज़िला मिनलख़ज़ाईनि मय्यूक़िज़ु सवाहिबल हुजुराति, या रब्बु कासियतिन फ़िद्दुनिया आरियतुन फ़िलआख़िरति। (बुख़ारी)

अनुवादः– उम्मे सलमा फ़रमाती हैं कि एक रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सो कर उठे और फ़रमाया पाक है अल्लाह की ज़ात, यह रात कितने फ़ितनों से भरी हुई है जिन से बचने की फ़िक्र करनी चाहिये और यह रात अपने अन्दर कितने ख़ज़ाने रखती है यानी रहमत के ख़ज़ाने जिन को समेटना चाहिये। इन पर्दा में रहने वालियों को कौन जगाए? बहुत से लोग हैं जिन का ऐब इस दुनिया में छुपा हुआ है और आख़िरत में उन का पर्दा हट जाएगा।

इस हदीस से मालूम हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों को तहज्जुद के लिए उठने पर उभारते थे और उन से कहते थे कि ख़ुदा की रहमत का ख़ज़ाना समेटने की फ़िक्र करो दुनिया में तुम नबी की बीवी कहलाती हो और तुम्हें इस पहलू से ऊँचा मक़ाम हासिल है लेकिन अमल न करोगी तो ख़ुदा के यहाँ यह कुछ काम नहीं आएगा, काम अगर आएगा तो तुम्हारा अमल काम आएगा, नबी की बीवी होना वहाँ काम न आएगा।

(٣٩٣) عَنْ عَلِيٍّ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَرَقَهٗ وَفَاطِمَةَ لَيْلًا فَقَالَ اَلَا تُصَلِّيَانِ. (بخاری،مسلم)

393. *अन अलिय्यिन अन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा तरक़हू व फ़ातिमता लैलन फ़-क़ाला अला तुसल्लियानि?*

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत अली (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रात तहज्जुद के वक़्त हमारे घर तशरीफ़ लाये और मुझ से और फ़ातिमा (रज़ि०) से कहा, क्या तुम दोनों तहज्जुद की नमाज़ नहीं पढ़ते।

इस हदीस का ख़ास सबक़ यह है कि ज़िम्मेदार और बड़े लोगों को चाहिये कि वह अपने मातहत लोगों को तहज्जुद पर उभारें।

(۳۹۴) عَنْ عَبْدِ اللّٰہِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ، قَالَ لِیْ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَا عَبْدَ اللّٰہِ لَا تَکُنْ مِثْلَ فُلَانٍ کَانَ یَقُوْمُ مِنَ اللَّیْلِ فَتَرَکَ قِیَامَ اللَّیْلِ.

(بخاری، مسلم)

394. *अन अब्दिल्लाहिब्ने अमरिब्निल आस काला, काला ली रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा या अब्दल्लाहि ला तकुन मिस्ला फुलानिन काना यकूमु मिनल्लैलि फ़-त-र-क-का कियामल्लैलि।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- अब्दुल्लाह रज़ि॰ (अमर बिन अल-आस के बेटे) कहते हैं कि मुझ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह! तुम उस शख़्स की तरह न हो जाना जो तहज्जुद के लिये उठता था फिर उस ने उठना छोड़ दिया।

(۳۹۵) عَنْ مَسْرُوْقٍ قَالَ سَاَلْتُ عَائِشَۃَ اَیُّ الْعَمَلِ اَحَبُّ اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَتْ اَلدَّائِمُ قُلْتُ فَاَیَّ حِیْنٍ کَانَ یَقُوْمُ مِنَ اللَّیْلِ؟ قَالَتْ کَانَ یَقُوْمُ اِذَا سَمِعَ الصَّارِخَ. (بخاری، مسلم)

395. *अन मसरूकिन काला सअलतु आयशता अय्युल अमलि काना अहब्बा इला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कालत अद्दाईमु कुल्तु फ़-अय्या हीनिन काना यकूमु मिनल्लैलि? कालत काना यकूमु इज़ा समिअस्सारिख़ा।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- मसरूक़ रह॰ (ताबई) कहते हैं कि मैं ने हज़रत आयशा (रज़ि॰) से पूछा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किस तरह का अमल ज़्यादा पसन्द था? उन्हों ने जवाब दिया वह काम जिस को पाबन्दी से किया जाए आप (सल्ल॰) को ज़्यादा पसन्द था मैंने पूछा कि हुज़ूर (सल्ल॰) रात में किस वक़्त (तहज्जुद के लिये) उठते थे? हज़रत आयशा (रज़ि॰) ने जवाब दिया कि आप उस वक़्त उठते जिस वक़्त मुर्ग़ आवाज़ देता है। (यानी रात के आख़िर में)

(۳۹۶) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَنْزِلُ رَبُّنَا تَبَارَکَ وَتَعَالٰی کُلَّ لَیْلَۃٍ اِلَی السَّمَاءِ الدُّنْیَا حِیْنَ یَبْقٰی ثُلُثُ اللَّیْلِ الْاٰخِرُ فَیَقُوْلُ مَنْ یَّدْعُوْنِیْ فَاَسْتَجِیْبَ لَہٗ مَنْ

يَسْئَلُنِىْ فَاُعْطِيَهٗ مَنْ يَّسْتَغْفِرُنِىْ فَاَغْفِرَ لَهٗ. (بخاری، مسلم۔ ابوہریرہؓ)

396. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यंज़िलु रब्बुना तबारका व तआला कुल्ला लैलतिन इलस्समाइद्दुनिया हीना यबक़ा सुलुसुल्लैलिल आख़िरु फ़-यकूलु मय्यंदऊनी फ़-अस्तजीबा लहू मय्यंसअलुनी फ़-उअतियहू मय्यंसतग़फ़िरुनी फ़-अग़फ़िरा लहू।*

(बुख़ारी, मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि०)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब रात का एक तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है तो अल्लाह तआला इस नज़र आने वाले आसमान पर आता है और बन्दों को बुलाता है, कहता है कि कौन मुझे पुकारता है कि उस की मदद को दौड़ूँ? कौन मुझ से माँगता है कि उसे दूँ? कौन मुझ से माफ़ी माँगता है कि उसे माफ़ कर दू?

इनफ़ाक़ (ख़र्च करना)

(۳۹۷) عَنْ ثَوْبَانَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفْضَلُ دِيْنَارٍ يُّنْفِقُهٗ الرَّجُلُ دِيْنَارٌ يُّنْفِقُهٗ عَلٰى عِيَالِهٖ، وَ دِيْنَارٌ يُّنْفِقُهٗ عَلٰى دَابَّتِهٖ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ، وَ دِيْنَارٌ يُّنْفِقُهٗ عَلٰى اَصْحٰبِهٖ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ. (مسلم)

397. *अन सौबाना काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अफ़ज़लु दीनारियं युनफ़िक़ुहूर्रजुलू दीनारुय्युनफ़िक़ुहू अला एयालिही, व दीनारुय्युनफ़िक़ुहू अला दाब्बतिही फ़ी सबीलिल्लाहि, व दीनारुय्युनफ़िक़ुहू अला असहाबिही फ़ी सबीलिल्लाहि।* (मुस्लिम)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह दीनार बेहतर है जिसे आदमी अपने बाल बच्चों पर ख़र्च करता है, और वह दीनार बेहतर है जिसे आदमी ख़ुदा की राह में जिहाद करने के लिये सवारी ख़रीदने में ख़र्च करता है, और वह दीनार बेहतर है जिसे आदमी अपने साथियों पर ख़र्च करता है उन साथियों पर जो ख़ुदा की राह में जिहाद करते हैं।

(۳۹۸) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ قَالَ، جَاءَ رَجُلٌ اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَىُّ الصَّدَقَةِ اَعْظَمُ اَجْرًا؟ فَقَالَ اَنْ تَصَدَّقَ وَ اَنْتَ صَحِيْحٌ تَخْشَى الْفَقْرَ

وَتَامُلُ الغِنٰى، وَلَا تُمْهِلْ حَتّٰى اِذَا بَلَغَتِ الحُلْقُوْمَ قُلْتَ لِفُلَانٍ كَذَا وَ لِفُلَانٍ كَذَا، وَقَدْ كَانَ لِفُلَانٍ. (بخاری، مسلم)

398. *अन अबी हुरैरता काला, जाआ रजुलुन इलन्नबिरिय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ-काला या रसूलल्लाहि अय्युस्सदकति अअज़मु अजरन? फ-काला अन तसद्दका व अन्ता सहीहुन तख़शल फकरा व तामुलुल ग़िना, वला तुमहिल हत्ता इज़ा बलग़तिल हुलकूमा कुल्ता लिफुलानिन कज़ा व लिफुलानिन कज़ा, व क़द काना लिफुलानिन।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और उस ने पूछा कि कौन सा सदक़ा अज्र व सवाब के लिहाज़ से बढ़ा हुआ है? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि वह सदक़ा सब से बेहतर है जो तू उस ज़माने में करे जबकि तू सही व तन्दुरुस्त है, और तुझे मुहताजी का भी डर है और यह भी उम्मीद है कि तुझे और माल मिल सकता है ऐसे ज़माने में सदक़ा करना सब से बेहतर है और तू ऐसा न कर कि जब तेरी जान हल्क़ में आ जाये और मरने लगे तब तू सदक़ा करे और यूँ कहे कि इतना फुलाँ का है, अब तेरे कहने का क्या फ़ायदा? अब तो वह फुलाँ का हो ही चुका है।

(٣٩٩) عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ، مَا مِنْ يَّوْمٍ يُّصْبِحُ الْعَبْدُ فِيْهِ اِلَّا مَلَكَانِ يَنْزِلَانِ فَيَقُوْلُ اَحَدُهُمَا اَللّٰهُمَّ اَعْطِ مُنْفِقًا خَلَفًا، وَيَقُوْلُ الْاٰخَرُ اَللّٰهُمَّ اَعْطِ مُمْسِكًا تَلَفًا. (بخاری، مسلم)

399. *अन अबी हुरैरता अन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला मा मिन यौमियं युस्बिहुल अब्दु फीहि इल्ला मलकानि यंज़िलानि फ-यकूलु अहदुहुमा अल्लाहुम्मा अअ्ति मुनफ़िकन ख़लफ़न, व यकूलुल आख़रु अल्लाहुम्मा अअ्ति मुमसिकन तलफ़न।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई दिन नहीं गुज़रता मगर यह कि अल्लाह की तरफ़ से दो फ़रिश्ते उतरते हैं

जिन में से एक ख़र्च करने वाले बन्दे के लिये दुआ करता है, कहता है कि ऐ अल्लाह तू ख़र्च करने वाले को अच्छा बदला दे, और दूसरा फ़रिश्ता तंगदिल कंजूसों के हक़ में बददुआ करता है, कहता है कि ऐ अल्लाह कंजूसी करने वाले को तबाही व बरबादी दे।

(۴۰۰) عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَا ابْنَ اٰدَمَ اِنَّکَ اَنْ تَبْذُلَ الْفَضْلَ خَیْرٌ لَّکَ، وَاَنْ تُمْسِکَهُ شَرٌّ لَّکَ وَلَا تُلَامُ عَلٰی کَفَافٍ وَابْدَا بِمَنْ تَعُوْلُ. (ترمذی)

400. *अन अबी उमामता काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यब्ना आदमा इन्नका अन तबज़ुललफ़ज़्ला ख़ैरुल्लका, व अन तुमसिकहू शर्रुल्लका वला तुलामु अला कफ़ाफ़िन वबदआ बिमन तऊलू।* (तिर्मिज़ी)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ आदम के बेटे! अगर तू अपने ज़रूरत से ज़ायद माल को ख़ुदा के मुहताज बन्दों और दीन के कामों पर लगाये तो यह तेरे हक़ में बेहतर होगा और अगर ते ज़रूरत से ज़ायद माल को ज़रूरतमंदों पर नहीं ख़र्च करेगा तो आख़िरकार यह तेरे हक़ में बुरा होगा और अगर तेरे पास ज़रूरत से ज़्यादा माल नहीं है बल्कि उतना ही माल है जिस से तू अपनी ज़रूरतों को पूरा कर सके तो अगर तू उस में से ख़र्च न करे तो ख़र्च न करने पर अल्लाह तुझे मलामत न करेगा। और आपना सदक़ा (दान) उन लोगों से शुरू करो जिन की तुम परवरिश करते हो।

(۴۰۱) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی اَنْفِقْ اُنْفِقْ عَلَیْکَ. (بخاری، مسلم)

401. *अन अबी हुरैरता काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कालल्लाहु तआला अनफ़िक उनफ़िक अलैका।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है तू मेरे मुहताज बन्दों पर और दीन

के काम को आगे बढ़ाने के लिए ख़र्च करे तो मैं तुझ पर ख़र्च करूँगा।

तुझ पर ख़र्च करूँगा का मतलब यह है कि आदमी जो कुछ अपनी कमाई में से ख़ुदा के मुहताज बन्दों की ज़रूरतों और दीन के कामों में ख़र्च करता है तो उस का पैसा बरबाद नहीं जाएगा बल्कि वह उस का बदला आख़िरत में भी पाएगा और यहाँ भी, दुनिया में उसके माल में बरकत होगी और आख़िरत में जो कुछ उसे मिलेगा उस का अन्दाज़ा यहाँ नहीं किया जा सकता।

(۴۰۲) عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ قَالَ انْتَهَیْتُ اِلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَھُوَ جَالِسٌ فِیْ ظِلِّ الْکَعْبَۃِ، فَلَمَّا رَاٰنِیْ قَالَ ھُمُ الْاَخْسَرُوْنَ، فَقُلْتُ فِدَاکَ اَبِیْ وَ اُمِّیْ مَنْ ھُمْ؟ قَالَ ھُمُ الْاَکْثَرُوْنَ اَمْوَالًا اِلَّا مَنْ قَالَ ھٰکَذَا وَ ھٰکَذَا وَھٰکَذَا مِنْ بَیْنِ یَدَیْہِ وَمِنْ خَلْفِہٖ وَعَنْ شِمَالِہٖ وَقَلِیْلٌ مَا ھُمْ. (بخاری مسلم)

402. *अन अबी ज़र्रिन कालनतहैतु इलन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा व हुवा जालिसुन फी ज़िल्लिल कअबति, फ-लम्मा रआनी काला हुमुल अख़्सरूना, फ-कुल्तु फ़िदाका अबी व उम्मी मन हुम? काला हुमुल अकसरूना अमवालन इल्ला मन काला हाकज़ा व हाकज़ा मिम्बैनि यदैहि व मिन ख़ालफ़िही व अन शिमालिही व कलीलुम्माहुम।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी (रज़ि॰) कहते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उस वक़्त आप काबा के साए में बैठे हुये थे, जब आप की नज़र मुझ पर पड़ी तो फ़रमाया वह लोग तबाह व बरबाद हो गये, मैंने कहा मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान, कौन लोग तबाह व बरबाद हो गये? आप ने फ़रमाया वह तबाह व बरबाद हो गये जो मालदार होने के बावजूद ख़र्च नहीं करते, कामियाब सिर्फ़ वही होगा जो अपनी दौलत लुटाये, सामने वालों को दे, पीछे वालों को दे और बाएँ तरफ़ वालों को दे, और ऐसे मालदार ख़र्च करने वाले तो बहुत ही कम हैं।

ज़िक्र व दुआ

(٤٠٣) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰی
یَقُوْلُ اَنَا مَعَ عَبْدِیْ اِذَا ذَکَرَنِیْ وَ تَحَرَّکَتْ بِیْ شَفَتَاهُ. (بخاری)

403. *अन अबी हुरैरता काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नल्लाहा तआला यकूलु अना मआ अब्दी इज़ा ज़करनी व तहर्रकत बी शफ़ताहु।* (बुख़ारी)

अनुवाद:- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब मेरा बन्दा मुझे याद करता है और मेरी याद में जब उस के दोनों होंट हिलते हैं तो उस वक़्त मैं उस के साथ होता हूँ।

उस के साथ होता हूँ से मुराद यह है कि अल्लाह तआला उस बन्दे को अपनी हिफ़ाज़त व निगरानी में ले लेता है और बुराई व नाफ़रमानी से उस को बचाता है, और यह हदीस बताती है कि अल्लाह की याद दिली लगाव के साथ ज़ुबान से होनी चाहिये।

(٤٠٤) عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الَّذِیْ یَذْکُرُ
رَبَّهٗ وَالَّذِیْ لَا یَذْکُرُ مَثَلُ الْحَیِّ وَالْمَیِّتِ. (بخاری، مسلم)

404. *अन अबी मूसा काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मसलुल्लज़ी यज़कुरु रब्बहू वल्लज़ी ला यज़कुरु मसलुल हय्यि वल मय्यिति।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवाद:- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस शख़्स की मिसाल जो अपने रब को याद रखता है उस शख़्स की तरह है जिस के अन्दर ज़िन्दगी पाई जाती है और उस शख़्स की मिसाल जो अल्लाह को याद नहीं रखता ऐसी है जैसे कि कोई मय्यत।

अल्लाह की याद दिल को ज़िन्दगी देती है और उस से ग़फ़लत इन्सान के दिल पर मौत तारी कर देती है, इस इन्सानी ढाँचा की ज़िन्दगी सिर्फ़ खाने के बल पर चलती है अगर खाना न मिले तो यह ढाँचा मर जाता है और इस ढाँचा के अन्दर जो रूह है उस की ग़िज़ा अल्लाह की

याद है अगर उसे यह ग़िज़ा न मिले तो उस पर मौत तारी हो जाती है चाहे उस का ज़ाहिरी ख़ोल (जिस्म) कितना ही ताक़तवर हो।

(٤٠٥) عَنْ سَعْدِ بْنِ اَبِیْ وَقَّاصٍ قَالَ، جَاءَ اَعْرَابِیٌّ اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ عَلِّمْنِیْ کَلَامًا اَقُوْلُهٗ، قَالَ قُلْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْکَ لَهٗ، اَللّٰهُ اَکْبَرُ کَبِیْرًا وَّ الْحَمْدُ لِلّٰهِ کَثِیْرًا وَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَزِیْزِ الْحَکِیْمِ، فَقَالَ هٰؤُلَاءِ لِرَبِّیْ فَمَالِیْ؟ فَقَالَ قُلْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاهْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ. (مسلم)

405. *अन सईदिब्नि अबी वक़्क़ासिन क़ाला, जाआ अअराबिय्युन इला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़-क़ालाअल्लिमनी कलामन अक़ूलुहु, क़ाला कुल लाइलाहा इल्लल्लाहु वहदहू लाशरीका लहू, अल्लाहु अकबरु कबीरन वलहमदुलिल्लाहि कसीरवं व सुबहानल्लाहि रब्बिल आलमीना, ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अज़ीज़िल हकीमि, फ़-क़ाला हाउलाई लिरब्बी फ़-माली? फ़-क़ाला कुल अल्लाहुम्मग़फ़िरली वरहमनी वह्दिनी वरज़ुक़नी।* (मुस्लिम)

अनुवादः- सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) कहते हैं कि अरब का एक दीहाती हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और उस ने कहा मुझे एक ऐसी इबारत सिखा दीजिये जिस से मैं अपने ख़ुदा को याद करूँ आप (सल्ल०) ने फ़रमाया यह कहो "ला इलाहा इल्लल्लाहु, आख़िर तक" यानी अल्लाह के अलावा कोई नहीं है जिस से मुहब्बत की जाए, वह अकेला है, उलूहियत में उस का कोई शरीक नहीं, अल्लाह सब से बड़ा है, और उसी के लिये शुक्र व तारीफ़ है अल्लाह हर बुराई से पाक है लोगों का पालनहार और आक़ा है, बन्दे के पास कोई तर्कीब और कुव्वत नहीं है, तर्कीब व कुव्वत बन्दे को सिर्फ़ अल्लाह के सहारे मिलती है, जो मुकम्मल हुकूमत वाला और इल्म व इन्साफ़ के साथ हुकूमत को इस्तेमाल करने वाला है। उस शख़्स ने कहा यह तो अल्लाह के लिये हुआ, मेरे लिये क्या है, मैं क्या कहूँ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कहो

अल्लाहुम्मा (आख़िर तक जिस का अनुवाद यह है) "ऐ अल्लाह! तू मेरे गुनाह माफ़ कर दे, मुझ पर रहम कर, मुझे सीधे रास्ते पर चला और मुझे रोज़ी दे।"

(۴۰۶) عَنْ شَدَّادِبْنِ اَوْسٍ قَالَ،قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَيِّدُ الْاِسْتِغْفَارِ اَنْ تَقُوْلَ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَ اَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَىَّ، وَاَبُوْءُ بِذَنْبِىْ فَاغْفِرْلِىْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ. (بخاری)

406. *अन शद्दादिब्ने औसिन क़ाला, क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा सय्यिदुल इस्तिग़फ़ारि अन तक़ूला अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी लाइलाहा इल्ला अन्ता ख़लक़तनी, वअना अब्दुका व अना अला अहदिका व वअदिका मस्ततअ़तु अऊज़ुबिका मिन शर्रि मा सनअ़तु, अबूउ लका बिनिअ़मतिका अलय्या, व अबूउ बिज़म्बी फ़ग़फ़िरली फ-इन्नहू लायग़फ़िरुज़्ज़नूबा इल्ला अन्ता।*

(बुख़ारी)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सब से बेहतरीन इस्तिग़फ़ार की दुआ यह है कि तुम कहो "अल्लाहुम्मा" (आख़िर तक, जिस का अनुवाद यह है) "ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है तेरे सिवा कोई और इबादत के लायक़ नहीं है, तूने मुझे पैदा किया, मैं तेरा बन्दा हूँ, मैं ने तुझ से बन्दगी और इताअत (उपासना) का जो वादा किया है उस पर अपनी ताक़त भर क़ायम रहूँगा जो गुनाह मैंने किये हैं उन के बुरे नताइज से बचने के लिये तेरी पनाह का तलबगार हूँ, तूने मुझ पर जितने एहसानात किए हैं उन का मुझे इक़रार है और मैं उस का एतराफ़ करता हूँ कि मैंने गुनाह किए हैं, तो ऐ मेरे रब! मेरे जुर्म को माफ़ कर दे तेरे सिवा मेरे गुनाहों को और कौन माफ़ करने वाला है।

(۴۰۷) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ .... ثُمَّ يَقُوْلُ بِاسْمِكَ رَبِّىْ وَضَعْتُ جَنْبِىْ وَ بِكَ اَرْفَعُهٗ، اِنْ اَمْسَكْتَ نَفْسِىْ فَارْحَمْهَا وَاِنْ اَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادَكَ الصّٰلِحِيْنَ. (بخاری)

407. *अन अबी हुरैरता...... सुम्मा यकूलु बिइस्मिका रब्बी वज़अतु जम्बी व बिका अरफअहू, इन अमसकता नफ़्सी फरहमहा व इन अरसलतहा फहफज़हा बिमा तहफ़ज़ु बिही ईबादकस्सालिहीना।*

(बुख़ारी)

अनुवादः– हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब रात में बिस्तर पर सोने के लिये जाते तो दायाँ हाथ अपने गाल के नीचे रखते फ़रमाते ऐ मेरे रब! तेरे नाम के साथ मैंने अपना पहलू बिस्तर पर रखा है, और तेरे सहारे यह उठेगा, अगर तू (इसी रात सोते में) मेरी जान क़ब्ज़ कर ले तो उस पर रह्म कीजियो, और अगर ज़िन्दगी की और ज़्यादा मुहलत दे तो मेरी हिफ़ाज़त कीजियो, इस तरीक़े से जिस तरीक़े से तू अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त करता है।

(٤٠٨) عَنْ اَبِیْ بَكْرَةَ قَالَ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعْوَةُ الْمَكْرُوْبِ، اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ اَرْجُوْ فَلَا تَكِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ طَرْفَةَ عَيْنٍ، وَاَصْلِحْ لِیْ شَانِیْ كُلَّهٗ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ. (ابوداؤد)

408. *अन अबी बकरता काला, काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दअवतुल मकरुबि, अल्लाहुम्मा रहमतका अरजू फला तकिलनी इला नफसी तरफ़ता ऐनिन, व असलेह ली शानी कुल्लहू, ला इलाहा इल्ला अन्ता।* (अबू दाऊद)

अनुवादः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, परेशान और ग़मज़दा आदमी यह दुआ करेः–

अल्लाहुम्मा (आख़िर तक, जिस का अनुवाद यह है) "ऐ अल्लाह! मैं तेरी रहमत का उम्मीदवार हूँ तू मुझे पल भर के लिये भी मेरे नफ़्स के हवाले न कर (अपनी निगरानी में रख) और मेरे जुमला अहवाल व मुआमलात को ठीक कर दे, तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

जब तक कोई बन्दा अल्लाह की हिफ़ाज़त व निगरानी में रहता है नफ़्स का उस पर क़ाबू नहीं चलता और उस से गुनाह का काम नहीं करा पाता,

लेकिन जूँही उस की हिफ़ाज़त से बन्दा अपने को महरूम कर लेता है नफ़्स उस को तबाही की राह पर डाल देता है, इसी लिये मोमिन दुआ करता है कि ऐ अल्लाह मुझे नफ़्स के हवाले न कर वर्ना मैं तबाह हो जाऊँगा और मेरी पूरी ज़िन्दगी को नेक बना दे, ठीक कर दे।

(۴۰۹) عَنْ اَنَسٍ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ. (بخاری، مسلم)

409. अन अनसिन कानन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यक़ूलु अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिनल हम्मि वलहुज़्नि वल-अज्ज़ि वल-कस्लि व ज़लईदैनि व ग़लबतिर्रिजालि।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ फ़रमाते "अल्लाहुम्मा" (आख़िर तक) ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरी पनाह में अपने आप को देता हूँ, परेशानी से, ग़म से, तकलीफ़ से, सुस्ती व काहिली से, क़र्ज़ा के बोझ से और आदमियों के ग़लबा पाने से।

ख़ुदा की पनाह में अपने को देने का मतलब यह है कि बन्दा को अपनी कमज़ोरी व बेबसी का एहसास है समझता है कि मैं कमज़ोर हूँ इस लिए ताक़तवर आक़ा की पनाह चाहता है ताकि वह उन ख़राबियों से बचाए।

आने वाली मुसीबत से जो परेशानी और फ़िक्र लाहक़ होती है उसे "हम" कहते हैं और "हुज़्न" दुःख को कहते हैं जो मुसीबत के आने के बाद पहुंचता है "अज्ज़" का मतलब है किसी काम को न कर सकना, और बेवक़ूफी और बेतदबीरी के मतलब में भी बोला जाता है यानी यह कि आदमी सोचता है यह तो आसान काम है, रात में कर लेंगे लेकिन रात गुज़र जाती है और वह नहीं कर सका तो कहता है अच्छा चलो कल हो जाएगा, इस तरह काम का असल मौक़ा खो देता है इस दुआ का हासिल यह है कि मोमिन अपने रब से कहता है कि ऐ अल्लाह! मेरी हिफ़ाज़त व निगरानी कर, आने वाले ख़तरात की वजह से मेरा दिल परेशान न हो, और जब मुसीबत आ जाए तो मुझे सब्र दे, जो चीज़ खो

जाये उस पर ग़म न करूँ, और तेरी राह पर चलने में काहिली और सुस्ती मेरे पास न फटके, और मुझ पर लोगों का इतना क़र्ज़ न चढ़ जाये कि मैं उसे अदा न कर सकूँ और फ़िक्र में घुलता रहूँ और बुरे लोगों को मुझ पर मुसल्लत न कर।

(۴۱۰) اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِيْ تَقْوٰهَا وَزَكِّهَا اَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكّٰهَا، اَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ، وَمِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ، وَمِنْ نَّفْسٍ لَّا تَشْبَعُ، وَمِنْ دَعْوَةٍ لَّا يُسْتَجَابُ لَهَا. (مسلم۔ زید بن ارقم)

410. *अल्लाहुम्मा आति नफ़्सी तक़वाहा व ज़क्किहा अनता ख़ैरु मन ज़क्काहा, अन्ता वलिय्युहा व मौलाहा, अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिन इल्मिल्ला यनफ़उ, व मिन क़ल्बिल्ला-यख़्शउ, व मिन नफ़्सिल्ला-तशबउ, व मिन दअ़वतिल्ला-युसतजाबु लहा।*

(मुस्लिम, ज़ैद बिन अरक़म)

अनुवादः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ करते थे "अल्लाहुम्मा" (आख़िर तक, जिस का अनुवाद यह है) ऐ मेरे अल्लाह! तू मेरे नफ़्स को ऐसा कर दे कि वह तेरी नाफ़रमानी से बचे और तेरी सज़ा से डरे, बुरी सिफ़ात से पाक कर, तू उसको सब से बेहतर पाक करने वाला है, तू उसका सरपरस्त (संरक्षक) और आक़ा है ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ उस इल्म से जो मुझे नफ़ा न दे, और उस दिल से जो तेरे सामने ना झुके, और उस नफ़्स से जो आसूदा न हो और ऐसी दुआ से जो क़ुबूल न हो।

"नफ़ा देने वाला इल्म" वह इल्म है जो आदमी को तक़्वा सिखाता है, अमल पर उभारता है और दुनिया व आख़िरत में ख़ुदा की रहमत का हक़दार बनाता है। नफ़्स के आसूदा न होने का मतलब यह है कि उस को दुनिया का सरोसामान जितना भी मिले, क़नाअत नहीं करता, बल्कि उस की भूक बढ़ती जाती है, और दुआ क़ुबूल न होने के बहुत से सबब हैं जिन में से एक सबब यह है, कि आदमी की कमाई हराम हो, जैसा कि मुआमलात के बाब में "हलाल कमाई" के विषय में बयान हुआ है।

(۴۱۱) كَانَ مِنْ دُعَاءِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَفَجْاَةِ نِقْمَتِكَ وَجَمِيْعِ سَخَطِكَ. (مسلم، عبداللہ بن عمرؓ)

411. *कान मिन दुआई रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिन ज़वालि निअमतिका व तहव्वुलि आफ़ियतिका व फजअति निक़मतिका व जमीई सख़तिका।* (मुस्लिम, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰)

अनुवादः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ फ़रमाते थे "अल्लाहुम्मा" (आख़िर तक, जिस का अनुवाद यह है) "ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस बात से कि जो नेमत तूने दी है (मेरे बुरे कर्मों की वजह से) छिन जाए, और जो आफ़ियत मुझे हासिल है उस से मैं महरूम हो जाऊँ, और यह कि तेरा अज़ाब उतरे, और यह कि तू मुझ से नाराज़ हो, मैं इन बातों से तेरी पनाह चाहता हूँ।

"आफ़ियत" यह है कि दीन व ईमान ठीक हो, जिस्मानी सेहत भी आफ़ियत में शामिल है।

(۴۱۲) عَنْ اَبِىْ مَالِكِ ِالْاَشْجَعِيِّ عَنْ اَبِيْهِ قَالَ كَانَ الرَّجُلُ اِذَا اَسْلَمَ عَلَّمَهُ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّلٰوةَ ثُمَّ اَمَرَهٗ اَنْ يَّدْعُوَ بِهٰؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ وَارْحَمْنِىْ وَاهْدِنِىْ وَعَافِنِىْ وَارْزُقْنِىْ. (مسلم)

412. *अन अबी मालिकिनिल-अश्जईयि अन अबीहि काला कानर्रजुलु इज़ा अस्लमा अल्लमहुन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अस्सलाता सुम्मा अमरहू अय्यँदउवा बिहाउलाईल कलिमाति अल्लाहुम्मग़फ़िरली वरहमनी वह्दिनी व आफ़िनी वरज़ुक़नी।* (मुस्लिम)

अनुवादः– अबू मालिक (रज़ि॰) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि वालिद ने बयान किया कि जब कोई शख़्स इस्लाम कुबूल करता है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस को नमाज़ सिखाते, फिर उस से फ़रमाते कि इस तरह दुआ माँगो "अल्लाहुम्मा" (आख़िर तक, जिस का अनुवाद यह है) ऐ मेरे अल्लाह! तू मेरे गुनाह माफ़ कर दे, और मुझ पर रहम कर,

और मुझे सीधे रास्ते पर चला, और मुझे आफ़ियत और रोज़ी दे।

(۴۱۳) عَنْ مُعَاذٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَخَذَ بِيَدِهٖ وَقَالَ يَا مُعَاذُ وَاللّٰهِ اِنِّي لَاُحِبُّكَ، ثُمَّ قَالَ اُوْصِيْكَ يَا مُعَاذُ لَا تَدَعَنَّ فِيْ دُبُرِ كُلِّ صَلٰوةٍ تَقُوْلُ "اَللّٰهُمَّ اَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ." (رياض الصالحين، ابوداؤد، نسائی)

413. *अन मुआज़िन अन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अख़ज़ा बियदिही व काला या मुआज़ु वल्लाहि इन्नी ल-उहिब्बुका, सुम्मा काला ऊसीका या मुआज़ु ला तदअन्ना फ़ी दुबुरि कुल्लि सलातिन तक़ूलु "अल्लाहुम्मा अईन्नी अला ज़िक्रिका व शुक्रिका व हुस्नि ईबादतिका।"* (रियाज़ुस्सालिहीन, अबू दाऊद, निसई)

अनुवादः– हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ा, और फ़रमाया ऐ मुआज़! मैं तुम से मुहब्बत करता हूँ, फिर फ़रमाया तुम्हें वसियय्त करता हूँ कि हर नमाज़ के बाद यह दुआ माँगना, इसे छोड़ना मत "अल्लाहुम्मा" (से आख़िर तक, जिस का अनुवाद यह है) "ऐ मेरे अल्लाह! तू मेरी मदद फ़रमा, ज़िक्र के सिलसिले में, शुक्र के सिलसिले में और अच्छी इबादत के सिलसिले में।

यानी मैं ज़िन्दगी के हर मैदान में तुझे याद रखूँ, तेरा शुक्रगुज़ार रहूँ और बेहतर से बेहतर ढंग से तेरी ईबादत करूँ, लेकिन मैं कमज़ोर हूँ, तेरी मदद का मुहताज हूँ, तेरी मदद के बग़ैर यह काम नहीं हो सकते।

(۴۱۴) اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُوْلُ فِيْ دُبُرِ كُلِّ صَلٰوةٍ مَّكْتُوْبَةٍ اِذَا سَلَّمَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ. (بخاری)

414. *इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काना यक़ूलु फ़ी दुबुरि कुल्लि सलातिम मकतूबतिन इज़ा सल्लमा ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू लाशरीका लहुल मुल्कु व लहुलहम्दु वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, अल्लाहुम्मा ला-मानिआ लिमा अअ़तैता वला मुअ़तिया लिमा मनअ़ता, वला यनफ़उ ज़लजद्दि मिनकल*

जद्दु। (बुख़ारी)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर फ़र्ज़ नमाज़ में (सलाम फेरने के बाद) यह दुआ पढ़ते "लाईलाहा" (आख़िर तक, जिस का अनुवाद यह है) "अल्लाह के अलावा कोई ईबादत के लायक़ नहीं वह अकेला है, हुकूमत में उस का साझी नहीं, पूरी हुकूमत उसी के हाथ में है और वही हम्द व शुक्र का हक़दार है, वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। ऐ अल्लाह! तू जो कुछ देना चाहे उसे रोक देने वाली कोई ताक़त नहीं, और जिस से तू महरूम करना चाहे तो वह चीज़ देने वाली कोई ताक़त नहीं, और तेरे मुक़ाबला में किसी कुदरत वाले की कुदरत कुछ काम नहीं आ सकती।

☆☆☆

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी से

इबादात

(۴۱۵) عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ كُنْتُ اُصَلِّيْ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَتْ صَلٰوتُهُ قَصْدًا وَّخُطْبَتُهُ قَصْدًا. (مسلم)

415. *अन जाबिरिब्ने समुरता काला कुनतु उसल्ली मअन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़-कानत सलातुहू क़स्दवं वख़ुतबतुहू क़स्दन।* (मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत जाबिर बिन समुरा (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ता था, आप की नमाज़ भी मुअतदिल (न ज़्यादा लम्बी और न छोटी) होती थी और ख़ुतबा भी मुअतदिल होता था, न बहुत लम्बा और न बहुत छोटा।

(۴۱۶) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنِّيْ لَاَقُوْمُ اِلَى الصَّلٰوةِ وَاُرِيْدُ اَنْ اُطَوِّلَ فِيْهَا فَاَسْمَعُ بُكَاءَ الصَّبِيِّ فَاَتَجَوَّزُ فِيْ صَلٰوتِيْ كَرَاهِيَةَ اَنْ اَشُقَّ عَلٰى اُمِّهٖ.

(بخاری، ابوقتادہؓ)

416. *काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इन्नी ल-अक़ूमु इलस्सलाति व उरीदु अन उतव्विला फ़ीहा फ़स्मउ बुकाअस्सबिय्यि फ़-अतजव्वज़ु फ़ी सलाती कराहियता अन अशुक़्क़ा अला उम्मिही।* (बुख़ारी, अबू क़तादा रज़ि॰)

अनुवादः- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं नमाज़ के लिये आता हूँ और जी चाहता है कि मैं लम्बी नमाज़

पढ़ाऊँ, फिर किसी बच्चे के रोने की आवाज़ कान में पड़ती है तो नमाज़ को मुख़्तसर कर देता हूँ क्योंकि मुझे यह बात पसन्द नहीं है कि नमाज़ लम्बी कर के बच्चे की माँ को ज़हमत में मुबतला करूँ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में औरतें भी मस्जिद में आती और नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ती थीं, उन में बच्चों वाली माएँ भी होतीं, घर पर कैसे छोड़तीं, इस हदीस में इन्हीं बच्चों और औरतों के बारे में फ़रमाया गया है। इस में उन इमामों के लिये सबक़ है जो मुक़तदियों के हालात से बेख़बर होकर लम्बी क़िरत फ़रमाते हैं।

(۴۱۷) عَنْ زِيَادٍ قَالَ سَمِعْتُ الْمُغِيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ اِنْ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيَقُوْمُ لِيُصَلِّيَ حَتّٰى تَرِمَ قَدَمَاهُ اَوْسَاقَاهُ فَيُقَالُ لَهُ، فَيَقُوْلُ اَفَلَا اَكُوْنُ عَبْدًا شَكُوْرًا. (بخاری)

417. अन ज़ियादिन काला समिअ़तुल मुग़ीरता रज़िअल्लाहु अनहु यकूलु इन कानन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ल-यकूमु लियुसल्लिया हत्ता तरिमा क़दमाहु अव साक़ाहु फ-युक़ालु लहू, फ-यकूलु अफला अकूनु अब्दन शकूरा। (बुख़ारी)

अनुवादः- ज़ियाद (रज़ि॰) कहते हैं कि हज़रत मुग़ीरा रज़ि॰ को बयान करते सुना कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तहज्जुद की नमाज़ में खड़े रहते यहाँ तककि आप के दोनों पावँ सूज जाते। उस पर लोग कहते कि इतनी ज़हमत आप क्यों उठाते हैं? उन को जवाब देते कि क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ।

तालीम का तरीक़ा

(۴۱۸) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ، كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا اَمَرَهُمْ مِنَ الْاَعْمَالِ بِمَا يُطِيْقُوْنَ. (بخاری)

418. अन आयशता कालत, काना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा अमरहुम मिनल अअ़मालि बिमा युतीकूना।

(बुख़ारी)

अनुवादः- हज़रत आयशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों को ऐसे ही काम करने का हुक्म देते थे जिसे वह कर सकते जो उन के बस में होता।

(٤١٩) عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ الْحَكَمِ السُّلَمِيِّ قَالَ بَيْنَا اَنَا اُصَلِّيْ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذْ عَطَسَ رَجُلٌ مِّنَ الْقَوْمِ، فَقُلْتُ يَرْحَمُكَ اللّٰهُ فَرَمَانِى الْقَوْمُ بِاَبْصَارِهِمْ، فَقُلْتُ وَاثُكْلَ اُمِّيَاهُ مَاشَانُكُمْ تَنْظُرُوْنَ اِلَيَّ؟ فَلَمَّا رَاَيْتُهُمْ يُصَمِّتُوْنَنِيْ لٰكِنِّيْ سَكَتُّ فَلَمَّا صَلّٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبِاَبِيْ هُوَ وَ اُمِّي مَارَاَيْتُ مُعَلِّمًا قَبْلَهُ وَلَا بَعْدَهُ اَحْسَنَ تَعْلِيْمًا مِّنْهُ، مَا كَهَرَنِيْ وَلَا ضَرَبَنِيْ وَلَا شَتَمَنِيْ، قَالَ اِنَّ هٰذِهِ الصَّلٰوةَ لَا يَصْلُحُ فِيْهَا شَيْءٌ مِّنْ كَلَامِ النَّاسِ، اِنَّمَا هِيَ التَّسْبِيْحُ وَالتَّكْبِيْرُ وَقِرَاءَةُ الْقُرْاٰنِ. (مسلم)

419. *अन मुआवियतब्निल हकमिस्सुलमिय्यि काला बैना अना उसल्ली मआ रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा अतसा रजुलुम्मिनल कौमि, फ-कुल्तु यरहमुकल्लाहु फ-रमानिल कौमु बिअबसारिहिम, फ-कुल्तु वसुकला उम्मियाहु मा शानुकुम तनज़ुरूना इलय्या? फ-लम्मा रऐतुहुम युसम्मितूननी लाकिन्नी सकत्तु फ-लम्मा सल्ला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ-बिअबिय्य हुवा व उम्मी मा रऐतु मुअल्लिमन क़ब्लहू वला बअ़दहू अहसना तअ़लीमम्मिनहु, मा कहरनी वला ज़रबनी वला शतमनी, काला इन्ना हाज़िहीस्सलाता ला यसलुहु फीहा शैउम्मिन कलामिन्नासि, इन्नमा हियत्तसबीहु वत्तकबीरु व किराअहुल कुरआनि।* (मुस्लिम)

अनुवादः- मुआविया बिन हकम सुलमी (रज़ि॰) कहते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ रहा था कि इतने में एक आदमी को छींक आई तो मैंने नमाज़ पढ़ते ही में यरहमुकल्लाह कह दिया तो लोगों ने मुझ पर निगाह डाली, मैंने कहा कि खुदा तुम्हें ज़िन्दा रखे, तुम लोग क्यों मुझे देखते हो, तो उन्हों ने मुझे चुप हो जाने के लिये कहा, तो मैं चुप हो गया। जब नबी (सल्ल॰) नमाज़ पढ़ चुके, मेरे माँ बाप नबी (सल्ल॰) पर कुर्बान मैंने नबी (सल्ल॰) से बेहतर तालीम व तर्बियत करने वाला न तो पहले देखा न बाद में देखा। आप (सल्ल॰) ने न तो मुझे डाँटा न मारा और न बुरा भला कहा, सिर्फ़ इतना कहा यह नमाज़ है इस में बात चीत मुनासिब नहीं है, नमाज़ तो नाम है अल्लाह की पाकी बयान करने का, उस

की बड़ाई बयान करने का और कुरआन पढ़ने का।

(۴۲۰) بَالَ اَعْرَابِیٌّ فِی الْمَسْجِدِ فَقَامَ النَّاسُ اِلَیْهِ لِیَقَعُوْا فِیْهِ، فَقَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ دَعُوْهُ وَاَرِیْقُوْا عَلٰی بَوْلِهٖ سَجْلًا مِّنْ مَّاءٍ اَوْ ذَنُوْبًا مِّنْ مَّاءٍ، فَاِنَّمَا بُعِثْتُمْ مُیَسِّرِیْنَ وَلَمْ تُبْعَثُوْا مُعَسِّرِیْنَ. (بخاری۔ ابوہریرہؓ)

420. बाला अअ़राबिय्युन फ़िल मस्जिदे फ़-कामन्नासु इलैहि लि-यकऊ फ़ीहि, फ़-कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा दऊहु व अरीकू अला बौलिही सजलम्मिम माइन अव ज़नूबम्मिम माइन, फ़-इन्नमा बुइस्तुम मुयस्सिरीना वलम तुबअसू मुअ़स्सिरीना।

(बुख़ारी, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः– एक बद्दू ने मस्जिद में पेशाब कर दिया तो लोग मारने पीटने के लिये दौड़े आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया उस को छोड़ दो, उस के पेशाब पर एक डोल पानी डाल कर बहा दो, तुम लोग तो इस लिये भेजे गये हो कि दीन की तरफ़ लोगों को खींचो और दीन को उन के लिये आसान बनाओ। तुम्हें इस लिये अल्लाह ने नहीं भेजा है कि अपने गै़र हकीमाना तरीके़ से लोगों के लिये दीन की तरफ़ आना मुश्किल बना दो।

आप (सल्ल॰) ने हज़रत अबू मूसा (अलै॰) और मुआज़ को यमन भेजते वक़्त यह वसिय्यत फ़रमाई *यस्सिरा वला तुअस्सिरा व सक्किना वला तुनफ़्फ़िरा।* तुम दोनों वहाँ के लोगों के सामने दीन को इतनी ख़ूबसूरती से पेश करना कि वह उन्हें आसान मालूम हो, ऐसा ढंग न अपनाना जिस के नतीजे में दीन को लोग मुश्किल समझने लगें और लोगों को अपने से मानूस करना, न उन्हें अपने से बिदकाना और न भड़काना।

(۴۲۱) عَنْ مَالِکِ بْنِ الْحُوَیْرِثِ قَالَ، اَتَیْنَا النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ شَبَبَةٌ مُتَقَارِبُوْنَ، فَاَقَمْنَا عِنْدَهٗ عِشْرِیْنَ لَیْلَةً وَّکَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ رَحِیْمًا رَفِیْقًا، فَظَنَّ اَنَّا قَدِاشْتَقْنَا اَهْلَنَا فَسَاَلَ عَمَّنْ تَرَکْنَا مِنْ اَهْلِنَا، فَاَخْبَرْنَاهُ، فَقَالَ ارْجِعُوْا اِلٰی اَهْلِیْکُمْ فَاَقِیْمُوْا فِیْهِمْ وَعَلِّمُوْهُمْ وَمُرُوْهُمْ وَصَلُّوْا صَلَاةَ کَذَا فِیْ حِیْنِ کَذَا (وَفِیْ رِوَایَةٍ وَصَلُّوْا کَمَا رَاَیْتُمُوْنِیْ اُصَلِّیْ) فَاِذَا حَضَرَتِ الصَّلٰوةُ فَلْیُؤَذِّنْ لَکُمْ اَحَدُکُمْ

وَلْيَؤُمَّكُمْ اَكْبَرُكُمْ. (بخاری، مسلم)

421. अन मालिकिब्निल हुवैरिसि काला, अतैनन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा व नहनु शबबतुम्मुतकारिबूना, फ-अकमना इन्दहू इशरीना लैलतवं वकाना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा रहीमन रफ़ीकन, फ-ज़न्ना अन्ना कदिशतकना अहलना फ-सअला अम्मन तरकना मिन अहलिना, फ-अख़बरनाहु फ-कालरजिऊ इला अहलीकुम फ-अकीमू फ़ीहिम व अल्लिमूहुम व मुरूहुम व सल्लू सलाता कज़ा फी हीनि कज़ा व सलाता कज़ा फी हीनि कज़ा (वफ़ी रिवायतिवं व सल्लू कमा रऐतुमूनी उसल्ली) फ-इज़ा हज़रतिस्सलातु फलयुअज़्ज़िन लकुम अहदुकुम वल यउम्मुकुम अकबरुकुम। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– मालिक बिन हुवैरिस (रज़ि०) ने फ़रमाया कि हम कुछ हमउम्र नवजवान दीन का इल्म हासिल करने के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये, यहाँ हम 20 दिन तक ठहरे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत ही रहीम और नर्म मुआमला करने वाले थे। आप (सल्ल०) ने महसूस किया कि हम अपने घर जाना चाहते हैं तो आप ने हम से पूछा कि तुम्हारे पीछे कौन लोग हैं? हम ने बताया, तो आप ने फ़रमाया कि अपने बीवी बच्चों में वापस जाओ और जो कुछ तुम ने सीखा है उन्हें सिखाओ, और भली बातें बताओ, और फुलाँ-फुलाँ नमाज़ वक़्त पर पढ़ो, और फुलाँ नमाज़ वक़्त पर पढ़ो (एक रिवायत में यह भी है, और तुम ने मुझे जिस तरह नमाज़ पढ़ते देखा है उसी तरह तुम भी पढ़ना) और जब नमाज़ का वक़्त आ जाये तो तुम में से कोई अज़ान देदे और जो तुम में इल्म और सीरत के लिहाज़ से बढ़ा हुआ हो वह इमामत करे।

इन्सानों पर मेहरबानी

(۴۲۲) عَنْ جَرِيْرِبْنِ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ، كُنَّا فِيْ صَدْرِ النَّهَارِ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَهُ قَوْمٌ عُرَاةٌ مُجْتَابِى النِّمَارِ اَوِالْعَبَاءِ مُتَقَلِّدِى السُّيُوْفِ عَامَّتُهُمْ مِنْ مُضَرَ بَلْ كُلُّهُمْ مِنْ مُضَرَ فَتَمَعَّرَ وَجْهُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَا رَاٰى بِهِمْ

مِنَ الْفَاقَةِ، فَدَخَلَ ثُمَّ خَرَجَ، فَاَمَرَ بِلَالاً فَاَذَّنَ وَاَقَامَ فَصَلّٰى ثُمَّ خَطَبَ فَقَالَ يَا اَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَّاحِدَةٍ اِلٰى اٰخِرِ الْاٰيَةِ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا، وَالْاٰيَةَ الْاُخْرٰى الَّتِىْ فِىْ اٰخِرِ الْحَشْرِ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اتَّقُوْا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ، لِيَتَصَدَّقْ رَجُلٌ مِّنْ دِيْنَارِهٖ، مِنْ دِرْهَمِهٖ، مِنْ ثَوْبِهٖ مِنْ صَاعِ بُرِّهٖ، مِنْ صَاعِ تَمْرِهٖ حَتّٰى قَالَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ، فَجَاءَ رَجُلٌ مِّنَ الْاَنْصَارِ بِصُرَّةٍ كَادَتْ كَفُّهٗ تَعْجِزُ عَنْهَا بَلْ قَدْ عَجَزَتْ، ثُمَّ تَتَابَعَ النَّاسُ حَتّٰى رَاَيْتُ كَوْمَيْنِ مِنْ طَعَامٍ وَّ ثِيَابٍ حَتّٰى رَاَيْتُ وَجْهَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَهَلَّلُ كَاَنَّهٗ مُذْهَبَةٌ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَنَّ فِى الْاِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهٗ اَجْرُهَا وَاَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا بَعْدَهٗ مِنْ غَيْرِ اَنْ يُّنْقَصَ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَيْءٌ، وَمَنْ سَنَّ فِى الْاِسْلَامِ سُنَّةً سَيِّئَةً كَانَ عَلَيْهِ وِزْرُهَا وَ وِزْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ غَيْرِ اَنْ يُّنْقَصَ مِنْ اَوْزَارِهِمْ شَيْءٌ. (مسلم)

422. अन जरीरिब्ने अब्दिल्लाहि काला, कुन्ना फी सदरिन्नहारि इन्दा रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ-जाअहू कौमुन उरातुन मुजताबिन्निमारि अविल अबाई मुतकल्लिदीस्सुयूफि आम्मतुहुम मिम्मुज़रा बल कुल्लुहुम मिम्मुज़रा फ-तमअ़्अरा वज्हु रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा लिमा रआ बिहिम मिनलफाकति, फ-दख़ाला सुम्मा ख़ारजा, फअमरा बिलालन फ-अज़्ज़ना व अकामा फ-सल्ला सुम्मा ख़ातबा फ-काला या अय्युहन्नासुत्तकू रब्बकुमुल्लज़ी ख़लककुम मिन नफ़्सिवं वाहिदतिन इला आख़िरिल आयति इन्नल्लाहा काना अलैकुम रकीबा, वल आयतल उख़ारल्लती फी आख़िरिल हश्रि या अय्युहल्लजीना आमनुत्तकुल्लाहा वलतंज़ुर नफ़्सुम्मा कद्दमत लिग़दिन, लियतसद्दक रजुलुम्मिन दीनारिही, मिन दिरहमिही, मिन सौबिही मिन साई बुर्रिही, मिन साई तमरिही हत्ता काला वलौ बिशिक्कि तमरतिन, फ-जाआ रजुलुम्मिनल अंसारि बिसुर्रतिन कादत कफ़्फुहू तअ़जिज़ु अनहा बल कद अजज़त, सुम्मा तताबअन्नासु हत्ता रऐतु कौमैनि मिन तआमिवं वसियाबिन हत्ता रऐतु वज्हा रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यतहल्ललु कअन्नहू मुज़हबतुन, फ-काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मन सन्ना फिलइस्लामि सुन्नतन हसनतन फलहू अज्रुहा व अजरु मन अमिला बिहा

बअ़दहू मिन ग़ैरिन अय्युनक़सा मिन उजूरिहिम शैउन, वमन सन्ना फ़िलइस्लामि सुन्नतन सय्यिअतन काना अलैहि विज़रुहा व विज़रु मन अमिला बिहा मिम्बअ़दिही मिन ग़ैरि अय्युनक़सा मिन औज़ारिहिम शैउन। (मुस्लिम)

अनुवादः- जरीर इब्ने अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में सुब्ह के वक़्त बैठे हुए थे कि इतने में कुछ लोग आये तलवारें बाँधे हुये, मोटे कम्बल लपेटे हुये, उन के बदन का ज़्यादातर हिस्सा नंगा था और उन में से ज़्यादातर लोग मुज़र के क़बीले से थे, बल्कि सभी मुज़री थे। उन की गुर्बत और फ़क़ीरी को देख कर नबी (सल्ल॰) का चेहरा परेशानी की वजह से पीला पड़ गया, फिर आप घर में गये और बाहर आये, बिलाल (रज़ि॰) को हुक्म दिया कि वह अज़ान दें (नमाज़ का वक़्त हो चुक था) तो बिलाल (रज़ि॰) ने अज़ान और फिर तकबीर कही, आप (सल्ल॰) ने नमाज़ पढ़ाई, और नमाज़ के बाद तक़रीर फ़रमाई जिस में आप ने सूरह निसा की पहली आयत और सूरह हश्र के आख़िरी रुकू की पहली आयत तिलावत की और उस के बाद फ़रमाया, लोगों को चाहिये कि ख़ुदा की राह से सदक़ा (दान) दें, दीनार दें, दिरहम दें, कपड़े दें, गेहूँ का एक साअ दें, खुजूर का एक साअ़ दें। यहाँ तककि आप ने फ़रमाया अगर किसी के पास खुजूर का आधा टुकड़ा हो तो वह वही दे। तक़रीर सुनने के बाद अंसार का एक आदमी अपने हाथ में एक थैली लिये हुये आया जो हाथ में समाती नहीं थी फिर लोगों ने एक के बाद एक सदक़ा (दान) देना शुरू किया, यहाँ तक कि मैंने ग़ल्ला और कपड़े के दो ढेर देखे। लोगों के इस तरह सदक़ा देने से नबी (सल्ल॰) का चेहरा दमक उठा जैसे कि सोने का पानी चढ़ा दिया गया है, फिर नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया जो शख़्स इस्लाम में कोई अच्छा तरीक़ा शुरू करे उस को उस का बदला मिलेगा और जो लाग इस अच्छे तरीक़े पर बाद में अमल करेंगे उन का भी अज्र उस को मिलेगा और यह कि काम करने वालों के बदले में से कोई कमी नहीं की जाएगी और जिस ने इस्लाम

में किसी बुरे तरीक़े को राइज किया तो उसे उस का गुनाह होगा और बाद में जो लोग उस बुरे तरीक़े पर चलेंगे तो उस का गुनाह भी उस के नाम-ए-अअ्माल में लिखा जाएगा। बग़ैर इस के कि उन अमल करने वालों के गुनाह में कोई कमी हो।

इस्लाम की दो बुनियादी शिक्षाएँ हैं, पहला तौहीद, दूसरा ख़ुदा के मुहताज व ग़रीब बन्दों पर रहमत व शफ़क़त करना, यही वजह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरा परेशानी की वजह से पीला पड़ गया, और जब उन के लिये कपड़ों और खानों का कुछ इन्तिज़ाम हो गया तो आप का मुबारक चेहरा सोने की तरह दमकने लगा।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी तक़रीर में सूरह निसा की पहली आयत पढ़ी, जिस का तर्जुमा यह है "ऐ लोगो! अपने पालने वाले के गुस्से से बचने की फ़िक्र करो जिस ने तुम को एक जान यानी एक बाप से पैदा किया, और उस से उस का जोड़ा बनाया और उन दोनों से दुनिया में बहुत से मर्द व औरत फैला दिये तो अपने पालने वाले ख़ालिक़ यानी अल्लाह की नाफ़रमानी से बचने की फ़िक्र करो जिस का नाम लेकर तुम एक दूसरे से अपना हक़ माँगते हो, और रिश्तेदारी का लिहाज़ करो और उन के हुकूक़ को पूरा करो, हक़ीक़त में अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है"। इस आयत में अल्लाह तआला ने दो बातें फ़रमाई हैं। एक वहदत-ए-इलाह, और दूसरा वहदत-ए-बनी आदम। वहदत-ए-इलाह का मतलब यह है कि सिर्फ़ अल्लाह इबादत व अताअत का हक़दार है इस का नाम तौहीद है। और वहदत-ए-बनी आदम का मतलब यह है कि सारे इन्सान एक माँ बाप की औलाद हैं, इस लिये उन के बीच रहमत व शफ़क़त की बुनियाद पर मुआमला होना चाहिये। उन ग़रीबों को देखकर सदक़ा के लिये अपील करते हुये हुज़ूर (सल्ल०) का इस आयत को पढ़ना साफ़तौर पर इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि सोसाईटी के ग़रीबों की मदद न करना ख़ुदा की नाराज़गी और गुस्सा का सबब बनता है।

और सूरह हश्र की जो आयत आप (सल्ल०) ने पढ़ी उस का तर्जुमा यह है "ऐ लोगो! जो ईमान लाये हो, अल्लाह के गुस्सा से डरो, और हर

आदमी को इस बात पर नज़र रखना चाहिये कि वह कल (क़यामत) के लिये क्या ज़ख़ीरा जमा कर रहा है। ऐ लोगो! अल्लाह के गुस्सा से डरो अल्लाह जानता है तुम्हारे उन कामों को जो तुम करते हो।" यह आयत पढ़कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात की तरफ़ इशारा फ़रमाया कि ग़रीबों पर जो माल ख़र्च किया जाता है वह आदमी के लिये आख़िरत में ज़ख़ीरा बनता है, वह बरबाद नहीं होता।

जिस आदमी ने सब से पहले सदक़ा किया था उस की आप (सल्ल०) ने तारीफ़ फ़रमाई और बताया कि उस को अपने सदक़े का भी सवाब मिलेगा, और इस बात पर भी उस को बदला मिलेगा कि उस को देख कर और लोगों में भी सदक़ा करने का जज़्बा पैदा हुआ।

(۴۲۳) عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ اَبِیْ بَكْرِ نِ الصِّدِّيْقِ اَنَّ اَصْحٰبَ الصُّفَّةِ كَانُوْا اُنَاسًا فُقَرَاءَ، وَاَنَّ النَّبِیَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَرَّةً مَّنْ كَانَ عِنْدَهٗ طَعَامُ اثْنَيْنِ فَلْيَذْهَبْ بِثَالِثٍ، وَمَنْ كَانَ عِنْدَهٗ طَعَامُ اَرْبَعَةٍ فَلْيَذْهَبْ بِخَامِسٍ بِسَادِسٍ اَوْ كَمَا قَالَ، وَاَنَّ اَبَا بَكْرٍ جَاءَ بِثَلَاثَةٍ وَّانْطَلَقَ النَّبِیُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَشَرَةٍ. (بخاری، مسلم)

423. अन अब्दिर्रहमानिब्ने अबी बक्रिनिस्सिद्दीकि अन्ना असहाबस्सुफ़्फ़ति कानू उनासन फ़ुक़राआ, व अन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा क़ाला मर्रतम्मन काना इनदहू तआमुसनैनि फ़लयज़हब बिसालिसिन, व मन काना इन्दहू तआमु अरबअ़तिन फ़लयज़हब बिख़ामिसिन बिसादिसिन अव कमा क़ाला। वअन्ना अबा बक्रिन जाआ बिसलासतिवं वनतलक़न्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बिअशरतिन। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) के बेटे अब्दुर्रहमान की रिवायत है कि सुफ़्फ़ा वाले ग़रीब लोग थे। एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस के घर दो आदमियों का खाना है तो वह यहाँ से तीसरे को ले जाये और जिस के पास चार आदमियों का खाना हो तो एक या दो आदमी ले जाये। चुनाचे मेरे वालिद अबू बक्र (रज़ि०) अपने घर तीन आदमियों को लाये और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर 10 आदमियों को ले गये।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों के क़ाइद और पेशवा थे, वह अगर दस आदमियों को अपने यहाँ न ले जाते तो आम लोग दो, चार, छः, और आठ को खुशी-खुशी कैसे ले जाते, क़ायदा यह है कि ज़िम्मेदार लोग अगर ईसार व कुर्बानी करेंगे तो उन के पीछे चलने वालों में ज़्यादा से ज़्यादा कुर्बानी व ईसार का जज़्बा उभरेगा और आगे चलने वाले ही पीछे रहें तो पीछे चलने वालों में और पीछे जाने की जे़हनियत उभरेगी।

(٤٢٤) عَنْ اَنَسٍ قَالَ مَا سُئِلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْاِسْلَامِ شَيْئًا اِلَّا اَعْطَاهُ، وَلَقَدْ جَاءَهُ رَجُلٌ فَاَعْطَاهُ غَنَمًا بَيْنَ جَبَلَيْنِ، فَرَجَعَ اِلٰى قَوْمِهٖ، فَقَالَ يٰقَوْمِ اَسْلِمُوْا فَاِنَّ مُحَمَّدًا يُعْطِىْ عَطَاءَ مَنْ لَّا يَخْشَى الْفَقْرَ، وَاِنْ كَانَ الرَّجُلُ لَيُسْلِمُ مَا يُرِيْدُ اِلَّا الدُّنْيَا فَمَا يَلْبَثُ اِلَّا يَسِيْرًا حَتّٰى يَكُوْنَ الْاِسْلَامُ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا.

(مسلم)

424. *अन अनसिन काला मा सुईला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अलल इस्लामि शैअन इल्ला अअ़ताहु, वलक़द जाअहू रजुलुन फ़-अअ़ताहु ग़नमन बैना जबलैनि, फ़-रजआ इला क़ौमिही, फ़-काला या क़ौमि अस्लिमू फ़-इन्ना मुहम्मदन युअ़ती अताआ मल्ला यख़शल फ़क़्रा, व इन कानर्रजुलु ल-युस्लिमु मा युरीदु इल्लद्दुनिया फ़-मा यलबसु इल्ला यसीरन हत्ता यकूनल इस्लामु अहब्बा इलैहि मिनद्दुनिया वमा अलैहा।* (मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि इस्लाम से क़रीब करने की ग़र्ज़ से हुज़ूर (सल्ल०) लोगों को देते थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जो कुछ भी माँगा गया, आप (सल्ल०) ने माँगने वाले को वह चीज़ ज़रूर दी। एक बार एक आदमी आप के पास आया तो आप ने उस को दो पहाड़ों के बीच चरने वाली सब बकरियाँ दे दीं, तो वह अपने क़बीला वालों के पास पहुंचा और कहा, ऐ लोगो! इस्लाम लाओ इस लिय कि मुहम्मद (सल्ल०) इस तरह देते हैं जैसे वह शख़्स जो फ़क़्र व फ़ाक़ा से नहीं डरता। रावी (हज़रत अनस रज़ि०) कहते हैं कि आदमी सिर्फ़ दुनिया की ग़र्ज़ से ईमान लाता लेकिन ज़्यादा मुद्दत न गुज़रती कि इस्लाम उस की रूह में नबी की

तालीम व तर्बियत से उतर जाता, और दुनिया और दुनिया के सामान से इस्लाम की निगाह में ज़्यादा महबूब हो जाता।

दीन को फैलाने की राह में

(٤٢٥) عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ كَاَنِّىْ اَنْظُرُ اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَحْكِىْ نَبِيًّا مِّنَ الْاَنْبِيَاءِ صَلَوَاتُ اللّٰهِ وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِمْ ضَرَبَهٗ قَوْمُهٗ فَاَدْمَوْهُ وَهُوَ يَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهٖ وَيَقُوْلُ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِىْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ. (بخاری، مسلم)

425. *अनिब्ने मसऊदिन क़ाला कअन्नी अनज़ुरु इला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यहकी नबिय्यम मिनल अंबियाई सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहिम ज़रबहू क़ौमुहू फ़-अदमौहु वहुआ यमसहुद्दमा अव्वज्हिही व यक़ूलु अल्लाहुम्मग़फिर लिक़ौमी फ़-इन्नहुम लायअलमूना।* (बुख़ारी)

अनुवादः– हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक नबी का हाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बयान फ़रमा रहे थे वह मनज़र (दृश्य) मेरी निगाहों के सामने है। आप ने फ़रमाया कि दावत देने के जुर्म में उस नबी को क़ौम के लोगों ने इतना मारा कि लहूलहान कर दिया और नबी का हाल यह था कि वह अपने चेहरे से ख़ून को पोंछते जाते और यह कहते जाते, ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम के इस जुर्म को माफ़ कर दीजियो। (और अभी इन पर अज़ाब ना उतार) इस लिये कि यह लोग नादान हैं, असल हक़ीक़त को नहीं जानते।

(٤٢٦) عَنْ عَائِشَةَ اَنَّهَا قَالَتْ لِلنَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَلْ اَتٰى عَلَيْكَ يَوْمٌ كَانَ اَشَدَّ مِنْ يَوْمِ اُحُدٍ؟ قَالَ قَدْ لَقِيْتُ مِنْ قَوْمِكَ وَكَانَ اَشَدُّ مَا لَقِيْتُهٗ يَوْمَ الْعَقَبَةِ اِذْ عَرَضْتُ نَفْسِىْ عَلَى ابْنِ عَبْدِ يَا لَيْلَ بْنِ عَبْدِ كُلَالٍ، فَلَمْ يُجِبْنِىْ اِلٰى مَا اَرَدْتُّ فَانْطَلَقْتُ .... وَاَنَا مَهْمُوْمٌ .... عَلٰى وَجْهِىْ، فَلَمْ اَسْتَفِقْ اِلَّا بِقَرْنِ الثَّعَالِبِ، فَرَفَعْتُ رَاْسِىْ فَنَظَرْتُ، فَاِذَا فِيْهَا جِبْرِيْلُ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَادَانِىْ، فَقَالَ اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِكَ لَكَ وَمَا رَدُّوْا عَلَيْكَ، وَقَدْ بَعَثَ اِلَيْكَ مَلَكَ الْجِبَالِ لِتَاْمُرَهٗ بِمَا شِئْتَ فِيْهِمْ، فَنَادَانِىْ مَلَكُ الْجِبَالِ فَسَلَّمَ عَلَىَّ ثُمَّ قَالَ يَا مُحَمَّدُ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِكَ لَكَ وَاَنَا مَلَكُ الْجِبَالِ وَقَدْ بَعَثَنِىْ رَبِّىْ اِلَيْكَ لِتَاْمُرَنِىْ

بِاَمْرِكَ فَمَا شِئْتَ؟ اِنْ شِئْتَ اَطْبَقْتُ عَلَيْهِمُ الْاَخْشَبَيْنِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَلْ اَرْجُوْا اَنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ مِنْ اَصْلَابِهِمْ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ وَحْدَهٗ لَا يُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا.

(بخاری، مسلم)

426. *अन आयशता अन्नहा कालत लिन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा हल अता अलैका यौमुन काना अशद्दा मिंय्यौमि उहुदिन? काला क़द लक़ीतु मिन क़ौमिका वकाना अशद्दु मा लक़ीतुहू यौमल अक़बति इज़ अरज़तु नफ़्सी अलब्नि अब्दि या लैलब्ने अब्दि कुलालिन फलम युजिब्नी इला मा अरदतु, फनतलक़तु वअना महमूमुन अला वज्ही, फलम असतफ़िक़ इल्ला बिक़रनिस्सआलिबी, फरफ़अ़तु रासी फ-नज़रतु, फइज़ा फ़ीहा जिब्रीलु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा, फ-नादानी, फ-क़ाला इन्नल्लाहा तआला समिआ क़ौला क़ौमिका लका वमा रद्दू अलैका, वक़द बअसा इलैका मलकल जिबालि लितामुरहु बिमा शिअता फ़ीहिम फनादानी मलकुल जिबालि फ-सल्लमा अलय्या सुम्मा काला या मुहम्मदु इन्नल्लाहा क़द समिआ क़ौला क़ौमिका लका व अना मलकुल जिंबालि वक़द ब-अ-सनी रब्बी इलैका लितामुरनी बिअमरिका फ-मा शिअता? इन शिअता अतबक़तु अलैहिमुल अख़शबैनि, फ-कालन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा बल अरजू अंय्युख़रिजल्लाहु मिन असलाबिहिम मंय्यअ़बुदुल्लाहा वह्दहू ला युशरिकु बिही शैअन।* (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः- हज़रत आयशा (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा क्या आप पर कोई दिन ऐसा गुज़रा है जो उहुद के दिन से ज़्यादा सख़्त व शदीद रहा हो? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि आयशा (रज़ि॰)। तुम्हारी क़ौम कुरैश से मुझे बहुत तकलीफ़ें पहुंचीं, और सब से ज़्यादा सख़्त दिन जो मुझ पर गुज़रा उक़्बा का दिन था जबकि मैंने अपने आप को अब्द या लैल इब्ने अब्द किलाल के सामने पेश किया, लेकिन जो कुछ मैं चाहता था उस ने उस को कुबूल करने से इनकार कर दिया तो मैं परेशान होकर और सोचते हुये वहाँ से चला और जब मैं करनुस्सआ़लिब पहुंचा तब

ग़म ज़रा हल्का हुआ तो मैंने आसमान की तरफ़ नज़र उठाई, देखा कि जिबरील हैं, उन्हों ने मुझे पुकार कर कहा कि आप की क़ौम ने जो बातें आप से कीं और जिस शक्ल में उन्हों ने आप की बातों का जवाब दिया है उसे अल्लाह तआला ने सुन लिया, और आप के पास अल्लाह ने पहाड़ों का इन्तिज़ाम करने वाले फ़रिश्ते को भेजा है, आप जो चाहें इसे हुक्म दें वह हक़ के न मानने वालों के सिलसिले में आप का हुक्म मानेंगे। फिर मुझे पहाड़ों के फ़िरिश्ते ने आवाज़ दी, सलाम किया, फिर कहा, ऐ मुहम्मद! आप की क़ौम ने आप से जो बातें कहीं उसे अल्लाह तआला ने सुना और मैं पहाड़ों के इन्तिज़ाम पर लगाया गया हूँ और मेरे रब ने मुझे आप के पास भेजा है ताकि आप मुझे जो हुक्म देना चाहें दें, तो जो कुछ आप चाहते हैं बताईये अगर आप चाहें तो दोनों तरफ़ के पहाड़ों को मैं इस तरह मिला दूँ कि यह लोग पिस कर रह जाएँ, नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, नहीं बल्कि मैं यह उम्मीद रखता हूँ कि उन की औलाद में ऐसे लोग होंगे जो सिर्फ़ अल्लाह की बन्दगी करेंगे, उस के साथ किसी को शरीक नहीं करेंगे।

उक़बा के दिन से मुराद ताइफ़ का दिन है, ताइफ़ में क़ुरैशी चमड़े का बड़े पैमाने पर कारोबार करते थे। ताईफ़ वाले और क़ुरैश आपस में क़रीबी रिश्तेदार थे, जब मक्का वालों से आप मायूस हो गये तब वहाँ इस उम्मीद पर तशरीफ़ ले गये थे कि शायद हक़ का बीज यहाँ जड़ पकड़े, मगर इब्ने अब्द या लैल ने गुन्डों को आप (सल्ल॰) के पीछे लगा दिया जिन्हों ने पत्थर मारे, यहाँ तककि आप बेहोश होकर गिर पड़े।

जब कोई क़ौम नबी की दावत क़ुबूल नहीं करती है तो वह अल्लाह के अज़ाब के लायक़ हो जाती है, लेकिन नबी मायूस नहीं होता, वह अपनी क़ौम में काम करता रहता है और अल्लाह से दुआ करता है कि अभी अज़ाब न भेज, शायद कल यह ईमान लाएँ, जब अज़ाब के फ़िरिश्ते ने कहा अगर आप (सल्ल॰) कहें तो मक्का के दोनों पहाड़ों, अबू क़ुबैस और जबले अहमर को मिला दूँ और यह पिस कर रह जाएँ, तो फ़रमाया *दअ़नी उन्ज़िरु क़ौमी*, यानी अभी मुझे क़ौम में दीन को फैलाने का काम

करने दो शायद यह कल ईमान लाएँ, या हो सकता है इन की औलाद ईमान लाए। यह नमूना है दीन का काम करने वालो के लिये, सब्र और लोगों से प्यार के बग़ैर दीनी जद्दोजहद का काम नहीं हो सकता।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों का हाल

(۴۲۷) عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ اَبِيْهِ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ نِعْمَ الرَّجُلُ عَبْدُ اللّٰهِ لَوْ كَانَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ، قَالَ سَالِمٌ فَكَانَ عَبْدُ اللّٰهِ بَعْدَ ذٰلِكَ لَا يَنَامُ مِنَ اللَّيْلِ اِلَّا قَلِيْلًا. (بخاری، مسلم)

427. *अन सालिम इब्ने अब्दिल्लाहिब्ने उमरा अन अबीहि अन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा काला निअमर्रजुलु अब्दुल्लाहि लौ काना युसल्ली मिनल्लैलि, काला सालिमुन फ-काना अब्दुल्लाहि बअदा ज़ालिका ला-यनामु मिनल्लैलि इल्ला कलीला।*

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवादः– हज़रत सालिम अपने वालिद (पिता) अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अब्दुल्लाह बहुत अच्छे आदमी हैं, काश तहज्जुद के लिये उठा करते सालिम (रज़ि॰) कहते हैं कि आप के फ़रमाने के बाद वालिद का यह हाल हुआ कि रात में थोड़ी देर सोते।

(۴۲۸) اِنَّ فُقَرَاءَ الْمُهَاجِرِيْنَ اَتَوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوْ ذَهَبَ اَهْلُ الدُّثُوْرِ بِالدَّرَجٰتِ الْعُلٰى وَالنَّعِيْمِ الْمُقِيْمِ، فَقَالَ وَمَا ذَاكَ؟ فَقَالُوْا يُصَلُّوْنَ كَمَا نُصَلِّيْ، وَيَصُوْمُوْنَ كَمَا نَصُوْمُ، وَيَتَصَدَّقُوْنَ وَلَا نَتَصَدَّقُ، وَيُعْتِقُوْنَ وَلَا نَعْتِقُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفَلَا اُعَلِّمُكُمْ شَيْئًا تُدْرِكُوْنَ بِهٖ مَنْ سَبَقَكُمْ وَتَسْبِقُوْنَ بِهٖ مَنْ بَعْدَكُمْ، وَلَا يَكُوْنُ اَحَدٌ اَفْضَلَ مِنْكُمْ اِلَّا مَنْ صَنَعَ مِثْلَ مَا صَنَعْتُمْ؟ قَالُوْا بَلٰى يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، قَالَ تُسَبِّحُوْنَ وَ تُكَبِّرُوْنَ وَتَحْمَدُوْنَ دُبُرَ كُلِّ صَلٰوةٍ ثَلَاثًا وَ ثَلٰثِيْنَ مَرَّةً، فَرَجَعَ فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِيْنَ اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالُوْا سَمِعَ اِخْوَانُنَا اَهْلُ الْاَمْوَالِ بِمَا فَعَلْنَا فَفَعَلُوْا مِثْلَهٗ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ. (مسلم، ابوہریرہؓ)

428. *इन्ना फुक़राअल मुहाजिरीना अतौ रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु*

अलैहि वसल्लमा फ-कालू ज़हबा अहलुद्दुसूरि बिद्दरजातिल उला वन्नईमिल मुक़ीमि, फ-काला वमा ज़ाका? फ-कालू युसल्लूना कमा नुसल्ली, व यसूमूना कमा नसूमु, व यतसद्दकूना वला नतसद्दकू व यअ़तिकूना वला नअ़तिकु, फ-काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अ-फला उअ़ल्लिमुकुम शैअन तुदरिकूना बिही मन सबक़कुम व तसबिकूना बिही मिम्बअ़दकुम वला यकूनु अहदुन अफ़ज़ला मिनकुम इल्ला मन सनआ मिस्ला मा सनअ़तुम? कालू बला या रसूलल्लाहि, काला तुसब्बिहूना व तुकब्बिरूना व तहमदूना दुबुरा कुल्लि सलातिन सलासवं व सलासीना मर्रतन, फ-रजआ फुक़राउल मुहाजिरीना इला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा, फ-कालू समिअ़ा इख़्वानुना अहलुल अमवालि बिमा फअ़लना फ-फअ़लू मिस्लहू, फ-काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा ज़ालिका फ़ज़्लुल्लाहि युअतीहि मय्यंशाउ। (मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः- अबू हुरैरा (रज़ि॰) ने फ़रमाया कि मक्का से हिजरत कर के आने वालों में से जो लोग ग़रीब और मुहताज थे (जो खुदा की राह में ख़र्च करने से मजबूर थे) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और कहा कि हमेशा बाक़ी रहने वाली ख़ुशहाली और ऊँचा दर्जा तो मालदारों को मिले (और हमको न मिले) आप (सल्ल॰) ने पूछा यह कैसे? उन्हों ने कहा हम नमाज़ पढ़ते हैं और वह भी पढ़ते हैं और हम रोज़े रखते हैं और वह भी रोज़े रखते हैं (नेकी के इन कामों में तो वह बराबर के शरीक हैं) लेकिन वह खुदा के रास्ते में ख़र्च करते हैं और हम नहीं ख़र्च कर पाते? वह गुलामों को आज़ाद करते हैं और इस सिलसिले में रक़म ख़र्च करते हैं और हम ऐसा नहीं कर पाते, हुज़ूर ने उन की बात सुन कर फ़रमाया क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न बताऊँ जिस की बदौलत नेकी की राह में आगे बढ़ जाने वालों को पा लोगे और जिस की बदौलत तुम अपने पीछे आने वालों के आगे रहोगे और तुम से सिर्फ़ वही लोग बेहतर होंगे जो तुम्हारे जैसा काम करें, उन लोगों ने कहा ज़रूर वह काम बताईए ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! आप ने फ़रमाया तुम हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 33 बार सुबहानल्लाह, 33

बार अल्लाहु अकबर, और 33 बार अलहमदुलिल्लाह कह लिया करो। (चुनाचे यह लोग गये और पढ़ने लगे, जब मालदार लोगों को मालूम हो गया कि उन के मुहाजिर भाईयों को यह हुज़ूर (सल्ल०) ने बताया है तो उन्हों ने भी यह तसबीह पढ़नी शुरू कर दी) तो वह लोग हुज़ूर (सल्ल०) के पास आये और बताया कि हमारे मालदार भाईयों ने सुना तो उन्हों ने भी शुरू कर दिया, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है देता है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि नबी की जमाअत में दीन की राह मे आगे बढ़ने और आख़िरत में ऊँचा दर्जा पाने की कितनी ज़्यादा प्यास थी, और यह भी इस हदीस से मालूम हुआ कि जो लोग माल ख़र्च करने की ताक़त नहीं रखते अगर वह ज़िक्र व दुआ और दूसरे नेकी के काम करें तो जन्नत से महरूम न रहेंगे। और यह भी मालूम हुआ कि गुलामों को गुलामी की लअ़नत से निकालना, उन्हें इन्सानियत की सतेह पर लाना और समाज में उन को बराबर की हैसियत देना बहुत बड़ी नेकी है।

इस हदीस में अल्लाहु अकबर के लिये 33 बार का ज़िक्र है, और दूसरी हदीस में अल्लाहु अकबर 34 बार पढ़ने का ज़िक्र आता है, बुज़ुर्गों का इसी पर अमल है। कुछ और हदीसों में आया है कि आप (सल्ल०) ने तीनों को दस-दस बार पढ़ने की शिक्षा दी है।

(۴۲۹) جَاءَ رَجُلٌ اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ اِنِّی مَجْهُوْدٌ، فَاَرْسَلَ اِلٰی بَعْضِ نِسَائِهٖ فَقَالَتْ وَالَّذِیْ بَعَثَکَ بِالْحَقِّ مَا عِنْدِیْ اِلَّا مَاءٌ، ثُمَّ اَرْسَلَ اِلٰی اُخْرٰی، فَقَالَتْ مِثْلَ ذٰلِکَ حَتّٰی قُلْنَ کُلُّهُنَّ مِثْلَ ذٰلِکَ، لَا وَالَّذِیْ بَعَثَکَ بِالْحَقِّ مَا عِنْدِیْ اِلَّا مَاءٌ، فَقَالَ مَنْ یُّضِیْفُ هٰذِهِ اللَّیْلَةَ؟ فَقَالَ رَجُلٌ مِّنَ الْاَنْصَارِ اَنَا یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ فَانْطَلَقَ بِهٖ اِلٰی رَحْلِهٖ، فَقَالَ لِامْرَاَتِهٖ اَکْرِمِیْ ضَیْفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَفِیْ رِوَایَةٍ قَالَ لِامْرَاَتِهٖ هَلْ عِنْدَکَ شَیْءٌ؟ قَالَتْ لَا اِلَّا قُوْتُ صِبْیَانِیْ قَالَ فَعَلِّلِیْهِمْ بِشَیْءٍ وَاِذَا اَرَادُوا الْعَشَاءَ فَنَوِّمِیْهِمْ، وَاِذَا دَخَلَ ضَیْفُنَا فَاَطْفِئِی السِّرَاجَ وَاَرِیْهِ اَنَّا نَاْکُلُ فَقَعَدُوْا وَاَکَلَ الضَّیْفُ وَبَاتَا طَاوِیَیْنِ، فَلَمَّا اَصْبَحَ غَدَا عَلَی النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَقَدْ عَجِبَ اللّٰهُ مِنْ صَنِیْعِکُمَا بِضَیْفِکُمَا اللَّیْلَةَ. (بخاری ومسلم، ابوہریرہؓ)

429. *जाआ रजुलुन इलन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़-काला इन्नी मजहूदुन, फ़-अरसला इला बअज़ि निसाईही फ़-कालत वल्लज़ी बअ़सका बिलहक़्क़ि मा इन्दी इल्ला माउन, सुम्मा अरसला इला उख़रा, फ़-कालत मिस्ला ज़ालिका हत्ता कुलना कुल्लुहुन्ना मिस्ला ज़ालिका, ला वल्लज़ी बअसका बिलहक़्क़ि मा इनदी इल्ला माउन, फ़-काला मंय्युज़ीफ़ु हाज़िहिल्लैलता? फ़-काला रजुलुम मिनल अंसारि अना या रसूलल्लाहि फ़नतलका बिही इला रहलिही, फ़-काला लिम्रअतिही अकरिमी ज़ैफ़ा रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा, व फ़ी रिवायतिन काला लिम्रअतिही हल इन्दका शैउन? कालत ला इल्ला कूतु सिब्यानी काला फ़-अ़ल्लिलीहिम बिशैइन वइज़ा अरादुल अशाआ फ़नव्विमीहिम वइज़ा दख़ला ज़ैफ़ुना फ़-अतफ़िइस्सिराजा व अरीहि अना नाकुलु फ़-कअदू व अकलज़्ज़ैफ़ु व बाता तावियैनि, फलम्मा असबहा ग़दा अलन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़-काला लक़द अजिबल्लाहु मिन सनीअ़िकुमा बिज़ैफ़िकुमल्लैलता।* (बुख़ारी व मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ि॰)

अनुवादः– हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) ने बयान किया कि एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा, मैं भूक और फ़ाक़ा से बेचैन हूँ, तो आप ने एक आदमी को अपनी किसी बीवी के पास भेजा कि देखो अगर कुछ हो तो लाओ, उन्हों ने जवाब दिया कि पानी के अलावा इस वक़्त कुछ नहीं है। फिर दूसरी बीवी के पास भेजा, वहाँ से भी यही जवाब मिला, यहाँ तक कि तमाम बीवियों ने यही कहा कि क़सम है उस ज़ात की जिसने आप को हक़ देकर भेजा है हमारे यहाँ पानी के अलावा कुछ नहीं है तब आप (सल्ल॰) ने लोगों से कहा कि आज रात कौन इस मेहमान को खिलाता है? अंसार में से एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मैं खिलाऊँगा। तो वह मेहमान को लिए अपने घर गये और बीवी से कहा यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मेहमान हैं इन की ख़ातिर करो, क्या तुम्हारे पास कुछ है? उन्हों ने कहा नहीं, सिर्फ़ बच्चों का खाना मौजूद है और उन्हों ने खाया नहीं है। अंसारी ने कहा कि उन को कुछ देकर बहला दो, और जब

> खाना माँगें तो उन्हें थपक कर सुला दो और जब मेहमान अन्दर खाना खाने आएँ तो चिराग़ बुझा देना, और कुछ ऐसा करना जिस से मेहमान यह समझे कि यह लोग भी खाने में शरीक हैं, चुनाचे सब लोग खाना खाने बैठे, मेहमान तो पेट भर कर उठा, लेकिन इन दोनों ने भूखे रहकर रात गुज़ारी जब सुब्ह को यह साहब हुज़ूर (सल्ल०) के पास पहुंचे तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, तुम दोनों मियाँ बीवी ने मेहमान के साथ रात जो सुलूक किया उस से अल्लाह तआला बहुत खुश हुआ।

यह शख़्स जो आया था फ़ाक़ा से था और भूख से बेचैन था, इस लिये बच्चों पर उस को महानता दी गई, क्योंकि बच्चों को थोड़ा देकर बहला दिया गया था, वह सुब्ह तक भूख से मर न जाते और मेहमान को महानता देना ज़रूरी भी था, लेकिन यह वही कर सकता है जिस के अन्दर ईसार व कुर्बानी की सिफ़त पाई जाती है, इस पहलू से यह ईसार का बेहतरीन नमूना है कि आदमी के पास अपनी ही ज़रूरत भर खाना है लेकिन फिर भी अपने से ज़्यादा ज़रूरतमंद का ख़याल रखता है, खुद भूखा रहता है और ग़रीब भूके का पेट भरता है।

(۴۳۰) عَنْ خَبَّابِ بْنِ الْاَرَتِّ قَالَ هَاجَرْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَلْتَمِسُ وَجْهَ اللّٰهِ تَعَالٰى فَوَقَعَ اَجْرُنَا عَلَى اللّٰهِ فَمِنَّا مَنْ مَّاتَ لَمْ يَاْكُلْ مِنْ اَجْرِهٖ شَيْئًا، مِنْهُمْ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ، قُتِلَ يَوْمَ اُحُدٍ وَّتَرَكَ نَمِرَةً، فَكُنَّا اِذَا غَطَّيْنَا رَاْسَهٗ بَدَتْ رِجْلَاهُ، وَاِذَا غَطَّيْنَا رِجْلَيْهِ بَدَا رَاْسُهٗ فَاَمَرَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنْ نُغَطِّيَ رَاْسَهٗ وَنَجْعَلَ عَلٰى رِجْلَيْهِ شَيْئًا مِّنَ الْاِذْخِرِ، وَمِنَّا مَنْ اَيْنَعَتْ لَهٗ ثَمَرَتُهٗ فَهُوَ يَهْدِبُهَا. (بخاری، مسلم)

430. अन ख़ब्बाबिब्निल अरत्ति क़ाला हाजरना मआ रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा नलतमिसु वज्हल्लाहि तआला फ-वक़आ अजरुना अलल्लाहि, फ-मिन्ना मम्माता लम याकुल मिन अजरिही शैअन, मिनहुम मुस्अबुबनु उमैरिन, क़ुतिला यौमा उहदिन व तरका नमिरतन, फ-कुन्ना इज़ा ग़त्तैना रासहू बदत रिजलाहु, वइज़ा ग़त्तैना रिजलैहि बदा रासुहू फ-अमरना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अन नुग़त्ती रासहू व नजअला अला

रिजलैहि शैअम्मिनल इज़ख़िरि, व मिन्ना मन ऐनअत लहू समरतुहू फ़हुवा यहदि बिहा। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवाद:- हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हम लोगों ने ख़ुदा की ख़ुशी के लिये मक्का से हिजरत की, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदीना गए, तो हम में से कुछ लोगों की मृत्यु हो गई, उन्हें अपना दुनियावी इनआम कुछ भी न मिला, ऐसे ही लोगों में से मुसअब बिन उमैर (रज़ि०) हैं, वह उहुद की लड़ाई में शहीद हुये, उन के बदन पर एक मोटे कम्बल के सिवा कुछ न था, वही उन का कफ़न बना, और उस का भी हाल यह था कि अगर सर को उस से ढका जाता तो पैर खुल जाते और पैर ढकते तो सर खुला रह जाता तब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हम से फ़रमाया कि अच्छा सर को कम्बल से छुपा दो और पैरों पर "इज़ख़िर" (एक घास का नाम है) डाल दो, और अल्लाह के लिये हिजरत करने वालों में से कुछ वह हैं जिन्हें दीन के लिये कुर्बानियों का फल दुनिया में भी मिला, वह उस से फ़ायदा उठा रहे हैं।

हज़रत मुसअब (रज़ि०) मक्का के बहुत ख़ुशहाल ख़ानदान के चश्म व चिराग़ थे, उन की ज़िन्दगी ऐश व आराम की ज़िन्दगी थी, सवारी के लिये बेहतरीन घोड़े, सुब्ह की सवारी के लिये अलग, शाम की सवारी के लिये अलग, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते, दिन में कई-कई कपड़े बदलते। लेकिन जब नबी की दावत की हक़ीक़त उन की समझ में आ गई तो उसे कुबूल करने में देर नहीं लगाई। यह न सोचा कि उस के नतीजे में क्या होगा, और ख़ूब जानते थे कि क्या होगा, इस लिये कि इस्लाम कुबूल करने वालों पर जो बीत रही थी वह उन की नज़रों के सामने थी। उन की इस्लाम से पहले की ज़िन्दगी और इस्लाम लाने के बाद की ज़िन्दगी को सोच कर हुज़ूर (सल्ल०) की आँखों में आँसू आ जाते थे, लेकिन ख़ुद मुसअब को वह ऐश व इशरत की ज़िन्दगी याद नहीं आती थी, उन की ज़ुबान पर कभी शिकायत का कोई शब्द नहीं आया।

(٣٣١) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ قَالَ، لَقَدْ رَاَيْتُ سَبْعِيْنَ مِنْ اَهْلِ الصُّفَّةِ مَا مِنْهُمْ رَجُلٌ عَلَيْهِ رِدَاءٌ، اِمَّا اِزَارٌ وَاِمَّا كِسَاءٌ، قَدْ رَبَطُوْ فِىْ اَعْنَاقِهِمْ فَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ نِصْفَ السَّاقَيْنِ، وَمِنْهَا

مَا يَبْلُغُ الْكَعْبَيْنِ، فَيَجْمَعُهُ بِيَدِهِ كَرَاهِيَةَ اَنْ تُبْدَ وَعَوْرَتُهُ. (بخاری)

431. *अन अबी हुरैरता काला, लक़द रऐतु सबईना मिन अहलिस्सुफ़्फ़ति मा मिनहुम रजुलुन अलैहि रिदाउन, इम्मा इज़ारुन व इम्मा किसाउन, क़द रबतू फ़ी अअ़नाक़िहिम, फ़-मिनहा मा यबलुग़ु निस्फ़स्साक़ैनि, व मिनहा मा यबलुग़ुल कअ़बैनि, फ़-यजमउहू बियदिही कराहियता अन तबदुवा औरतहू।* (बुख़ारी)

अनुवाद:- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि सुफ़्फ़ा वालों में से 70 आदमियों को मैंने इस हाल में देखा है कि उन में से किसी के पास चादर न थी (जो पूरे बदन को ढाँकती है) बल्कि या तो एक तहबन्द बाँधे होते या कम्बल जिसे वह अपनी गर्दनों से बाँध लेते, किसी का आधी पिंडली तक पहुंचता और किसी का टख़नों तक, तो अपने हाथों से उसे थामे रखते कि कहीं शर्मगाह न खुल जाये।

(۴۳۲) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ .... فَلَبِثَ عِنْدَهُمْ اَسِیْرًا حَتّٰی اَجْمَعُوْا عَلٰی قَتْلِهٖ فَاسْتَعَارَ مِنْ بَعْضِ بِنَاتِ الْحَارِثِ مُوْسٰی یَسْتَحِدُّ بِهَا فَاَعَارَتْهُ فَدَرَجَ بُنَیٌّ لَهَا وَهِیَ غَافِلَةٌ حَتّٰی اَتَاهُ، فَوَجَدَتْهُ مُجْلِسَهٗ عَلٰی فَخِذِهٖ وَالْمُوْسٰی بِیَدِهٖ فَفَزِعَتْ فَزْعَةً عَرَفَهَا خُبَیْبٌ، فَقَالَ اَتَخْشَیْنَ اَنْ اَقْتُلَهٗ؟ مَا كُنْتُ لِاَفْعَلَ ذٰلِكَ قَالَتْ وَاللّٰهِ مَا رَاَیْتُ اَسِیْرًا خَیْرًا مِّنْ خُبَیْبٍ. (بخاری)

432. *अन अबी हुरैरता काला...... फ़लबिसा इन्दहुम असीरन हत्ता अजमऊ अला क़त्लिही फ़स्तआ़रा मिम्बअ़ज़ि बिनातिल हारिसि मूसा यसतहिद्दु बिहा फ़-अआ़रतहू फ़-दरजा बुनय्युल्लहा वहिया ग़ाफ़िलतुन हत्ता अताहु, फ़-वजदतहु मुजलिसहू अ़ला फ़ख़िज़िही वल मूसा बियदिही फ़-फ़ज़िअत फ़ज़अतन अ़रफ़हा ख़ुबैबुन, फ़-काला अ-तख़शैना अन अक़तुलहू? मा कुन्तु लिअफ़अ़ला ज़ालिका क़ालत वल्लाहि मा रऐतु असीरन ख़ैरम मिन ख़ुबैबिन।* (बुख़ारी)

अनुवाद:- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) ने फ़रमाया...... ख़ुबैब (रज़ि०) बनू हारिस के यहाँ क़ैदी की हैसियत में रहे, यहाँ तककि उन्हों ने उन को क़त्ल करने का फ़ैसला किया (क्योंकि ख़ुबैब ने बद्र की लड़ाई में हारिस को क़त्ल किया था) जब

खुबैब को उसकी जानकारी हुई तो उन्हों ने हारिस की एक लड़की से उसतरा माँगा ताकि नाफ़ के नीचे के बाल को साफ़ कर लें उस ने उसतरा दे दिया इतने में उस का बच्चा उन के पास आ गया वह किसी काम में मशगुल थी, बच्चे को जाते देख नहीं पाई थी, खुबैब (रज़ि०) ने उस को प्यार से अपनी रान पर बिठा लिया, जब उस की नज़र पड़ी तो डर गई कि यह क़ैदी उस के बच्चे को क़त्ल कर देगा। हज़रत खुबैब (रज़ि०) ने भाँप लिया, कहा तुम डरती हो कि मैं इस बच्चे को क़त्ल कर दूँगा। नहीं, मैं ऐसा हर्गिज़ नहीं कर सकता (क्योंकि इस्लाम ने बच्चों के क़त्ल से रोका है) उस औरत ने कहा कि मैंने खुबैब (रज़ि०) से बेहतर सीरत का क़ैदी नहीं देखा।

यह एक लम्बी हदीस का टुकड़ा है जिस में हज़रत खुबैब (रज़ि०) की गिरफ़्तारी और क़त्ल का क़िस्सा बयान हुआ है। खुबैब (रज़ि०) को मालूम है कि यह लोग सुब्ह व शाम में उन्हें क़त्ल कर देने वाले हैं, ऐसी हालत में भी दुश्मन का बच्चा आता है जिसे वह आसानी के साथ ज़िब्ह कर सकते थे लेकिन उस की माँ को इतमीनान दिलाते हैं कि तू मत डर मैं इस को क़त्ल नहीं कर सकता, क्योंकि जिस दीन पर मैं ईमान लाया हूँ वह दीन दुश्मन के बच्चों को क़त्ल करने की इजाज़त नहीं देता। उस औरत ने सच कहा खुबैब (रज़ि०) से बेहतर सीरत का क़ैदी नहीं देखा। जब लोग खुबैब (रज़ि०) को क़त्ल करने के लिये ले गये तो न रोये न ग़मगीन हुये फ़रमाया तो यह फ़रमाया कि जब मैं ईमान व इस्लाम की हालत में क़त्ल किया जा रहा हूँ तो मुझे कुछ परवाह नहीं कि किस करवट पर जान दे रहा हूँ यह जो कुछ मेरे साथ होने वाला है खुदा की खुशी के लिये और उस के दीन की ख़ातिर होने वाला है तो मुझे क्या परवाह मेरे जिस्म के कितने टुकड़े किये जाते हैं।

(٣٣٣) إِنَّ عَائِشَةَ حُدِّثَتْ اَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ الزُّبَيْرِ قَالَ فِيْ بَيْعٍ اَوْ عَطَاءٍ اَعْطَتْهُ عَائِشَةُ "وَاللهِ لَتَنْتَهِيَنَّ عَائِشَةُ اَوْلَاَ حْجُرَنَّ عَلَيْهَا قَالَتْ اَهُوَ قَالَ هٰذَا؟ قَالُوْا نَعَمْ، قَالَتْ هُوَ لِلّٰهِ عَلَيَّ نَذْرٌ اَنْ لَا اُكَلِّمَ ابْنَ الزُّبَيْرِ اَبَدًا، فَاسْتَشْفَعَ ابْنُ الزُّبَيْرِ اِلَيْهَا حِيْنَ طَالَتِ الْهِجْرَةُ قَالَتْ لَا وَاللهِ لَا اُشَفِّعُ فِيْهِ اَبَدًا وَّلَا اَتَحَنَّثُ اِلٰى نَذْرِيْ، فَلَمَّا طَالَ عَلَى ابْنِ الزُّبَيْرِ

كَلَّمَ الْمِسْوَرَبْنَ مَخْرَمَةَ وَعَبْدَ الرَّحْمٰنِ بْنِ الْاَسْوَدِ بْنِ عَبْدِ يَغُوْثَ وَقَالَ لَهُمَا اَنْشُدُ
كُمَا اللّٰهَ لَمَا اَدْخَلْتُمَانِيْ عَلٰى عَائِشَةَ،فَاِنَّهَا لَا يَحِلُّ لَهَا اَنْ تَنْذِرَ قَطِيْعَتِيْ،فَاَقْبَلَ بِهِ
الْمِسْوَرُ وَ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ حَتّٰى اسْتَاذَنَا عَلٰى عَائِشَةَ فَقَالَا السَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ
وَبَرَكَاتُهٗ اَنَدْخُلُ؟ قَالَتْ عَائِشَةُ اُدْخُلُوا، قَالُوْا كُلُّنَا؟ قَالَتْ نَعَمْ، اُدْخُلُوْا كُلُّكُمْ وَلَا
تَعْلَمُ اَنَّ مَعَهُمَا ابْنَ الزُّبَيْرِ، فَلَمَّا دَخَلُوْا دَخَلَ ابْنُ الزُّبَيْرِ الْحِجَابَ، فَاَعْتَنَقَ عَائِشَةَ
وَطَفِقَ يُنَاشِدُهَا وَيَبْكِيْ، وَطَفِقَ الْمِسْوَرُ وَعَبْدُ الرَّحْمٰنِ يُنَاشِدَانِهَا اِلَّا كَلَّمَتْهُ وَ قَبِلَتْ
مِنْهُ، وَ يَقُوْلَانِ اِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهٰى عَمَّا قَدْ عَمِلْتِ مِنَ الْهِجْرَةِ، وَلَا
يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ اَنْ يَّهْجُرَ اَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ، فَلَمَّا اَكْثَرُوْا عَلٰى عَائِشَةَ مِنَ التَّذْكِرَةِ
وَالتَّحْرِيْجِ طَفِقَتْ تُذَكِّرُهُمَا وَتَبْكِيْ وَ تَقُوْلُ اِنِّيْ نَذَرْتُ وَالنَّذْرُ شَدِيْدٌ فَلَمْ يَزَالَا بِهَا
حَتّٰى كَلَّمَتِ ابْنَ الزُّبَيْرِ، وَاَعْتَقَتْ فِيْ نَذْرِهَا اَرْبَعِيْنَ رَقَبَةً وَكَانَتْ تَذْكُرُ نَذْرَهَا بَعْدَ
ذٰلِكَ فَتَبْكِيْ حَتّٰى تَبُلَّ دُمُوْعُهَا خِمَارَهَا. (بخاری،عوف بن مالکؓ)

433. इन्ना आयशता हुद्दिसत अन्ना अब्दल्लाहिब्नज़्ज़ुबैरि काला फ़ी बैइन अव अताइन अअ़ततहु आयशतु वल्लाहि ल-तनतहियन्ना आयशतु अव ल-अहजुरन्ना अ़लैहा कालत अ-हुआ काला हाज़ा? कालू नअम, कालत हुवा लिल्लाहि अलय्या नज़रुन अल्ला उकल्लिमबनज़्ज़ुबैरि अबदन, फसतशफहबनुज़्ज़ुबैरि इलैहा हीना तालतिल हिजरतु फ-कालत ला वल्लाहि ला उशफ़्फ़िउ फ़ीहि अबदवं वला अतहन्नसु इला नज़री, फलम्मा ताला अलब्निज़्ज़ुबैरि कल्लमल मिसवरब्ना मख़्रमता व अब्दर्रहमानिब्नल असवदिब्ने अब्दे यग़ूसा व काला लहुमा अनशुदुकुमल्लाहा लमा अदख़ालतुमानी अला आयशता, फइन्नहा ला यहिल्लु लहा अन तनज़िरा क़तीअती, फ-अक़बला बिहल-मिस्वरु व अब्दुर्रहमानि हत्तस्ताज़ना अला आयशता फ-काला अस्सलामु अलैकि व रहमतुल्लाहि व बरकातहू अ-नदख़ुलु? कालत आयशतु उदख़ुलू, कालू कुल्लुना? कालत नअम, उदख़ुलू कुल्लुकुम वला तअलमु अन्ना मअ़हुमबनज़्ज़ुबैरि, फलम्मा दख़लू दख़लबनुज़्ज़ुबैरिल- हिजाबि, फअ़तनका आयशता व तफ़िका युनाशिदुहा व यबकी, व तफ़िक़ल मिस्वरु व अब्दुर्रहमानि युनाशिदानिहा इल्ला कल्लमतहु व कबिलत मिनहु, व यकूलानि इन्नन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा नहा अम्मा कद अमिलति

मिनल हिजरति, वला यहिल्लु लिमुस्लिमिन अंय्यहजुरा अख़ाहु फ़ौक़ा सलासि लयालिन, फ़-लम्मा अकसरू अला आयशता मिनत्तज़किरति वत्तहरीजि तफ़्फ़िकत तुज़क्किरुहुमा व तबकी व तकूलु इन्नी नज़रतु वन्नज़रु शदीदुन फ़लम यज़ाला बिहा हत्ता कल्लमतिब्नज़्ज़ुबैरि, वअ़तक़त फ़ी नज़रिहा अरबईना रक़बतन व कानत तज़्कुरु नज़रहा बअ़दा ज़ालिका फ़-तबकी हत्ता तबुल्ला दुमूउहा ख़िमारहा। (बुख़ारी, औफ़ बिन मालिक)

अनुवादः- औफ़ बिन मालिक का बयान है कि हज़रत आयशा (रज़ि॰) से लोगों ने यह बात जाकर कही कि आपने फुलाँ चीज़ जो बेची या किसी को दे दी, उस पर इब्ने ज़ुबैर (रज़ि॰) (आयशा के भान्जे) कहते हैं कि अगर ख़ाला न मानेंगी तो मैं उन पर पाबन्दी लगा दूँगा (यानी जो कुछ बैतुल माल से उन्हें मिलता है उस को रोक लूँगा, और सिर्फ़ ख़र्च दूँगा) हज़रत आयशा ने कहा यह उस ने कहा है? लोगों ने कहा, हाँ उन्हीं ने कहा है तब हज़रत आयशा (रज़ि॰) ने कहा मैं क़सम खाती हूँ कि अब कभी इब्ने ज़ुबैर से न बोलूँगी और संबंध तोड़ लिया, जब ज़्यादा दिन हो गए तो इब्ने ज़ुबैर ने लोगों की सिफ़ारिश पहुंचाई, लेकिन वह ना मानीं, फ़रमाया कि इब्ने ज़ुबैर के बारे में मैं किसी की सिफ़ारिश न सनूंगी और न अपनी क़सम तोड़ूंगी। यह सूरतेहाल इब्ने ज़ुबैर के लिये बहुत ही तकलीफ़ देने वाली थी, इस लिये अबकि बार उन्हों ने मिस्वरबिन मख़रमा (रज़ि॰) और अब्दुर्रहमान बिन असवद (रज़ि॰) को क़सम देकर कहा कि किसी तरह तुम हज़रत आयशा (रज़ि॰) के पास मुझे पहुंचाने का उपाय करो, उन्होंने मुझ से संबंध तोड़ लिया है और इस पर क़सम खा ली है, यह बात उन के लिये जाइज़ नहीं, तो मिसवर और अब्दुर्रहमान उन्हें लिये हुये हज़रत आयशा के यहाँ पहुंचे, दरवाज़े पर दस्तक दी, सलाम किया और कहा, "क्या हम आ सकते हैं? हज़रत आयशा ने कहा आ सकते हो, उन दोनों ने कहा "क्या हम सब आ सकते हैं? उन्हों ने कहा हाँ, तुम सब आ सकते हो और वह यह नहीं जान सकीं कि उन के साथ

इब्ने जुबैर भी हैं जब यह लोग अन्दर मकान में पहुंचे तो इब्ने जुबैर उस जगह पहुंच गये जहाँ हज़रत आयशा (रज़ि०) पर्दा में बैठी हुई थीं, वहाँ पहुंचते ही इब्ने जुबैर उन से चिमट गये, उधर वह रो रहे थे और मना रहे थे, क़सम देकर कह रहे थे कि आप मेरी ग़लती माफ़ कर दें, उधर से मिस्वर और अब्दुर्रहमान क़सम देकर कह रहे थे कि आप इब्ने जुबैर (रज़ि०) की ग़लती माफ़ कर दें और बोलना शुरू कर दें, उन दोनों ने उन्हें याद दिलाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं है कि तीन रातों से ज़्यादा अपने भाई से संबंध तोड़ रखे जब सब लोगों ने हज़रत आयशा (रज़ि०) पर ज़ोर डाला और याद दिलाया कि यह गुनाह का काम वह कर रही हैं तो वह रोकर कहने लगीं कि मैंने क़सम खा ली है और क़सम का मुआमला बहुत सख़्त व शदीद है, ग़र्ज़ यह कि यह दोनों साहब हज़रत आयशा (रज़ि०) को बराबर समझाते रहे यहाँ तक कि क़सम तोड़ कर इब्ने जुबैर से बोलीं, और चालीस ग़ुलाम कफ़्फ़ारे के तौर पर आज़ाद किये, और ज़िन्दगी भर उन का यह हाल रहा कि जब कभी अपनी यह ग़लती याद आ जाती रोने लगतीं। इतना रोतीं कि उन का दुपट्टा आँसुओं से भीग जाता।

(۳۴۳) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ جَاءَ رَجُلٌ اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّ لِيْ مَمْلُوْكِيْنَ يُكَذِّبُوْنَنِيْ وَيَخُوْنُوْنَنِيْ وَيَعْصُوْنَنِيْ وَاَشْتِمُهُمْ وَاَضْرِبُهُمْ فَكَيْفَ اَنَا مِنْهُمْ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ يُحْسَبُ مَا خَانُوْكَ وَعَصَوْكَ وَكَذَّبُوْكَ وَعِقَابُكَ اِيَّاهُمْ فَاِنْ كَانَ عِقَابُكَ اِيَّاهُمْ بِقَدْرِ ذُنُوْبِهِمْ كَانَ كَفَافًا لَا وَعَلَيْكَ، وَاِنْ كَانَ عِقَابُكَ اِيَّاهُمْ فَوْقَ ذُنُوْبِهِمْ اُقْتُصَّ لَهُمْ مِنْكَ الْفَضْلَ، فَتَنَحَّى الرَّجُلُ وَجَعَلَ يَهْتِفُ وَيَبْكِيْ فَقَالَ لَهٗ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَمْ تَقْرَءُ قَوْلَ اللّٰهِ تَعَالٰى "وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا، وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا وَكَفٰى بِنَا حَاسِبِيْنَ" فَقَالَ الرَّجُلُ مَا اَجِدُلِيْ وَلِهٰؤُلَاءِ شَيْئًا خَيْرًا مِّنْ مُفَارَقَتِهِمْ اُشْهِدُكَ اَنَّهُمْ كُلَّهُمْ اَحْرَارٌ. (ترمذی)

434. अन आयशता कालत जाआ रजुलुन इलन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ-काला या रसूलल्लाहि इन्ना ली ममलूकीना यकज़िबूननी व यख़ूनूननी व यअसूननी व अश्तिमुहुम व अज़्रिबुहुम फ-कैफ़ा अना मिनहुम? फ-काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा इज़ा काना यौमुलक़ियामति युहसबु मा ख़ानूका व असौका व कज़बूका व ईक़ाबुका इय्याहुम फइन काना इक़ाबुका इय्याहुम बिक़द्रि ज़ुनूबिहिम काना कफ़ाफ़न ला व अलैका, व इन काना ईक़ाबुका इय्याहुम फ़ौक़ा जुनूबिहिम उक़तुस्सु लहुम मिनकल फ़ज़्लु, फ-तनहय्यर्रजुलु व जअला यहतिफ़ु व यबकी, फ-काला लहू रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अमा तक़रउ क़ौलल्लाहि तआला। "व नज़उल मवाज़ीनल क़िस्ता लियौमिल क़ियामति फला तुज़लमु नफ़्सुन शैआ, व इन काना मिस्क़ाला हब्बतिम्मिन ख़रदलिन अतैना बिहा व कफ़ा बिना हासिबीना।" फ-कालर्रजुलु मा अजिदु ली व लिहाउलाई शैअन ख़ैरम्मिम मुफ़ारक़तिहिम उशहिदुका अन्नहुम कुल्लहुम अहरारुन। (तिमिर्ज़ी)

अनुवादः– हज़रत आयशा (रज़ि०) कहती हैं कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया, उस ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल)! मेरे कुछ गुलाम हैं जो मुझ से झूट बोलते हैं और अमानत में ख़यानत करते हैं और मेरी नाफ़रमानी करते हैं और मैं उन को बुरा भला कहता हूँ और उन्हें मारता हूँ, तो उन के बारे में मेरा क्या बनेगा।? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब क़ियामत का दिन आएगा तो उन की ख़यानत व नाफ़रमानी और झूट और तुम्हारी सज़ा जो तुम उन्हें देते हो, दोनों का हिसाब लगाया जाएगा, अगर तुम्हारी सज़ा उन के जुर्म के बराबर हुई तब तो तुम्हें कुछ लेना रहेगा न देना। और अगर तुम्हारी सज़ा उन के जुर्म से कम हुई तो यह तुम्हारे हक़ में रहमत का सबब होगा। लेकिन अगर तुम्हारी सज़ा उन के जुर्म से बढ़ी हुई निकली तो जितनी बढ़ी हुई है उतना बदला लिया जाएगा। यह सुन कर वह आदमी एक किनारे होकर फूट-फूट कर रोने लगा, फिर उस से

नबी (सल्ल॰) ने यह कहा, क्या तूने अल्लाह की यह बात कुरआन में नहीं पढ़ी जो उस ने फ़रमाई है? "वनज़उल मवाज़ीना" (आख़िर तक, जिस का अनुवाद यह है) "हम क़यामत के दिन इन्साफ़ की तराज़ू में हर शख़्स के कर्मों को तौलेंगे और किसी की तौल में कोई ज़ुल्म न किया जाएगा, और ज़र्रा बराबर भी कोई कर्म बुरा भला किसी के नाम-ए-अअ़माल में होगा तो हम उसे सामने लाएँगे, और हम हिसाब लेने के लिये बिल्कुल काफ़ी हैं" तो उस आदमी ने कहा, अब मेरे लिये यही बेहतर है कि इन गुलामों से अलग हो जाऊँ। ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आप को गवाह बनाता हूँ कि मैंने इन को आज़ाद किया।

दुनिया में बहुत से लोग अपने ख़ादिमों और नौकरों को पीटते रहते हैं, फिर यह शख़्स क्यों हुज़ूर के पास आया? और क्यों उस ने पूछा कि मेरा उन के बारे में क्या हाल होगा? अगर उस को आख़िरत की फ़िक्र न होती तो यह सवाल उस के दिल में उठ नहीं सकता था, फिर देखिये वह नबी की बात सुन कर फूट-फूट कर रोने लगता है यहाँ तक कि उन्हें आज़ाद कर देता है ताकि यह आज़ाद करने का अमल उस की पहली ज़्यादतियों के लिये जो उन गुलामों पर मुम्किन है हो गई हो कफ़्फ़ारा बने।

आख़िरत की फ़िक्र

(۴۳۵) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِىْ بَعْضِ غَزَوَاتِهٖ، فَمَرَّ بِقَوْمٍ، فَقَالَ مَنِ الْقَوْمُ؟ قَالُوْا نَحْنُ الْمُسْلِمُوْنَ، وَامْرَاَةٌ تَحْضِبُ بِقَدْرِهَا وَمَعَهَا ابْنٌ لَّهَا، فَاِذَا ارْتَفَعَ وَهَجٌ تَنَحَّتْ بِهٖ، فَاَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ اَنْتَ رَسُوْلُ اللّٰهِ؟ قَالَ نَعَمْ، قَالَتْ بِاَبِىْ اَنْتَ وَاُمِّىْ اَلَيْسَ اللّٰهُ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ؟ قَالَ بَلٰى، قَالَتْ اَلَيْسَ اللّٰهُ اَرْحَمَ بِعِبَادِهٖ مِنَ الْاُمِّ بِوَلَدِهَا، قَالَ بَلٰى، قَالَتْ اِنَّ الْاُمَّ لَا تُلْقِىْ وَلَدَهَا فِى النَّارِ، فَاَكَبَّ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَبْكِىْ، ثُمَّ رَفَعَ رَاْسَهٗ اِلَيْهَا فَقَالَ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُعَذِّبُ مِنْ عِبَادِهٖ اِلَّا الْمَارِدَ الْمُتَمَرِّدَ الَّذِىْ يَتَمَرَّدُ عَلَى اللّٰهِ وَاَبٰى اَنْ يَّقُوْلَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ. (مشكوة)

435. *अन अब्दिल्लाहिब्ने उमरा काला कुन्ना मअ़न्नबिय्यि*

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़ी बअ्ज़ि ग़ज़वातिही, फ़-मर्रा बिक़ौमिन, फ़-क़ाला मनिल क़ौमु? क़ालू नहनुल मुस्लिमूना वमरअतुन तहज़िबु बिक़दरिहा व मअ्आ इब्नुल्लहा फ़-इज़रतफ़आ वहजुन तनह्हत बिही फ़-अततिन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़-क़ालत अनता रसूलुल्लाहि? क़ाला नअ्म, क़ालत बिअबी अनता व उम्मी अ-लैसल्लाहु अरहमर्राहिमीना? क़ाला बला, क़ालत अ-लैसल्लाहु अरहमा बिईबादिही मिनल उम्मी बिवलदिहा, क़ाला बला, क़ालत इन्नलउम्मा ला तुलक़ी वलदहा फ़िन्नारि, फ़-अकब्बा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा यबकी, सुम्मा रफ़आ रासहू इलैहा फ़-क़ाला इन्नल्लाहा ला युअज़्ज़िबु मिन ईबादिही इल्ललमारिदा अल-मुतमर्रिदल्लज़ी यतमर्रदु अलल्लाहि व अबा अय्यकूला ला इलाहा इल्लल्लाहु। (मिश्कात)

अनुवादः– अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि॰) कहते हैं कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक सफ़र जिहाद में थे, तो कुछ लोगों के पास से गुज़रे और पूछा कि तुम कौन लोग हो? उन्हों ने कहा कि हम मुसलमान हैं। अब्दुल्लाह (रज़ि॰) कहते हैं कि वहाँ एक औरत खाना पका रही थी, लकड़ी डाल-डाल कर आग भड़का रही थी, उस की गोद में बच्चा था, जब आग का शोला तेज़ होता तो अपने बच्चे को दूर कर लेती। फिर हुज़ूर (सल्ल॰) के पास आई और उस ने कहा "आप अल्लाह के रसूल हैं?" हुज़ूर ने कहा हाँ। उस ने कहा "मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान, क्या अल्लाह अरहमुर्राहिमीन (दयावान) नहीं है"? आप ने फ़रमाया, हाँ क्यों नहीं। उस ने कहा क्या अल्लाह अपने बन्दों पर इस से ज़्यादा मेहरबान नहीं है जितना माँ अपने बच्चे पर रहम करती है? आप ने फ़रमाया, हाँ वह माँ से ज़्यादा अपने बन्दों पर रहम करने वाला है तो औरत ने कहा, लेकिन माँ तो अपने बच्चे को आग में डालना पसन्द नहीं करती, उस की यह बात सुन कर हुज़ूर (सल्ल॰) ने सिर झुका लिया और रोने लगे, और थोड़ी देर के बाद उस की तरफ़ सिर उठा कर फ़रमाया कि अल्लाह उस शख़्स को अज़ाब देगा जो सरकश, घमंडी है और जिस ने कलम-ए-तौहीद को

कुबूल करने से इन्कार किया हो।

ज़ाहिर है कि यह औरत मुसलमान थी, और ख़ुदा की रहीमियत और दूसरी सफ़तों को जानती थी, फिर उस ने यह सवालात क्यों किये? उस की वजह यह है कि उस के दिल में आख़िरत की फ़िक्र ने घर कर लिया था, वह सब कुछ करने के बाद यही जानती थी कि ख़ुदा की जन्नत पाने के लिये इतना ही काफ़ी नहीं है, और उस को दोज़ख़ का धड़का लगा हुआ था। हुज़ूर ने जो जवाब दिया वह यह कि ऐ ख़ुदा की बन्दी जहन्नम में तो वह जाएगा जिस के सामने दीन आया, और उस ने कुबूल करने से इन्कार कर दिया तू, तो मुसलमान है, तुझे क्यों जहन्नम में फेंकेगा? ख़ुदा ऐसे लोगों को जहन्नम में दाख़िल नहीं करेगा जो इस्लाम लाये हों और उसकी माँग पूरी कर रहे हों, ऐसे फ़िक्र करने वाले मुसलमानों के लिये हुज़ूर का यह जवाब हिकमत वाला जवाब था।

(۴۳۶) عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ لَمَّا جَعَلَ اللّٰهُ فِیْ قَلْبِیْ الْاِسْلَامَ اَتَیْتُ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ اَبْسُطْ یَمِیْنَکَ فَلْاُبَایِعْکَ، فَبَسَطَ یَمِیْنَهٗ فَقَبَضْتُ یَدِیْ، فَقَالَ مَالَکَ یَا عَمْرُو، فَقُلْتُ اُرِیْدُ اَنْ اَشْتَرِطَ، فَقَالَ تَشْتَرِطُ مَاذَا؟ فَقُلْتُ اَنْ یُّغْفَرَ لِیْ، قَالَ اَمَا عَلِمْتَ اَنَّ الْاِسْلَامَ یَهْدِمُ مَا کَانَ قَبْلَهٗ. (بخاری)

436. *अन अमरिब्निल आसि काला लम्मा जअलल्लाहु फ़ी क़ल्बील इस्लामा अतैतुन्नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़-कुल्तु उबसुत यमीनका फलउबायिउका, फ़-बसता यमीनहू फ़-कबज़्तु यदी, फ़-काला मा लका या अमरु, फ़-कुल्तु उरीदु अन अशतरिता, फ़-काला तशतरितु माज़ा? फ़-कुल्तु अंय्युग़फ़रा ली, काला अमा अलिम्ता अन्नल इस्लामा यहदिमु मा काना क़ब्लहू।*

(बुख़ारी)

अनुवादः– अमर बिन अल–आस कहते हैं कि जब अल्लाह ने मेरे दिल में इस्लाम लाने का जज़्बा पैदा किया तो मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुआ, मैंने कहा कि आप अपना हाथ बढ़ाएँ, मैं आप के हाथ पर बैअत करूँगा (इस बात का वादा करूँगा कि अब मुझे एक ख़ुदा की बन्दगी करनी

है) जब आप (सल्ल०) ने अपना हाथ बढ़ाया तो मैंने अपना हाथ खींच लिया, आप ने पूछा क्या हुआ? तुमने अपना हाथ खींच क्यों लिया? मैंने कहा मैं एक शर्त लगाना चाहता हूँ आप ने पूछा वह क्या शर्त है? मैंने कहा कि वह शर्त यह है कि मेरे पिछले गुनाह माफ़ हो जाएँ। आप ने फ़रमाया ऐ अमर! क्या तुम नहीं जानते कि इस्लाम उन तमामं गुनाहों को ढा देता है जो इस्लाम लाने से पहले आदमी ने किये होते हैं।

यहाँ समझने की बात यह है कि कुरआन और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तबलीग़ ग़ैर मुस्लिम लोगों में इस ढंग पर होती थी कि आदमी को अपनी निजात (मुक्ति) की फ़िक्र हो जाती थी, और उसे इस बात का यक़ीन हो जाता था कि उस के बाप दादा का मज़हब (धर्म) उस के काम नहीं आ सकता और यहकि इस दुनिया के बाद एक और ज़िन्दगी आने वाली है, और वही इस लायक़ है कि उस के लिये आदमी फ़िक्र करे।

(۴۳۷) عَنْ رَبِيْعَةَ بْنِ كَعْبٍ قَالَ كُنْتُ اَبِيْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاٰتِيْهِ بِوَضُوْءِهٖ وَحَاجَتِهٖ فَقَالَ سَلْنِيْ فَقُلْتُ اَسْئَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِي الْجَنَّةِ، فَقَالَ اَوَغَيْرَ ذٰلِكَ؟ قُلْتُ هُوَ ذَاكَ، قَالَ فَاَعِنِّيْ عَلٰى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُوْدِ.

(مسلم)

437. *अन रबीअतब्नि कअ़बिन क़ाला कुनतु अबैतु मआ़ रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ-आतीहि बिवज़ूईही व हाजतिही फ-क़ाला सलनी फ-कुल्तु असअलुका मुराफ़क़तका फ़िल-जन्नति, फ-क़ाला अव ग़ैरा ज़ालिका? कुल्तु हुवा ज़ाका, क़ाला फ-अइन्नी अला नफ़्सिका बिकसरतिस्सुजूदि।* (मुस्लिम)

अनुवाद:– रबीआ़ बिन कअ़ब (रज़ि०) (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ादिम) फ़रमाते हैं कि मैं रात में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहता था, आप के लिये वुज़ू का पानी लाता और दूसरी ज़रूरतों का इन्तिज़ाम करता। एक दिन आप ने फ़रमाया तुम कुछ माँगो मैंने कहा कि मैं आप के साथ जन्नत में रहना चाहता हूँ, आप ने फ़रमाया कि और कुछ? मैंने कहा

> कि मुझे और कुछ नहीं चाहिये, बस यही चाहिए, तो आप ने फ़रमाया कि अगर तुम मेरे साथ जन्नत में रहना चाहते हो तो नमाज़ की ज़्यादती से मेरी मदद करो।

यानी जन्नत में रहना चाहते हो तो ज़ौक़ व शौक़ से ख़ुदा की बन्दगी करो, ज़्यादा से ज़्यादा नमाज़ पढ़ो, इस के बग़ैर जन्नत में मेरा साथ नहीं हो सकता।

(۴۳۸) عَنْ اَبِیْ قَتَادَةَ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَنَّهٗ قَامَ فِیْهِمْ فَذَکَرَ لَهُمْ اَنَّ الْجِهَادَ وَالْاِیْمَانَ بِاللّٰهِ اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ، فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ، یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَرَاَیْتَ اِنْ قُتِلْتُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ تُکَفَّرُ عَنِّیْ خَطَایَایَ؟ فَقَالَ لَهٗ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ نَعَمْ اِنْ قُتِلْتَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَاَنْتَ صَابِرٌ مُحْتَسِبٌ مُقْبِلٌ غَیْرُ مُدْبِرٍ، ثُمَّ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ کَیْفَ قُلْتَ؟ قَالَ اَرَاَیْتَ اِنْ قُتِلْتُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَتُکَفَّرُ عَنِّیْ خَطَایَایَ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ نَعَمْ وَاَنْتَ صَابِرٌ مُحْتَسِبٌ مُقْبِلٌ غَیْرُ مُدْبِرٍ اِلَّا الدَّیْنَ فَاِنَّ جِبْرِیْلَ قَالَ لِیْ ذٰلِکَ. (مسلم)

438. *अन अबी कतादता अन रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा अन्नहू कामा फीहिम फ-ज़करा लहुम अन्नलजिहादा वल-ईमाना बिल्लाहि अफज़लुल अअमालि, फ-कामा रजुलुन फ-काला, या रसूलल्लाहि अ-रऐता इन कुतिलतु फी सबीलिल्लाहि तुकफ़्फरु अन्नी ख़तायाया? फ-काला लहू रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा नअ़म इन कुतिलतु फी सबीलिल्लाहि व अन्ता साबिरुन मुहतसिबुम मुकबिलुन ग़ैरु मुदबिरिन सुम्मा काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा कैफ़ा कुल्तु? काला अ-रऐता इन कुतिल्तु फी सबीलिल्लाहि अ-तुकफ़्फरु अन्नी ख़तायाया? फकाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा नअ़म व अनता साबिरुन मुहतसिबुन मुकबिलुन ग़ैरु मुदबिरिन इल्लदैना फ-इन्ना जिबरीला काला ली ज़ालिका।* (मुस्लिम)

> **अनुवाद:-** अबू क़तादा (रज़ि॰) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल॰) ने अपनी तक़रीर में यह मज़मून बयान फ़रमाया कि अल्लाह पर ईमान व भरोसा रखना और उस की राह में जिहाद करना सब से बेहतर

काम हैं, तो एक आदमी उठा और उस ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! अगर मैं ख़ुदा की राह में अपनी जान क़ुर्बान कर दूँ तो क्या मेरे पिछले गुनाह माफ़ हो जाएँगे? आप ने फ़रमाया कि हाँ, अगर तू ख़ुदा की राह में लड़े और दुश्मन के मुक़ाबले में जमा रहे भागे नहीं, और अल्लाह से सवाब पाने की नियत से लड़े और तुझे क़त्ल कर दिया जाए तो तेरे तमाम गुनाह माफ़ हो जाएँगे। थोड़ी देर के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अभी तुम ने क्या सवाल पूछा था? उस ने कहा मैंने यह पूछा था कि अगर अल्लाह की राह में लड़ते हुये क़त्ल कर दिया जाऊँ तो क्या मेरे सब गुनाह माफ़ हो जाएँगे? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि हाँ, माफ़ हो जाएँगे, जबकि तू दुश्मन के मुक़ाबले में जमे और अल्लाह से सवाब पाने की नियत से लड़े, और जंग के मैदान से न भागे तो तेरे सब गुनाह माफ़ हो जाएँगे, लेकिन जो क़र्ज़ तेरे ज़िम्मे किसी का है वह माफ़ न होगा, मुझे जिबरील ने यह बात अभी बताई है।

आख़िरत का यक़ीन जब दिल में घर कर लेता है तो आदमी का यही हाल होता है कि वह इस फ़िक्र में रहता है कि मेरे पिछले गुनाह कैसे माफ़ होंगे।

इस हदीस से हुकूकुलईबाद की अहमियत भी वाज़ेह होती है अगर कोई शख़्स किसी का क़र्ज़ अदा कर सकता है लेकिन न तो उस ने अदा किया और न माफ़ कराया तो चाहे वह अपनी जान ख़ुदा को भेंट कर दे मगर क़र्ज़ के हिसाब से नही बच सकता।

(۴۳۹) عَنْ اَنَسٍ قَالَ اِنَّكُمْ لَتَعْمَلُوْنَ اَعْمَالًا هِيَ اَدَقُّ فِيْ اَعْيُنِكُمْ مِنَ الشَّعْرِ كُنَّا نَعُدُّهَا عَلٰى عَهْدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْمُوْبِقَاتِ يَعْنِى الْمُهْلِكَاتِ.

(بخاری)

439. *अन अनसिन काला इन्नकुम ल-तअ़मलूना अअ़मालन हिया अदक़्कु फ़ी अअ़युनिकुम मिनश्शअ़रि कुन्ना नउद्दुहा अला अहदि रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मिनलमूबिक़ाति यअ़निल मुहलिकाति।* (बुख़ारी)

> **अनुवादः**- हज़रत अनस (रज़ि॰) अपने ज़माने के लोगों से फ़रमाते हैं कि तुम लोग ऐसे बहुत से काम करते हो जो तुम्हारी निगाहों में बाल से ज़्यादा हल्के होते हैं (यानी हक़ीर होते हैं) लेकिन हम उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में दीन व ईमान के लिए ख़तरनाक ख़याल करते थे।

आदमी छोटे-छोटे गुनाहों को हल्का समझने लगे तो उस का मतलब यह है कि एक दिन ऐसा आएगा कि वह बड़े से बड़ा गुनाह करेगा और उसे हल्का जानेगा।

(۴۴۰) اِنَّ رَجُلًا قَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ وَيْلَكَ وَمَا اَعْدَدْتَ لَهَا؟ قَالَ مَا اَعْدَدْتُ لَهَا اِلَّا اِنِّي اُحِبُّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ، قَالَ اَنْتَ مَعَ مَنْ اَحْبَبْتَ، قَالَ اَنَسٌ فَمَا رَاَيْتُ الْمُسْلِمِيْنَ فَرِحُوْا بِشَيْءٍ بَعْدَ الْاِسْلَامِ فَرَحَهُمْ بِهَا. (بخاری، مسلم۔ انسؓ)

440. *इन्ना रजुलन काला या रसूलल्लाहि मतस्साअतु? काला वैलका वमा अअ़दत्ता लहा? काला मा अअ़दत्तु लहा इल्ला इन्नी उहिब्बुल्लाहा व रसूलहू, काला अन्ता मअ़ा मन अहबबता, काला अनसुन फमा रऐतुल मुस्लिमीना फरिहू बिशैइन बअ़दल इस्लामि फरहहुम बिहा।* (बुख़ारी, मुस्लिम, अनस रज़ि॰)

> **अनुवादः**- हज़रत अनस (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और पूछा कि क़यामत कब होगी? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया तुम्हारा भला हो तुम ने इस के लिये कुछ तैयारी की है? उस ने कहा, मैंने उस के लिये कुछ ज़्यादा तैयारी तो नहीं की, हाँ अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल॰) से मुहब्बत रखता हूँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आदमी को उन्हीं लोगों की संगति नसीब होगी जिन से वह मुहब्बत करता है। हज़रत अनस (रज़ि॰) कहते हैं कि इस्लाम लाने के बाद लोगों को कभी इतनी ख़ुशी नहीं हुई जितनी हुज़ूर की यह बात सुन कर लोगों को ख़ुशी हुई।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी अमल के मैदान में जितना आगे थे क़ुरआन ने उस की गवाही दी है लेकिन इस के बावजूद

वह अपने बारे में बहुत फ़िक्रमंद रहते थे। हुज़ूर (सल्ल०) की यह बात सुन कर उन्हें खुश होना ही चाहिये था, और ऐसे फ़िक्रमंद लोगों से यह बात कही भी जा सकती है।

दरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

अल्लाहुम-म, सल्लि अ़ला, मुहम्मदिंव् वअ़ला, आलि मुहम्मदिन, कमा सल्लै-त, अ़ला इब्राही-म, व अ़ला आलि इब्राही-म, इन्न-क, हमीदुम् मजीद।

अल्लाहुम-म बारिक, अ़ला मुहम्मदिंव, व अ़ला आलि, मुहम्मदिन, कमा बारक-त, अ़ला इब्राहीमा, व अ़ला आलि इब्राहीमा इन्न-क, हमीदुम् मजीद।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! रहमत भेज हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर वालों पर जैसे रहमत की तूने इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के घर वालों पर बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़ है बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।

ऐ अल्लाह! बरकत उतार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर वालों पर, जैसी बरकतें कीं तूने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के घर वालों पर, बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़ बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।